CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'मास्टर'मणिमालायाः ६९ संख्यको मणिः (ज्योतिषविभागे १७)

आचार्यनीलकण्ठविरचिता

ताजिकनीलकण्ठी

संस्कृतहिन्दीटीकाकारः—

पं० श्रीसीताराम झा ज्यौ० आ०, ज्यौ० ती०

प्रकाशकः—
मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स,
संस्कृत-बुकडिपो,
कचौड़ीगली, बनारस सिटी।

मूल्यम् २॥।)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रेमदत्त शर्मा-
शास्त्री
जहाँगीराबाद

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* श्रीः *

ताजिकनीलकण्ठी

गूढार्थप्रकाशिकासहिता ।

टीकाकारकृत-मङ्गलाचरण—

यत्पादपद्मे प्रणतः सुरेशः सम्पूरयत्वत्र स मे गणेशः ।
श्रीनीलकण्ठ्यां सविशेषभाषां टीकां प्रकर्तुं हृदयाभिलाषाम् ॥

ग्रन्थकारकृत मङ्गलाचरण—

प्रणम्य हेरम्बमथो दिवाकरं गुरोरनन्तस्य तथा पदाम्बुजम् ।
श्रीनीलकण्ठो विविनक्ति सूक्तिभिस्तत्ताजिकं सूरिमनःप्रसादकृत् ॥१॥

सं०—श्रीनीलकण्ठः, हेरम्बम् (गणेशं), अथो, दिवाकरं (सूर्यं), तथा अनन्तस्य गुरोः (स्वपितुः) पदाम्बुजम् प्रणम्य, सूरिमनःप्रसादकृत् तत् ताजिकं, (यवनेन स्वभाषया प्रणीतं) सूक्तिभिः (विविधच्छन्दोभिः), विविनक्ति ॥१॥

भा०—श्रीनीलकण्ठ नामक ग्रन्थकार, श्रीगणेश, सूर्य और अपने अनन्त-नामक गुरु (पिता) के चरण-कमलों को प्रणाम करके पण्डितों के मनको प्रसन्नकारक उस प्राचीन ताजिक (वर्षफल-बोधक-शास्त्र) को सुन्दर उक्तियों (नानाप्रकारके संस्कृत छन्दों) से प्रकाशित करते हैं ॥ १ ॥

विशेषः—"ब्रह्मणा भानवे प्रोक्तं भानुना यवनाय तत् ।
यवनेन च यत् प्रोक्तं ताजिकं तत् प्रचक्षते ॥"

अर्थ—लोकोपकारार्थ वर्ष–मास–दिनफल आदि समझनेके लिये ब्रह्माने सूर्यको जिस शास्त्रका उपदेश किया, सूर्य भगवान्ने उसी शास्त्रको यवनाचार्यको दिया और यवनाचार्यने अपनी भाषा (फारसी) के अनुसार उसी शास्त्रका ताजिक नाम रखकर लोकमें प्रचार किया, उसी ताजिकको नीलकण्ठाचार्यने सरल सुबोध संस्कृत छन्दोंमें बनाया इसीलिये इसका नाम 'ताजिकनीलकण्ठी' है। और इस ग्रन्थमें कितने योगोंके नाम फारसी ही के शब्दोंमें हैं ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेषादि १२ राशियों के स्वभाव और गुण—

पुमांश्चरोऽग्निः सुदृढश्चतुष्पाद्रक्तोष्णपित्तोऽतिरवोऽद्रिरुग्रः ।
पीतो दिनं प्राग्विषमोदयोऽल्पसङ्गप्रजो रूक्षनृपः समोऽजः ॥२॥

सं०—अजः (मेषः) पुमान्, चरः, अग्निः, सुदृढ़ः, चतुष्पात्, रक्तोष्णपित्तः, अतिरवः, अद्रिः, उग्रः, पीतः दिनंप्राग्, विषमोदयः, अल्पसङ्गप्रजः, (स्वल्पस्त्री-सङ्गः, स्वल्पसन्ततिश्च) रूक्षनृपः, समः, (समशरीरः) एवं विशिष्टः स्यात् ॥२॥

भा०—मेष–पुरुषराशि, चरसंज्ञक, अग्नितत्त्व, अत्यन्त मजबूत, चतुष्पद, लालवर्ण, उष्णस्वभाव, पित्तप्रकृति जोरसे शब्द करनेवाला, पर्वतचारी, पापराशि, पीलावर्ण, दिनमें बली, पूर्व दिशाका स्वामी, विषम उदयवाला, थोड़े स्त्रीप्रसङ्ग और थोड़ी प्रजावाला, क्षत्रिय जाति और सम (न छोटा न बड़ा अर्थात् मध्यम) शरीरवाला है ॥ २ ॥

वि०—आकाश गोलमें अपनी गतिसे चलनेका जो सूर्य का मार्ग है उसका नाम क्रान्तिवृत्त है (उसीको राशिमण्डल भी कहते हैं), उसीके समान १२ भाग मेषादिक १२ राशियोंके नामसे प्रसिद्ध हैं। नक्षत्र गोलमें ताराओंके सन्निवेशसे जिस राशिकी जैसी आकृति देखनेमें आई, आचार्योंने उसी प्रकार उनके "मेष, वृष" इत्यादि नाम रखे हैं। अर्थात् जिस विभाग में नक्षत्रके समूह मेढ़ेके सदृश देखनेमें आया उसका नाम मेष, उससे अगले विभागकी आकृति बैल के सदृश है इसलिये उसका नाम वृष इत्यादि अन्वर्थ नाम है।

(२) मेषका वर्ण लाल और पीला मिला हुआके सदृश है इसलिये रक्त और पीत दो वर्ण कहे गये हैं। सिंह और धनुके भी दो दो वर्ण हैं।

(३) इस देश (भारतवर्ष) में अक्षांश (ध्रुवोन्नति) होनेके कारणसे मकर आदि ६ राशि उदयके समय क्षितिज वृत्तपर टेढ़ी (तिरछी) होकर लगती है, इसलिये थोड़े ही कालमें उन ६ राशियोंका उदय होता है। तथा कर्कादि ६ राशियाँ उदयके समय क्षितिज वृत्तपर सीधी सी रहती हैं, इसलिये मकरादि ६ राशियोंकी अपेक्षा कर्क आदि ६ राशियोंके उदय कुछ अधिक समयमें होते हैं। सिद्धान्तशिरोमणिमें कहा भी है—

"य उद्गमे याम्यनता मृगाद्याः स्वस्वापमेनापि निरक्षदेशे ।
याम्याक्षतस्तेऽति नतात्वमाप्ता उद्यन्ति कालेन ततोऽल्पकेन ॥
कर्कादयः सौम्यनता हि येऽत्र ते यान्ति याम्याक्षवशादृजुत्वम् ।
कालेन तस्माद् बहुनोदयन्ते तदन्तरे स्वं चरखण्डमेव ॥"

इति । स्पष्टार्थं ।

अतएव मकरादि ६ विषमोदय और कर्कादि ६ राशियाँ समोदय हैं ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वृषः स्थिरः स्त्री क्षिति-शीत-रूक्षो याम्येट्सुभूर्वायु-निशा-चतुष्पात् ।
श्वेतोऽतिशब्दो विषमोदयश्च मध्यप्रजासङ्ग-शुभोऽपि वैश्यः ॥३॥

सं०—वृषः, स्थिरः, स्त्री-क्षिति-शीतरुक्षः, याम्येट्, सुभूः, वायु-निशा-चतुष्पात, श्वेतः, अतिशब्दः, विषमोदयः, च (पुनः) मध्यप्रजासङ्गशुभः, अपि (मध्यसन्ततिः, मध्यमसङ्गः, शुभश्च) (तथा) वैश्यः (एवं विशिष्टो ज्ञेयः)॥३॥

भा०—वृषराशि–स्थिरसंज्ञक, स्त्रीराशि, पृथ्वीतत्त्व, शीतलस्वभाव, कान्तिरहित, दक्षिणदिशा का स्वामी सुन्दर भूमिमें रहनेवाला, वातप्रकृति, रात्रिबली, चतुष्पाद्, शुक्ल वर्ण, जोरसे शब्द करनेवाला, विषम उदयवाला, मध्यमप्रकार के स्त्री-सङ्ग और सन्तान वाला, शुभराशि और वैश्य जाति हैं ॥ ३ ॥

प्रत्यक् समीरः शुकभा द्विपान्ना द्वन्द्वो द्विमूर्ति-र्विषमोदयोष्णः ।
मध्यप्रजासङ्ग–वनस्थ–शूद्रो दीर्घस्वनः स्निग्ध–दिनेट् तथोग्रः ॥ ४ ॥

सं०—द्वन्द्वः (मिथुनराशिः) प्रत्यक्, समीरः, शुकभा (हरितवर्णः) द्विपात् ना (पुरुषः) द्वन्द्वो (द्विस्वभावः) इत्यादि श्लोक-क्रमेण-स्पष्टम् ॥४॥

भा०—मिथुनराशि–पश्चिम–दिशा का स्वामी, वायु तत्त्व, हरित वर्ण, द्विपद, पुरुषराशि, द्विस्वभाव, विषम उदयवाला, गर्मस्वभाव, मध्यम स्त्री-सङ्ग और मध्यम प्रजावाला, वनमें रहनेवाला, शूद्र-जाति, जोरसे शब्द करनेवाला, चिक्कण शरीरवाला, दिनमें बली और पापराशि है ॥ ४ ॥

वि०—द्विस्वभाव-राशियों के पूर्वार्ध-स्थिर, उत्तरार्ध चर समझना चाहिये ॥४॥

बहुप्रजासङ्गपदः कुलीरश्चरोऽङ्गना पाटल–हीनशब्दः ।
शुभः कफी स्निग्ध-जलाम्बुचारी समोदयो विप्र-निशोत्तरेशः ॥ ५ ॥

सं०—कुलीरः (कर्कराशिः)–बहुप्रजासङ्गपदः, चरः, अङ्गना (स्त्रीराशिः), पाटल-हीनशब्दः, शुभः, कफी इत्यादि अग्रे श्लोकक्रमेण स्पष्टम् ॥ ५ ॥

भा०—कर्कराशि–बहुत सन्तान, बहुत स्त्रीसङ्ग और बहुत चरणवाला, चरराशि, स्त्रीराशि, पाटल (ईषत्–रक्त) वर्ण, शब्द रहित, शुभराशि, कफप्रकृति, चिक्कण शरीरवाला, जलतत्त्व, जलमें रहनेवाला, सम उदयवाला, ब्राह्मण जाति, रात्रिबली और उत्तर दिशाका स्वामी है ॥ ५ ॥

पुमान् स्थिरोऽग्निर्दिन-पीत-रूक्षः पित्तोष्ण-पूर्वेश-दृढश्चतुष्पात् ।
समोदयो दीर्घरवोऽल्पसङ्गप्रजो हरिः शैल-नृपोग्र-धूम्रः ॥६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सं०—हरिः (सिंहः) पुमान्, स्थिरः, इत्यादि क्रमेण स्पष्टार्थम् ॥ ६ ॥

भा०—सिंह-पुरुषराशि, स्थिर, अग्नितत्त्व, दिनबली, पीतवर्ण, कान्तिहीन, पित्तप्रकृति, गर्म स्वभाव, पूर्व दिशाका स्वामी, मजबूत चतुष्पद, सम उदयवाला, दीर्घ शब्दवाला, थोड़ा स्त्रीसङ्ग और थोड़ी सन्ततिवाला, पर्वतचारी, क्षत्रिय जाति, पापराशि और धूम्रवर्ण भी है ॥ ६ ॥

पाण्डुर्द्विपात् स्त्री द्वितनुर्यमाशा निशा मरुच्छीत–समोदयाक्ष्मा ।
कन्यार्धशब्दा शुभभूमिवैश्या रूक्षाऽल्पसङ्गप्रसवा शुभा च ॥७॥

सं०—कन्या पाण्डुः, द्विपात्, स्त्री, इत्यादि क्रमेण-स्पष्टम् ॥ ७ ॥

भा०—कन्याराशि पाण्डुवर्ण, द्विपद, स्त्रीराशि द्विस्वभाव, दक्षिण दिक्-स्वामिनी, रात्रिबली, वातप्रकृति, शीतलस्वभाव, सम उदयवाली, पृथ्वीतत्त्व, खण्डित शब्द, सुन्दर भूमिमें रहनेवाली, वैश्य जाति, कान्तिहीन, थोड़ा सङ्ग और थोड़ी सन्ततिवाली तथा शुभराशि है ॥ ७ ॥

पुमांश्चरश्चित्र-समोदयोष्णः प्रत्यङ्मरुत्–स्निग्ध–रवोनवन्यः ।
स्वल्पप्रजासङ्गम–शूद्र उग्रस्तुलो द्युवीर्यो द्विपदः समानः ॥ ८ ॥

सं०—तुलः-पुमान्, चरः, इत्यादि क्रमेण-स्पष्टार्थम् ॥ ८ ॥

भा०—तुलाराशि–पुरुष, चर-संज्ञक, अनेकवर्ण, सम उदय, गर्मस्वभाव, पश्चिम-दिक्-स्वामी, वायुतत्त्व, चिक्कण(कान्तिमान्) शब्दहीन, वनचारी, थोड़ी रति वाला, शूद्रजाति, पापराशि, दिनबली, द्विपद, और समान (मध्यमशरीरवाला) है।

स्थिरः सितः स्त्री जलमुत्तरेशो निशारवोनो बहुपात् कफी च ।
समोदयो वारिचरोऽतिसङ्गप्रजः शुभः स्निग्धतनुर्द्विजोऽलिः ॥ ९ ॥

सं०—अलिः (वृश्चिकः) स्थिरः, सितः, इत्यादि क्रमेण स्पष्टम् ॥ ९ ॥

भा०—वृश्चिक राशि–स्थिरसंज्ञक, श्वेतवर्ण, स्त्रीराशि, जलतत्त्व, उत्तर दिशाका स्वामी, रात्रिबली, शब्दहीन, बहुत पैरवाला; कफ-प्रकृति, सम उदय-वाला, जलमें रहने वाला, अधिक रति करनेवाला और अधिक सन्तानवाला, शुभराशि, चिक्कण शरीरवाला और ब्राह्मण जाति है ॥ ९ ॥

ना स्वर्णभाः शैल-समोदयोऽतिशब्दो दिनं प्राग् दृढ-रूक्ष-पीतः ।
राजोष्ण-पित्तो धनुरल्प-सूतिसङ्गो द्विमूर्तिर्द्विपदोऽग्निरुग्रः ॥१०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सं०—धनुः ना, स्वर्णभाः,-शैल-समोदयः इत्यादि क्रमेण स्पष्टम् ॥१०॥

भा०—धनुराशि पुरुष, सुवर्णसदृश कान्तिवाला, पर्वतचारी, सम-उदयवाला, अधिक शब्दवाला, दिन में बली, पूर्व दिशाका स्वामी, मजबूत शरीरवाला, कान्तिरहित, पीतवर्ण, क्षत्रिय जाति, गर्मस्वभाव, पित्तप्रकृति, अल्पसन्तति और अल्प रति करनेवाला, द्विस्वभाव, द्विपद, अग्नि तत्त्व और पाप राशि है ॥ १० ॥

मृगश्चरः क्ष्माऽर्धरवो यमाशा-स्त्री-पिङ्ग-रूक्षः शुभभूमि-शीतः ।
स्वल्पप्रजासङ्ग-समीर-रात्रिरादौ चतुष्पाद् विषमोदयो विट् ॥११॥

सं०—मृगः (मकरः)-चरः, क्ष्मा, अर्धस्व इत्यादि सुगमम् ॥ ११ ॥

भा०—मकर–चर राशि, पृथ्वी तत्त्व, खण्डित शब्दवाला, दक्षिणदिशाका स्वामी, स्त्रीराशि, पिङ्गलवर्ण, कान्तिरहित, सुन्दर भूमिमें रहनेवाला, शीतल स्वभाव, थोड़ी सन्तति और अल्प रति करनेवाला, वात-प्रकृति, रात्रिबली पूर्वार्ध (१५ अंश तक) चतुष्पद, 'बाद उसके जल-चर, विषम उदयवाला और वैश्य वर्ण है ॥ ११ ॥

कुम्भोऽपदो ना दिनमध्यसङ्गप्रसूः स्थिरः कर्बुर-वन्य-वायुः ।
स्निग्धोष्ण-खण्डस्वर-तुल्यधातुः शूद्रः प्रतीचो विषमोदयोग्रः ॥१२॥

सं०—कुम्भ-अपदः ना, इति क्रमेणाग्रे स्पष्टम् ॥ १२ ॥

भा०—कुम्भ राशि–चरणहीन, पुरुष, दिनबली मध्यम प्रकारके सङ्ग (रति) और प्रजावाला, स्थिर राशि, कर्बुर (चित्र) वर्ण, वनचारी, वायु तत्त्व, चिक्कन कान्तिवाला, उष्ण स्वभाव, खण्डित शब्दवाला, समान वात पित्त कफवाला, शूद्र जाति, पश्चिम-दिशाका स्वामी, विषम उदयवाला और क्रूर राशि है ॥ १२ ॥

मीनोऽपदः स्त्री कफ-वारि-रात्रि-र्निःशब्द-बभ्रुर्द्वितनुर्जलस्थः ।
स्निग्धोऽतिसङ्गप्रसवोऽपि विप्रः शुभोत्तराशेड् विषमोदयश्च ॥१३॥

सं०—मीनः–अपदः, स्त्री, कफ-वारि-रात्रिः, इति क्रमेणाग्रेऽपि ज्ञेयम् ॥१३॥

भा०—मीन–पैररहित, स्त्रीराशि, कफप्रकृति, जलतत्त्व, रात्रिबली, शब्दहीन, पिङ्गलवर्ण, द्विस्वभाव, जलचारी, कान्तिमान्, अधिक रति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करनेवाला और अधिक सन्ततिवाला, ब्राह्मण जाति, शुभराशि, उत्तर दिशाका स्वामी और विषम उदयवाला है ॥ १३ ॥

वि०—मेष, सिंह, धनु इन तीन राशियों का दृढ़ अङ्ग कहा गया है। अर्थात शेष राशियों को श्लथाङ्ग (ढीले शरीर) समझना ॥ १३ ॥

धराम्बुनोरग्निसमीरयोश्च वर्गे सुहृत्त्वं परतोऽरिभावः ।
चापान्त्यभागस्य चतुष्पदत्वं ज्ञेयं मृगान्त्यस्य जलेचरत्वम् ॥१४॥

सं०—धराम्बुनोः (च) अग्नि-समीरयोः वर्गे सुहृत्त्वं ज्ञेयम्, परतः अरि-भावः (शत्रुभावो ज्ञेयः), चापान्त्यभागस्य (धनुरुत्तरार्धस्य) चतुष्पदत्वं, मृगान्त्यस्य (मकरोत्तरार्धस्य) जलेचरत्वं ज्ञेयम् ॥ १४ ॥

भा०—पृथ्वी तत्त्व और जलतत्त्व वाले राशियों में परस्पर मित्रता रहती है। तथा अग्नितत्त्व और वायुतत्त्व वाले राशियोंमें भी परस्पर मैत्री समझना। तथा पृथ्वीतत्त्व और वायुतत्त्व राशियोंमें, एवं अग्नितत्त्व और जलतत्त्व राशियों में परस्पर शत्रुता है। धनु राशिके अन्तिम भाग (१६ अंश से ३० अंश तक) चतुष्पद है। और मकर राशिके अन्तिम भाग (उत्तरार्द्ध १६ से ३० तक) जल-चर समझना ॥ १४ ॥

वि०—जिन २ राशियों में मित्रता और शत्रुता कही गयी है, उनसे भिन्न तत्त्व की राशियों में उदासीनता समझना। इसका विचार–पिता पुत्र में, वर कन्या में, मालिक नौकर में इत्यादि दो दो में करना चाहिये ॥ १४ ॥

पित्तानिलौ धातुसमः कफश्च त्रिर्मेषतः सूरिभिरूहनीयाः ।
राजन्य-विट्-शूद्र-धरासुराश्च सर्वं फलं राश्यनुसारतः स्यात् ॥१५॥

सं०—मेषतः (क्रमेण) पित्तानिलौ धातुसमः कफः, इति त्रिः (त्रिरावृत्तितः) सूरिभिः ऊहनीयाः। (तथा) राजन्य-विट्-शूद्र-धरासुराश्च (क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र-विप्राः) (त्रिरावृत्य) सूरिभिः ऊहनीयाः। (एवं) राश्यनुसारतः सर्वं फलं स्यात् ॥१५॥

भा०—मेषादिक राशियों में क्रम से पित्त-प्रकृति १, वात-प्रकृति २, सम कफ पित्त वात ३, और कफप्रकृति ४, ये तीन आवृति करके समझना। तथा क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और ब्राह्मण ये चार जातियाँ मेषादि से तीन आवृत्ति करके समझना (जैसे पूर्व के प्रत्येक श्लोकों में कहा गया है)। उपरोक्त राशियों के स्वरूप गुण जाति दिशा काल स्थान आदि जो कहे गये हैं तदनुसार ही सब फल होते हैं ॥ १५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्पष्टार्थ राशिचक्र स्वरूप—

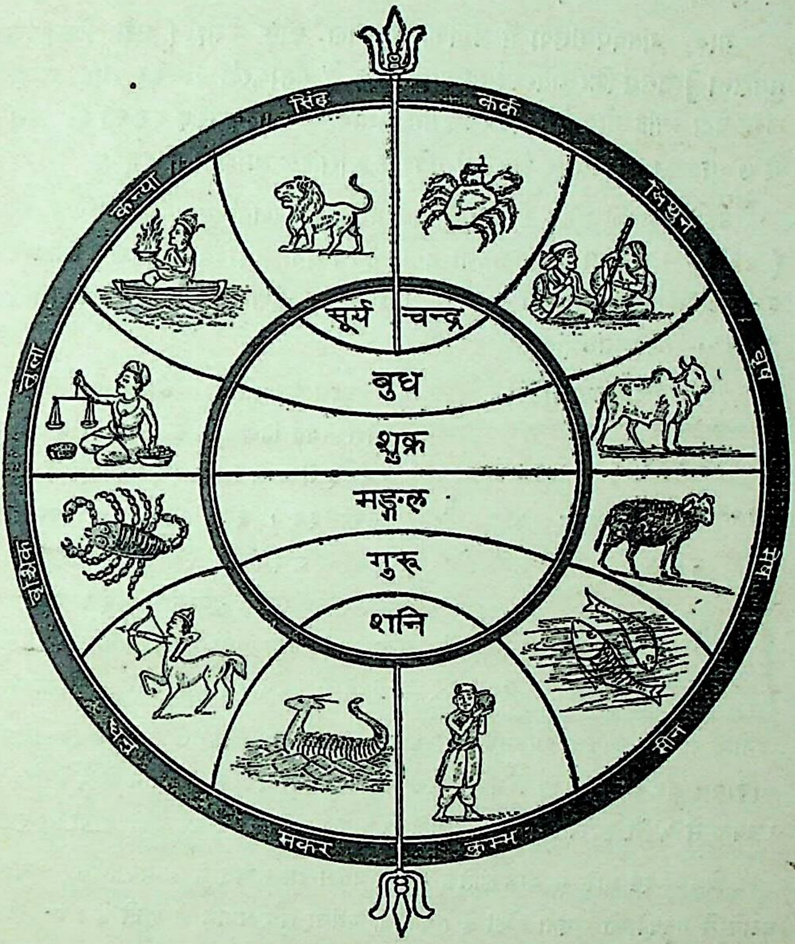

वर्षप्रवेश का दिनादि इष्टकालसाधन—

गताः समाः पादयुताः प्रकृतिघ्नसमागणात् ।
ख-वेदा ४० सघटीयुक्ता जन्मवारादिसंयुताः ।
अब्दप्रवेशे वारादि सप्ततष्टेऽत्र निर्दिशेत् ॥ १६ ॥

सं०—गताः समा पादयुताः (स्वचतुर्थांशसहिताः), प्रकृतिघ्नसमागणात्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

(एकविंशतिगुणात् गतवर्षवृन्दात्), ख-वेदाप्तघटीयुक्ताः (ते पुनः) जन्मवारादिसंयुताः, अत्र सप्ततष्टे, अब्दप्रवेशे वारादि, निर्दिशेत् ॥ १६ ॥

भा०—गतवर्ष-संख्या में उसीके चतुर्थांश जोड़ देना [उसे दिनादिक समझना] उसमें फिर गत-वर्ष-संख्या को २१ से गुनाकरके ४० का भाग देकर लब्ध-घटी आदि जोड़ देना फिर उसमें जन्मके वारादिक जोड़ कर जो हो उस में ७ सात का भाग देकर शेष वर्ष प्रवेशके वारादिक समझना ॥ १६ ॥

उदा०—शुभ सम्वत् १९५७ चैत्रकृष्णनवम्यां रविवासरे श्रीसूर्योदयादिष्टघटीपलेषु (४४।३५) बाबू–श्रीजगन्नाथशर्मणो जन्माऽभूत्। सूर्यः ११।१२।२२।१७ दिनमानम् ३०।१८ भयातम् ३४।३९। भभोगः ६७।२३। पूर्वाषाढ़ा ९।५६॥ परिघयोगे, २९।३५। वृश्चिकलग्नम् ॥

जन्मलग्नकुण्डली—

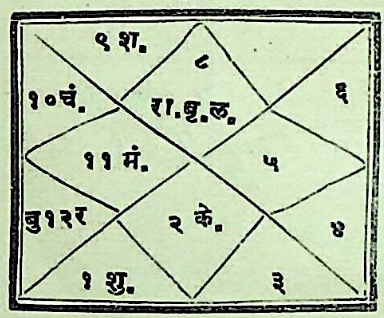

इस कुण्डली का सं० १९९३ में वर्ष-प्रवेश समय निकालना है तो वर्तमान सं० १९९३ में जन्म सं० १९५७ घटाने से गतवर्ष ३६। इसमें स्वचतुर्थांश दिनादि ९।०।० जोड़ने से ४५।०।०, फिर इसमें गतवर्ष को २१ से गुनाकर ७५६ इसमें ४० का भाग देकर लब्ध-घटी पल १८।५४ जोड़ने से ४५।१८।५४ इसमें जन्मकालके दिनादि इष्टकाल १।४४।३५ जोड़ने से ४७।३।२९ हुआ इसको ७ से भाग देकर शेष ५।३।२९ यह वर्षप्रवेश का दिनादि इष्टकाल हुआ। अर्थात् दिन के स्थान में ५ है अतः रविवार से ५ वाँ बृहस्पतिवार को ३ घटी २९ पल पर ३७ वाँ वर्ष प्रवेश होगा ॥१६॥

वि०—इष्ट-शाके में जन्मकालिक शाके, अथवा इष्ट सम्वत् में जन्मकालिक सम्वत् घटाने से गतवर्ष की संख्या होती है। वर्ष की गणना सौर-प्रमाण से होती है। इसलिये सौरमास से जब वर्ष पूरा होता है तभी अग्रिम वर्ष का प्रवेश होता है। अतएव जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य के राश्यादि समान जिस समय स्पष्ट सूर्य के राश्यादि हो वही वास्तव वर्ष प्रवेश का समय होता है। अतः एक वर्ष में सावन दिनादि संख्या (३६४।१५।३१।३०) सात से तष्टित करने पर (१।१५।३१।३०) एक वर्ष की दिनादिक ध्रुवा है, इस ध्रुवा को गतवर्ष-संख्या से गुनाकर उसमें जन्म वारादिक जोड़कर सात से तष्टित करने से वर्षप्रवेश का वारादि होता है। अथवा इसके अनुसार अभ्यास के लिये दोहा—

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्ष सवाया वार, पुनि, घटी वर्ष के आध।
ड्यौढ़ा सम पल जोड़ि कर, वर्ष ध्रुवा लो साध।
जन्म-दिनादिक जोड़ि पुनि, नगतष्टित करि शेष।
वार - घटी - पल में सदा, जानो वर्ष-प्रवेश॥

इसी आशयका संस्कृतपद्य—

सस्वांघ्रयब्दसमो वारस्तथाब्दार्धसमा घटी सस्वकार्धाब्दतुल्यानि पलान्येतद्युतिर्ध्रुवः॥
जन्म-वारादिसंयुक्तो ध्रुवस्सप्तविभाजितः शेषतुल्यें विजानीयाद् दिनाद्येऽब्दप्रवेशनम्॥

अर्थात्—गत-वर्ष की संख्या जितनी हो उसको सवाया करके दिनादिक, वर्ष-संख्या को आधा कर घट्यादि और उसी वर्ष-संख्या को ड्यौढ़ा कर पलादिक होता है इन सबों को जोड़ कर गत-वर्ष की ध्रुवा होती है, उसमें जन्मवारादिक जोड़ कर सात के भाग देने से वर्ष-प्रवेश का वारादिक होता है।

जैसे—गतवर्ष ३६ का सवाया दिन ४५। ०। ०
,, आधा घटी ०।१८। ०
,, ड्यौढ़ा पल ०। ०।५४

जोड़ने से गतवर्ष का ध्रुवादिनादि = ४५।१८।५४
जन्मेष्टकाल दिनादि = १।४४।३५

जोड़ने से =४७। ३।२९ दिन के स्थान में ७ का भाग देने से शेष = ५।३।२९ वर्ष प्रवेश का दिनादि पूर्वतुल्य ही हुआ।

अत्रोपपत्तिः—एकस्मिन् सौरवर्षे भास्करोक्तसावनदिनाद्यम् ३६५।१५′।३०″।२२‴ तत्र क्रियालाघवार्थमाचार्येण किञ्चिदधिकं गृहीतम् ३६५।१५′।३१″।३०‴ वाराः सप्तैवातः सप्ततष्टितम् १।१५′।३१″।३०‴ अतोऽनुपातेन गतसौरवर्ष-सम्बन्धिसावनदिनाद्याम् = गव (१।१५′।३१″।३०‴) $= (१ + \frac{१५}{६०}।३१'' + \frac{३०}{६०})$

$$= गव \left(१ + \frac{१}{४} + \frac{६३}{२}'' \right) \qquad = गव \left(१ + \frac{१}{४} + \frac{६३'}{२ \times ६०} \right)$$

$$= गव \left(१ + \frac{१}{४} + \frac{\overset{\text{दि. घ.}}{२१}}{४०} \right) = गव१ + \frac{गव\ १}{४} + \frac{गव\ २१'}{४०}$$

एतज्जन्मसमयादग्रतो गतवर्ष-सम्बन्धिदिनाद्यमतो जन्मकालिकवाराद्येन सहितं सृष्ट्यादितो वाराद्यम्, सप्ताधिके सप्ततष्टितमत उपपन्नम्॥ १६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्ष प्रवेशकालिक तिथिसाधन—

शिवघ्नोऽब्दः स्वखाद्रीन्दुलवाढ्यः खाग्निशेषितः ।
जन्मतिथ्यन्वितस्तत्र तिथावब्दप्रवेशनम् ॥ १७ ॥

सं०—अब्दः शिवघ्नः स्वखाद्रीन्दुलवाढ्यः जन्मतिथ्यन्वितः खाग्निशेषितः, (त्रिंशद्भक्तावशिष्टः) तत्र तिथौ अब्दप्रवेशनं (वर्षप्रवेशः) स्यात् ॥ १७ ॥

भा०—गत वर्ष को ११ से गुना कर गुणनफल में अपना १७० वाँ भाग जोड़ कर उसमें जन्मकालिक तिथि संख्या मिला कर ३० का भाग देने से जो शेष बचे उस तिथि में वर्षप्रवेश समझना ॥ १७ ॥

वि०—इस प्रकार तिथि के आनयन में कदाचित् १ तिथि का अन्तर भी हो सकता है, इसलिये १ तिथि आगे अथवा पीछे वर्ष प्रवेश दिन में जो तिथि हो वही ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि वर्ष-प्रवेश का दिन वास्तव ही आता है ॥ १७ ॥

उदा०—गत वर्ष ३६ को ११ से गुना कर ३९६ इसमें इसी का १७० वां भाग 'लब्धि' २ जोड़ने से ३९८ इसमें जन्मतिथि (कृष्णपक्ष की दशमी की संख्या) २५ जोड़ने से ४२३ इसमें ३० का भाग देकर शेष ३ शुक्लपक्ष की तृतीया हुई । परन्न पञ्चाङ्ग में देखने से तृतीया बुधवार को है और वारानयन-विधि से गुरुवार आया है उस दिन चतुर्थी है, अतः वर्षप्रवेश की तिथि चतुर्थी ही सिद्ध हुई ॥ १७ ॥

अत्रोपपत्तिः—एकस्मिन् सौरवर्षे तिथिप्रमाणम् ३७१।३′।५२″।३०‴ त्रिंशता तष्टितम् ११।३।५२।३० अतोऽनुपातेन गतसौरवर्ष-सम्बन्धि तिथ्यादिकम्

$$= \text{गव} (११।३'।५२''।३०''')$$

$$= \text{गव} (११।३'।५३'') = \text{गव} \left(११ + ३' + \frac{५३}{६०}' \right) = \text{गव} \left(११ + \frac{२३३}{६०}' \right)$$

$$= \text{गव} \left(११ + \frac{२३३}{६० \times ६०} \right) = \text{गव} \left(११ + \frac{११}{१७०} \right)$$ स्वल्पान्तरात् । एतज्जन्मकालिकतिथ्यादिना सहितञ्चेत् तदा शुक्लप्रतिपदादितस्तिथ्यादिकं स्यात् । तिथयस्त्रिंशत् तेन त्रिंशत्तष्टितमित्युपपन्नम् ॥१७॥

प्रसङ्गवश-जन्मनक्षत्र और योग पर से वर्ष का नक्षत्र और योग का ज्ञान—

"अब्दो दशगुणो हीनः खवेदाश्विलवैर्निजैः ।
द्विधा जन्मभयोगाढ्यो भतष्टोऽब्दे भयोगकौ ॥"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गतवर्ष-संख्या को १० से गुना कर उसमें अपना २४०वाँ भाग घटा कर फिर उसे दो स्थान में रख कर एक स्थान में जन्मनक्षत्र दूसरे स्थान में जन्मयोग की संख्या जोड़ कर पृथक् २७ का भाग देकर जो शेष बचे वह वर्ष प्रवेश का नक्षत्र तथा योग होता है।

उदा०—गत-वर्ष ३६ को १० से गुना कर ३६० इसमें जन्म-नक्षत्र की संख्या २० मिला कर ३८० हुआ इसमें २७ से भाग देकर शेष २ वर्ष-प्रवेशकालिक भरणी नक्षत्र हुआ।

फिर उसी दशगुणित वर्ष संख्या ३६० में जन्मकालिक योग की संख्या १९ जोड़ कर २७ का भाग देकर शेष १ वर्ष प्रवेश दिन का विष्कम्भ योग हुआ।

जन्मलग्न से वर्षप्रवेशकालिक लग्न का ज्ञान—

"खरामनन्दघ्नगताब्दवृन्दात् त्रिघ्नाब्दवस्वंशयुतात् त्रिशत्या।
अवाप्तराश्यादियुतं स्वजन्म लग्नं भवेदब्दविवेशलग्नम्॥"

गतवर्ष संख्या को ९३० से गुना कर उसमें त्रिगुणित गतवर्ष के अष्टमांश जोड़कर ३०० का भाग देकर लब्धराश्यादि को जन्मलग्न में जोड़ने से वर्ष का लग्न हो जाता है। यदि जोड़ने से संख्या १२ से अधिक हो तो उसे १२ से तष्टित कर लेना चाहिये॥

उदाहरण—गतवर्ष संख्या ३६ को ९३० से गुना कर ३३४८० इसमें त्रिगुणित गतवर्ष १०८ के अष्टमांश १३।३० मिला कर ३३४९३।३० में ३०० के भाग देकर राश्यादि १११।१९।२१।० में जन्मलग्न संख्या ८ जोड़ कर ११९।१९।२१।० इसे १२ से तष्टित करने पर ११।१९।२१।० वर्षकालिक लग्न हुआ। परञ्च स्पष्टलग्नानयन ['तत्काले सायनार्कस्य' इत्यादि आगे की] रीति से मेष लग्न आता है। इससे स्पष्ट है कि जन्मकालिक नक्षत्र, योग और लग्न से वर्षकालिक नक्षत्र, योग और लग्न में तिथि के समान ही १ अन्तर होता है। इसलिये सूक्ष्म प्रकार से ही लग्न आदि बना कर फल कहना चाहिये।

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नो खषड्हृता।
लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवेद्ग्रहः॥१८॥

सं०—गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नी (ग्रहगतिर्गुणिता) खषड्हृता लब्धं अंशादिकं 'पंक्तिग्रहे क्रमेण' शोध्यं, योज्यं 'तदा' स्पष्टो ग्रहो भवेत्॥१८॥

भा०—गत दिनादि (ऋण चालन) तथा एष्य दिनादि (धन चालन)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से ग्रहों की गति 'कला विकला' को गुनाकर ६० का भाग देने से लब्धि अंशादि को पंक्तिस्थ ग्रहों में क्रम से ऋण चालन में घटाने, और धन चालन में जोड़ने से तात्कालिक स्पष्ट ग्रह होते हैं ॥ १८ ॥

वि०—पञ्चाङ्ग में जिस समय का स्पष्ट ग्रह बना रहता है वह पंक्तिकाल कहाता है। यदि पंक्तिकाल ही इष्टकाल भी हो तो वे ही ग्रह इष्टकाल के भी होते हैं। यदि पंक्तिकाल से इष्टकाल आगे हो तो इष्टकाल के दिनादि में पंक्ति के दिनादि को घटा कर शेष एष्य दिनादि (धन चालन) कहाता है। यदि पंक्तिकाल से पहिले ही इष्टकाल हो तो पंक्ति दिनादि में इष्टदिनादि घटाने से शेष गत दिनादि (ऋण चालन) कहाता है। अभ्यासार्थ पद्य—

"ऋणाख्यं चालनं ज्ञेयमग्रपंक्तीष्टकालयोः ।
अन्तरं तु धनाख्यं स्यात्पृष्ठपंक्तीष्टकालयोः ॥" इति ॥

उदा०—चैत्रशुक्ल ४ गुरुवार इष्ट घटी ३।२९ है। और चैत्रशुक्ल ३ बुधवार की पंक्ति घटी ४५।७ है। यहाँ पंक्ति से इष्टकाल आगे है। अतः इष्ट के दिनादि ५।३।२९ में पंक्ति के दिनादि ४।४५।७ को घटाने से ०।१८।२२ यह धन चालन (एष्य-

पंक्ति—

चै. शु. ३ बुधे ४५।७ मि. मा.

सू.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	के.
११	०	११	८	१०	१०	२
१२	०	२	२	१८	२०	१७
४	३९	४३	५८	३	४४	२९
६	५७	२४	५४	२१	७	५७
५९	४४	११०	३	७३	७	३
२६	१९	१७	५	५६	४३	११

गणित क्रिया प्रदर्शन—

(०।१८।२२)५९′ = ०।१०६२।१२९८

(०।१८।२२)×२६″ = ०।४६८।५७२

योग करने से = ०′।१०६२।१७६६।५७२

१८ २९ ९ ५४०

१८′।१०९१ १७७५ ३२

६० १२०

४९१ ५७५

४८० ५४०

११″ ३५

साठ से सवर्णन कर कलादि १८′। ११″ इसमें ६० का भाग देकर अंशादि ०।१८।११

पंक्तिस्थ सूर्य राश्यादि ११।१२।०४।०६

जोड़ने से स्पष्ट सूर्य ११।१२।२२।१७

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिनादि) हुआ। अब एष्य दिनादि ०।१८।२२ से सूर्य की गति 'कला विकला' ५९।२६ को गुनाकर गोमूत्रिका क्रम से (अर्थात् विकलात्मक खण्ड से गुने हुए फल को एक स्थान आगे बढ़ा कर रखकर) योग करनें से ०।१०६२।१७६६।५७२ साठ ६० से सवर्णन करने पर कलादि १८।११ इसमें ६० का भाग देने से अंशादि ०।१८।११ इसको 'धन चालन होने के कारण' पंक्तिस्थ सूर्य के अंशादि में जोड़ने से तात्कालिक स्पष्ट सूर्य ११।१२।२२।१७ हुआ। इसी प्रकार मंगलादि ग्रहों की गति कला को चालन से गुनाकर जोड़ने से स्पष्ट होते हैं।

वि०—जो ग्रह वक्री हो उसमें विपरीत करने [अर्थात् धन चालन फल को घटाने से और ऋण चालन फल को जोड़ने] से स्पष्ट होता हैं। इसी लिये राहु केतु के सर्वदा वक्रगति होने के कारण उल्टा संस्कार किया जाता है। अतः यहाँ धन चालन फल को घटाने से केतु स्पष्ट किया गया है॥

इस प्रकार—तात्कालिक स्पष्ट ग्रह चक्र—

सू.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	के.	चं.	ग्र.
११	०	११	८	१०	१०	२	०	राश्यादि
१२	०	३	२	१८	२०	१७	२०	
२२	५३	१७	५९	२५	४६	२८	४९	
१७	३१	९	५१	५९	२९	५९	२	
५९	४४	११०	३	७३	७	३	८५०	गति
२६	१९	१७	५	५६	४३	११	४९	

वि०—अधिक गति होने के कारण चालन से स्पष्ट चन्द्रमा ठीक नहीं आता है। इसलिये तात्कालिक भयात और भभोग पर से ही चन्द्रमा स्पष्ट होता है। अतः भयात और भभोग की सरल परिभाषा—

नक्षत्रारम्भतः स्वेष्टकालं यावत् गतं भवेत्।
घट्यादिकं भयातं तत्, भस्य भोगो भभोगकः॥

अर्थ—नक्षत्र जब से आरम्भ होता है तब से इष्टकाल पर्यन्त जितना दण्ड पल व्यतीत हुआ हो वह भयात, तथा नक्षत्र के आरम्भ से अन्त पर्यन्त [सम्पूर्ण मान] भभोग कहाता है। इस प्रकार पञ्चाङ्ग से भयात और भभोगं का ज्ञान सुलभ है॥१८॥

उपपत्तिः—यद्येकेन दिनेन ग्रहगतिकला लभ्यन्ते तदा मिश्रकालेष्टकालान्तररूपेण गतैष्यदिवसाद्येन किमित्यनुपातेन लब्धा गतैष्यदिवसादिसम्बन्धिन्यो ग्रहगतिकलास्ताः षष्टिभक्ताः फलमंशाद्यम् $= \frac{\text{ग्र ग क} \times \text{ग ए. दि}-}{१ \times ६०}$ इति गतदिवसाद्युत्पन्नफलं मिश्रकालिकग्रहेषु ऋणमेष्यदिवसाद्युत्पन्नफलन्धनं कार्यन्तदेष्टकाले ग्रहा भवन्ति। अत उपपन्नम्॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भयात और भभोग पर से चन्द्रसाधन—

खषड्घ्नं भयातं भभोगोद्धृतं तत् खतर्कघ्नधिष्ण्येषु युक्तं द्विनिघ्नम् ।
नवाप्तं शशी भागपूर्वस्तु भुक्तिः खखाभ्राष्टवेदा भभोगेन भक्ताः ॥१९॥

सं०—भयातं खषड्घ्नं भभोगोद्धृतं 'यत् फलं' तत् खतर्क-[६०] घ्नधिष्ण्येषु युक्तं, द्विनिघ्नं, नवाप्तं भागपूर्वः शशी (चन्द्रः) स्यात् । तु (पुनः) खखाभ्राष्टवेदा ४८००० भभोगेन भक्ता भुक्तिः (भवति) ॥ १९ ॥

भा०—भयात को ६० से गुना कर भभोग का भाग देने से जो लब्ध हो उसको ६० से गुणित गत-नक्षत्र की संख्या में जोड़ना, फिर उसे २ से गुनाकर ९ का भाग देने से अंशादि स्पष्ट चन्द्रमा होता है । और ४८००० में भभोग का भाग देने से चन्द्रमा की गति स्पष्ट होती है ॥ १९ ॥

उदा०—भयात ३१।४०। भभोग ५६।२५। अब भयात के एकजातीय [पलात्मक] १९०० को ६० से गुना करने से ११४००० इसमें भभोग के एक जातीय पल ३३८५ का भाग देने से ३३।४०।४१ इसमें गत नक्षत्र अश्विनी की संख्या १ को ६० से गुनाकर ६० जोड़ने से ९३।४०।४१ इसको २ से गुनाकर १८७।२१।२२ इसमें ९ का भाग देकर लब्धि अंशादि २०।४९।२ चन्द्रमा हुआ । अतः स्पष्ट चन्द्रमा राश्यादि ०।२०।४९।२ हुआ । तथा भभोग को ६० से गुनाकर एक जातीय बनाने के कारण ४८००० को भी ६० से गुनाकर २८८०००० इसमें भभोग ५६।२५ के एक जातीय ३३८५ का भाग देकर लब्धि ८५०।४९ चन्द्रमा की स्पष्ट गति हुई ॥ १९ ॥

उपपत्तिः—अधिकगतिवशाच्चन्द्रस्यानयनन्तद्भुक्तनक्षत्रेभ्यः क्रियते—यदि भभोगघटीभिरेकं नक्षत्रं लभ्यते तदा भयातघटीभिः किमित्यनुपातेन लब्धं वर्तमाननक्षत्रस्य गतावयवरूपम् $= \frac{१ \times भया}{भभो}$ । इदं गताश्विन्यादि—नक्षत्रसहितं जातश्चन्द्रभुक्ताश्विन्यादिनक्षत्रमानम् $= गन + \frac{२ \times भया}{भभो}$ । ततोऽनुपातो यदि सप्तविंशतिनक्षत्रैश्चक्रांशा लभ्यन्ते तदा चन्द्रभुक्तनक्षत्रैः किमित्यागताश्चन्द्रभुक्तांशाः—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

$$= \frac{३६० \times \left(गन \times \frac{१ \times भया}{भभो} \right)}{२७} = \frac{६ \times ६० \left(गन + \frac{१ \times भया}{भभो} \right)}{२७}$$

$$= \frac{२ \left(६० \, गन + \frac{६० \, भया}{भभो} \right)}{९}$$

अत उपपन्नं भागपूर्वं इत्यन्तम् । अथ भुक्त्यानयनम्—तत्र चक्रकलाः सप्तविंशत्या भक्ता लब्धा मध्यमानेनैकनक्षत्रस्य भोगकला: $= \frac{२१६००}{२७} =$ ८०० ततोऽनुपातो यदि भभोगघटीभिरष्टौ शतानि कला लभ्यन्ते तदा षष्टिघटीभिः किमित्यागता व्यवहारयोग्या तात्कालिकी चन्द्रगतिः $= \frac{८०० \times ६०}{भभो} = \frac{४८०००}{भभो}$ अत उपपन्नम् ॥१९॥

दशम लग्नसाधनार्थ नत-उन्नत साधन—

पूर्वं नतं स्याद्दिनरात्रिखण्डं दिवानिशोरिष्टघटीविहीनम् ।
दिवानिशोरिष्टघटीषु शुद्धं द्युरात्रिखण्डं त्वपरं नतं स्यात् ॥२०॥

सं०—दिनरात्रिखण्डं (दिनार्धं रात्र्यर्धं च) 'क्रमात्' दिवानिशोः इष्ट-घटी-विहीनं 'चेत्' तदा पूर्वं नतं स्यात् । 'चेत्' दिवानिशोः इष्टघटीषु क्रमेण, द्युरात्रिखण्डं शुद्धं तदाऽपरं (पश्चिमं) नतं स्यात् ॥ २० ॥

भा०—दिनार्ध में दिनगत घटी और रात्र्यर्ध में रात्रिगत घटी घट जाय तो शेष पूर्व नत, तथा दिनगत इष्ट-घटी में ही दिनार्ध, और रात्रिगत इष्टघटी में रात्र्यर्ध घट जाय तो पश्चिम नत होता है ॥ २० ॥

उदा०—यहाँ दिनार्ध १५।९ से दिनगत ३।२९ अल्प है, इसलिये दिनार्ध में इष्टघटी घटाने से ११।४० यह दिवा पूर्व नत हुआ ॥ २० ॥

उपपत्तिः—ऊर्ध्वयाम्योत्तरवृत्तादुदयक्षितिजावधिः पूर्वकपालस्तथास्तक्षितिजावधिः पश्चिमकपालः । एवमधोयाम्योत्तरवृत्तादस्तक्षितिजावधिः पूर्वकपालस्तथोदयक्षितिजावधिः पश्चिमकपालः । क्षितिजादूर्ध्वस्थे रवौ दिनमधःस्थिते रात्रिरिति बालैरपि ज्ञायते । अथ याम्योत्तरवृत्ताद्ग्रहावध्यहोरात्रवृत्ते नतं, क्षितिजावधिदिनार्द्धम् । अधोयाम्योत्तरवृत्तात् क्षितिजावधि रात्र्यर्द्धम् । दिवोदयक्षितिजाद् ग्रहावधिर्दिनगतेष्टकालः,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रात्रावस्तक्षितिजाद् ग्रहावधिको रात्रिगतेष्टकालः । अतो दिवा पूर्वकपालस्थे ग्रहे दिनार्द्धा-दिष्टकालोऽल्पस्तेनेष्टकालोनन्दिनार्द्धं दिवापूर्वनतम् । तथा पश्चिमकपालस्थे ग्रहे दिनार्द्धा-दिष्टकालोऽधिकस्तेन दिनार्द्धोन इष्टकालो दिवा पश्चिमनतम् । एवं रात्रावपि नतवासना ज्ञेयेत्युपपन्नम् ॥ २० ॥

वि०—लग्नसाधन के लिये अयनांश साधन प्रकार—

"एकद्विवेदोनशकस्त्रिनिघ्नो भक्तो द्विशत्याऽयना भागकाः स्युः ।
अंशीकृतोऽर्कस्त्रिगुणो नखाप्तस्तावन्मिताभिर्विकलाभिराढ्याः ॥"

अर्थ—शाके में ४२१ घटा कर शेष को ३ से गुना कर २०० का भाग देने से वर्षादि में अयनांश होते हैं । तथा सूर्य को अंशात्मक बना कर ३ से गुना कर २० का भाग देने से जो लब्धि हो उतनी विकला अयनांश में मिलाने से इष्टकालिक अयनांश होते हैं ।

उदा०—शाके १८५७ में ४२१ घटाकर शेष १४३६ को ३ से गुनाकर ४३०८ इसमें २०० का भाग देने से लब्ध अंशादि २१।३२।२४ यह वर्षारम्भकालिक अय-नांश हुआ इसमें तात्कालिक सूर्य ११।१२।२२।१७ के अंश ३४२ को ३ से गुनाकर १०२६ इसमें २० का भाग देने से लब्धि विकला ५१ वर्षारम्भकालिक अयनांश में जोड़ने से तात्कालिक अयनांश २१।३३।१५ हुए ॥ २० ॥

अथ लग्नानयन—

तत्काले सायनार्कस्य भुक्तभोग्यांशसङ्गुणात् ।
स्वोदयात्खाग्नि ३० लब्धं यद्भुक्तं भोग्यं रवेस्त्यजेत् ॥२१॥
इष्टनाडी-पलेभ्यश्च गतगम्यान्निजोदयान् ।
शेषं खत्र्या ३० हतं भक्तमशुद्धेन लवादिकम् ॥२२॥
अशुद्ध-शुद्धभे हीन-युक्तनुर्व्ययनांशकम् ।

सं०—तत्काले सायनार्कस्य भुक्तभोग्यांशसङ्गुणात् स्वोदयात् खाग्नि (३०) लब्धं (त्रिंशदाप्तं पलादिकं) यत् रवेः भुक्तं, भोग्यं वा 'तत्' इष्टनाडी-पलेभ्य-स्त्यजेत् 'तथा' गतगम्यान् निजोदयान् च त्यजेत् । शेषं खत्र्याहतं अशुद्धेन भक्तं 'लब्धं' लवादिकं अशुद्धशुद्धभे 'क्रमेण' हीनयुक् 'तत् पुनः' व्ययनांशकं (अय-नांशहीनं) तनुः (लग्नं) भवति ॥ २१–२२–½ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—तात्कालिक स्पष्ट सूर्य में अयनांश जोड़ने से सायन सूर्य होता है। यदि भुक्त प्रकार से लग्न बनाना हो तो सायन सूर्य के भुक्तांश से, यदि भोग्य प्रकार से लग्न बनाना हो तो भोग्यांश से, उसी राशि के स्वदेशीय उदय पलको गुनाकर ३० का भाग देने से क्रम से सूर्य का भुक्त पल और भोग्य पल होता है। उसको पलात्मक इष्टकाल में घटाना, फिर शेष पलों में भुक्त प्रकार में गत राशियों के उदयमान, भोग्य प्रकार हो तो गम्य (अग्रिम) राशियों के उदयमान घटावै, जिन राशियों के मान घट जाँय वे शुद्ध संज्ञक, तथा जिसका मान न घटै वह अशुद्ध संज्ञक समझना। अन्त में इष्टकाल के बचे (शेष) पलों को ३० से गुनाकर अशुद्ध राशि के स्वोदयमान का भाग देने से लब्धि अंशादिको 'भुक्त प्रकार हो तो अशुद्ध राशि की संख्या में घटाने से, यदि भोग्य प्रकार हो तो शुद्धराशि की संख्या में जोड़ने से, जो हो उसमें अयनांश घटाने से लग्न हो जाता है ॥२१–२२॥

वि०—सायन सूर्य के भुक्तांश से लग्नसाधन भुक्तप्रकार, और भोग्यांश से भोग्य-प्रकार कहलाता है। यदि ३० घटी से अल्प इष्टकाल हो तो उसके द्वारा भोग्य प्रकार, और ३० से अधिक इष्टकाल हो तो ६० में घटाकर शेष को इष्टकाल मानकर भुक्तप्रकार से लग्न बनाने में सुलभता और सूक्ष्मता होती है–कहा भी है—

"लग्नं सूर्योदयादिष्ट-दण्डैर्भोग्यप्रकारतः ।
षष्टिशुद्धेष्टदण्डैस्तु साध्यं भुक्तप्रकारतः ॥" इति ।

इसका विशेष विवरण और लङ्कोदय स्वोदय आदि साधन सोदाहरण 'लग्नप्रदीप' में देखो ॥

लङ्कोदय			मिथिलोदय		
मेष	२७८	मीन	मेष	२१८	मीन
वृष	२९९	कुम्भ	वृष	२५१	कुम्भ
मिथुन	३२३	मकर	मिथुन	३०३	मकर
कर्क	३२३	धन	कर्क	३४३	धन
सिंह	२९९	वृश्चिक	सिंह	३४७	वृश्चिक
कन्या	२७८	तुला	कन्या	३३८	तुला

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदाहरण—यहाँ इष्टकाल ३।२९ है इसलिये भोग्य प्रकार से ही लग्न बनाने में सूक्ष्मता होगी। अतः स्पष्टसूर्य ११।१२।२२।१७ में अयनांश २१।३३।१५ जोड़ने से सायन सूर्य ०।३।५५।३२ इसके भोग्यांश २६।४।२८ इसको मेष के स्वोदय (मिथिलोदय) २१८ से गुना करने से ५६८४।१३।४४ इसमें ३० का भाग देने से लब्ध भोग्य पल १८९।२८।२७ इसको इष्टघटी ३।२९ पलात्मक २०९ में घटाने से शेष १९।३१।३३ इसमें गम्य (मेष के अग्रिम) वृष का मान २५१ नहीं घट सकता है, इसलिये वृष अशुद्ध संज्ञक और मेष शुद्धसंज्ञक हुआ। अब इष्टशेष १९।३१।३३ को ३० से गुनाकर ५८५।४६।३० इसमें अशुद्ध (वृष) के उदय २५१ का भाग देने से लब्ध अंशादि २।२०।२ इसमें शुद्ध राशि (मेष) की संख्या १ राशि जोड़ने से १।२।२०।२ फिर इसमें अयनांश २१।३३।१५ घटाने से राश्यादि लग्न ०।१०।४६।४७ हुआ ॥२१-२२॥

उपपत्तिः—तत्र लगतीति लग्नमिति व्युत्पत्त्येष्टकाले गर्भोदय-क्षितिजे क्रान्तिवृत्तस्य यः प्रदेशो लग्नस्तदेव लग्नम्। तस्य मेषादितो राश्यादिज्ञानं सावनेष्टकालतात्कालिकार्कज्ञानेन क्रियते:-क्षितिजादूर्ध्वस्थे रवौ रविलग्नयोरन्तरे क्रान्तिवृत्ते रवेर्भोग्यांशा लग्नस्य भुक्तांशास्तदन्तर्वर्तिराश्यंशाश्च वर्तन्ते। तथाऽर्कात् क्षितिजं यावदहोरात्रवृत्ते सावनेष्टकालस्तस्मिन्-रवेर्भोग्यपलानि लग्नस्य भुक्तपलानि तदन्तरालराश्युदयपलानि च वर्तन्ते। तत्र रवेर्भोग्यपलज्ञानार्थमनुपातो-यदि त्रिंशदंशैरर्काधिष्ठितराश्युदयपलानि लभ्यन्ते तदा रविभोग्यांशैः किमिति लब्धानि रवेर्भोग्यपलानि$=\frac{\text{ररास्व} \times \text{रभो अं}}{३०}$ एतानीष्टनाडीपलेभ्यः शोध्यानि शेषपलेभ्यो यावतां राशीनामुदयमानानि शुद्ध्येयुस्तानि शोध्यानि यस्य राशेरुदयमानं न शुद्ध्येत् सोऽशुद्धसंज्ञकस्तथावशिष्टपलानि लग्नस्य भुक्तानि ताभ्यो लग्नभुक्तांशानयनमनुपातेन—यद्यशुद्धराश्युदयपलैस्त्रिंशदंशा लभ्यन्ते तदा लग्नभुक्तपलैः शेषरूपैः किमिति लब्धा लग्नभुक्तांशाः$=\frac{३०\times\text{शेष}}{\text{अराउ}}$एतत्सहिता शुद्धराशिसंख्या जातं नाडीक्रान्तिवृत्तसम्पातरूपमेषादितो लग्नस्य राश्यादिकमानम्। अत उपपन्नम् भोग्यप्रकारेण लग्नानयनम्। अथ यदि लग्नादग्रतो (क्षितिजादधो) रविर्वर्तते तदा लग्नरव्यन्तरे क्रान्तिवृत्ते लग्नस्य भोग्यांशा रवेर्भुक्तांशास्तदन्तरालराश्यंशाश्च वर्तन्ते। तथाऽहोरात्रवृत्तेऽर्कात्क्षितिजावधिरात्रिशेषेष्टकाले लग्नभोग्यपलानि रविभुक्तपलानि तदन्तरालराश्युदयपलानि च वर्तन्ते। तत्र पूर्ववदनुपातेन रवेर्भुक्तपलानि$=\frac{\text{रराउ} \times \text{रभुअं}}{३०}$, एतानीष्टपलेभ्यः शोध्यानि तथा रविलग्नान्तरालराश्युदयपलानि च शोध्यानि शेषं लग्नस्य भोग्यपलमानमतोऽनुपातेन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्नस्य भोग्यांशाः = $\frac{३० \times शेष}{अराउ.}$ एतानशुद्धराशौ विशोध्य जातं सायनमेषादितो लग्नराश्यादिकमिदमयनांशोनितञ्जातं निरयणमेषादितो राश्यादिकं लग्नम्। आद्याचार्योदितानि फलानि निरयणमेषादित एवातो व्ययनांशकरणं सयुक्तिकम्। अतो व्ययनांशकमित्यन्तमुपपन्नम्।

दशमलग्नानयन—

एवं लङ्कोदयैर्भुक्तं भोग्यं शोध्यं पलीकृतात् ॥२३॥
पूर्वपश्चान्नतादन्यत्प्राग्वत्तद्दशमं भवेत् ॥२३½॥

सं०—एवं लङ्कोदयैः भुक्तं, भोग्यं 'क्रमेण' पलीकृतात् पूर्वपश्चान्नतात् शोध्यं, अन्यत् 'कर्म' प्राग्वत् तत् दशमं 'दशमलग्नं' भवेत् ॥२३॥

भा०—इसी प्रकार लङ्कोदय से भुक्त भोग्य पल साधन कर क्रम से पलात्मक पूर्वनत, और पश्चिमनत में घटाना और क्रिया पूर्ववत् (लग्नानयन के समान ही) करना तो दशमलग्न होता है ॥ अर्थात्—पूर्वनत को इष्टकाल मानकर भुक्तप्रकार से, और पश्चिमनत को इष्टकाल मानकर भोग्य प्रकार से लङ्कोदय द्वारा लग्न बनाने से दशम लग्न होता है ॥२३–२३½॥

उदा०—यहाँ दिनार्ध १५।१९ में इष्टकाल ३।२९ घटाकर पूर्वनत ११।४० है। इसलिये भुक्तप्रकार से लङ्कोदय द्वारा दशम का साधन होगा। अतः सायन सूर्य ०।३।५५।३२ के भुक्तांश ३।५५।३२ को मेष के लङ्कोदय २७८ से गुना कर १०९१।१८।१६ इसमें ३० का भाग देने से भुक्तपल ३६।२२।३६ इसको पूर्वनत ११।४० के पल ७०० में घटाने से ६६३।३७।२४ फिर इसमें गत (सायन सूर्य के पीछे की) राशि मीन के लङ्कोदय २७८ घटाने से ३८५।३७।२४ फिर इसमें कुम्भ के लङ्कोदय २९९ घटाने से शेष ८६।३७।२४ इसमें मकर के लङ्कोदय ३२३ नहीं घटता है। अतः मकर अशुद्ध, और कुम्भ शुद्ध संज्ञक हुआ। अब पल शेष ८६।३७।२४ को ३० से गुना करने से २५९८।४२।० इसमें अशुद्ध मकर के लङ्कोदय ३२३ का भाग देने से अंशादि ८।२।४४ इसको भुक्त प्रकार होने के कारण अशुद्ध (मकर) की संख्या १० राशिमें घटाने से ९।२१।५७।१६ इसमें अयनांश२१।३३।१५ घटाने से राश्यादि दशम लग्न ९।००।२४।०१ हुआ ॥२३½॥

उपपत्तिः—एतेन नतकालतात्कालार्कांशानेन दशमलग्नानयनं करोति। दशमलग्नन्तूर्ध्वयाम्योत्तरक्रान्तिवृत्तसम्पातरूपम्। याम्योत्तरवृत्तं निरक्षदेशीयक्षितिजमतोऽत्र राशीनां

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निरक्षोदयमानग्रहणमेव समुचितम् । पूर्वनते दशमलग्नादग्रतो रविरतो दशमलग्नाक्रान्तरे रविभुक्तांशा दशमलग्नभोग्यांशास्तदन्तरालराश्यंशाश्च वर्त्तन्ते तथा तत्सम्बन्धीन्येव नत-पलान्यहोरावृत्तेऽर्कांद्याम्योत्तरवृत्तावधिकानि भवन्त्यतः पूर्ववत् (प्रथमलग्नानयनवत्) रविभुक्तपलानि प्रसाध्य तानि, तदन्तरालराश्युदयपलानि च पूर्वनतपलेभ्यो विशोध्यानि अवशिष्टपलानि दशमलग्नभोग्यान्येव तेभ्यो दशमलग्नभोग्यांशानानीयाशुद्धराशेर्विशोध्य दशमलग्नं राश्यादिकं ज्ञेयम् । एवम्पश्चिमनते दशमलग्नात् पृष्ठतो रविरतो रविभोग्यांशेभ्यो भोग्यपलान्यानीयोक्तदिशा दशमलग्नाराश्यादिकं सुबोधमत उपपन्नम्, प्राग्वत्तद्दशमम्भवे-दित्यन्तं सर्वम् ॥२३ + $\frac{1}{2}$॥

सन्धि सहित भावों का साधन प्रकार—

सषड्भे लग्नखे जायातुर्यौ लग्नोनतुर्यतः ॥ २४ ॥
षष्ठांशयुक्तनुः सन्धिरग्रे षष्ठांशयोजनात् ।
त्रयः ससन्धयो भावा षष्ठांशोनैकयुक्सुखात् ॥ २५ ॥
अग्रे त्रयः षडेवं ते भार्धयुक्ताः परेऽपि षट् ।

सं०—लग्नखे सषड्भे 'क्रमेण' जायातुर्यौ (भावौ) भवतः । लग्नोनतुर्यतः षष्ठांशयुक् तनुः सन्धिः स्यात् । अग्रे षष्ठांशयोजनात् त्रयः ससन्धयो भावा भवन्ति । षष्ठांशोनैकयुक् सुखात् अग्रे त्रयः 'ससन्धयः' भावा भवन्ति । एवं षड् भावाः । ते भार्धं ६ युक्ताः (षड्भसहिताः) परेऽपि षट् 'भावाः' भवन्ति ॥२४-२५$\frac{1}{2}$॥

भा०—लग्न में ६ राशि जोड़ने से सप्तमभाव, और दशम में ६ राशि जोड़ने से चतुर्थभाव होता है । लग्न को चतुर्थभाव में घटाकर शेष के षष्ठांश को लग्न में जोड़ने से लग्न की सन्धि होती है । उसमें फिर षष्ठांश जोड़ने से द्वितीयभाव, द्वितीयभाव में षष्ठांश जोड़ने से द्वितीय की सन्धि, उसमें फिर षष्ठांश जोड़ने से तृतीयभाव, फिर उसमें षष्ठांश जोड़ने से तृतीय की सन्धि इस प्रकार सन्धि सहित ३ भाव होते हैं । फिर उसी षष्ठांश को १ राशि (अर्थात् ३० अंश) में घटाकर शेष को चतुर्थभाव में जोड़ने से सन्धि, फिर जोड़ने से पञ्चमभाव, पञ्चमभाव में उसीको जोड़ने से सन्धि, फिर सन्धि में जोड़ने से षष्ठभाव और षष्ठभाव में जोडने से षष्ठ की सन्धि होती है । इस प्रकार ६ भाव होते हैं । इन ससन्धि ६ भावों में ६, ६ राशि जोड़ने से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन्धि सहित सप्तम आदि द्वादश पर्यन्त ६ भाव होते हैं। इस प्रकार ससन्धि द्वादश भाव सिद्ध होते हैं ॥ २४–२५½ ॥

वि०—दो दो भावों के बीच में एक एक सन्धि, और दो दो सन्धियों के बीच में एक भाव रहता है। जो पूर्व भाव की विरामसन्धि वही अग्रिम भाव की आरम्भ सन्धि कहाती है। जैसे लग्न और धनभावके बीचकी सन्धि लग्नकी विरामसन्धि और धनभावकी आरम्भ सन्धि कहाती है। ऐसे सब सन्धियों को समझना ॥ २५ ॥

उपपत्तिः—क्रान्तिवृत्ताधोयाम्योत्तरवृत्तासम्पातश्चतुर्थलग्नम् तथा। क्रान्तिवृत्तपश्चिमक्षितिजसम्पातः सप्तमलग्नम्। महद्वृत्तयोः सम्पातद्वयं षड्भान्तरितं भवतीति गोलीयरेखागणितयुक्त्या स्फुटमतः क्रान्तिवृत्तपूर्वक्षितिजसम्पातरूपप्रथमलग्नात् सप्तमलग्नं षडभान्तरितं तस्मात् प्रथमलग्नं सषड्भं सप्तमलग्नं भवति तथा दशमं सषड्भं चतुर्थलग्नं भवतीति सयुक्तिकम्।

अथ लग्नचतुर्थलग्नयोरन्तरस्य क्रान्तिवृत्तप्रदेशस्य समानाः षड्विभागा ये तत्र लग्नादग्रतः प्रथमः षष्ठांशो लग्नद्वितीयभावयोः सन्धिः। द्वितीयो विभागो द्वितीयभावः। तृतीयो भागो द्वितीयतृतीयभावयोः सन्धिः। चतुर्थो भागस्तृतीयभावः। पञ्चमो विभागस्तृतीयचतुर्थभावयोः सन्धिः। षष्ठो विभागस्तु चतुर्थभाव एव। अतो लग्नतुर्यलग्नान्तरषष्ठांशेन $\left(\frac{\text{च–ल}}{६}\right)$ सहितं लग्नं सन्धिः स्यादेव, स सन्धिः षष्ठांशेन सहितो द्वितीयभावः। स च षष्ठांशसहितः सन्धिः। एवं षष्ठांशयोजनेन त्रयः ससन्धयो भावा भवितुमर्हन्तीत्युपपन्नम्।

एवं चतुर्थलग्नसप्तमलग्नान्तरस्य क्रान्तिवृत्तखण्डस्य ये समाः षड्भागास्तेषु प्रथमश्चतुर्थपञ्चमयोः सन्धिः। द्वितीयो विभागः पञ्चमो भावः। एवं त्रयः ससन्धयो भावाः सन्ति। प्रथमलग्न-सप्तमलग्नान्तरं षड् राशयस्तेन प्रथमलग्नतुर्यलग्नान्तरोनाः षड् राशयश्चतुर्थसप्तमयोरन्तरम् $= ६-(\text{च}-\text{प्रल})$ अतोऽस्य षष्ठांशेन $१-\frac{(\text{चल}-\text{प्रल})}{६}$

अनेन सहितः सुखभावः चतुर्थपञ्चमभावयोः सन्धिः $= \text{च} + १-\frac{\text{चल}-\text{ल}}{६}$ एवं षष्ठांशयोजनेन चतुर्थादग्रे त्रयः ससन्धयो भावा भवन्तीति।

एवं सप्तमदशमयोरन्तरे सप्तमादयः ससन्धस्त्रयो भावाः सन्ति। तथा दशमप्रथमलग्नयोरन्तरे त्रयः ससन्धयो भावा वर्त्तन्ते। तथा च महद्वृत्तयोः सम्पातद्वयस्य षड्भान्तरितत्वाद्यदेव प्रथमसप्तमान्तरन्तदेव चतुर्थदशमान्तरमाभ्याञ्चतुर्थसप्तमान्तरोभयनिष्ठखण्ड-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशोधनेन यदेव लग्नतुर्यलग्नान्तरन्तदेव सप्तमदशमान्तरम्। अतो लग्नादयस्त्रयः ससन्धयो भावाः सषड्भाः सप्तमादयस्त्रयः ससन्धयो भावास्स्युः। एवं यदेव चतुर्थसप्तमान्तरं तदेव दशमप्रथमान्तरमतश्चतुर्थादयः ससन्धयेयस्त्रयो भावाः सषड्भाः दशमादयस्त्रयः ससन्धयो भावाः स्युरित्युपपन्नम्भार्द्धयुक्ताः परेऽपि षडिति। सर्वे भावा द्वयोर्द्वयोः सन्ध्योर्मध्ये वर्त्तन्तेऽतो भावस्य पृष्ठस्थः सन्धिरारम्भाख्यो भवति तथाऽग्रिमो विरामाख्यो भवतीति सर्वत्र ज्ञेयम्।

उदा०—लग्न ०।१०।४६।४७ में ६ राशि जोड़ने से—सप्तमभाव ६।१०।४६।४७ हुआ। और दशम ९।०।२४।१ में ६ राशि जोड़ने से चतुर्थभाव ३।०।२४।१ हुआ। अब चतुर्थ में लग्न को घटाकर शेष २।१९।३७।१४ का षष्ठांश ०।१३।१६।१२। २० को लग्न ०।१०।४६।४७।० में जोड़ने से लग्न की सन्धि ०।२४।२।५९।२० इस में फिर षष्ठांश को ही जोड़ने से सन्धिसहित ३ भाव हुए, चक्र १ में देखो।

फिर षष्ठांश ०।१३।१६।१२।२० को १ राशि में घटा कर शेष ०।१६।४३। ४७।४० को चतुर्थ भावमें पुनः पुनः जोड़ने से सन्धि सहित चतुर्थ पञ्चम और षष्ठ भाव हुए, चक्र २ में देखो।

लग्न में ६ राशि जोड़ने से सप्तम, लग्न की सन्धि में ६ राशि जोड़ने से सप्तम की सन्धि, एवं द्वितीय में ६ राशि जोड़ने से अष्टम भाव, तृतीय में ६ राशि जोड़ने से नवम, चतुर्थ में ६ राशि जोड़ने से दशम, पञ्चम में ६ राशि जोड़ने से एकादश, तथा षष्ठ में ६ राशि जोड़ने से द्वादश होता है। इस प्रकार सन्धि सहित द्वादश भाव नीचे चक्र में देखो॥

चक्र १

लग्न	०	१०	४६	४७	०
षष्ठांश	०	१३	१६	१२	२०
लग्न सं	०	२४	२	५९	२०
द्वि. भा.	१	०७	१९	११	४०
द्वि. सं.	१	२०	३५	२४	०
तृ. भा.	२	०३	५१	३६	२०
तृ. सं.	२	१७	७	४८	४०

चक्र २

च. भा.	३	०	२४	१	०
षष्ठांशोनैक	०	१६	४३	४७	४०
च. सं.	३	१७	७	४८	४०
पं. भाव	४	०३	५१	३६	२०
पं. सं.	४	२०	३५	२४	०
प. भा.	५	०७	१९	११	४०
ष. भा.	५	२४	२	५९	२०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ससन्धि द्वादश भाव चक्र

१		२		३		४		५		६	
त.	सं.	ध.	सं.	स.	सं.	सु.	सं.	सु.	सं.	रि.	सं.
०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५
१०	२४	७	२०	३	१७	०	१७	३	२०	७	२४
४६	२	१९	३५	५१	७	२४	७	५१	३५	१९	२
४७	५९	११	३४	३६	४८	१	४८	३६	२४	११	५९
०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	२०	०	४०	२०

७		८		९		१०		११		१२	
जा.	सं.	मृ.	सं.	ध.	सं.	क.	सं.	आ	सं.	व्य.	सं.
६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११
१०	२४	७	२०	३	१७	०	१७	३	२०	७	२४
४६	२	१९	३५	५१	७	२४	७	५१	३५	१९	२
४७	५९	११	२४	३६	४८	१	४८	३६	२४	११	५९
०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	२०	०	४०	२०

लग्नानयन में विशेष—

भुक्तं भोग्यं स्वेष्टकालान्न शुध्येत् त्रिंशन्निघ्नात्स्वोदयाप्तं लवाद्यम्।
हीनं युक्तं भास्करे तत्तनुः स्याद्रात्रौ लग्नं भार्धयुक्ताद्रवेस्तु ॥२६॥

सं०—भुक्तं भोग्यं 'यदि' स्वेष्टकालात् न शुद्धयेत् 'तदा' त्रिंशन्निघ्नात् 'स्वेष्टकालात्' स्वोदयाप्तं भास्करे हीनं, युक्तं तत् तनुः स्यात्। रात्रौ (रात्रिगतेष्टकाले) भार्धयुक्ताद्रवेः लग्नं साध्यम् ॥२६॥

भा०—पूर्व प्रकार से साधित सूर्य का भुक्त पल, और भोग्य पल यदि इष्टकाल के पल में नहीं घटे 'अर्थात् इष्टकाल से अधिक हो' तो उस इष्टकालको ही ३० से गुनाकर रवि जिस राशि में हो उसके उदयमान से भाग देकर लब्धि अंशादिको सूर्य में भुक्तप्रकार हो तो घटाने से और भोग्य प्रकार हो तो जोड़ने से लग्न होता है। और यदि रात्रिगत इष्टकाल हो तो रवि में ६ राशि जोड़कर लग्न साधन करना ॥२६॥

उदाहरण—मान लो कि पूर्वकथित दिन में इष्टकाल १।४९ है तो इसके पल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०९ में पूर्व साधित सायन सूर्य के भोग्यपल १८९ नहीं घट सकता है इसलिये पलात्मक इष्टकाल १०९ को ही ३० से गुना कर ३२७० इसमें मेष के उदय २१८ का भाग देने से लब्धि अंशादि १५।०।० इसको स्पष्ट सूर्य ११।१२।२२।१७ में जोड़ने से ११।२७।२२।१७ लग्न राश्यादि हुआ।

दिनमान से इष्टकाल अधिक हो तो उसमें दिनमान घटाकर शेष रात्रिगत इष्टघटी होती है। जैसे इष्टकाल ३३।४३ है तो इसमें दिनमान ३०।१८ घटाकर शेष रात्रिगत इष्टकाल ३।२५ इसी को इष्टकाल मान कर लग्न बनाना है तो सायनसूर्य में ६ राशि जोड़कर भोग्य प्रकार से लग्न बनेगा। जैसे—राश्यादि सायनसूर्य ४।२१।१।५६ इसमें ६ राशि जोड़ने से १०।२१।१।५६ इसके भोग्यांश ८।५८।४ इसको (सायनसूर्य कुम्भ में है अतः) कुम्भ के स्वोदय २५१ से गुना करने से २२५०।५४।४४ इसमें ३० का भाग देकर लब्ध भोग्य पलादि ७५।१।४९ इसको इष्टकाल ३।२५ के पल २०५ में घटाकर शेष १२९।५८।११ इसमें अग्रिम मीन का उदय २१८ नहीं घटता है अतः मीन अशुद्ध हुआ। अब शेष १२९।५८।११ को ३० से गुनाकर ३८९९। ५।३० इसमें अशुद्ध (मीन) के उदय २१८ का भाग देने से लब्ध अंशादि १७। ५३।८ को शुद्ध राशि कुम्भ की संख्या ११ में जोड़ा तो ११।१७।५३।८ इसमें अयनांश २१।२५।३ घटाने से प्रथम लग्न राश्यादि १०।२६।२८।५ हुआ ॥२६॥

उदा०—यदा लग्नार्कावेकस्मिन्नेव राशौ स्तस्तदा रवेर्भुक्तांशतोऽथवा भोग्यांशतो लग्नार्कान्तरांशा अल्पा भवन्त्यत एव लग्नार्कान्तरांशोत्पन्नासुरूपेष्टकालादर्कस्य भुक्तासवोऽथवा भोग्यासवोऽधिका एवातस्तत्रेष्टपलेभ्य एवानुपातेन लग्नार्कान्तरांशानेतान् $\frac{३० \times इप}{राउ}$ आनीय लग्नादधिकेऽर्के विशोध्य, हीनेऽर्के संयोज्य लग्नं भवितुमर्हत्येवेति स्फुटमेव। रात्रिगतेष्टकाले यावन्त एवास्तक्षितिजरव्यन्तरांशास्तावन्त एवोदयक्षितिज–सषड्भसूर्ययोरन्तरांशा इति गोलीयरेखागणितेन स्फुटमेवेत्यतोऽस्तक्षितिजाद् यावद्रात्रिगतेष्टघटिकाग्रे रविस्तावद्दिनगत-घटिकाग्रे सषड्भसूर्यं उदयक्षितिजात् तिष्ठतीत्यतो रात्रिगतेष्टकाले भार्धयुक्तरवितो लग्नानयने लाघवं स्फुटमेवेत्युपपन्नम् ॥२६॥

भाव और सन्धिस्थग्रहों के फल—

खेटे भावसमे पूर्णं फलं सन्धिसमे तु खम् ॥२७॥
खेटे सन्धिद्वयान्तःस्थे फलं तद्भावजं भवेत् ।
हीनेऽधिके द्विसन्धिभ्यां भावे पूर्वाऽपरे फलम् ॥२८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सं०—भावसमे खेटे पूर्णं फलं, सन्धिसमे (सन्ध्यंशादितुल्ये) खेटे तु खं (शून्यं) फलं भवति । सन्धिद्वयान्तःस्थे (सन्धिद्वयमध्यस्थे) खेटे तद्भावजं फलं भवेत् । द्विसन्धिभ्यां हीनेऽधिके 'क्रमेण' पूर्वापरे भावे फलं भवेत् ॥ २७-२८ ॥

भा०—जब ठीक भाव के तुल्य ग्रह होते हैं तो उस भाव का पूर्णफल देते हैं। और ठीक ठीक सन्धि के बराबर होते हैं तो शून्य (कुछ भी नहीं) फल देते हैं। जिन दो सन्धियों के बीच में ग्रह हो वह उन्हीं दोनों सन्धि के बीच वाले भाव का फल देता है। भाव की आरम्भसन्धि से अल्प ग्रह पूर्वभाव में और विरामसन्धि से अधिक ग्रह अग्रिम भाव में ही अपना फल देता है ॥

इसलिये जिन दो सन्धियों के बीच ग्रह हों, उसको उन दो सन्धियों के बीचवाले भाव में लिखने से, लग्न राशिकुण्डली के अनुसार भावकुण्डली में कभी कभी कोई ग्रह १ स्थान आगे पीछे भी पड़ जाता है।

जैसे उपरोक्त वर्षलग्नकुण्डली— भावकुण्डली—

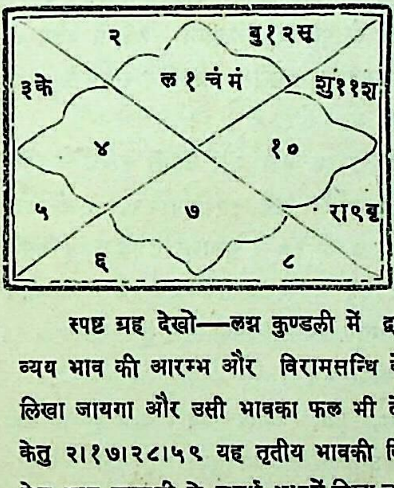

स्पष्ट ग्रह देखो—लग्न कुण्डली में द्वादश स्थानस्थ सूर्य ११।१२।२२।१७ यह व्यय भाव की आरम्भ और विरामसन्धि के मध्य में है इसलिये यह व्ययभाव में ही लिखा जायगा और उसी भावका फल भी देगा । तथा लग्न कुण्डली में तृतीय स्थानस्थ केतु २।१७।२८।५९ यह तृतीय भावकी विरामसन्धि से २१ विकला अधिक है इसलिये केतु भाव कुण्डली के चतुर्थ भावमें लिखा जायगा और फल भी चतुर्थ भावही का देगा। इसी प्रकार देखकर सब ग्रहं को भाव कुण्डली में लिखना चाहिये। भावकुण्डली देखो ॥

उप०—आरम्भसन्धितो भावस्य प्रवृत्तिर्भवत्यतस्तत एव फलस्य प्रवृत्तिर्भवितुं योग्या विरामसन्धौ च भावस्य निवृत्तिस्तत्रैव फलस्य शून्यत्वं भवितुमर्हत्यतस्तयोर्मध्ये (भावाग्रे) फलस्य पूर्णत्वञ्च समुचितमेवातः "खेटे भावसमे पूर्णं फलं सन्धिसमे तु खम्" इति दिव्यदृगाद्योदितं सयुक्तिकम् । तथारम्भसन्धितोऽल्पो ग्रहः पूर्वस्मिन् भावे वर्ततेऽत-स्तत्फलमपि पूर्वभावजमेव समुचितं तथा विरामसन्धितोऽधिको ग्रहोऽग्रिमभावे स्यादत-

४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्तत्फलमप्यग्रिमभावजमेव तथा सन्धिद्वयमध्यस्थिते ग्रहे फलमपि सन्धिद्वयमध्यस्थभावजं भवितुमर्हत्यत उपपन्नं सर्वम् ॥ २७-२८ ॥

भावों का विंशोपक बल—

ग्रहसन्ध्यन्तरं कार्यं विंशत्या २० गुणितं भजेत् ।
भावसन्ध्यन्तरेणाप्तं फलं विंशोपकाः स्मृताः ॥ २९ ॥

सं०—ग्रहसन्ध्यन्तरं (भावतोऽग्रे ग्रहे विरामसन्धिना, भावतः पृष्ठस्थे आरम्भसन्धिना सहान्तरं) कार्यं 'तत्' विंशत्या गुणितं भावसन्ध्यन्तरेण भजेत् आप्तं फलं विंशोपकाः स्मृताः ॥ २९ ॥

भा०—जिस भाव और सन्धि के बीच में ग्रह हो उस सन्धि और ग्रह का अन्तर करना उसको २० से गुनाकर गुणनफल में भाव और सन्धि के अन्तर का भाग देना लब्ध विंशोपात्मकभाव का फल होता है ॥ २० ॥

वि०—भाव के बराबर ग्रह हों तो भाव फल सम्पूर्ण २० होता है । इस (उक्त) प्रकार से विंशोपक फल १४ से अधिक आवे तो पूर्ण ही समझना, १४ से अल्प ७ पर्यन्त मध्यम, और से ७ अल्प हीन फल समझना चाहिये । इसलिये सन्धि के अंश तुल्य ग्रह के अंश होता है तो फल १ से भी अल्प होता है ॥ २९ ॥

उदा०—स्पष्टसूर्य ११।१२।२२।१७ यह द्वादश भाव और उसकी सन्धि के मध्य में है, इसलिये द्वादश की सन्धि ११।२३।५९।१४ में सूर्य ११।१२।२२।१७ को घटा कर शेष ११।३६।५७ के एकजातीय ४१८१७ को २० से गुनाकर ८३६३४० इसमें द्वादशभाव और सन्धि के अन्तर १६।४८।२३ के एकजातीय ६०४०३ का भाग देने से लब्ध विंशोपक फल १३।५१ स्वल्पान्तर से । इससे सिद्ध हुआ कि सूर्य का द्वादशभाव सम्बन्धी फल मध्यम मान से होगा ॥ २९ ॥

उपपत्तिः—भावप्रवृत्तौ फलस्य प्रवृत्तिः, ततः क्रमोपचयेन भावाग्रे पूर्णता ततः क्रमोपचयेन सन्धौ फलस्य नाशः, अतो मध्येऽनुपातो-यदि भावतुल्ये ग्रहे भावसन्ध्यन्तर-तुल्यग्रहान्तरेण पूर्णं फलं विंशतिसमं तदेष्टसन्धिग्रहान्तरेण किमिति= $\frac{२० \times (\text{ग्र} \backsim \text{सं})}{\text{भा} \backsim \text{सं}}$ = फलं विंशोपकसंज्ञं यतः पूर्णफलं विंशतिसममेव कल्पितम् ॥ २९ ॥

पञ्चवर्गी बलसाधनार्थं राशिस्वामी और द्रेष्काणपति—

भौमोशनःसौम्यशशीनवित्सितारेज्यार्किमन्दाङ्गिरसो गृहेश्वराः ।
आद्याः कुजाद्या रवितोऽपि मध्यमाः सितात्तृतीयाः क्रियतो दृकाणपाः ॥३०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सं०—भौमोशनःसौम्यशशीनवित्सिताऽऽरेज्यार्किमन्दाङ्गिरसो गृहेश्वराः (मेषादिराश्यधिपाः) भवन्ति । क्रियतः (मेषमारभ्य) आद्याः सिताद्याः, मध्यमाः (द्वितीयाः) रवितः, तृतीयाः सितात् दृक्काणपाः 'भवन्ति' ॥ ३० ॥

भा०—मंगल, शुक्र, बुध, चन्द्र, रवि, बुध, शुक्र, मंगल, गुरु, शनि, शनि और गुरु ये क्रम से मेषादि १२ राशियों के स्वामी हैं। प्रथम द्रेष्काण हो तो मेषादि राशियों में क्रम से मंगलादि ग्रह, द्वितीय द्रेष्काण हो तो रव्यादि ग्रह, तथा तृतीय द्रेष्काण हो तो शुक्रादि ग्रह द्रेष्काणपति होते हैं ॥ ३० ॥

वि०—राशि का तृतीयांश द्रेष्काण कहाता है अतः १ राशि में १०, १० अंश के तीन द्रेष्काण होते हैं ।

स्पष्टार्थ द्रेष्काणपति चक्र—

	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	राशि
१०	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	द्रेष्काणपति
२०	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	
३०	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	

उदाहरण—जैसे स्पष्ट सूर्य ११।१२।२२।१७ यह किसके द्रेष्काण में है यह विचारना है तो—यहाँ सूर्य मीन के द्वितीय द्रेष्काण में है। अतएव रव्यादि क्रम की गणना से मीन में द्वितीय द्रेष्काणपति गुरु हुआ, जो चक्र में भी स्पष्ट है। इसी प्रकार सब ग्रह और भावों का द्रेष्काणपति समझना। इस द्रेष्काण को पञ्चवर्गी बल में ही ग्रहण करना चाहिये, द्वादशवर्गी में द्रेष्काणपति आगे कहे गये हैं ॥ ३० ॥

ग्रहों के उच्चनीच-राश्यंश और उच्चबल साधन—

सूर्यादितुङ्गर्क्षमजोक्षनक्र-कन्याकुलीरान्त्यतुला लवैः स्युः ।
दिग्भिर्गुणैरष्टयमैः शरैकैर्भूतैर्भसंख्यैर्नखसम्मितैश्च ॥३१॥
तत्सप्तमं नीचमनेन हीनो ग्रहोधिकश्चेद्रसभाद्विशोध्यः ।
चक्रात्तदंशाङ्कलवो बलं स्यात्क्रियैणतौलीन्दुभतो नवांशाः ॥३२॥

सं०—अजोक्षनक्रकन्याकुलीरान्त्यतुलाः 'क्रमेण' दिग्भिः गुणैः, अष्टयमैः शरैकैः, भूतैः, भसंख्यैः, नखसम्मितैः लवैः (अंशैः) सूर्यादितुङ्गर्क्षं उच्चभं तथा तत्सप्तमं नीचं च ज्ञेयम् । अनेन (स्वस्वनीचेन) हीनः ग्रहः कार्यः, 'स' रसभादधिकश्चेत् 'तदा' चक्राद् (द्वादशराशितः) विशोध्यः, तदंशाङ्कलवः बलं स्यात् । अथ-मेषादिराशिषु-क्रमेण' क्रियैणतौलीन्दुभतः नवांशा भवन्ति ॥ ३१-३२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

भा०—सूर्य का मेष १० अंश, चन्द्र का वृष ३ अंश, मंगल का मकर २८ अंश, बुध का कन्या १५ अंश, गुरु का कर्क ५ अंश, शुक्र का मीन २७ अंश, और शनि का तुला २० अंश से उच्च है। तथा उच्च से सप्तम राशि इतने ही अंशों से नीच होता है। ग्रहों में अपने अपने नीच राश्यंश को घटाना, यदि ६ राशि से अधिक बचे तो उसको चक्र (१२) में घटाकर शेष लेना फिर उसे अंशात्मक बनाकर ९ का भाग देने से लब्धि उच्चबल होता है। मेषादि राशियों में क्रम से मेष, मकर, तुला और कर्क से आरम्भकर ९, ९ राशियों के नवांश होते हैं। स्पष्टार्थ नीचे चक्र देखो ॥ ३१-३२ ॥

स्पष्टार्थ उच्च नीच चक्र

ग्रह	रवि	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला
राशि	०	१	९	५	३	११	६
अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
नीच	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष
राशि	६	७	३	११	९	५	०
अंश	१०	३	२८	१५	५	७	२०

उदा०—स्पष्ट सूर्य ११।१२।२२।१७ इसमें सूर्य के नीचराश्यंश ६।१० को घटाया तो ५।२।२२।१७ यह ६ से अल्प है अतः इसीके अंश १५२।२२।१७ में ९ का भाग देकर लब्ध १६।५५ यह सूर्य का उच्च बल हुआ। इस प्रकार अन्य ग्रहों का भी उच्च बल साधन करना ॥ ३१-३२ ॥

नवांशज्ञानचक्र—

	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	
३।२०	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क	१
६।४०	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	२
१०।०	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क	३
१३।२०	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु	४
१६।४०	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	५
२०।०	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	६
२३।२०	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म	७
२६।४०	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	८
३०।०	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	९

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उप०—नीचोच्चयोरन्तरं षड्राशितुल्यमतो ग्रहाणामुच्चात्सप्तमे नीचस्थानं समुचितमेव । तथा चोच्चस्थे बलं पूर्णं विंशतितुल्यं ततः क्रमापचयेन नीचे शून्यं, पुनः क्रमोपचयेनोच्चे पूर्णमिति षड्राश्यन्तर एव बलस्योपचयापचयावतो नीचग्रहान्तरे षड्राश्यधिके चक्राद्विशोधनं सयुक्तिकमेव । ततो यदि उच्चस्थे ग्रहे चक्रार्धांशतुल्येन नीचग्रहान्तरेण पूर्णं २० बलं तदेष्टनीचग्रहान्तरेण किमिति $= \frac{२० \text{ (ग्र-नी)}}{१८०} = \frac{\text{ग्र-नी}}{९} =$ इष्टोच्चबलमित्युपपन्नम् । नवांशोपपत्तिस्तु चक्रदर्शनेनैव सिद्ध्यति ॥ ३२ ॥

मेषादिराशियों में हद्दाधिपति—

मेषेऽङ्गतर्काष्टशरेषुभागा जीवास्फुजिज्ज्ञारशनैश्चराणाम् ।
वृषेऽष्टषण्णागशराऽनलांशाः शुक्रज्ञजीवार्किकुजेशहद्दाः ॥३३॥

युग्मे षडङ्गेषु-नगाङ्गभागाः सौम्यास्फुजिज्जीवकुजार्किहद्दाः ।
कर्केऽद्रितर्काङ्गनगाब्धिभागाः कुजास्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्चराणाम् ॥३४॥

सिंहेऽङ्गभूताद्रिरसाङ्गभागा देवेज्यशुक्रार्किबुधारहद्दाः ।
स्त्रियां नगाशाब्धिनगाक्षिभागाः सौम्योशनोजीवकुजार्किनाथाः ॥३५॥

तुले रसाष्टाद्रिनगाक्षिभागाः कोणज्ञजीवास्फुजिदारनाथाः ।
कीटे नगाब्ध्यष्टशराङ्गभागा भौमास्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्चराणाम् ॥३६॥

चापे रवीष्वम्बुधिपञ्चवेदा जीवास्फुजिज्ज्ञारशनैश्चराणाम् ।
मृगे नगाद्र्यष्टयुगश्रुतीनां सौमेज्यशुक्रार्किकुजेशहद्दाः ॥३७॥

कुम्भे नगाङ्गाद्रिशरेषुभागाः शुक्रज्ञजीवारशनैश्चराणाम् ।
मीनेऽर्कवेदानलन्दपक्षाः सितेज्यसौम्यारशनैश्चराणाम् ॥३८॥

सं०—मेषे अङ्गतर्काष्टशरेषु-भागाः क्रमेण जीवास्फुजिज्ज्ञारशनैश्चराणां हद्दा भवन्ति । एवं वृषादिष्वपि हद्दांशा ज्ञेयाः ॥ ३३–३८ ॥

भा०—मेष में ६, ६, ८, ५, ५, अंश क्रम से गुरु, शुक्र, बुध, मंगल और शनैश्चर के हद्दांश होते हैं । इसी प्रकार प्रति राशियों में हद्दाधिपति समझना । स्पष्टार्थं चक्र देखो । मेष में आदि के ६ अंश का गुरु, बाद के ६ अंश का शुक्र, उसके बाद ८ अंश का बुध, उसके बाद ५ अंश मंगल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फिर अन्त में ५ अंश का शनि हद्देश होता है । इसी प्रकार प्रति राशि में हद्दा का ज्ञान करना ॥ ३३–३८ ॥

हद्दाधिपति चक्र—

मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
६ गु	८ शु	६ बु	७ मं	६ गु	७ बु	६ श	७ मं	१२ गु	७ बु	७ शु	१२ शु
६ शु	६ बु	६ शु	६ शु	५ शु	१० शु	८ बु	४ शु	५ शु	७ गु	६ गु	४ गु
८ बु	८ गु	५ गु	६ बु	७ श	४ गु	७ गु	८ बु	४ बु	८ शु	७ बु	३ बु
५ मं	५ श	७ मं	७ गु	६ बु	७ मं	७ शु	५ गु	५ मं	४ श	५ मं	९ मं
५ श	३ मं	६ श	४ श	६ मं	२ श	२ मं	६ श	४ श	४ मं	५ श	२ श

स्वस्वाधिकार में पञ्चवर्गीबल—

त्रिंशत्स्वभे विंशतिरात्मतुङ्गे हद्देऽक्षचन्द्रा दशकं दृकाणे ।
मुसल्लहे पञ्चलवाः प्रदिष्टा विंशोपका वेदलवैः प्रकल्प्याः ॥३९॥

सं०—स्वभे त्रिंशत्, आत्मतुङ्गे विंशतिः, हद्दे अक्षचन्द्राः, दृकाणे दशकं, मुसल्लहे (नवांशे) पञ्चलवाः प्रदिष्टाः (कथिताः) वेदलवैः (बलयोगचतुर्थांशैः) विंशोपकाः प्रकल्प्याः ॥ ३९ ॥

भा०—अपनी राशि (गृह) में ३०, अपने परमोच्च में २०, अपने हद्दा में १५, अपने दृकाण में १०, अपने नवांश में ५ बल होता है। सब बलों के योग का चतुर्थांश कर जो हो उतना विंशोपक बल समझना ॥ ३९ ॥

उप०—अत्र गृहादिबलयोगचतुर्थांशः $= \frac{८०}{४} =$ २० = विंशोपाख्यं परमं बलं सयुक्तिकमेवात इष्टबलयोगश्चतुर्भक्त इष्टं विंशोपाख्यबलं भवितुमर्हत्येवेति ॥ ३९ ॥

मित्र आदि के अधिकार में पञ्चवर्गीबल—

स्वस्वाधिकारोक्तबलं सुहृद्भे पादोनमर्धं समभेऽरिभेऽङ्घ्रिः ।
एवं समानीय बलं तदैक्ये वेदोद्धृते हीनबलः शरोनः ॥४०॥

सं०—स्वस्वाधिकारोक्तबलं सुहृद्भे पादोनं, समभे अर्धं, अरिभे अंघ्रिः, एवं बलं समानीय तदैक्ये वेदोद्धृते शरोनः (पञ्चाल्पः) हीनबलः स्यात् ॥ ४० ॥

भा०—अपने अधिकारों में जो बल कहे गये हैं वे मित्र की राशि में चतुर्थांशोन, समकी राशि में आधा और शत्रु की राशि में चतुर्थांश होता है। इस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकार सब ग्रहों के पञ्चवर्गी बल साधनकर उनके योगमें ४ का भाग देनेसे (विंशोपक बल होता है वह) ५ से अल्प हो तो ग्रह हीनबल समझा जाता है॥

वि०—"शराल्पो हीनवीर्यः स्यान्मध्यवीर्यः शराधिकः ।
दशाधिको बली प्रोक्तः पञ्चवर्गीबले ग्रहः ॥"

पञ्चवर्गीबल ५ से अल्प हो तो हीनबल ५ से अधिक १० तक मध्यबल, और दश से अधिक हो तो ग्रह बली समझा जाता है ॥ ४० ॥

वर्षप्रवेश में ग्रहों के मित्र, सम, शत्रु—

"मित्रं त्रिकोणत्रिभवस्थितश्चेद् द्व्यर्थषष्टरिष्फेषु समो ग्रहः स्यात् ।
केन्द्रेषु शत्रुः कथितो मुनीन्द्रैर्वर्षादिवेशे फलनिर्णयार्थम् ॥"

वर्ष लग्न कुण्डली में परस्पर ५।९ और ३।११ में स्थित ग्रह मित्र होते हैं । २, ६, ८, १२, में स्थित ग्रह सम, और १।४।७।१० में शत्रु होते हैं ॥

उदा०—सूर्य से ३, ५, ९, ११ इन स्थानों में कोई ग्रह नहीं है इसलिये सूर्य के मित्र कोई नही हुआ। २ और १२ में चंद्र, मंगल, शुक्र, शनि है इसलिये सूर्य के सम हुए। तथा १ और १० स्थान में बुध और बृहस्पति हैं इसलिये ये दोनों सूर्य के शत्रु हुए। इसी प्रकार सब ग्रहों के मित्र सम, शत्रु चक्र में लिखे गये हैं ॥

वर्षलग्नकुण्डली—

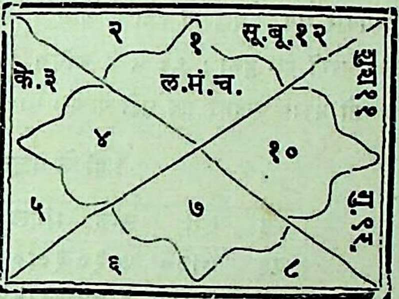

पञ्चवर्गीफल—

गृह, हद्दा, द्रेक्काण, नवांश और उच्च ये पञ्चवर्गी नाम से प्रसिद्ध हैं। इन पांचों बल के योग का चतुर्थांश पञ्चवर्गी बल कहाता है।

मित्रसमशत्रुचक्र—

ग्रह	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
मित्र	×	गु शु श	गु शु श	×	चं मं शु श	चं मं गु	चं मं गु
सम	चं मं शु श	सू बु	सू बु	चं मं शु श	×	सू बु	सू बु
शत्रु	बु शु	मं	चं	सू गु	सू बु	श	शु

यदि सूर्य का पञ्चवर्ग बल बनाना हो तो स्पष्ट सूर्य ११।१२।२२।१७ इसके अनुसार—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

(१) प्रथम गृहबल—सूर्य गुरु की राशि (मीन) में है। गुरु सूर्य का शत्रु है इसलिये गृहबल का चतुर्थांश ७।३० गृह बल हुआ।

(२) हद्दाबल—मीन राशि में १२ अंश के बाद १३ वां अंश में सूर्य है १२ के बाद १६ तक ४ अंश गुरु का हद्दा है, इसलिये शत्रुहद्दा में होने के कारण हद्दाबल का चतुर्थांश ३।४५ यह हद्दाबल हुआ।

(३) द्रेष्काण बल—मीन राशि में द्वितीय द्रेष्काण में सूर्य है मीन में द्वितीय द्रेष्काण का स्वामी गुरु ही है अतः शत्रु के द्रेष्काण में होने के कारण द्रेष्काण बल १० का चतुर्थांश २।३० यह द्रेष्काण बल हुआ।

(४) नवांश बल—मीन के चतुर्थ नवांश में सूर्य है। मीन में ४ था नवांश तुला (अर्थात् शुक्र) का है। शुक्र सूर्य का सम है, अतः नवांशबल ५ का आधा २।३० यह नवांश बल हुआ।

(५) उच्चबल—३२ श्लोक के उदाहरण में सूर्य का उच्चबल १६।५५ है इस प्रकार सूर्य के पञ्चवर्गी बलों के योग ३३।१० के चतुर्थांश ८।१७ यह विंशोपकात्मक पञ्चवर्गी बल हुआ। यह ५ से अधिक १० से अल्प है इस लिये सूर्य मध्यबली हुआ। इसी प्रकार चन्द्रादि सब ग्रहों के बल साधनकर चक्र में रखा गया है ॥ ४० ॥

ग्रहों के पञ्चवर्गीबल चक्र—

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
गृह	७।३०	७।३०	३०।०	७।३०	३०।०	७।३०	३०।०
हद्दा	३।४५	३।४५	११।५५	७।३०	१५।०	११।१५	११।१५
द्रे०	२।३०	७।३०	१०।०	५।०	२।३०	५।०	५।०
नवां	२।३०	२।३०	५।०	२।३०	३।४५	३।४५	३।४५
उच्च	१६।५५	१८।९	१३।१	१।१८	३।३३	१५।४३	६।३४
योग	३३।१०	३९।२४	६९।१६	२३।४८	५४।४८	४३।१३	५६।३४
विंशो०	८।१७	९।५४	१७।१९	५।५७	१२।४२	१०।४८	१४।८

अथ द्वादशवर्गी संज्ञा—

क्षेत्रं होरात्र्यब्धिपञ्चाङ्गसप्तवस्वङ्काशेशार्कभागाः सुधीभिः।
विज्ञातव्या लग्नसंस्थाः शुभानां वर्गाः श्रेष्ठाः पापवर्गास्त्वनिष्टाः ॥४१॥

सं०—क्षेत्रं होरात्र्यब्धिपञ्चाङ्गसप्तवस्वङ्काशेशार्कभागाः सुधीभिः लग्नसंस्था वर्गा विज्ञातव्याः, तत्र, शुभानां वर्गाः श्रेष्ठाः, पापवर्गास्तु अनिष्टा भवन्ति ॥४१॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—गृह, होरा, द्रेष्काण, चतुर्थांश पञ्चमांश, षष्ठांश, सप्तमांश, अष्टमांश, नवमांश, दशमांश, एकादशांश और द्वादशांश ये लग्नादिकों में १२ वर्ग समझना चाहिये। इनमें शुभ ग्रह के वर्ग शुभ और पापग्रह के वर्ग अनिष्ट होते हैं ॥ ४१ ॥

होरा द्रेष्काण और चतुर्थांश—

ओजे रवीन्द्वोः सम इन्दुरव्योर्होरे गृहार्धप्रमिते विचिन्त्ये ।
द्रेष्काणपाः स्वेषुनवर्क्षनाथास्तुर्यांशपाः स्वर्क्षजकेन्द्रनाथाः ॥४२॥

सं०—ओजे (विषमराशौ) रवीन्द्वोः, समे (समराशौ) इन्दुरव्योः क्रमेण गृहार्धप्रमिते होरे विचिन्त्ये। तथा स्वेषुनवर्क्षनाथाः द्रेष्काणपा (राशित्रिभागेशाः) भवन्ति। तथा-स्वर्क्षजकेन्द्रनाथाः तुर्यांशपाः 'भवन्ति' ॥ ४२ ॥

भा०—एक राशि में दो होरा होती हैं विषम राशि में प्रथम होरा (१५ अंश तक) सूर्य की, बाद दूसरी होरा चन्दमा की होती है। समराशि में पहिले चन्द्रमा की तब सूर्य की होरा होती है। तथा प्रत्येक राशि में प्रथम द्रेष्काण उसी राशि की (अपनी ही), दूसरा द्रेष्काण उस राशि से ५ वीं राशि का और तीसरा द्रेष्काण उस राशि से ९ वीं राशि का होता है। एवं जिस राशि में चतुर्थांश विचार करना हो तो प्रथम चतुर्थांश उसी राशि का, द्वितीय चतुर्थांश उससे चतुर्थ राशि का, तृतीय चतुर्थांश उससे सप्तम राशि का और चौथा चतुर्थांश उससे दशम राशि का होता है ॥ ४२ ॥

पञ्चमांश और द्वादशांशपति—

ओजर्क्षे पञ्चमांशेशाः कुजार्कीज्यज्ञभार्गवाः ।
समभे व्यत्ययाज्ज्ञेया द्वादशांशाः स्वभात्स्मृताः ॥ ४३ ॥

सं०—ओजर्क्षे कुजार्कीज्यज्ञभार्गवाः 'क्रमेण' पञ्चमांशेशा भवन्ति। समभे व्यत्ययाद् ज्ञेयाः। तथा स्वभात् द्वादशांशाः स्मृताः ॥ ४३ ॥

भा०—विषमराशियों में क्रम से मंगल, शनि, गुरु, बुध और शुक्र ये पञ्चमांशेश होते हैं। सम राशियों में उत्क्रम से शुक्र, बुध, गुरु, शनि और मंगल पञ्चमांशेश होते हैं। तथा जिस राशि में द्वादशांश विचारना हो उसी राशि से आरम्भ कर क्रम से १२ राशियों के द्वादशांश होते हैं ॥ ४३ ॥

वि०—पञ्चवर्गी में ३० श्लोक के अनुसार द्रेष्काणपति लेना चाहिये और द्वादश

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्गी में ४२ श्लोकानुसार । तथा त्रिंशांश के स्थान में पञ्चवर्गी में हद्दा लिया गया है। और पञ्चमांश में यहां ६।६ अंश के बराबर खण्ड माने गये है ॥ ४३ ॥

षष्ठांश, सप्तमांश, अष्टमांश, नवांश, दशमांश, और एकादशांश पति—

लवीकृतो व्योमचरोङ्गशैलवस्वङ्कदिग्रुद्रगुणाः खरामैः ।
भक्तो गतास्तर्कनगाष्टनन्ददिग्रुद्रभागाः कुयुताः क्रियात्स्युः ॥ ४४ ॥

सं०—व्योमचरो (ग्रहो) लवीकृतः (अंशीकृतः) अङ्ग-शैल-वस्वङ्क-दिग्-रुद्रगुणाः 'पृथक्' खरामैः भक्तः 'लब्धतुल्याः' क्रियात् (मेषात्) क्रमेण गताः तर्क-नगाष्ट-नन्द-दिग्-रुद्रभागाः 'भवन्ति ते' कुयुताः वर्तमानाः स्युः ॥ ४४ ॥

भा०—ग्रहों को अंशात्मक बनाकर ६ स्थान में रखे और क्रम से ६, ७, ८, ९, १०, ११ से गुना करके प्रत्येक में ३० का भाग देने से लब्धि मेषादिक्रमसे गत षष्ठांश, सप्तमांश, अष्टमांश, नवांश, दशमांश, और एकादशांश होते हैं। और १ जोड़ने से वर्तमान होते हैं ॥ ४४ ॥

द्वादशवर्गी उदाहरण—सूर्य ११।१२।२२।१७ गुरु के गृह में है इसलिये गृहेश गुरु। समराशि के प्रथम होरा में हैं अतः होरेश चन्द्रमा। द्वितीय द्रेष्काण में है अतः मीन से ५ वां कर्क का अधिप चन्द्रमा द्रेष्काणेश हुआ। द्वितीय चतुर्थांश में है अतः मीन से चतुर्थ मिथुन का स्वामी (बुध) चतुर्थांशपति हुआ। समराशि के तृतीय खण्ड में है अतः पञ्चमांशेश गुरु हुआ। षष्ठांशज्ञानार्थ-सूर्य ११।१२।२२।१७ के अंश ३४२। २२।१७ को ६ से गुनाकर २०५४।१३।४२ इसमें ३० के भाग देने से लब्धि ६८ गतषष्ठांश १ जोड़नेसे ६९ वर्तमान षष्ठांश १२ से तष्टित करनेसे ९ वां धनु का षष्ठांश हुआ, अतः षष्ठांशपति गुरु हुआ। फिर अंशात्मक सूर्य को ७ से गुनाकर ३० के भाग देने से लब्धि ७७१ में जोड़कर १२ से तष्टित करने से वर्तमान ४ कर्कराशीश चन्द्रमा सप्तमांशेश हुआ। एवं अष्टमांश आदि सब वर्गों के स्वामी नीचे चक्र में लिखे गये हैं ॥ ४४ ॥

वि०—राश्यादिक ग्रह को ३० से गुनाकर अंशात्मक बनाना, फिर ६ आदि अंकों से गुनाकर ३० का भाग देना। इस प्रकार ३० से गुना और ३० का भाग देना व्यर्थ क्रिया गौरव मात्र है।

वास्तव में राश्यादिक ग्रह को ६ आदि अङ्कों से गुना करने से ही मेषादि षष्ठांशादि का अधिपति हो जाता है। इसलिये यहां इस प्रकार का पाठ सुलभ है—

राश्यादिको व्योमचरोङ्ग-शैलवस्वङ्कदिग्रुद्रगुणोऽर्कतष्टः ।
स वर्तमानोङ्ग-नगाष्टनन्द-दिग्रुद्रभागाधिपतिः क्रियाद्यः ॥"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थ—राश्यादिक ग्रह को ६, ७, ८, ९, १०, ११ से पृथक् पृथक् गुना कर १२ से तष्टित कर शेष क्रम से वर्तमान षष्ठांशाद्यधिपति होते हैं ॥

अथवा—

ग्रहो राश्यादिको येन षट्काद्यङ्केन सङ्गुणः ।
मेषाद्यो रविभिस्तष्टस्तद्भागाधिपतिर्भवेत् ॥

अर्थ—(षष्ठांश आदि वर्ग जानने के लिये) राश्यादि ग्रह को ६ आदि जिस अङ्क से गुना करै, मेषादि उस अंश का अधिप होता है। १२ से अधिक होने से १२ से तष्टित कर लेना चाहिये ॥

ग्रहों का द्वादशवर्गी चक्र—

	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
१ गृ.	गु.	मं.	मं.	गु.	गु.	श.	श.
२ होरा	चं.	चं.	सू.	चं.	र.	चं.	चं.
३ द्रे	चं.	गु.	मं.	गु.	गु.	बु.	शु.
४ चं	बु.	शु.	मं.	गु.	गु.	र	र.
५ पं	गु.	बु.	मं.	शु.	मं.	बु	बु.
६ ष.	गु.	सू.	बु.	शु.	मं.	चं.	र.
७ स.	सू.	शु.	शु.	बु.	गु.	बु	बु.
८ अ.	मं.	मं.	मं.	र.	र.	मं.	शु.
९ न.	शु.	मं.	गु.	चं.	मं.	गु.	मं.
१० द	शु	सू.	गु.	चं.	गु.	श.	श.
११ ए.	बु.	शु.	श.	बु.	बु.	गु	श.
१२ द्वा.	श.	गु.	गु.	श.	मं.	गु.	गु

जैसे—सूर्य राश्यादि ११।१२।२२।१७ इसका षष्ठांशपति जानना है तो राश्यादि को ६ से गुना कर ६६।७२।१३२।१०२ सवर्णन करने से ६८।१४।१३।४२ यह १२ से अधिक है अतः १२ से तष्टित कर शेष ८।१४।१३।४२ वर्तमान धनु का षष्ठांश है, अतः षष्ठांश पति गुरु, पूर्व तुल्य ही आया। इसी प्रकार ७ आदि से गुना करने से सप्तमांश आदि वर्गाधीश होते हैं ॥४४॥

उप०—यदि त्रिंशदंशैः षट् षष्ठांशास्तदा ग्रहभुक्तांशैः किमिति $= \frac{६ \times ग्रअं}{६०} =$ लब्धितुल्य मेषादिगतषष्ठांशाः, वर्तमानषष्ठांशज्ञानार्थं सैकता सयुक्तिकेति। एवं सप्तमांशाद्यानयनमप्यनुपातेनोपपद्यते ॥

वस्तुतस्त्वत्र—'यद्येकराशौ षट्षष्ठांशास्तदा ग्रहभुक्तराश्यादौ किमिति $= ६ \times$ राश्यादिग्र=मेषादिषष्ठांशा उपपद्यन्ते । एवमेव सप्तादिभिर्गुणिते ग्रहराश्यादौ सप्तमांशादयोऽप्युपपद्यन्ते । आचार्योक्तौ तु त्रिंशता संगुण्य-पुनस्त्रिंशता भजनं गौरवास्पदमेवाऽतो मत्कल्पितः पाठ एव साधुरिति निष्पक्षपातहृदयैः सुधीभिर्विवेचनीयम् ॥४४॥

द्वादशवर्गी का फल—

एवं द्वादशवर्गी स्याद्ग्रहाणां बलसिद्धये ।
स्वोच्चमित्रशुभात् श्रेष्ठा नीचारिक्रूरतोऽशुभा ॥४५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सं—एवं (अनेन विधिना) ग्रहाणां बलसिद्धये द्वादशवर्गी स्यात्। 'सा' स्वोच्चमित्रशुभात् श्रेष्ठा, नीचारिक्रूरतः अशुभा भवति ॥ ४५ ॥

भा०—इस प्रकार ग्रहों के बल सिद्ध्यर्थं द्वादशवर्गी है। यह अपनी, अपने उच्च की, अपने मित्र की और शुभ ग्रह की हो तो शुभ, और अपने नीच की शत्रु की और पाप ग्रह की अशुभ होती है ॥४५॥

एवं ग्रहाणां शुभपापवर्गपङ्क्तिद्वयं वीक्ष्य शुभाधिकत्वे।
दशाफलं भावफलं च वाच्यं शुभं त्वनिष्टं ह्यशुभाधिकत्वे ॥४६॥

सं०—एवं ग्रहाणां शुभपापवर्गपंक्तिद्वयं वीक्ष्य शुभाधिकत्वे सति दशाफलं भावफलं शुभं वाच्यम्, अशुभाधिकत्वे तु अनिष्टं फलं वाच्यम् ॥४६॥

भा०—इस प्रकार ग्रहों के शुभवर्ग और पापवर्ग दोनों देखकर यदि अधिकवर्ग शुभ ग्रह का हो तो दशाफल और भावफल शुभ, तथा पापग्रह का अधिक वर्ग हो तो दशाफल और भावफल अनिष्ट होता है ॥४६॥

क्रूरोऽपि सौम्याधिकवर्गशाली शुभोतिसौम्यः शुभखेचरश्चेत्।
सौम्योऽपि पापाधिकवर्गयोगान्नेष्टोऽतिनिन्द्यः खलु पापखेटः ॥४७॥

सं०—क्रूरोऽपि सौम्याधिकवर्गशाली शुभः स्यात्। चेत् शुभखेचरः सौम्याधिकवर्गशाली तदा अतिसौम्यः स्यात्। सौम्योऽपि पापाधिकवर्गयोगान्नेष्टः स्यात्। पापखेटस्तु पापाधिकवर्गयोगात् अतिनिन्द्यः खलु ॥४७॥

भा०—पापग्रह भी अधिक शुभवर्ग में पड़ै तो शुभ हो जाता है, और शुभग्रह अधिक शुभवर्ग में पड़ै तब तो अत्यन्त ही शुभ हो जाता है। इसी प्रकार शुभग्रह भी अधिक पापवर्ग में पड़ै तो पाप (अशुभ) हो जाता है, और पापग्रह अधिक पापवर्ग में पड़ै तब तो अत्यन्त ही निन्द्य (अशुभ) हो जाता है ॥४७॥

भावों का शुभाशुभ वर्ग—

राशीशमित्रोच्चरिपुक्रमेण चिन्त्यं तनोरप्यनयैव रीत्या।
भावेषु सर्वेष्वपि वर्गचक्रं विलोक्य तत्तत्फलमूहनीयम् ॥ ४८ ॥

सं०—तनोः अपि अनयैव रीत्या राशीशमित्रोच्चरिपुक्रमेण 'शुभाशुभत्वं' चिन्त्यम्। एवं सर्वेष्वपि भावेषु वर्गचक्रं विलोक्य तत्तत्फलं ऊहनीयम् ॥ ४८ ॥

भा०—लग्न के भी राशिस्वामी के उच्च, मित्र, शत्रु के अनुसार इसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकार शुभाशुभ वर्ग विचार करना। लग्न ही क्या ? सभी भावों के शुभाशुभ वर्गचक्र देख कर उन उन भावों का फल विचार करना ॥ ४८ ॥

लग्नादि भावों से विचारणीय—

शरीरवर्णचिह्नायुर्वयोमानं सुखासुखम् ।
जातिः शीलं च मतिमाँल्लग्नात्सर्वं विचिन्तयेत् ॥ ४९ ॥

सं०—'मतिमान् विचिन्तयेत्'। इति सर्वत्रान्वयः, अन्यत् स्पष्टार्थम् ॥४९॥

भा०—शरीर, वर्ण (श्याम, गौर, नील, पीत आदि), चिह्न, आयुर्दाय, वयस, सुख, दुःख, जाति, शील (आचार) इनका शुभाशुभत्व विचार बुद्धिमान् को लग्न से करना चाहिये ॥ ४९ ॥

सुवर्णरूप्यरत्नानि धातुर्द्रव्यं सखा धने ।
विक्रमे भ्रातृभृत्याध्वपित्र्यस्खलनसाहसम् ॥ ५० ॥

भा०—सुवर्ण, रूप (चाँदी) रत्न (हीरा आदि), धातु (गैरिक आदि), द्रव्य (कांसा पीतल आदि), सखा (मित्र) इनका धन (द्वितीय) भाव से विचार करना। और भाई, नौकर, अध्वा (मार्ग चलना, पिता का कार्यस्खलन तथा साहस कर्म ये विक्रम (तृतीय) भाव से विचारना चाहिये ॥ ५० ॥

पितृवित्तं निधिः क्षेत्रं गृहं भूमिश्च तुर्यतः ।
पुत्रे मन्त्रधनोपायगर्भविद्यात्मजेक्षणम् ॥ ५१ ॥

भा०—पिता का धन, गड़ा हुआ धन, खेती, मकान, भूमि ये चतुर्थ भाव से, और मन्त्र, धन का उपाय, गर्भ, विद्या, पुत्र पुत्री, ये पञ्चम भाव से विचारना चाहिये ॥ ५१ ॥

रिपौ मातुलमान्द्यारिचतुष्पाद्बन्धभीर्व्रणान् ।
द्यूने कलत्रवाणिज्यनष्टविस्मृतिसंकथा ॥५२॥
हृताध्वकलिमार्गादि चिन्त्यं द्यूने ग्रहोऽशुभः ।

भा०—मामा, रोग, शत्रु, चतुष्पद, बन्धन (पराश्रयता), भय, व्रण (घाव) ये षष्ठ भाव से। तथा स्त्री, वाणिज्य, नष्टवस्तु, विस्मृति (भूलना), हृताध्व (चोरी गई चीज का पता), कलि (कलह), मार्ग (यात्रा) ये सप्तम से विचारना चाहिये और सप्तम भाव में कोई भी ग्रह अशुभ होता है अर्थात् अशुभ ग्रह का विचार सप्तम से करना ॥ ५२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मृत्यौ चिरन्तनं द्रव्यं मृतवित्तं रणो रिपुः ॥ ५३ ॥
दुर्गस्थानं मृतिर्नष्टं परीवारो मनोव्यथा ।

भा०—पुराना द्रव्य, मरे हुए का धन, संग्राम, शत्रु, दुर्गस्थान, मरण, नष्टवस्तु, कुटुम्ब और मानसीव्यथा ये अष्टम स्थान से विचारना ॥ ५३ ॥

धर्मे रतिस्तथा पन्था धर्मोपायं विचिन्तयेत ॥ ५४ ॥
व्योम्नि मुद्रां परं पुण्यं राज्यवृद्धिं च पैतृकम् ।

भा०—रति (क्रीडा), यात्रा, और धर्म क्रिया का उपाय ये नवम भाव से, तथा मुद्रा (रुपया आदि), उत्कृष्ट पुण्य, राज्य वृद्धि (भाग्योदय), पिता सम्बन्धी वस्तु ये दशम भाव से विचारना चाहिये ॥ ५४ ॥

आये सर्वार्थधान्यार्घकन्यामित्रचतुष्पदाः ।।५५।।
राज्ञो वित्तं परीवारो लाभोपायांश्च भूरिशः ।
व्यये वैरिनिरोधार्तिव्ययादि परिचिन्तयेत् । ५६ ।।

भा०—सब प्रकार के धान्य (अन्न) का मोल, कन्या, मित्र, चतुष्पद, राजद्रव्य, परिवार और लाभ का उपाय ये एकादश भाव से तथा शत्रुओं का निरोध, आर्ति (पीड़ा) और व्यय ये द्वादश भाव से विचारना चाहिये ॥ ५५—५६ ॥

केन्द्रसंज्ञा और ग्रहों की बलिष्ठता—

लग्नाम्बुद्यूनकर्माणि केन्द्रमुक्तं च कण्टकम् ।
चतुष्टयं चाऽत्र खेटा बली लग्ने विशेषतः ।।५७।।

सं०—लग्नाम्बुद्यूनकर्माणि केन्द्रं च पुनः कण्टकं, चतुष्टयं च उक्तम् । अत्र (केन्द्रे) खेटो बली भवति, लग्ने विशेषतो बली भवति ॥ ५७ ॥

भा०—१।४।७।१० ये चारों स्थान केन्द्र, कण्टक, और चतुष्टय कहाते हैं। इन स्थानों में ग्रह बली होता है। इनमें सब स्थानों की अपेक्षा लग्न में विशेष बली होता है ॥ ५७ ॥

लग्नकर्मास्ततुर्यायसुताङ्कस्थो बली ग्रहः ।
यथाऽऽदिमं विशेषेण सत्रिवित्तेषु चन्द्रमाः ॥ ५८ ॥
कुजः सत्रिषु पृच्छायां सूतौ चान्यत्र चिन्तयेत् ।
भावा नवेत्थं शस्ताः स्यू रिःफाष्टरिपवोऽशुभाः ।
दीप्तांशातिक्रमे शस्ता इमेऽपीति विचिन्तयेत् ।।५९।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सं०—'कोऽपि' ग्रहो लग्नकर्मास्ततुर्य्यायसुताङ्कस्थो बली भवति, तत्रापि यथाऽऽदिमस्थानं विशेषेण बली, चन्द्रमाः सत्रिवित्तेषु कुजः सत्रिषु पूर्वोक्तलग्ना-दिस्थानेषु बली भवति। इत्थं इमे नवभावाः शस्ताः, रिष्फाष्टरिपवोऽशुभाः। इमे (रिस्फाष्टरिपवो) ऽपि ग्रहाणां दीप्तांशातिक्रमे 'दीप्तांशाधिकान्तरिताः' शस्ता इति विचिन्तयेत् ॥ ५८-५९ ॥

भा० १।१०।७।४।११।५।९ इन स्थानों में स्थित सब ग्रह बली होते हैं। इन पठित स्थानों में भी यथा-क्रम से पूर्व पूर्व स्थान में विशेष बली (अर्थात् नवम से पञ्चम में विशेष बली, पञ्चम से भी एकादश में, ११ से भी ४ में, ४ से भी ७ में, ७ से भी १० में और १० से भी १ लग्न में बली) होता है। और चन्द्रमा ३, २ स्थान में भी बली होता है। तथा मंगल ३ में भी बली होता है। यह जन्मकाल और प्रश्न काल में भी विचारना चाहिये॥ इस प्रकार से ये नवो भाव प्रशस्त हैं। तथा ४।८।१२ ये तीन भाव अशुभ हैं। इन तीन अशुभ भावों में भी ग्रह यदि अपने दीप्तांश को अतिक्रमण किया हो (अर्थात् भाव के अंशों से ग्रह के अंश दीप्तांशतुल्य अधिक-वा उससे भी अधिक हो) तो ये ४।८।१२ भाव भी प्रशस्त ही समझे जाते हैं॥ ५८-५९ ॥

वर्षेश निर्णयार्थ त्रिराशिपति—

त्रिराशिपाः सूर्यसितार्किशुक्रा दिने निशीज्येन्दुबुधक्ष्माजाः।
मेषाच्चतुर्णां हरिभाद्विलोमं नित्यं परेष्वार्किकुजेज्यचन्द्राः ॥६०॥

सं०—दिने 'वर्षप्रवेशे' मेषाच्चतुर्णां राशीनां क्रमेण सूर्य-सितार्किशुक्राः त्रिरा-शिपा भवन्ति। निशि इज्येन्दुबुधक्ष्माजाः क्रमेण मेषाच्चतुर्णां त्रिराशिपा भवन्ति। हरिभात् सिंहात् चतुर्णां राशीनां विलोमं ज्ञेयम्। तथा परेषु धनुरादिषु नित्यं (दिवा-रात्रौ) क्रमेण आर्किकुजेज्यचन्द्राः त्रिराशिपा भवन्ति॥ ६०॥

भा०—दिन मे वर्ष प्रवेश हो तो मेष, वृष, मिथुन, कर्क लग्नों में क्रम से सूर्य, शुक्र, शनि और शुक्र ये त्रिराशिपति होते हैं। रात्रि में मेषादि चारों लग्न में क्रम से बृहस्पति, चन्द्रमा, बुध और मंगल त्रिराशिपति होते हैं। और सिंहादि चार राशियों में इसके विलोम अर्थात् दिनवाले ग्रह रात्रि में और रात्रिवाले दिन में क्रम से त्रिराशिपति होते हैं। तथा धनु आदि ४ राशियोमें नित्य (दिन और रात्रि में) क्रम से शनि, मंगल, बृहस्पति और चन्द्रमा ये त्रिराशिपति होते हैं॥ ६०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्पष्टार्थ त्रिराशिपति चक्र—

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु	चं.	दिवालग्ने
गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.	रात्रिलग्ने

द्रेष्काणेश और त्रिराशिपति का प्रयोजन—

वर्षेशार्थं दिननिशा-विभागोक्तास्त्रिराशिपाः ।
पञ्चवर्गीबलाद्यर्थं द्रेष्काणेशान्विचिन्तयेत् ॥ ६१ ॥

सं—दिननिशाविभागेनोक्तास्त्रिराशिपा वर्षेशार्थं ज्ञेयाः । तथा द्विविधद्रेष्काणेशान् क्रमेण पञ्चवर्गीबलाद्यर्थं–पूर्वोक्तान् पञ्चवर्गीबलार्थं, अन्यान् द्वादशवर्गीबलार्थं विचिन्तयेत् ॥ ६१ ॥

भा०—यहाँ दिन रात्रि के विभाग से जो त्रिराशीश कहे गये हैं वे वर्षेश के लिये। और पहले जो द्रेष्काणपति दो प्रकार से कहे गये हैं वे पञ्चवर्गी बल और आदि शब्द से द्वादश वर्गी के लिये । अर्थात् "आद्याः कुजाद्याः" इत्यादि प्रकार से द्रेष्काणपति पञ्चवर्गी बल के लिये और "स्वेषुनवर्क्षनाथाः" इत्यादि प्रकार से जो द्रेष्काणपति कहे गये हैं, वे द्वादश वर्गी के लिये ॥६१॥

अथ मुथहा साधन—

स्वजन्मलग्नात्प्रतिवर्षमेकैकराशिभोगान् मुथहा भ्रमोऽतः ।
स्वजन्मलग्नं गतवर्षयुक्तं तदर्कतष्टं भमुखेन्थिहा स्यात् ॥६२॥
प्रत्यहं शरलिप्ताभिर्वर्धते सानुपाततः ।
सार्धमंशद्वयं मास इत्याहुः केऽपि सूरयः ॥६३॥

सं०—स्वजन्मलग्नात् प्रतिवर्षं एकैकराशिभोगात् मुथहाभ्रमः स्यात् । अतः स्वजन्मलग्नं गतवर्षयुक्तं तत् अर्क-(१२) तष्टं भमुखा राश्यादिका इन्थिहा (ग्रहविशेषः) स्यात् । सा (इन्थिहा) प्रत्यहं शरलिप्ताभिर्वर्धते, 'अतः' अनुपाततः मासे सार्द्धमंशद्वयं 'भवति' । इति केऽपि सूरयः आहुः ॥६२-६३॥

भा०—अपने जन्मलग्न से प्रति वर्ष १ राशि के भोग से मुथहा चलती है। इसलिये अपने जन्मलग्न में गतवर्ष जोड़ कर १२ से तष्टित करने से शेष राश्यादि मुथहा होती है । एक दिन में मुथहा पांच, पांच कला बढ़ती है, इस लिये अनुपात से १ मास में अढ़ाई अंश [२।३०] होती, ऐसा बहुत पण्डितों ने कहा है । मुथहा ही इन्थिहा कहाती हैं ॥६२-६३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्षेश के अधिकारी और निर्णय—

जन्मलग्नपतिरब्दलग्नपो मुन्थहाधिप इतस्त्रिराशिपः ।
सूर्यराशिपतिरह्नि चन्द्रभाधीश्वरो निशि विमृश्य पञ्चकम् ॥६४॥
बली य एषां तनुमीक्षमाणः स वर्षपो लग्नमनीक्षमाणः ।
नैवाब्दपो दृष्ट्यतिरेकतः स्याद्बलस्य साम्ये विदुरेवमाद्याः ॥६५॥
दृगादिसाम्येऽप्यथ निर्बलत्वे वर्षाधिपः स्यान्मुथहेश्वरस्तु ।

सं०—जन्मलग्नपतिः, अब्दलग्नपः, मुन्थहाधिपः, इतः (अस्मात् "त्रिराशिपा" इत्यादि प्रकारात्) त्रिराशिपः, अह्नि सूर्यराशिपतिः, निशि चन्द्रभाधीश्वरः, इति पञ्चकं विमृश्य, एषां यः बली तनुमीक्षमाणः स वर्षपः स्यात् । लग्नमनीक्षमाणः (सबलोऽपि लग्नमपश्यन्) अब्दपो नैव भवति। बलस्य साम्ये दृष्ट्यतिरेकतः दृष्ट्याधिक्यात् वर्षेशो भवति । एवं आद्या विदुः । दृगादि साम्ये, अथ निर्बलत्वे सति मुथहेश्वरो वर्षाधिपः स्यात् ॥ ६४–६५ ॥

भा०—जन्मलग्नेश (१) वर्षलग्नेश (२) मुन्थहेश (३) त्रिराशिपति (४) ये और दिन में वर्षलग्न हो तो सूर्यराशीश (५), यदि रात्रि में वर्ष लग्न हो तो पञ्चम अधिकारी चन्द्रराशीश (५) इन पाँचों को विचार कर इनमें जो बली हो और लग्न को देखता हो वह वर्षेश होता है । यदि लग्न को न देखे तो बली होने पर भी वर्षेश नहीं होता है। अर्थात् उस हालत में लग्न को देखने वाला अल्पबली ही वर्षेश होता है। लग्न देखने वाले अधिकारियों के बल में यदि समता हो तो जिसकी दृष्टि लग्न पर विशेष हो वह वर्षेश होता है। ऐसा आद्याचार्यों ने कहा है। अगर दृष्टि की भी समता हो अथवा पाँचो अधिकारी निर्बल (हीन बल) हो तो उस हालत में मुथहेश्वर वर्षेश होता है ॥ ६४–६५ ॥

वि०—इस प्रकार लग्न पर दृष्टिवश से वर्षेश का निर्णय हुआ। यदि लग्न पर किसी अधिकारी की दृष्टि न हो तो उस हालत में निर्णय कहते है—

विशेष—

पञ्चापि चेन्नो तनुमीक्षमाणा वीर्याधिकोऽब्दस्य विभुर्विचिन्त्यः ॥ ६६ ॥
बलादिसाम्ये रविराशिपोऽह्नि निशीन्दुराशोऽडिति केचिदाहुः ।
येनेत्थशाल्यऽब्दविभुः शशी स वर्षाधिपोऽर्केन्दुभपोऽन्यथात्वे ॥ ६७ ॥

६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सं०—चेत् पञ्चापि तनुमीक्षमाणाः नो तदा तेषु पञ्चस्वेव वीर्याधिकः अब्दस्य विभुः विचिन्त्यः। बलादिसाम्ये अह्नि रविराशिपः, निशि इन्दुराशीट् 'अब्दाधिपः' इति केचित् आहुः। 'अस्मन्मते तु'—येन ग्रहेण शशी इत्थशाली स अब्दविभुः, अन्यथात्वे अर्केन्दुभपः वर्षाधिपः स्यात् ॥ ६६—६७ ॥

भा०—यदि पाँचों अधिकारी लग्न को न देखते हों उस हालत में इन पाँचों में जो अधिक बली हो वह वर्षेश होता है। यदि बल में समता हो तो—"दिन में सूर्यराशिपति और रात्रि में चन्द्रराशिपति वर्षेश होता है।" इस प्रकार किसी आचार्य का मत है। परञ्च—स्वमत कहते हैं कि—(लग्न को न देखते हुए बल में समता हो तो) इन पाँचों वर्षेशाधिकारी में चन्द्रमा को जिस ग्रह से इत्थशाल हो वही वर्षेश होता है। अन्यथा (अर्थात् किसी के साथ चन्द्रमा का इत्थशाल न हो तो) दिन में सूर्यराशीश और रात्रि में चन्द्रराशीश वर्षपति होता है ॥ ६६—६७ ॥

राहु का मुख, पृष्ठ और पुच्छ—

भोग्या राहोर्लवास्तस्य मुखं पृष्ठं गता लवाः।
ततः सप्तमभं पृच्छं विमृश्येति फलं वदेत् ॥ ६८ ॥

सं०—राहोर्भोग्या लवास्तस्य (राहोः) मुखं, गता लवास्तस्य पृष्ठं, ततः सप्तमभं राहोः पुच्छं, केतुसंज्ञं, इति विमृश्य फलं वदेत् ॥ ६८ ॥

भा०—जिस राशि में राहु हो उसके भोग्य अंश राहु का मुख, और भुक्त अंश पृष्ठ, तथा राहु से सप्तम राशि उसका पुच्छ (केतु) कहाता है, इस प्रकार विचार करके फल कहना चाहिये ॥ ६८ ॥

सूर्यादि ग्रहों के स्वरूप—

सूर्यो नृपो ना चतुरस्रमध्यं दिनेन्द्रदिक्-स्वर्णचतुष्पदोग्रः।
सत्त्वं स्थिरस्तिक्तपशुक्षितिस्तु पित्तं जरन्पाटलमूलवन्यः ॥ ६९ ॥

सं०—सूर्यः नृपः ना (पुरुषः) इत्यादि स्पष्टार्थम् ॥ ६९ ॥

भा०—सूर्य-क्षत्रिय, पुरुष, चतुरस्र आकार (अर्थात् दोनों हाथ फैलाने से जितना प्रमाण हो उतनी ही ऊँचाई वाला) मध्याह्न में बली, पूर्वदिक् स्वामी, सुवर्णद्रव्याधिप, चतुष्पद का स्वामी, उग्र पापग्रह, सत्त्वगुण, स्थिर, तिक्तरसप्रिय, पशुओं की भूमि में रहने वाला, पित्तप्रकृति, वृद्ध, पाटल (श्वेत रक्त मिला) वर्ण, मूल (धान्य आदि) का अधिष्ठाता तथा वनचरों का स्वामी है ॥ ६९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वैश्यः शशी स्त्री जलभूस्तपस्वी गौरोऽपराह्णाम्बुगधातुसत्वम् ।
वायव्यदिक्श्लेष्मभुजङ्गरूप्यस्थूलो युवा क्षारशुभः सिताभः ॥ ७० ॥

भा०—चन्द्रमा-वैश्य, स्त्री, जलार्द्रभूमिचारी, तपस्वी, गौरवर्ण, अपराह्ण में बली, जलचरों का स्वामी, धातु (गैरिकादि) का स्वामी, सत्त्वगुणी, वायव्य दिशा का स्वामी, कफ प्रकृति, सर्पों का स्वामी, रूपा (चाँदी) का स्वामी, अत्यन्त पुष्ट, युवा, लवणरस प्रिय, शुभग्रह और श्वेत वर्ण है ॥ ७० ॥

भौमस्तमः पित्तयुवोग्रवन्यो मध्याह्नधातुर्यमदिक् चतुष्पात् ।
ना राट् चतुष्कोणसुवर्णकारो दग्धाऽवनीव्यङ्गकटुश्च रक्तः ॥ ७१ ॥

भा०—मंगल—तमोगुणी, पित्तप्रकृति, युवा, उग्र (पापग्रह), वन जन्तुओं का स्वामी, मध्याह्न में बली, धातु, दक्षिण दिशा का स्वामी, ना (पुरुष), राट् (क्षत्रिय), चतुष्कोण आकृति, सुनारों का स्वामी, दग्धभूमि में रहनेवाला, अङ्गरहित, कटुरस प्रिय और रक्त वर्ण है ॥ ७१ ॥

ग्राम्यः शुभो नीलसुवर्णवृत्तः शिश्विष्टकोच्चः समधातुजीवः ।
श्मशानयोषोत्तरदिक्प्रभातं शूद्रः खगः सर्वरसा रजो ज्ञः ॥ ७२ ॥

भा०—बुध—ग्राम में रहने वाला, शुभग्रह, नीलवर्ण, सुवर्णद्रव्य का स्वामी, गोलाकृति, बाल्यावस्थावाला, उच्च स्थान प्रिय, समधातु (तुल्य कफ-पित्त-वात वाला) जीवों का स्वामी, श्मशान भूमिचारी, स्त्री-ग्रह, उत्तरदिशा का स्वामी, प्रातःकाल में बली, शूद्रवर्ण, पक्षियों का स्वामी, सर्वरसप्रिय, और रजोगुणी है ॥ ७२ ॥

गुरुः प्रभाते नृ-शुभेशदिग् द्विजः पीतो द्विपाद्-ग्राम्यसुवृत्तजीवः ।
वाणिज्यमाधुर्यसुरालयेशो वृद्धः सुरत्नं समधातु सत्त्वम् ॥७३॥

भा०—गुरु—प्रातःकाल में बली, पुरुष, शुभग्रह, ईशानदिक् स्वामी, ब्राह्मण, पीतवर्ण, द्विपद, गाँव में रहने वाला, सुवृत्त (गोल आकृति) जीवों का स्वामी, वाणिज्य करने वाला, मधुर-रस प्रिय, देवालय का स्वामी, वृद्ध, रत्नों का स्वामी, सम धातु (तुल्य कफ-पित्त-वात), और सत्त्व-गुण वाला है ॥ ७३ ॥

शुक्रः शुभः स्त्री जलगोऽपराह्णः श्वेतः कफी रूप्यरजोऽम्लमूलम् ।
विप्रोऽग्निदिङ्मध्यवयो रतीशो जलावनीस्निग्धरुचिर्द्विपाच्च ॥७४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—शुक्र-शुभग्रह, स्त्री, जलचारी, अपराह्ण में बली, श्वेतवर्ण, कफ-प्रकृति, रूपों का स्वामी, रजोगुणी, अम्ल (खट्टा) रसप्रिय, मूलों का स्वामी, ब्राह्मण, अग्नि दिशा का स्वामी, मध्यवय (युवा) रतीश (क्रीड़ा प्रिय) जल भूमि में रहने वाला, स्निग्ध रुचि (चिक्कनकान्ति) वाला और द्विपद है ॥ ७४ ॥

शनिर्विहङ्गोऽनिलवन्यसन्ध्याशूद्राङ्गनाधातुसमः स्थिरश्च ।
क्रूरः प्रतीची तुवरोऽतिवृद्धोत्करक्षितीट् दीर्घसुनीललोहम् ॥७५॥

भा०—शनि–पक्षियों का स्वामी, अनिल (वायु तत्त्व), वन जन्तुओं का स्वामी, सन्ध्या काल में बली, शूद्र, स्त्री ग्रह, धातु सम, स्थिर, पापग्रह, पश्चिम दिशा का स्वामी, तुवर (कषाय रस प्रिय), अत्यन्त वृद्धावस्था, उत्करभूमि (कतवारखाना) का स्वामी, लम्बा आकार, नीलवर्ण और लोहे का स्वामी है ॥ ७५ ॥

राहुस्वरूपं शनिवन्निषादजातिर्भुजङ्गोऽस्थिपनैर्ऋतीशः ।
केतुः शिखी तद्वदनेकरूपः खगस्वरूपात्फलमूह्यमित्थम् ॥ ७६ ॥

भा०—राहु का स्वरूप शनि के सदृश ही हैं, विशेष निषाद जाति और सर्प, हड्डी, तथा नैर्ऋत दिशा का स्वामी है। केतु भी उसी प्रकार है विशेष–शिखावान्, और अनेक प्रकार के रूप वाला है। ग्रहों के स्वरूप से ही जन्म, वर्ष और प्रश्न काल में फल-विचार करना चाहिये ॥ ७६ ॥

मित्रशत्रु भेद से ग्रहों की ४ प्रकार की दृष्टि—

दृष्टिः स्यान्नवपञ्चमे बलवती प्रत्यक्षतः स्नेहदा
पादोनाऽखिलकार्यसाधनकरी मेलापकाख्योच्यते ।
गुप्तस्नेहकरी तृतीयभवमे कार्यस्य संसिद्धिदा
त्र्यंशोना कथिता तृतीयभवने षड्भागदृष्टिर्भवे ॥ ७७ ॥

सं०—'ग्रहाणां स्वाधिष्ठितस्थानात्' नवपञ्चमे दृष्टिः बलवती स्यात्, सा प्रत्यक्षतः स्नेहदा, पादोना, अखिलकार्यसाधनकरी मेलापकाख्या च उच्यते। तृतीयभवमे दृष्टिः गुप्तस्नेहकरी, कार्यस्य संसिद्धिदा स्यात्, 'तत्र' तृतीयभवने त्र्यंशोना, भवे (एकादशे) षड्भागदृष्टिर्भवति ॥ ७७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—अपने अपने स्थान से ९।५ स्थानों पर ग्रहों की दृष्टि बलवती और प्रत्यक्ष स्नेह (मैत्री) कराने वाली, पादोन, (३ चरण) होती परञ्च सम्पूर्ण कार्य को सिद्ध करने वाली तथा मेलापका कहाती है । और ३।११ स्थान पर जो दृष्टि होती है वह गुप्त रूप से स्नेह कराने वाली, कार्य को सिद्ध करने वाली, विशेष यह कि—तृतीय स्थान पर तृतीयांश हीन (०।४०) और ११ स्थान पर षष्ठांश (०।१० कला) दृष्टि होती है ॥ ७७ ॥

दृष्टिः पादमिता चतुर्थदशमे गुप्तारिभावा स्मृता-
ऽन्योन्यं सप्तमभे तथैकभवने प्रत्यक्षवैराऽखिला ।
दुष्टं दृक्त्रितयं क्षुताह्वयमिदं कार्यस्य विध्वंसदं
संग्रामादिकलिप्रदं दृश इमाः स्युर्द्वादशांशान्तरे* ॥ ७८ ॥

सं०—चतुर्थदशमे दृष्टिः पादमिता चतुर्थांशतुल्या, सा गुप्तारिभावा स्मृता । अन्योन्यं सप्तमभे तथैकभवने अखिला दृष्टिः प्रत्यक्षवैरा स्मृता । इदं दृक्त्रितयं दुष्टं, क्षुताह्वयं, कार्यस्य विध्वंसदं, संग्रामादिकलिप्रदं स्यात् । इमाः दृशः द्वादशांशान्तरे (दीप्तभागान्तरे) स्युः ॥ ७८ ॥

भा०—अपने स्थान से ४।१० स्थानों पर दृष्टि १ चरण (०।१५) गुप्तरूप से शत्रुता कराने वाली होती है । तथा परस्पर सप्तम में और एक स्थान में सम्पूर्ण दृष्टि और प्रत्यक्ष रूपसे शत्रुता कराने वाली होती है । ये तीनों (परस्पर दशम चतुर्थ, परस्पर सप्तम और एक स्थान की) दृष्टि दुष्ट फल देने वाली, क्षुत नामकी, सब कार्यों को नाश करने वाली और संग्राम आदि कलह कराने वाली होती है । और ये दृष्टि १२ अंश के भीतर ही समझी जाती है अर्थात् द्रष्टा और दृश्य का अन्तरांश १२ अंश के भीतर अर्थात् दीप्तांश से अल्प हो तभी यथोक्तफल प्राप्त होता है ॥ ७८ ॥

गणित द्वारा सूक्ष्म (स्पष्ट) दृष्टि—

अपास्य पश्यं निजदृश्यखेटादेकादिशेषे ध्रुवलिप्तिकाः स्युः ।
शून्यं खवेदास्तिथयोऽक्षवेदाः खं षष्टिरभ्रं शरवेदसंख्या ॥७९॥
तिथ्यः खचन्द्रा वियदभ्रतर्काः शेषांशयातैष्यविशेषघातात् ।
लब्धं खरामै ३० रधिकोनकैष्ये स्वर्णं ध्रुवे ताःस्फुटदृष्टिलिप्ताः॥८०॥

* "स्युर्दीप्तभागान्तरे" इति पाठः साधुः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सं०—निजदृश्यखेटात् पश्यं 'द्रष्टारं' अपास्य एकादिशेषे क्रमेण शून्यं, खवेदाः तिथयः, अक्षवेदाः, खं, षष्टिः, अभ्रं, शरवेदसंख्या, तिथ्यः, खचन्द्राः, वियत्, अभ्रतर्काः, 'इति' ध्रुवलिप्तिकाः स्युः। शेषांशयातैष्यविशेषघातात् खरामैः लब्धं, 'क्रमेण' अधिकोनकैष्ये ध्रुवे स्वर्णं (अधिकैष्ये ध्रुवे धनं, ऊनैष्ये ऋणं) कार्यं ताः स्फुटदृष्टिलिप्ताः भवन्ति ॥ ७९–८० ॥

भा०—द्रष्टा ग्रह को अपने दृश्य में घटाकर १ आदि राशि शेष में क्रम से ०।४०।१५।४५।०।६०।०।४५।१५।१०।०।६० ये कलात्मक गत ध्रुव होते हैं। तथा शेष अंशादि को गत और ऐष्य (अग्रिम) ध्रुव के अन्तर से गुना कर ३० का भाग देकर लब्ध फल को गत ध्रुव से अग्रिम अधिक हो तो गत ध्रुव में जोड़ने से, और अग्रिम ध्रुव अल्प हो तो गत ध्रुव में ही घटाने से स्पष्ट दृष्टि कला होती है ॥ ७९–८० ॥

दृष्टिध्रुव चक्र—

राशि शेष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
ध्रुवाङ्क	०	४०	१५	४५	०	६०	०	४५	१५	१०	०	६०

उपपत्तिः—पश्यदृश्यग्रहयोरन्तरं १ राशितुल्यं तदा मिथो द्विर्द्वादशस्थितत्वाद् दृष्टिः शून्यं०। यदि राशिद्वयमन्तरं तदा तृतीयस्थानस्थितत्वाद् दृष्टिः ०।४०। कलाः। एवमग्रेऽपि ध्रुवाङ्का उपपद्यन्ते। शेषांशैरनुपातो यदि त्रिंशदंशैर्गतैष्यध्रुवयोरन्तरं लभ्यते तदा शेषांशैः किमिति= $\frac{(\text{ग ७ ए})\ \text{शे अं}}{३०}$ फलमिदं एष्यध्रुवस्याधिक्ये वृद्धित्वात् गते ध्रुवे धनम्, एष्यस्य न्यूनत्वे क्षयत्वात् गतध्रुवे हीनं कार्यम्। इत्युपपन्नम् ॥ ७९–८० ॥

उदा०—जो देखता है वह पश्य (द्रष्टा) जिसको देखता वह दृश्य कहाता है। जैसे—रवि के ऊपर चन्द्रमा की दृष्टि कितनी है, यह लाना है तो यहां द्रष्टा चन्द्रमा, और दृश्य रवि हुआ। अब स्पष्ट रवि ११।१२।२२।१७ में स्पष्ट चन्द्रमा ०।२०।४९।२ को घटाने से शेष १०।२१।३३।१५ दशवां गत ध्रुव १० हुआ। और एष्य ध्रुव० दोनों का अन्तर १० से शेष अंशादि २१।३३।१५ को गुना कर २१५।३२।३० इसमें ३० का भाग देकर लब्धि ७।११ इसको एष्य ध्रुव को अल्प होने के कारण गत ध्रुव १० में घटाने से २।४९ यह रवि के ऊपर चन्द्र की स्पष्ट दृष्टि हुई। इसी प्रकार सब ग्रहों पर सब ग्रहों की दृष्टि साधन कर चक्र में रखी गयी है, ग्रन्थ के अन्त में देखो ॥ ७९–८० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ ग्रहमैत्री और दीप्तांश—

पश्यन्मित्रदृशा सुहृद्रिपुदृशा शत्रुः समस्त्वन्यथा
तिथ्यर्काष्टनगाङ्कशैलखचराः सूर्यादिदीप्तांशकाः ।
चक्रे वामदृगुच्यते बलवती मध्याद्यथावेश्मनी-
त्येकर्क्षेऽपि दृगुच्यतेऽर्थजननीत्येके विदुः सूरयः ॥ ८१ ॥

सं०—मित्रदृशा पश्यन् सुहृद्, रिपुदृशाप श्यन् शत्रुः, अन्यथा समः स्यात् । तिथ्यर्काष्टनगाङ्कशैलखचराः क्रमेण सूर्यादिदीप्तांशका भवन्ति । चक्रे वामदृग् बलवती उच्यते, यथा मध्यात् (दशमस्थानात्) वेश्मनि (चतुर्थे), एकर्क्षेऽपि दृक् अर्थजननी उच्यते इत्येके सूरयो विदुः ॥ ८१ ॥

भा०—उपरोक्त मित्र दृष्टि से देखने वाला मित्र, और शत्रु दृष्टि से देखने वाला परस्पर शत्रु होता है । अन्यथा (जिस पर दृष्टि न हो वह) सम होता है । और १५,१२,८,७,९,७,९ इतने क्रम से सूर्यादि ग्रहों के दीप्तांश हैं । और द्वादश राशियों के चक्र (लग्न कुण्डली) में वाम दृष्टि बलवती होती है; जैसे—मध्य (दशम) स्थान से चतुर्थ स्थानस्थ ग्रह पर बलवती है । तथा एक राशिस्थ दृष्टि भी धन देने वाली होती है ऐसा बहुत पण्डितों ने कहा है ॥ ८१ ॥

वि०—एक सम्मुख दृष्टि और २ पार्श्व (दक्षिण, वाम) दृष्टि इस तरह ग्रहों की ३ प्रकार दृष्टि होती है । उनमें १।७ इन दो स्थानों पर सम्मुख, तथा स्वस्थान से से ३।४।५ इन तीन स्थानों पर वाम और ११, १०, ९ इन तीन स्थानों पर दक्षिण दृष्टि कहाती है । इस प्रकार प्रत्येक ग्रह ८ स्थान को देखता है । इसलिये १।७ में सम्मुख होने के कारण अखिल दृष्टि कही गई है । तथा तृतीय (वाम) में ०।४०, और दक्षिण (एकादश) में ०।१० कला कही गई है । इसी प्रकार यहां १० की अपेक्षा ४ चतुर्थ पर, और ९ की अपेक्षा ५ पर दृष्टि बलवती होती है । अर्थात् परस्पर चतुर्थ दशमस्थ ग्रहों में एक की चतुर्थ दृष्टि और एक की दशम दृष्टि होती । इन दोनों में दूर दृष्टि से समीप की दृष्टि बलवती है ।

जैसे वर्ष लग्न कुण्डली देखो—रवि पर शुक्र की तृतीय, और शुक्र पर रवि की एकादश दृष्टि है, यहां रवि की अपेक्षा शुक्र की दृष्टि अधिक हुई । रवि की बृहस्पति पर दशम और बृहस्पति की रवि पर चतुर्थ दृष्टि है इसलिये रवि की अपेक्षा बृहस्पति की अधिक दृष्टि है इसी प्रकार परस्पर नवम पञ्चमस्थ गुरु मंगल में मंगल की अपेक्षा गुरु की दृष्टि बलवती (अधिक) है ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस प्रकार दृष्टि के आशय को नहीं समझकर 'विश्वनाथ' तथा उनके अनुकरण करने वाले टीकाकारों ने लग्नसे ही वाम और दक्षिणभाग मान लिया है ॥ ८१ ॥

दीप्तांश का प्रयोजन—

पुरः पृष्ठे स्वदीप्तांशैर्विशिष्टं दृक्फलं ग्रहः ।
दद्यादतिक्रमे तेषां मध्यमं दृक्फलं विदुः ॥८२॥

सं०—ग्रहः पुरः (अग्रे) पृष्ठे (पश्चात्) च स्वदीप्तांशैः विशिष्टं दृक्फलं दद्यात् । तेषां (दीप्तांशानां) अतिक्रमे मध्यमं दृक्फलं विदुः ॥८२॥

भा०—ग्रह अपने अपने दृष्टि स्थानों में दीप्तांशों के भीतर दृष्ट अंश से आगे और पीछे विशिष्ट दृष्टिफल देते हैं। और दीप्तांशों से अधिक अंशों में मध्यम दृष्टि फल देते हैं ॥ ८२ ॥

वि०—जैवाँ अंश पर ग्रह रहता है, अपनी दृश्य राशि के तैवाँ ही अंश पर उसकी दृष्टि पड़ती है और उस अंश से आगे और पीछे अपने दीप्तांशतुल्य दृग्रश्मि फैलती है इसलिये दीप्तांश पर्यन्त अधिक दृष्टि होने के कारण विशेष दृक् फल कहा गया है। क्योंकि दृष्टि के अनुसार ही सम्बन्ध और फल हुआ करता है। दृश्य राशि में भी दीप्तांश के बाहर, दृष्टि की अल्पता होने के कारण मध्यम फल होता है ॥ ८२ ॥

उदा०—कुण्डली देखो-मेष १३ अंश पर शुक्र है और कर्क में १३ अंश पर चन्द्रमा, १८ अंश पर शनि, और ११ अंश पर गुरु है। यहाँ शुक्र की दृष्टि कर्क के १३ वाँ अंश पर पड़ती है और उससे दीप्तांश ७ तुल्य आगे अर्थात २० वाँ अंश तक तथा दीप्तांश तुल्य पीछे अर्थात् छठा अंश तक स्पष्टतया दृष्टि है। इसलिये चन्द्रमा पर तो पूर्ण दृष्टि ६० कला हुई, और उसकी अपेक्षा गुरु पर और गुरु की अपेक्षा भी शनि पर कुछ कम दृष्टि हुई क्योंकि जितना ही अंशान्तर अल्प होता है उतनी ही दृष्टि में अधिकता होती है। तथा ९ वें स्थान में होने के कारण मंगल पर भी शुक्र की दृष्टि है। परञ्च दीप्तांश से बाहर होने के कारण मध्यम दृष्टि है । परस्पर दृष्ट ग्रहों का अन्तर दीप्तांश से अल्प हो तो दीप्तांश के भीतर अन्यथा बाहर समझना चाहिये ॥८२॥

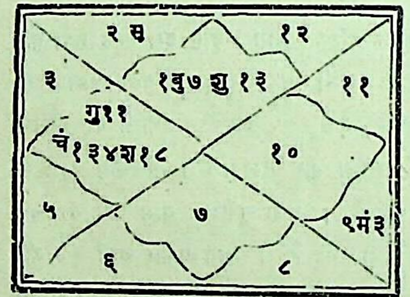

इति गूढार्थप्रकाशिकासहितनीलकण्ठ्यां प्रथमाध्यायः ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ षोडशयोगाध्यायः ॥२॥

षोडशयोगों के नाम—

प्रागिक्कवालो पर इन्दुवारस्तथेत्थशालोऽपर ईसराफः।
नक्तं ततः स्याद्यमया मणाऊ कबूलतो गैरिकबूलमुक्तम् ॥ १ ॥
खल्लासरं रद्दमथो दुफालिकुत्थं च दुत्थोत्थदवीरनामा।
तंबीरकुत्थौ दुरफश्च योगाः स्युः षोडशैषां कथयामि लक्ष्म ॥ २ ॥

सं०—'इक्कवाल' इत्यादियोगनामानि स्फुटान्येवेति ॥ १–२ ॥

भा०—इक्कवाल १, इन्दुवार २, इत्थशाल ३, ईसराफ ४, नक्त ५, यमया ६, मणाऊ ७, कबूल ८, गैरि कबूल ९, खल्लासर १०, रद्द ११, दुफालिकुत्थ १२, दुत्थोत्थदवीर १३, तंबीर १४, कुत्थ १५, दुरफ १६, ये षोडश योग हैं इनके लक्षणों को कहता हूँ ॥ १–२ ॥

इक्कवाल और इन्दुवार योगों के लक्षण—

चेत्कण्टके पणफरे च खगाः समस्ताः
स्यादिक्कवाल इति राज्यसुखाप्तिहेतुः।
आपोक्लिमे यदि खगाः स किलेन्दुवारो
न स्याच्छुभः क्वचन ताजिकशास्त्रगीतः ॥ ३ ॥

सं०—चेत् समस्ताः खगाः कण्टके पणफरे 'स्युः तदा,' इक्कवालः स्यात्, इति (अयं) राज्यसुखाप्तिहेतुर्भवति। यदि समस्ताः खगाः आपोक्लिमे स्युस्तदा इन्दुवारः स्यात्। स किल (निश्चयेन) ताजिकशास्त्रगीतः क्वचन (कुत्रापि जन्मसमये प्रश्नसमयेऽपि वा) शुभो न स्यात् ॥ ३ ॥

भा०—यदि सब ग्रह केन्द्र और पणफर में ही हो तो इक्कवाल योग राज्य और सुख को देने वाला होता है। अगर सब ग्रह आपोक्लिम में ही हो तो इन्दुवार नामक योग होता है, वह ताजिकशास्त्र में कहीं भी (जन्म, वर्ष या प्रश्न में) शुभ नहीं कहा गया है ॥ ३ ॥

इत्थशालयोग की विशेषता—जैसे-किसी कार्याधिकारी से साक्षात् या परम्परा सम्बन्ध होने पर ही कार्य सिद्ध होता है, और बिना सम्बन्ध (याने बिना उसके सामने जाने) से कार्यसिद्ध नहीं होता है। उसी प्रकार लग्नेश और कार्येश के परस्पर दर्शन आदि सम्बन्ध बिना कार्य सिद्ध नहीं होता है इसलिये लग्नेश और कार्येश के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परस्पर दृष्टि सम्बन्ध से मिलना (योग होना) "इत्थशाल योग" कहाता है। यह परस्पर मिलने से आनन्दित होने के कारण कार्यकारक होता है। तथा दोनों के मिलने के बाद जब फिर दोनों में विच्छेद होने लगता है तब वियोग से खेदित होने के कारण कार्य सिद्ध नहीं होता इसलिये 'ईसराफ' योग कहाता है।

इससे सिद्ध हुआ कि शीघ्र (अधिक) गति वाला ग्रह मन्दगति ग्रह की तरफ चल कर उससे मिले (याने दोनों पर दोनों की दृष्टि पड़े) तब इत्थशाल योग होता है। इस प्रकार मिलना जब मार्गी शीघ्रगति थोड़े अंश में और मन्दगति अधिक अंश में हो तभी हो सकता है। अथवा वक्री (उल्टा चलने वाला) शीघ्रगति ग्रह अधिक अंश पर और मन्द गति अल्प अंश पर है तब भी इत्थशाल होता है। निष्कर्ष हुआ कि परस्पर दृष्ट लग्नेश और कार्येश का अंशान्तर उत्तरोत्तर अल्प हो तो 'इत्थशाल' योग कहाता है। और अंशान्तर ज्यों ज्यों अल्प होता है त्यों त्यों दृष्टि में अधिकता होने के कारण योग में भी विशेषता होती है। जब दोनों का अंश बराबर हो जाता (अर्थात् अंशान्तर शून्य हो जाता) है तब पूर्ण दृष्टि होने के कारण योग की भी पूर्णता होती है। जो आगे आचार्योक्त लक्षण और उदाहरणों से स्पष्ट है ॥ ३ ॥

इत्थशाल योग का लक्षण—

शीघ्रोऽल्पभागैर्घनभागमन्देऽग्रस्थे निजं तेज उपाददीत ।
स्यादित्थशालोऽयमथो विलिप्ता–लिप्तार्धहीनो यदि पूर्ण एषः ॥ ४ ॥

सं०—यदि शीघ्रः (अधिकगतिग्रहः) अल्पभागैः स्थितः, अग्रस्थे (स्वसम्मुखस्थिते) घनभागमन्दे (अधिकांशे मन्दगतिग्रहे) निजं तेजः उपाददीत तदाऽयं 'इत्थशालः' स्यात्। यदि "मन्दात् शीघ्रः" विलिप्तालिप्तार्धहीनस्तदा एष पूर्णः स्यात्। अन्यथा सामान्य इत्थशाल इत्यर्थादेव सिद्ध्यति ॥ ४ ॥

भा०—यदि शीघ्र गति ग्रह के भुक्तांश थोड़ा हो और अपने सम्मुख स्थित अधिक अंश पर स्थित मन्द गति ग्रह को अपना तेज देता हो (अर्थात् अपने दीप्तांश के भीतर देखता हो) तो इत्थशाल नामक योग होता है। यदि मन्दगति ग्रह से शीघ्रगति केवल एक आध विकला हीन (पीछे) हो तो यह योग पूर्ण समझा जाता है। अर्थात् शीघ्रगति ग्रह के अंश कला विकला मन्द ग्रह के तुल्य हो या विकला मात्र अल्प हो तो पूर्ण अन्यथा सामान्य 'इत्थशाल' योग होता है ॥ ४ ॥

वि०—आचार्य के आशय को नहीं समझ कर कितने टीकाकार "घनभागमन्देऽग्रस्थे" के स्थान में "घनभागमन्दे ग्रस्ते" पाठ कल्पना करके 'ग्रस्ते' का अर्थ करते हैं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कि "दीप्तांश के भीतर हो" परञ्च 'दीप्तांश' के भीतर हो यह तो "निजं तेज उपाददीत" इसी से सिद्ध है। क्योंकि 'दीप्तांश' का ही पर्याय तेज है। अतः तेज देना ही दीप्तांश से व्याप्त करना है। इसलिये यहाँ "अग्रस्थे" यही पाठ समीचीन है, क्योंकि जिधर ग्रह जाता है उधर अग्र कहाता है। जब मन्द गति की तरफ शीघ्र जायगा तभी अंशान्तर अल्प होकर इत्थशाल होगा। यदि शीघ्रगति ग्रह उल्टा चलेगा तब मन्दगति उससे पीछे पड़ेगा और उत्तरोत्तर अंशान्तर अधिक होने से योग का अभाव होकर ईसराफ हो जायगा। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि शीघ्रगति ग्रह वक्री होकर मन्द गति की अपेक्षा अधिक अंश में हो तब भी उत्तरोत्तर अंशोत्तर अल्प होने से इत्थशाल होता है। वक्री ग्रह अधिक अंशपर रहता है तो उसका भुक्तांश अल्प समझा जाता है। इसलिये यहाँ अंशपद से भुक्तांश समझना-अर्थात् शीघ्र गति ग्रह के भुक्तांश अल्प हो और मन्दगति ग्रह के भुक्तांश अधिक हो और दोनों का अंशान्तर दीप्तांश से अल्प हो तथा परस्पर दृष्टि स्थान में हो तो इत्थशाल होता है। तथा थोड़े अंशपर रहकर भी शीघ्रगति वक्र हो तो इत्थशाल नहीं होता अर्थात् वहाँ ईसराफ हो जाता है।

इसलिये इत्थशाल और ईसराफ के मदुक्त लक्षण—

मिथोदृक्खगयोर्दीप्त-भागाल्पा अन्तरांशकाः।
उत्तरोत्तरमल्पाश्चेदित्थशालः शुभस्तदा॥
अन्तरांशास्तयोश्चेत् स्युरधिका उत्तरोत्तरम्।
ईसराफोऽशुभोऽसौ चेत् पापयोः, शुभयोः समः॥

अर्थ—परस्पर दृष्ट दो ग्रहों के अंशान्तर उत्तरोत्तर अल्प होने वाला हो तो शुभप्रद इत्थशाल योग होता है। यदि अन्तरांश उत्तरोत्तर अधिक होने वाला हो तो ईसराफ योग होता है। वह पाप ग्रहों से हो तो अशुभ और शुभ ग्रहों से हो तो मध्यम (न शुभ, न अशुभ) समझा जाता है॥ ४॥

सामान्य और पूर्ण इत्थशाल कहकर भविष्यत् इत्थशाल कहते हैं—

शीघ्रो यदा भान्त्यलवस्थितः सन् मन्देऽग्रभस्थे निदधाति तेजः।
स्यादित्थशालोऽयमथैष शीघ्रो दीप्तांशकांशैरिह मन्दपृष्ठे॥५॥
तदा भविष्यद्गणनीयमित्थशालं त्रिधैवं मुथशीलमाहुः।
लग्नेशकार्याधिपयोर्यथैष योगस्तथा कार्यमुशन्ति सन्तः॥६॥

सं०—शीघ्रो यदा भान्त्यलवस्थितः सन् अग्रभस्थे (स्वसम्मुखस्थे) मन्दे (मन्दगतिग्रहे) निजं तेजः निदधाति तदाऽयं इत्थशालः स्यात्। अथ एष

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शीघ्रो दीप्तांशकांशैः मन्दपृष्ठे 'स्यात्' । तदा भविष्यत् इत्थशालं गणनीयम् । एवं त्रिधा (वर्तमान-भूत-भविष्यद्रूपं) मुथशीलमाहुः । लग्नेशकार्याधिपयोः यथा एष योगः स्यात्, तथा कार्यं सन्तः उशन्ति (कथयन्ति) ॥ ५—६ ॥

भा०—शीघ्रगति ग्रह यदि राशिके ३० वें अंश में हो और उससे द्वितीय राशि में स्थित मन्दगति ग्रहको अपना तेज देता हो (अर्थात् मन्दगति ग्रह यदि शीघ्र दीप्तांश से अल्प अंश में हो) तब भी इत्थशाल होता है। तथा यदि शीघ्रगति ग्रह ठीक अपने दीप्तांश तुल्य मन्दगति ग्रह से पीछे हो तो भविष्यत् इत्थशाल समझना, इस प्रकार तीन भेद से (अर्थात् सामान्य, पूर्ण और भविष्य) इत्थशाल होते हैं, यह योग लग्नेश और कार्येश में जिस प्रकार हो उसी प्रकार से कार्य की सिद्धि मुनियों ने कही है—अर्थात् लग्नेश कार्येश में सामान्य (वर्तमान) इत्थशाल हो तो सामान्य रूपसे, वर्तमान समय में कार्य हो रहा है। पूर्ण इत्थशाल हो तो पूर्ण रूपसे कार्यसिद्धि हो चुकी है । यदि भविष्यत् इत्थशाल हो तो कार्यसिद्धि भविष्य में कहनी चाहिए ॥ ५—६ ॥

लग्नकुण्डली—

उदाहरण—(१) दो ग्रहोंका मिलना इत्थशाल, और विछुरना ईसराफ कहलाता है। लग्न कुण्डली देखो, सन्तान भाव का विचार करना है तो लग्नेश मङ्गल और कार्येश सूर्य हुआ । इनमें सूर्य शीघ्रगति, और मंगल मन्दगति हैं। यहां मन्दगति मङ्गल के अंश ७ से शीघ्रगति सूर्य के अंश १ अल्प हैं तथा दोनों का अंशान्तर ६ यह मंगल के दीप्तांश से अल्प है तथा दोनों में नवम पञ्चम (मैत्री) दृष्टि भी है, इस लिये सामान्य इत्थशालयोग हुआ । अतः पुत्र सुख सामान्य अवश्य होना सिद्ध हुआ है ।

(२) यदि धन लाभ का विचार करना है तो कार्येश शुक्र हुआ । वह लग्नेश की अपेक्षा शीघ्रगति और मार्गी है, तथा लग्नेश से केवल १ विकला न्यून है दोनों में दृष्टि भी है अतः पूर्ण इत्थशाल योग हुआ । अतः धन लाभ पूर्ण होना सिद्ध होता है। अर्थात् धनलाभ हो चुका और हो भी रहा है ।

(३) यदि भाग्योदय का विचार करना हैं तो भाग्येश गुरु है वह मन्दगति और लग्नेश शीघ्रगति है । दोनों में दृष्टि है परञ्च अंशों का अन्तर ८ शीघ्र गति के ठीक दीप्तांश तुल्य है । इसलिये वर्तमान समय में शीघ्रगति (मंगल) मन्दगति (बृहस्पति) को अपना तेज नहीं देता है, परञ्च थोड़ी देर में दोनों का अन्तर दीप्तांश से अल्प

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होने वाला है अतः इत्थशाल भी होने वाला हैं। इसलिये यह भविष्यत् इत्थशाल हुआ। तो भाग्योदय भी निकट भविष्य में कहना चाहिए।

(४) यदि भूमि (खेती) का विचार करना है तो कार्येश चन्द्रमा-मिथुन के ३० वें अंश के अन्त में है अब वह अगले राशि (कर्क) के प्रथम अंश में प्रवेश करने वाला है इस लिये यहां भी भविष्य इत्थशाल हुआ। कारण यह कि जब लग्नेश कार्येश में परस्पर दृष्टि भी हो और दोनों के अन्तरांश दीप्तांश से अल्प भी और शीघ्रगति के अंश मन्दगति के अंश से अल्प भी हो तभी वर्तमान इत्थशाल योग होता है। इस लिये जब तक चन्द्रमा ३० वें अंश में हैं तब तक दृष्टि के अभाव, और अंश अधिक होने के कारण इत्थशाल का भी अभाव ही समझना। परञ्च जभी अग्रिम राशिके प्रथम अंश में प्रवेश करेगा तभी इत्थशाल हो जायगा इस लिये भविष्य ही सिद्ध होता है॥

वि०—"शनीज्य-भौमार्क-सितज्ञचन्द्राः ज्ञेया बुधैः शीघ्रजवाः क्रमेण"

अर्थ—मध्यम-मानसे शनि, गुरु, भौम, रवि, शुक्र, बुध, चन्द्र ये क्रम से अधिक गतिवाले हैं। परञ्च इत्थशालादि का विचार तात्कालिक स्पष्ट गति से ही करना॥

फल कहने में विशेषता—

लग्नेशकार्याधिपतत्सहाया यत्र स्युरस्मिन् पतिसौम्यदृष्टे।
तदा बलाढ्यं कथयन्ति योगं विशेषतः स्नेहदृशापि सन्तः ॥७॥

सं०—लग्नेश-कार्याधिप-तत्सहाया यत्र स्युः अस्मिन् पतिसौम्यदृष्टे, तदा सन्तः योगं बलाढ्यं कथयन्ति, स्नेहदृशा, विशेषतः बलाढ्यं कथयन्ति ॥७॥

भा०—लग्नेश, कार्येश, और इन दोनों के सहायक (मित्र) जिस भाव में हो उस भाव पर उसी भाव के स्वामी और शुभग्रह की दृष्टि हो तो मुनियों ने योग को बलवान् कहा है। यदि मित्र दृष्टि हो तो विशेष कर बलवान् योग होता है॥ ७॥

भूत, भविष्य और वर्तमान फल कहने का प्रकार—

स्वर्क्षादिसत्स्थानगतः शुभैश्चेद्युतेक्षितोऽभूद्भविताऽथवास्ते।
तदा शुभं प्रागभवत्सुपूर्णमग्रे भविष्यत्यथ वर्तते च ॥ ८॥
व्यत्यस्तमस्माद्विपरीतभावेऽथेष्टर्क्षतोऽनिष्टगृहं प्रपन्नः।
अभूच्छुभं प्रागशुभं त्विदानीं संयातुकामेन च भावि वाच्यम् ॥ ९॥

सं०—स्वर्क्षादिसत्स्थानगतः शुभैः युतेक्षितश्चेत् अभूत्, भविता, अथवा आस्ते, तदा क्रमेण सुपूर्णं शुभं प्रागभूत्, अग्रे भविष्यति अथ वर्त्तते च, इति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वक्तव्यम् । अस्माद् विपरीतभावे व्यत्यस्तं वाच्यम्, अथ इष्टर्क्षतः अनिष्टगृहं प्रपन्नः अभूत् तदा शुभं प्राग् अभूत्, इदानीं अशुभं वर्तते । संयातुकामेन भावि 'फलं' वाच्यम् ॥ ८-९ ॥

भा०—स्वराशि स्वोच्च आदि शुभस्थान स्थित ग्रह यदि शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो गया हो तो शुभ फल भी हो गया, युत दृष्ट होने वाला हो तो फल भी होने वाला है, यदि युत दृष्ट वर्तमान हो तो फल भी वर्तमान है ऐसा कहना। इससे विपरीत भाव में उल्टा कहना—अर्थात् नीचादि अशुभ स्थान में पाप ग्रह से युत दृष्ट हो गया हो तो अशुभ फल भी पहिले हो चुका है, युत दृष्ट होने वाला हो तो फल भी होने वाला और अशुभ से युत दृष्ट वर्तमान हो तो अशुभ फल भी वर्तमान है । तथा शुभ भवन से अशुभ भवन में आकर वर्तमान हो तो शुभफल पहिले हो चुका, अभी अशुभ फल वर्तमान है । तथा जिस प्रकार के स्थान में जाने वाला हो उस प्रकार का फल भावी कहना ॥ ८-९ ॥

ईसराफ योग का लक्षण—

शीघ्रो यदा मन्दगतेरथैकमप्यंशमभ्येति तदेसराफः ।
कार्यक्षयो मूसरिफे खलोत्थे सौम्ये न हिल्लाजमतेन चिन्त्यम् ॥१०॥

सं०—अथ शीघ्रो यदा मन्दगतेः एकमप्यंशं अग्रे अभ्येति तदा ईसराफः स्यात् । खलोत्थे मूसरिफे कार्यक्षमः स्यात् । सौम्ये मूसरिफे 'सति' 'कार्यक्षयः' न 'इति' हिल्लाजमतेन चिन्त्यम् ॥ १० ॥

भा०—यदि मन्दगति ग्रह से शीघ्र गति ग्रह ९ अंश (अंश शब्द भाग वाचक है अतः १ कला विकला) भी अधिक हो जाय तो ईसराफ योग होता है । ईसराफ का ही नाम मुसरीफ भी है । यह मुसरीफ योग पाप ग्रह जनित हो तो कार्य का नाश होता है । यदि शुभ ग्रह जनित हो तो कार्य का नाश नहीं होता है । यह हिल्लाज नामक आचार्य के मत से समझना ॥१०॥

उदाहरण—पीछे (पृष्ठ ५२) में लग्न कुण्डली देखो । मन्द गति मंगल के ७ अंश से शीघ्रगति बुध के ८ अंश अधिक है अतः ईसराफ योग हुआ ॥ १० ॥

नक्तयोग का लक्षण—

लग्नेशकार्याधिपयोर्न दृष्टि-मिथाऽथ तन्मध्यगतोऽपि शीघ्रः ।
आदाय तेजो यदि पृष्ठसंस्थान्न्यसेदथान्यत्र हि नक्तमेतत् ॥११॥

सं०—लग्नेशकार्याधिपयोः मिथो दृष्टिः न अथ तन्मध्यगतः शीघ्रोऽपि यदि पृष्ठसंस्थात् तेजः आदाय अन्यत्र न्यसेत् तदा एतत् नक्तं स्यात् ॥ ११ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—लग्नेश कार्येश में परस्पर दृष्टि न हो, और उन दोनोंके अंशापेक्षया मध्यमें स्थित शीघ्रगति ग्रह यदि पृष्ठस्थित (अर्थात् लग्नेश कार्येश में जो अधिक गतिवाला अल्प अंशसे ही उस) ग्रहसे तेज लेकर अग्रस्थ मन्दगति ग्रह को देता हो तो नक्त योग होता है ॥ ११ ॥

नक्त योग का उदाहरण—

स्त्रीलाभपृच्छातनुरस्ति कन्या स्वामी बुधः सिंहगतो रसांशैः ।
सूर्यांशकैर्देवगुरुः कलत्रे दृष्टिस्तयोर्नास्ति मिथोऽथ चन्द्रः ॥१२॥
चापे वृषे चोभयदृश्यमूर्तिः शीघ्रोऽष्टभागैरथवा भवांशैः ।
आदाय तेजो बुधतो ददौ यज्जीवाय लाभः परतः स्त्रियाःस्यात् ॥१३॥

भा०—मानो स्त्री लाभ के लिये प्रश्न लग्न कन्या है । लग्नेश बुध ६ अंश से सिंह में है, तथा कार्येश गुरु १२ अंश से सप्तम भाव (मीन) में है, दोनों में परस्पर दृष्टि नहीं है । अब इन दोनों के मध्य*वृष, अथवा धनु के ८ वा ११ अंश में होकर चन्द्रमा दोनों को देखता हुआ बुध से तेज लेकर गुरु को देता है, इसलिये यह नक्त योग हुआ । अतः दूसरे के द्वारा स्त्री का लाभ होगा, ऐसा समझना ॥ १२–१३ ॥

नक्त योग—

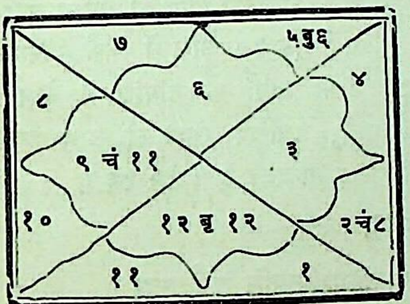

वि०—जहाँ शीघ्रगति ग्रहका तेज मन्दगति ग्रह स्वयं ग्रहण करता है वहाँ इत्थशाल-योग । और जहाँ दूसरे शीघ्रगति ग्रह के द्वारा ग्रहण करता है वहाँ नक्तयोग होता है । और यदि अन्य मन्दगति द्वारा शीघ्र गति से मन्दगति ग्रह तेज ग्रहण करता हो तो यमयायोग होता है ॥ १२–१३ ॥

यमया योग का लक्षण—

अन्तःस्थितो मन्दगतिस्तु पश्येद्दीप्तांशकैर्द्वावथ शीघ्रतस्तु ।
नीत्वा महो यच्छति मन्दगाय कार्यस्य सिद्ध्यै यमया प्रदिष्टः ॥१४॥

सं०—तु पुनः 'यदि लग्नेशकार्येशयोः' अन्तःस्थितो (मध्यस्थो) मन्दगतिः

* एकके अंशसे अल्प और दूसरे के अंश से अधिक अंश में मध्यस्थ होता है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दीप्तांशकैः द्वौ (लग्नेशकार्येशौ) पश्येत् । अथ शीघ्रत महः नीत्वा मन्दगाय यच्छति (ददाति) तदा कार्यस्य सिद्धयै यमया-नामा योगः प्रदिष्टः ।। १४ ।।

भा०—यदि लग्नेश कार्येश में परस्पर दृष्टि न हो और अंशापेक्षया उन दोनों के बीच में दोनों की अपेक्षा मन्दगति ग्रह यदि शीघ्रगति से तेज लेकर मन्दगति ग्रह को देता हो तो कार्य सिद्धिकारक यमया नामक योग होता है ॥१४॥

उदाहरण—

राज्याप्तिपृच्छातुललग्ननाथो मेषे सितस्त्वष्टिलवैर्वृषस्थः ।
चन्द्रो रसांशैर्यदि राज्यनाथो दृष्टिस्तयोर्नास्ति गुरुस्तु मन्दः ॥१५॥
दिगंशकैः कर्कगतस्तु पश्यन्नुभौ महो दीप्तलवैः स चान्द्रम् ।
ददौ सितायेति पदस्य लाभोऽमात्येन भावीति विमृश्य वाच्यम् ॥१६॥

यमया योग—

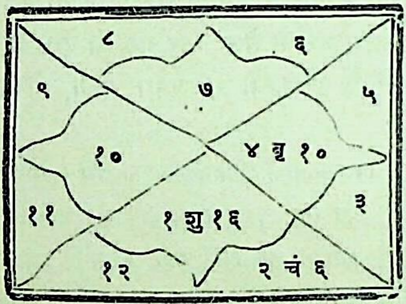

भा०—मानो राज्य लाभ के लिये प्रश्न लग्न तुला है, लग्नेश शुक्र १६ अंश से मेष में है । और राज्य भाव का स्वामी चन्द्रमा ६ अंश से वृष में है । इन दोनों में दृष्टि नहीं है । और इन दोनों की अपेक्षा मन्दगति गुरु १० अंश से कर्क में स्थित होकर दोनों को दीप्तांशों से देखता हुआ चन्द्रमा से तेज लेकर शुक्र को देता है, इसलिये राज्य का लाभ मन्त्री द्वारा होगा ऐसा कहना चाहिये । क्योंकि गुरु मन्त्रिग्रह है ।। १५-१६ ।।

मणऊ योग का लक्षण—

वक्रः शनिर्वा यदि शीघ्रखेटात् पश्चात्पुरस्तिष्ठति तुर्यदृष्ट्या ।
एकर्क्ष-सप्तर्क्षभुवा दृशा वा पश्यन्नथांशैरधिकोनकैश्चेत् ॥ १७ ॥
तेजो हरेत्कार्यपदेत्थशाली स्थितोऽपि वाऽसौ मणऊ शुभो न ।

सं०—यदि उभयोः (लग्नेश-कार्येशयोः) इत्थशालोऽस्ति तथा वक्रो (मङ्गलो वा) वा शनिः यदि शीघ्रखेटात् पश्चात् पुरस्तिष्ठति, तुर्यदृष्ट्या, एकर्क्षसप्तर्क्षभुवा दृशा वा अधिकोनकैः अंशैः पश्यन् कार्यपदेत्थशाली स्थितोऽपि तेजो हरेत् तदा 'मणऊ' योगः स्यात् । असौ शुभो न स्यात् ।। १७ ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—(लग्नेश कार्येश में इत्थशाल हो इस हालत में) मंगल वा शनि उन दोनों (लग्नेश कार्येश) में एक से पश्चात् (अल्प अंश) तथा दूसरे से आगे (अधिक अंश से) हो और चतुर्थ दृष्टि से देखता हो । अथवा एक से अधिक अंश और एक से अल्प अंश होकर एकस्थ दृष्टि वा सप्तम दृष्टि से कार्येश के साथ इत्थशाल करता हुआ तेज हरन करता हो तो यह दोनों प्रकार से मणऊ योग होता है । तथा यह योग शुभ नहीं होता है ॥ १७ ॥

उदाहरण—

स्त्रीलाभपृच्छातनुरस्ति कन्याऽत्र ज्ञो दिगंशैस्तिथिभिः सुरेज्यः ॥१८॥
कलत्रगः खेऽवनिजो भवांशैः पूर्वं बुधो भौमहृतस्वतेजाः ।
जीवेन पश्चान्मिलतीति लाभो नार्यास्तु नो पृष्ठगतेऽथवाऽस्मिन् ॥१९॥

भा०—स्त्री लाभ के लिये प्रश्न लग्न कन्या है, लग्नेश बुध १० अंश से कन्या ही में है, और कार्येश बृहस्पति १५ अंशसे सप्तम भाव में है, तथा मंगल ११

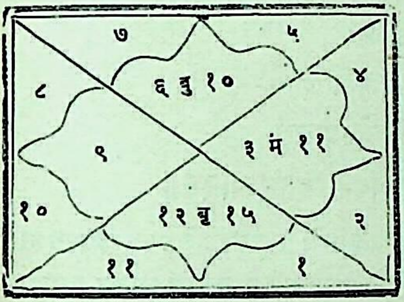

अंश (अर्थात् एकसे अधिक और एक से अल्प अंश) से दशम भाव में है यहां लग्नेश कार्येश में इत्थशाल है भी परञ्च बुधका तेज पहिले मङ्गल ले लेता है, पश्चात् उस तेजको मङ्गल बृहस्पति को देता है । इसलिये यह मणऊ योग हुआ । अतः स्त्री का लाभ नहीं हो सकता, ऐसा समझना । अथवा मङ्गल बुध के पीछे भी होकर इत्थशाल करैं तो भी मणऊ योग कार्यनाशक होता है ॥ १८-१९ ॥

मणऊ योग का भेद—

यदीत्थशालोऽस्त्युभयोः स्वदीप्तहीनांशकैश्चेदधिकौ कुजार्कौ ।
एकर्क्षगौ लग्नपकार्यपोस्तस्तेजोहरौ कार्यहरौ निरुक्तौ ॥२०॥

सं०—यदि उभयोः इत्थशालोऽस्ति चेत् स्वदीप्तहीनांशकैरधिकौ कुजार्कौ एकर्क्षगौ लग्नपकार्यपोः तेजोहरौ तदा कार्यहरौ निरुक्तौ ॥ २० ॥

भा०—यदि लग्नेश और कार्येश में इत्थशाल हो और उन दोनों से शनि वा मंगल अपने दीप्तांश से अल्प अंशतुल्य अधिक होकर लग्नेश के या

८

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्येश के साथ रह कर तेज हरन करता हो तो भी मणऊ योग कार्य का नाश-कारक कहा गया है ॥ २० ॥

उदाहरण—

राज्याप्तिपृच्छातुललग्ननाथः कर्के सितोंशैस्तिथिभिर्दिगंशैः ।
वृषे शशी भूपलवैः कुजश्च हरन् द्वयोर्भ्यां हरते च राज्यम् ॥२१॥

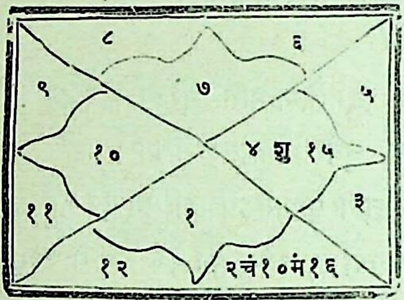

भा०—राज्यलाभार्थ तुला प्रश्न लग्न है, लग्नेश (शुक्र) १५ अंश से कर्क में, और कार्येश चन्द्रमा १० अंश से वृष में है यहां दोनों में इत्थशाल है, फिर मङ्गल भी १६ अंश से वृष ही में (कार्येश के साथ) रह कर दोनों के साथ इत्थशाल करता हुआ दोनों से अधिक अंश होने के कारण दोनों के तेज को हरन करता है इस लिये यह भी मणऊ योग कार्यनाशकारक हुआ ॥ २१ ॥

कम्बूल योग का सामान्य लक्षण—

लग्नकार्येशयोरित्थशालेऽत्रेन्द्वित्थशालतः ।
कम्बूलं श्रेष्ठमध्यादि-भेदैर्नानाविधं स्मृतम् ॥२२॥

सं०—लग्नकार्येशयोः (लग्नाधिपकार्याधिपयोः) इत्थशालेऽत्र इन्द्वित्थशा-लतः श्रेष्ठमध्यादिभेदैः (उत्तमाद्यधिकारभेदैः) नानाविधं कम्बूलं स्मृतम् ॥२२॥

भा०—लग्नेश और कार्येश में इत्थशाल हो उनमें दोनों या किसी एक के साथ चन्द्रमा का इत्थशाल हो तो उत्तम मध्यम आदि भेदों से नानाप्रकार (अर्थात् १६ प्रकार) के कम्बूल योग होते हैं ॥ २२ ॥

यथा—उत्तमाधिकारस्थचन्द्र से ४ प्रकार के कम्बूल—

यदीन्दुः स्वगृहोच्चस्थस्तादृशौ लग्नकार्यपौ ।
इत्थशाली कम्बूलं तदुत्तमोत्तममुच्यते ॥२३॥
स्वीयहद्दाद्रेक्काणांकभागस्थेनेत्थशालतः ।
मध्यमोत्तमकम्बूलं हीनाधिकृतीनोत्तमम् ॥२४॥
उत्तमाधमता नीचरिपुगेहस्थितेन चेत् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—यदि चन्द्रमा अपनी राशि वा उच्च (उत्तमाधिकार) में हो, तथा लग्नेश कार्येश भी उत्तम अधिकार (स्वराशि स्वोच्च) में हो तो उत्तमोत्तम कम्बूल १ तथा लग्नेश कार्येश यदि स्वहद्दा, द्रेष्काण वा नवांश (मध्यमाधिकार) में हो तो उत्तम-मध्यम कम्बूल २, यदि अधिकार शून्य हो तो उत्तम कम्बूल ३, यदि नीच शत्रु राशि में हो तो उत्तमाधम कम्बूल होता है। कम्बूल ही का नाम कबूल भी समझना ॥ २३–२४ ॥

पुनः मध्यमाधिकारस्थ चन्द्र से ४ प्रकार के कम्बूल—

स्वद्रेक्काणांशगश्चन्द्रः स्वभोच्चस्थेत्थशालकृत् ॥२५॥
मध्यमोत्तममेतच्च पूर्वस्मान्न विशिष्यते ।
स्वहद्दादिपदस्थेन कम्बूलं मध्यमध्यमम् ॥२६॥
मध्यमं च कम्बूलं स्याद्धीनाधिकृतिखेटजम् ।
मध्यमाधमकम्बूलं नीचारिभगखेटजम् ॥२७॥

भा०—चन्द्रमा यदि अपने द्रेष्काण नवांश या हद्दा (मध्याधिकार) में हो और लग्नेश कार्येश अपनी उच्चराशि वा गृह में हो तो मध्यमोत्तम कम्बूल होता है। यह पूर्वोक्त उत्तम-मध्यम से विशेष नहीं होता अर्थात् उसके समान ही होता है। तथा लग्नेश कार्येश अपने हद्दादि मध्यमाधिकार में हो तो मध्यमध्यम कम्बूल होता है। तथा लग्नेश कार्येश अधिकार हीन हो तो मध्यम कम्बूल होता है। यदि लग्नेश कार्येश नीच शत्रु राशि में हो तो मध्यमाधम कम्बूल होता है ॥ २५-२६-२७ ॥

तथा अधिकार हीन चन्द्र से ४ प्रकार के कम्बूल—

इन्दुः पदोनः स्वर्क्षोच्चस्थितेनाप्युत्तमं तु तत् ।
स्वहद्दादिगतेनापि पूर्ववन्मध्यमुच्यते ॥२८॥
पदोनेनापि मध्यं स्यादिति युक्तं प्रतीयते ।
नीचारिस्थेनेत्थशालेऽधमकम्बूलमुच्यते ॥२९॥

भा०—चन्द्रमा पद (उच्च-नीच-मध्य-अधिकार) से हीन हो और लग्नेश कार्येश यदि स्वोच्चस्वराशि (उत्तमाधिकार) में हो तो केवल उत्तम कम्बूल, स्वहद्दादि (मध्याधिकार) में हो तो मध्यम कम्बूल होता है, यदि पदोन (अधिकार हीन) हो तो भी 'लग्नेश कार्येश और चन्द्रमा के अधिकार शून्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होने के कारण-मध्यम कम्बूल ही हो सकता है ऐसा युक्तियुक्त प्रतीत होता है। तथा नीच शत्रु राशि (अधमाधिकार) में लग्नेश कार्येश हो तो अधम कम्बूल होता है ॥ २८-२९ ॥

अधमाधिकारस्थ चन्द्रमा से ४ प्रकार के कम्बूल—

नीचशत्रुभगश्चन्द्रः स्वभोच्चस्थेत्थशालकृत् ।
अधमोत्तमकम्बूलं पूर्वतुल्यफलप्रदम् ॥३०॥
चन्द्रो नीचारिगेहस्थः स्वहद्दादिगतेन चेत् ।
तत्रेत्थशाली कम्बूलमुच्यतेऽधममध्यमम् ॥३१॥
इन्दुर्नीचारिगेहस्थः पदोनेनेत्थशालकृत् ।
कम्बूलमधमं ज्ञेयं पूर्वतुल्यफलप्रदम् ॥३२॥
नीचारिभस्थखेटेन नीचारिभगतः शशी ।
तदित्थशाली कम्बूलमधमाधममुच्यते ॥३३॥

भा०—चन्द्रमा नीच शत्रु राशि (अधमाधिकार) में हो—और लग्नेश कार्येश, स्वराशिस्वोच्च में हो तो अधमोत्तम कम्बूल होता है, यह पूर्वतुल्य (अर्थात् उत्तमाधम समान) ही होता है। यदि चन्द्रमा नीचारि राशि में ही हो और लग्नेश कार्येश स्वहद्दादि में हो कर इत्थशाल करता हो तो अधम मध्यम कम्बूल होता है। यदि चन्द्रमा नीच शत्रु राशि में हो और लग्नेश कार्येश अधिकार हीन होकर इत्थशाल करे तो अधम कम्बूल पूर्वतुल्य फल देता है। यदि चन्द्रमा नीच वा शत्रु राशि में हो और लग्नेश कार्येश भी नीच शत्रु राशि में हो और इत्थशाल हो तो अधमाधम कम्बूल होता है। इस प्रकार कम्बूल के १६ भेद हुए ॥ ३०—३३ ॥

उपरोक्त कम्बूल योगों के उदाहरण की योजना—

मेषे रविः कुजो वाऽपि स्थितः कर्के तथा शशी ।
तत्रेत्थशाली कम्बूलमुत्तमोत्तमकार्यकृत् ॥३४॥

भा०—मेष में सूर्य अथवा मंगल हो तथा कर्क में चन्द्रमा हो और इन में इत्थशाल हो तो दोनों के उत्तमाधिकार (स्वोच्च स्वराशि) होने के कारण कार्य सिद्धिप्रद उत्तमोत्तम कम्बूल समझना ॥ ३४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधमाधम कम्बूल का उदाहरण--

वृश्चिकस्थः शशी भौमः कर्के तत्रेत्थशालतः ।
अधमाऽधमकम्बूलं कार्यविध्वंसदुःखदम् ॥३५॥

भा०—चन्द्रमा वृश्चिक में, और मंगल कर्क में हो और इनमें इत्थशाल हो तो दोनों के अधमाधिकार (नीचे राशि) में होने के कारण अधमाधम कम्बूल समझना ॥३५॥

एवं पूर्वोक्तभेदानामुदाहरणयोजना ।
उक्तलक्षणसम्बन्धादूहनीया विचक्षणैः ॥३६॥

भा०—इस प्रकार पूर्वोक्त भेदों के उदाहरण की योजना यथोक्त लक्षण के सम्बन्धानुसार करनी चाहिये। अर्थात् लग्नेशकार्येश और चन्द्रमा दोनों जिस प्रकार के अधिकार में रहते हैं उसी प्रकारका कम्बूल योग होता है ॥३६॥

स्पष्टार्थ चक्र—

		लग्नेश कार्येश का अधिकार—			
		उत्तमाधि०	मध्यमाधि०	अधमाधि०	शून्याधिकार
चन्द्रका अधिकार	उत्तमाधि०	उत्तमोत्तम १	उत्तममध्य २	उत्तमाधम ३	उत्तम ४
	मध्यमाधि०	मध्यमोत्तम ५	मध्यमध्य ६	मध्याधम ७	मध्यम ८
	अधमाधि०	अधमोत्तम ९	अधममध्य १०	अधमाधम ११	अधम १२
	शून्याधि०	उत्तम १३	मध्यम १४	अधम १५	सम १६

किसी ने शीघ्र मन्दगति ग्रह दोनों के एकही राशि में रहने पर इत्थशाल आदि योग का फल कहा है उसका खण्डन—

"मेषस्थेऽब्जे शनी" त्यादिदृष्टान्तान्मन्दशीघ्रयोः ।
एकक्षावस्थितावित्थशालादीनपरे जगुः ॥३७॥
तदयुक्तं नीचगस्य नीचेन रिपुणा रिपोः ।
इत्थशालः कार्यनाशीत्युक्तं तत्र यतः स्फुटम् ॥३८॥

भा०—किसी ने "मेषस्थेऽब्जे शनिना" इत्यादि निम्नलिखित दृष्टान्त (उदाहरण) द्वारा-शीघ्र मन्दगति ग्रहों के एक राशि में अवस्थित रहने पर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ही इत्थशाल आदि योग कहे हैं। परञ्च वह अयुक्त है, क्योंकि—"नीचस्थ ग्रहों को नीचस्थ ग्रह से और शत्रु राशिस्थ ग्रहों को शत्रु राशिस्थ ग्रह से ही जो इत्थशाल होता है वह कार्य-नाशक है, ऐसा समरसिंहादिकृत ताजिक में स्पष्ट है॥

परञ्च "मेषस्थेऽब्जे शनिना" इत्यादि दृष्टान्त से दोनों नीच राशि में नहीं हो सकता क्योंकि एक ही राशि दो ग्रहों का नीच नहीं होता है। इसलिये उक्त दृष्टान्त अयुक्त है॥ ३७-३८॥

यथा ताजिक संज्ञातन्त्र में समरसिंह का वाक्य—

"मेषस्थेऽब्जे शनिना कर्कस्थे भूसुवा स्त्रियां कविना।
मकरस्थे गुरुणा सह मीनस्थे ज्ञेन न शुभं च॥"

अर्थ—मेष में चन्द्रमा हो और मेषस्थ शनि से इत्थशाल हो, तथा कर्कस्थ चन्द्र को कर्कस्थ मंगल से, कन्यास्थ चन्द्रको कन्यास्थ शुक्र से, मकरस्थ चन्द्रको मकरस्थ गुरु से, और मीनस्थ चन्द्रको मीनस्थ बुध से इत्थशाल हो तो शुभ नहीं है।

परञ्च कर्कस्थ चन्द्रमा को कर्कस्थ मङ्गल से इत्थशाल होने पर उत्तमाधम कम्बूल होता है, क्योंकि चन्द्रमा उत्तम अधिकार (स्वराशि) में है, और मङ्गल अधम अधिकार (नीच राशि) में है। तो यह कार्य-नाशक कैसे हो सकता है? क्योंकि समरसिंह का वाक्य है, जैसे—

"यदि नीचो नीचेन च मुथशिलकारी तथा रिपुद्विषता।
तत् कम्बूलं नेष्टं चन्द्रोऽपि विनाशकोऽमुष्मिन्॥" इति स्पष्टार्थम्॥

कम्बूल के फलों में न्यूनाधिकता की कल्पना—

लग्नकार्यपयोरित्थशाले चैकोऽस्ति नीचगः।
स्वर्क्षादिपदहीनोन्योऽत्रेन्दुः कम्बूलयोगकृत्॥३९॥
तत्र कार्याल्पता ज्ञेया यथा जात्यन्यमर्थयन्।
अन्यजातिः पुमानर्थं तथैतत्कवयो विदुः॥४०॥

भा०—लग्नेश और कार्येश में इत्थशाल योग हो तो इन दोनों में एक नीच में हो और दूसरा अपने गृह 'आदि' शब्द से नवांश द्रेष्काण, उच्च नीच शत्रु राशि से हीन हो इस हालत में यदि चन्द्रमा कम्बूल योगकारक हो जाय तो इस कम्बूल योग में कार्य की अल्पता समझना, जैसे अन्यजाति पुरुष भिन्न जातियों के यहाँ याचना करने पर भी अल्प धन पाता है, उसी प्रकार इसे भी पण्डितों ने कहा है॥३९-४०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शून्यमार्गगत ग्रह का लक्षण—

यस्याधिकारः स्वर्क्षादिः शुभो नाप्यशुभोऽपि न ।
केनाप्यदृश्यमूर्तिश्च स शून्याध्वग इष्यते ॥ ४१ ॥

भा०—जिस ग्रह को स्वगृहादि शुभ अधिकार वा स्वनीचादि अशुभ अधिकार न हो और किसी भी ग्रह से दृष्ट नहीं हो तो वह शून्य मार्ग गत कहाता है ॥४१॥

गैरिकम्बूल योग का लक्षण—

लग्नकार्येशयोरित्थशाले शून्याध्वगः शशी ।
उच्चादिपदशून्यत्वान्नेत्थशालोऽस्य केनचित् ॥४२॥
यद्यन्यर्क्षं प्रविश्यैष स्वर्क्षोच्चस्थेत्थशालवान् ।
गैरिकम्बूलमेतत्तु पदोनेनाऽशुभं स्मृतम् ॥४३॥

सं०—लग्नकार्येशयोः इत्थशाले सति, शशी शून्याध्वगः, अस्य उच्चादिपद-शून्यत्वात् केनचित् इत्थशालो न, यदि एष (चन्द्रः) अन्यर्क्षं प्रविश्य स्वर्क्षोच्च-स्थेत्थशालवान् 'तदा' गैरिकम्बूलं स्यात् । एतत् पदोनेन कारणेन अशुभं स्मृतम्॥

भा०—लग्नेश कर्येश में इत्थशाल हो और चन्द्रमा उच्च आदि पद से हीन होकर शून्यमार्गगत हो और इस (चन्द्रमा) को लग्नेश या कार्येश किसी से इत्थशाल न हो, परञ्च यही चन्द्रमा यदि अग्रिम राशि में प्रवेश कर उसी राशि में स्थित स्वर्क्षस्वोचस्थ ग्रह से इत्थशाल करने वाला हो (अर्थात् चन्द्रमा राशि के अन्तिम अंश में रह कर जिस राशि में प्रवेश करने वाला हो वह राशि जिस ग्रह का गृह वा उच्च हो वह ग्रह उस राशि में चन्द्रमा के दीप्तांशावधि अंश में हो) तो गैरिकम्बूल योग होता है। यह गैरिकम्बूल योग दूसरे की सहायता से कार्यकारक होता है। यदि अग्रिम राशिस्थ ग्रह भी पदोन (अधिकारहीन) हो तो अशुभ होता है ॥४२-४३॥

गैरिकम्बूल का उदाहरण—

लप्स्ये सुखमिति प्रश्ने सिंहलग्ने रविः क्रिये ।
अष्टांशैः सुखपः कुम्भे भौमोंऽशै रविभिस्तयोः ॥४४॥
इत्थशालोऽस्ति तत्रेन्दुः कन्यायां चरमेंऽशके ।
स्वर्क्षादिपदहीनस्य नेत्थशालोऽस्य केनचित् ॥४५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स स्वोच्चगेन शनिनाऽन्यर्क्षस्थेनेत्थशालकृत् ।

गैरिकम्बूलमन्येन सहायाल्लाभदायकम् ॥४६॥

गैरिकम्बूल—

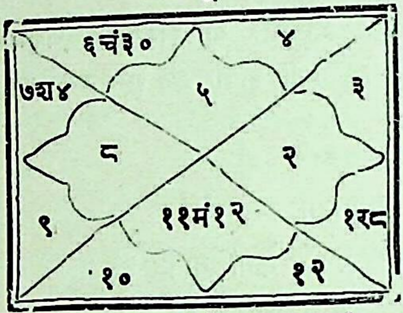

भा०—"मैं सुख लाभ करूंगा ?" इस प्रकार के प्रश्न में मानों सिंह लग्न है। लग्नेश (रवि) मेष में ८ अंश से है, और सुखभावेश मंगल १२ अंश से कुम्भमें है इन दोनों में इत्थशाल योग है, यहाँ चन्द्रमा कन्या के अन्तिम (३० वां) अंश में है तो यह स्वक्षा-दिपदहीन है और इसे किसीके साथ इत्थशाल भी नहीं है, परञ्च यह (चन्द्रमा) अग्रिम तुलाराशि में जाकर उसमें स्वोचस्थ शनिसे इत्थशाल करने वाला है इसलिये यह गैरिकम्बूल योग हुआ, इस योग में दूसरे की सहायता से सुख लाभ होगा ऐसा कहना ॥ अगर शनि भी अपने उच्च में न रहता, रवि भी उच्च में न रहता तब अशुभ होता ॥४४-४६॥

खल्लासरयोग का लक्षण—

शून्येध्वनीन्दुरुभयोर्नेत्थशालो न वा युतिः ।

खल्लासरो न शुभदः कम्बूलफलनाशनः ॥४७॥

सं०—इन्दुः, शून्येऽध्वनि, उभयोः (लग्नेश-कार्येशयोः) केनचित् इत्थशालो न वा युतिः न 'तदाऽयं' खल्लासरः स्यात्, स कम्बूलफलनाशनः, न शुभदः स्यात् ॥ ४७ ॥

भा०—यदि चन्द्रमा शून्यमार्ग में हो और लग्नेश तथा कार्येश को किसी के साथ इत्थशाल वा योग न हो तो खल्लासर नामक योग होता है, यह कम्बूल फल का नाशकारक शुभप्रद नहीं होता है ॥ ४७ ॥

रद्दयोग का लक्षण—

अस्तनीचरिपुवक्रहीनभा दुर्बलो मुथशिलं करोति चेत् ।

नेतुमेष न विभुर्यतो महोऽन्ते मुखेऽपि न स कार्यसाधकः ॥४८॥

सं०—अस्तनीचरिपुवक्रहीनभा दुर्बलो ग्रहश्चेत् (यदि) मुथशिलं करोति तदा एष दुर्बलो यतो महः (तेजो) नेतुं विभुः (समर्थो) न, अतः अन्ते, मुखे (आदौ) अपि कार्यसाधकः न स्यात् ॥४८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—जो ग्रह अस्त, नीच शत्रु राशि में हो वक्र हो और हीन किरण वाला हो अर्थात् इन कारणों से दुर्बल हो कर मुथशील योग करता हो तो यह दुर्बल होने के कारण तेज लेने में समर्थ नहीं होता इसलिये अन्त अथवा आरम्भ में कहीं भी कार्य साधक नहीं होता है। अर्थात् ऐसा इत्थशाल योग रद्द (व्यर्थ) हो जाता है ॥ ४८ ॥

रद्दयोग में विशेष—

केन्द्रस्थ आपोक्लिमगं युनक्ति भूत्वादितो नश्यति कार्यमन्ते ।
आपोक्लिमस्थो यदि केन्द्रयातं विनश्य पूर्वं भवतीह पश्चात् ॥४९॥

सं०—(दुर्बलो ग्रहः) केन्द्रस्थः सन् आपोक्लिमगं ग्रहं युनक्ति (तेजो ददाति) तदा आदितो कार्यं भूत्वाऽन्ते नश्यति। यदि आपोक्लिमस्थः सन् केन्द्रयातं युनक्ति तदा कार्यं पूर्वं विनश्य पश्चात् भवति ॥ ४९ ॥

भा०—पूर्वोक्त दुर्बल ग्रह यदि केन्द्रस्थ होकर आपोक्लिमस्थ ग्रह से मिलता हो (अर्थात् आपोक्लिम वाला को अपना तेज देता हो) तो आरम्भ समय में कार्य कुछ होता है परञ्च अन्त में नष्ट हो जाता है। यदि आपोक्लिम हो में रह कर केन्द्रस्थ ग्रह को अपना तेज देता हो तो आरम्भ में कार्य विफल होता है परञ्च पश्चात् कार्य सिद्ध होता है ॥ ४९ ॥

दुफालिकुत्थ योगका लक्षण—

मन्दः स्वभोच्चादिपदे स्थितश्चेत् पदोनशीघ्रेण कृतेत्थशालः ।
तत्रापि कार्यं भवतीति वाच्यं वक्रादिनिर्वीर्यपदे न चेत्स्यात् ॥५०॥

सं०—पद्यमेतत् स्पष्टार्थम् ॥ ५० ॥

भा०—लग्नेश और कार्येश में जो मन्द गति ग्रह हो वह अपने उच्चादि शुभ पद में हो और उच्चादि पद से हीन शीघ्र गति ग्रह से इत्थशाल योग करता हो तो "दुफालिकुत्थ योग" कहलाता है, इस में भी कार्य होता है ऐसा कहना, किन्तु शीघ्र गति ग्रह वक्र नीच आदि निर्बल स्थान में न हो तब ॥ ५० ॥

वि०—निर्बल स्थान में रहने से कार्य सिद्ध नहीं होता इसलिये रद्द कहाता है। और शीघ्र गति पद हीन मात्र हो निर्बल न हो तो दुफालिकुत्थ कहाता है ॥५०॥

दुत्थोत्थदवीर योग का लक्षण—

वीर्योनितौ कार्यविलग्ननाथौ स्वर्क्षादिगेनान्यतरो युनक्ति ।
अन्यौ यदा द्वौ वलिनौ तदान्यसङ्गग्रतः कार्यमुशन्ति सन्तः ॥५१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०——कार्येश और लग्नेश अस्त नीचादि स्थान में स्थित होकर निर्बल हों, इन दोनों में से एक यदि स्वर्क्षादि स्थानस्थ किसी अन्य ग्रह के साथ इत्थशाल करता हो और दो अन्य ग्रह बली हो तो दुत्थोत्थदवीर नामक योग होता है, इसमें दूसरे की सहायता से कार्य की सिद्धि पण्डितों ने कहा है ॥ ५१ ॥

तम्बीर योग का लक्षण——

बली राश्यन्तगोऽन्यर्क्षगामो दीप्तांशकैर्महः ।
दत्तेऽन्यस्मै कार्यकरस्तम्बीरो लग्नकार्यपोः ॥५२॥

सं०——लग्नकार्यपोः (लग्नेश-कार्येशयोर्मध्ये) बली ग्रहो राश्यन्तगोऽन्यर्क्षगामो सन् दीप्तांशैः अन्यस्मै (अन्यग्रहाय) महः (तेजो) दत्ते 'तदाऽयं' कार्यकरस्तम्बीरो नाम योगः स्यात् ॥५२॥

भा०——यदि लग्नेश कार्येश में कोई एक बली, राशि के अन्तिम अंश में होकर अग्रिम राशि में जाने वाला हो और उस अग्रिम राशि में दीप्तांशावधि अंश में स्थित अन्य ग्रह को अपना तेज देने वाला हो तो कार्यसिद्धिकारक तम्बीर नामक योग होता है ॥ ५२ ॥

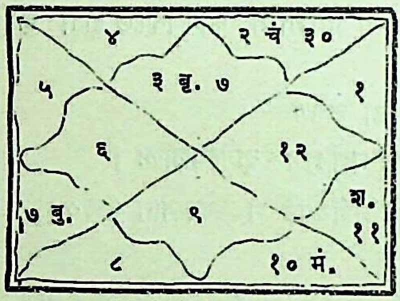

उदा०——धन लाभ के लिये मिथुन लग्न में किसी ने प्रश्न किया। वहां चन्द्रमा (धन भावेश) वृष के ३० वें अंश में है। और मिथुन में ७ अंश पर गुरु हैं। तथा लग्नेश (बुध) तुला में है, तो यहां लग्नेश, कार्येश में इत्थशाल नहीं है——और उच्चस्थ बली चन्द्रमा अग्रिम राशि में जाकर गुरु को अपना तेज देने वाला है इस लिये यह तम्बीर योग हुआ। यह भविष्यत् इत्थशाल का भेद है ॥ ५२ ॥

सब ग्रह वा लग्नेश कार्येश बली हों तो कुत्थ योग होता है, अतः बल के स्थान—

लग्नेऽथ केन्द्रे निकटेऽपि वास्य विलग्नदर्शी स्वगृहोच्चदृक्के ।
मुसल्लहे स्वे नीजहद्दगो वा बली ग्रहो मध्यगतिस्त्वशीघ्रः ॥५३॥

भा०—लग्न में, केन्द्र में अथवा इसके निकट (पणफर) में स्थित ग्रह बली होता है। लग्न को देखने वाला, अपनी राशि, उच्च द्रेष्काण, नवांश और अपनी हद्दा में ग्रह बली होता है। और मध्य गति तुल्यगति हो वा अशीघ्र (मध्य गति से भी अल्प) गति हो तो बली होता है ॥५३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृतोदयो मार्गगतिः शुभेन युतेक्षितः क्रूरखगस्य दृष्ट्या ।
क्षुताख्यया नाधिगतो न युक्तः क्रूरेण सायं च सितेन्दुभौमाः ॥५४॥
यदोदयन्ते परत्रिभागे–जीवार्कजावह्निनराः सवीर्याः ।
अन्ये निशीनस्य नवैकभागे स्थिताः स्थिरर्क्षे च बलेन युक्ताः ॥५५॥

भा०—जो ग्रह उदित हो, मार्ग गति हो, शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो, पाप ग्रह की क्षुतदृष्टि से देखा नहीं जाता हो, पाप से युक्त न हो वह बली होता है। तथा शुक्र, चन्द्रमा, मंगल ये यदि सायंकाल उदित हो और गुरु शनि ये रात्रि के उत्तरार्ध में उदित हो तो बली होते हैं। पुरुष ग्रह दिन में, स्त्री ग्रह रात्रि में बली होते हैं। जिस राशि अंश में सूर्य हो उसमें जो ग्रह नहीं रहता है वह बली होता है। तथा स्थिर राशि में भी ग्रह बली होता है ॥५४-५५॥

स्त्रियश्चतुर्थात्पुरुषा वियद्भाद्भषट्कगा ओजभगाः पुमांसः ।
समे परे स्युर्बलिनो विमृश्य विशेषमेतेषु फलं निगद्यम् ॥५६॥

भा०—चतुर्थ भाव से आरम्भ कर ६ स्थानों में स्त्रीग्रह, और १० भाव से आरम्भ कर ६ स्थानों में पुरुष ग्रह बली होते हैं। तथा विषम राशि नवांश में पुरुष ग्रह और सम राशि नवांश में स्त्री ग्रह बली होते हैं। इन बलों में विशेष विचार से फल कहना चाहिये। अर्थात् इन बलों में जितने बल से ग्रह युक्त होते उतने ही फल भी देते हैं ॥५६॥

सब ग्रह वा कार्येश निर्बल हो तो दुरफ योग होता है,
अतः निर्बल (दुरफ) स्थान—

लग्नात्षष्ठाष्टमेन्त्येऽनृजुररिगृहगो नीचगो वक्रगामी
क्रूरैर्युक्तोऽस्तगो वा यदि च मुथशिली क्रूरनीचारिभस्थैः ।
क्षुद्दृष्ट्या क्रूरदृष्टो व्ययरिपुमृतिगैरित्थशालं विधित्सुः
कुर्वन् वा निर्बलोऽयं स्वगृहनगभगो राहुपुच्छास्यवर्ती ॥५७॥

भा०—लग्न से ६, ८, १२ में स्थित ग्रह, वक्री, शत्रु गृहगत, नीच गत, वक्र होने वाला, पापग्रह से युक्त, अस्तंगत, पाप नीच और शत्रु राशिस्थ ग्रह से इत्थशाल करने वाला क्षुत दृष्टि से पाप ग्रह से दृष्ट, १२, ८, ६ स्थान स्थित ग्रहों से इत्थशाल करने की इच्छा रखने वाला, वा इत्थशाल करने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाला, और स्वराशि से सप्तम में स्थित ग्रह, तथा राहु के पुच्छ या मुख में रहने वाला ग्रह निर्बल होता है ॥५७॥

अनीक्षमाणस्तनुमस्तभागस्थितः स्वभोच्चादिपदैश्च शून्यः ।
क्रूरेसराफी न स वीर्ययुक्तः कार्यं विधातुं न विभुर्यतोऽसौ ॥५८॥

भा०— लग्न को नहीं देखने वाला, अस्तराशि के नवांशगत, उच्चादि पद से शून्य, पाप ग्रह से इसराफ योग करने वाला, ये सब ग्रह निर्बल होते हैं, क्योंकि ये कार्य करने में समर्थ नहीं होते हैं ॥५८॥

चन्द्रमा के विशेष दुरफ्फ स्थान—

चन्द्रः सूर्याद्द्वादशे वृश्चिकाद्ये खण्डे नेष्टोऽन्त्ये तुलायां विशेषात् ।
राशीशेनादृष्टमूर्तिर्न सर्वैर्दृष्टो ज्ञेयः शून्यमार्गः पदोनः ॥५९॥

भा० —सूर्य से १२ वें स्थान में चन्द्रमा हो तो निर्बल होता है। तथा वृश्चिक के पूर्वार्ध में और तुला के उत्तरार्द्ध में विशेष कर निर्बल होता है। यदि राशीश से नहीं देखा जाता हो, वा सब ग्रहों से अदृष्ट हो, शून्य मार्ग में हो, वा अधिकार हीन हो तो निर्बल होता है ॥५९॥

क्षीणो भान्ते ना शुभो जन्मकाले पृच्छायां वा चन्द्र एवं विचिन्त्यः ।
शुक्ले भौमः कृष्णपक्षेऽर्कसूनुः क्षुद्दृष्ट्येन्दुं वीक्षते नो शुभोऽसौ ॥६०॥

भा०—क्षीण (कृष्णपक्ष की ११ से शुक्ल प्रतिपद् पर्यन्त) तथा राशि के अन्तिम नवांश में चन्द्रमा शुभ नहीं होता है। इस प्रकार जन्मकाल और प्रश्नकाल में भी विचार करना चाहिये। शुक्लपक्ष में मङ्गल और कृष्णपक्ष में शनि क्षुत दृष्टि से चन्द्रमा को देखे तो शुभ नहीं होता है ॥६०॥

शुक्ले दिवा नृगृहगोऽर्कसुतः शशाङ्कं कृष्णे कुजो निशि समर्क्षगतः प्रपश्येत् ।
दोषाल्पतां वितनुतेऽपरथा बहुत्वं प्रश्नेऽथवा जनुषि बुद्धिमतोहनीयम् ॥६१॥

भा०—दिन के समय शुक्लपक्ष में पुरुष (विषम) राशिस्थ शनि और रात्रि के समय कृष्णपक्ष में सम राशिस्थित मंगल यदि चन्द्रमा को देखै तो दोष को अल्प बना देता है। अन्यथा (अर्थात्—इस प्रकार न देखै तो) दोष में अधिकता होती है। इस प्रकार प्रश्न लग्न और जन्म लग्न से भी बुद्धिमान को समझना चाहिये ॥६१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहों के ५ प्रकार के हर्ष स्थान—

नन्द–त्रि–षड्लग्न–भवर्क्ष–पुत्र–व्यथा इनाद्धर्षपदं स्वभोच्चम्।
त्रिभं त्रिभं लग्नभतः क्रमेण स्त्रीणां नृणां रात्रिदिने च तेषाम् ॥६२॥

भा०—लग्न से ९, ३, ६, १, ११, ५ और १२ क्रम से ये स्थान सूर्यादि ग्रहों के हर्ष स्थान हैं, तथा अपनी अपनी राशि और उच्च भी हर्ष पद होते हैं। लग्न से ३ ३ राशि क्रम से स्त्री ग्रह और पुरुष ग्रह के हर्ष पद होते हैं। और स्त्री ग्रह के लिये रात्रि और पुरुष ग्रह के लिये दिन भी हर्ष पद हैं ॥६२॥

श्रीगर्गान्वयभूषणं गणितविच्चिन्तामणिस्तत्सुतो-
ऽनन्तोनन्तमतिर्व्यधात्खलमतध्वस्त्यै जनुःपद्धतिम्।
तत्सूनुः खलु नीलकण्ठविबुधो विद्वच्छिवानुज्ञया
योगान् षोडश हर्षभानि च तथा संज्ञाविवेकेऽभ्यधात् ॥६३॥

इति षोडशयोगाध्यायः समाप्तः।

भा०—स्पष्टार्थम् ॥६३॥

इति गूढार्थप्रकाशिकासहितनीलकण्ठ्यां षोडशयोगाध्यायः ॥२॥

—०—

अथ सहमाध्यायः ॥३॥

पुण्य–आदि ५० सहमों के नाम—

पुण्यं गुरुर्ज्ञान-यशोऽथ मित्रं माहात्म्य-माशा च समर्थता च।
भ्राता ततो गौरव-राज तात-माता सुतो जीवितमम्बुकर्म ॥१॥

मान्द्यं च मन्मथ-कली परतः क्षमोक्ता
शास्त्रं सबन्धुसहमं त्वथ बन्दकं च।
मृत्योश्च सद्म परदेश-धनाऽन्यदाराः
स्यादन्यकर्म सवणिक् त्वथ कार्यसिद्धिः ॥२॥

उद्वाह–सुति–सन्तापाः श्रद्धा प्रीतिर्बलं तनुः।
जाड्य–व्यापारसहमे पानीयपतनं रिपुः ॥३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शौर्योपाय-दरिद्रत्वं गुरुताऽम्बुपथाभिधम् ।
बन्धनं दुहिताऽश्वश्च पञ्चाशत्सहमानि हि ॥४॥

भा०—पुण्य १, गुरु २, ज्ञान ३, यश ४, मित्र ५, माहात्म्य ६, आशा ७, सामर्थ्य ८, भ्राता ९, गौरव १०, राज ११, पिता १२, माता १३, पुत्र १४, जीवन १५, जल १६, कर्म १७, रोग १८, कन्दर्प १९, कलह २०, क्षमा २१, शास्त्र २२, बन्धु २३, बन्दक २४, मृत्यु २५, परदेश २६, धन २७, पर स्त्री २८, अन्य कर्म २९, वाणिज्य ३०, कार्यसिद्धि ३१, विवाह ३२, प्रसूति ३३, सन्ताप ३४, श्रद्धा ३५, प्रीति ३६, बल ३७, देह ३८, जड़ता ३९, व्यापार ४०, जलपतन ४१, शत्रु ४२, शौर्य ४३, उपाय ४४, दरिद्रता ४५, गुरुता ४६, जलपथ ४७, बन्धन ४८, कन्या ४९, और अश्व ५०, ये पचास प्रकार के सहम होते हैं ॥१–४॥

(१) पुण्यसहमसाधन—

सूर्योनचन्द्रान्वितमह्नि लग्नं वीन्द्वर्कयुक्तं निशि पुण्यसंज्ञम् ।
शोध्यर्क्षशुद्धाश्रयभान्तराले लग्नं न चेत्सैकभमेतदुक्तम् ॥५॥

सं०—अह्नि (दिने वर्षप्रवेशादीष्टकाले सति) सूर्योनचन्द्रान्वितं लग्नं कार्यं, निशि वीन्द्वर्कयुक्तं लग्नं कार्यं, शोध्यर्क्षशुद्धयाश्रयभान्तराले (शोध्यर्क्षादग्रे, शुद्धाश्रयात् पृष्ठे) लग्नं न चेत् तदा सैकभं कार्यम्, एतत् पुण्यसंज्ञं उक्तम् ॥५॥

भा०—दिन में लग्न हो तो चन्द्रमा में सूर्य को घटा कर शेष को लग्न में जोड़ने से, यदि रात्रि में लग्न हो तो सूर्य ही में चन्द्रमा को घटा कर शेष को लग्न में जोड़ने से पुण्य सहम होता है। विशेष यह है कि—यदि शोध्य राशि और शुद्धाश्रय राशि के मध्य में (अर्थात् शोध्य राशि से आगे और शुद्धाश्रय राशि के पीछे) लग्न न हो तो उक्त सहम में १ राशि और जोड़ने से पुण्य सहम होता है ॥ ५ ॥

उदा०—जो घटाया जाता है वह शोध्य और जिसमें घटाया जाता है वह शुद्धाश्रय कहाता है। यहाँ वर्षप्रवेश इष्टकाल ३।२९ दिन का है, इसलिये चन्द्रमा ०।२०।४९।२ में सूर्य ११।१२।२२।१७ को घटाकर शेष १।८।२६।४५ में लग्न ०।१०।४६।४७ जोड़ने से १।१९।१३।३२ यह पुण्य सहम हुआ। यहां शोध्य (सूर्य) और शुद्धाश्रय (चन्द्रमा) के मध्य में लग्न है, अतः सैक नहीं किया गया है ॥ ५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरु, विद्या और यश सहम का साधन—

व्यतस्तस्माद्गुरुविद्ययोस्तु संसाधनं पुण्यवियुक्सुरेज्यः।
दिवा विलोमं निशि पूर्ववत्तु यशोभिधं तत्सहमं वदन्ति ॥६॥

भा०—इस (पुण्य सहमसाधन) से विलोम (अर्थात् दिनवत् रात्रि में और रात्रिवत् दिन में) गुरु और विद्या सहम का साधन होता हैं। और दिन में लग्न हो तो पुण्य सहम को बृहस्पति में घटाना और रात्रि में उलटा (बृहस्पति को ही पुण्य में घटाना) तथा पूर्ववत् क्रिया करना (अर्थात् लग्न जोड़ना और शोध्यर्क्ष शुद्धाश्रय राशि के मध्य में लग्न न हो तो १ राशि जोड़ना) तो यश सहम होता है ॥६॥

उ०—दिन में इष्ट काल है इसलिये पुण्य सहम के उलटा करने (अर्थात् चन्द्रमा ०।२०।४९।२ को ही सूर्य ११।१२।२२।१७ में घटा कर शेष १०।२१।३३।१५ में लग्न ०।१०।४६।४७ जोड़ कर ११।२।२०।२ इसमें १ राशि जोड़ने) से ०।२।२०।२ यह गुरु और विद्या दोनों सहम हुए। यहां शोध्य (चन्द्रमा) की राशि और शुद्धाश्रय (सूर्य) के मध्य में लग्न नहीं है इसलिये सैक किया गया है। शोध्यसे आगे और शुद्धाश्रय से पीछे शोध्य शुद्धाश्रय के मध्य कहाता है। इसे ध्यान में रखना चाहिये ॥६॥

यशसहम—बृहस्पति ८।२।५९।५१ में पुण्य सहम १।१९।१३।३२ को घटाकर ६।१३।४६।१९ इसमें लग्न ०।१०।४६।४७ को जोड़ने से ६।२४।३३।६ यह यश सहम हुआ। यहां शोध्य और शुद्धाश्रय के मध्य में लग्न है इस लिये सैकता नहीं हुई ॥६॥

मित्र सहम साधन—

पुण्यसद्म गुरुसद्मतस्त्यजेद्व्यत्ययो निशि सितान्वितं च तत्।
सैकता तनुवदुक्तरीतितो मित्रनामसहमं विदुर्बुधाः ॥७॥

भा०—दिन में पुण्य सहम को गुरु सहम में गुरु सहम में घटाना और रात्रि में उल्टा (गुरु सहम को ही पुण्य में घटाना) फिर उसमें स्पष्ट शुक्र को जोड़ना और लग्न के समान ही यहाँ भी सैकता करना (अर्थात् शोध्य शुद्धाश्रय के मध्य में शुक्र न हो तो १ राशि जोड़ देना) तो मित्र नामक सहम होता है ॥७॥

उदा०—दिन में लग्न है, अतः पुण्य सहम १।१९।१३।३२ को गुरु सहम ०।२।२०।२ में घटाने से १०।१३।६।३० इसमें शुक्र १०।१५।२५।५९ को जोड़ने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से ८।२८।३२।२९ यह मित्र सहम हुआ । यहां शोध्य और शुद्धाश्रय के मध्य में शुक्र है अतः सैकता नहीं हुई ॥७॥

विशेष ध्येय— जिस सहम साधन में किसी भाव या ग्रह के योग करने का आदेश उक्त न हो वहां पूर्ववत् लग्न को ही जोड़ना चाहिये ॥७॥

माहात्म्य और आशा सहम साधन—

पुण्याद्भौमं शोधयेदुक्तवत्स्यान्माहात्म्यं तन्नक्तमस्माद्विलोमम् ।
शुक्रं मन्दादह्नि नक्तं विलोममाशाख्यं स्यादुक्तवच्छेषमूह्यम् ॥८॥

भा०—दिन में पुण्य सहम में मङ्गल को घटा कर, रात्रि में विलोम करके उक्त रीति से क्रिया करने (अर्थात् लग्न जोड़ने और शोध्य शुद्धाश्रय के मध्य में लग्न न हो तो सैकता करने) से माहात्म्य सहम होता है। तथा दिन में शुक्र को शनि में घटाना, रात्रि में उल्टा (शनि को ही शुक्र में घटाना) फिर शेष क्रिया उक्तवत् करने (लग्न जोड़ने और सैकता करने) से आशा नामक सहम होता है ॥ ८ ॥

उदा०—पुण्य सहम १।१९।१३।३२ में मंगल ०।०।५३।३१ को घटा कर १।१८।२०।१ इसमें लग्न ०।१०।४६।४७ जोड़ने से १।२८।६।४८ यह माहात्म्य सहम हुआ । शुक्र १०।१५।२५।५९ को शनि १०।२०।४६।२९ में घटा कर ०।५।२०।३० इसमें लग्न जोड़ कर १ जोड़ने से १।२६।९।३२ यह आशा सहम हुआ ॥८॥

सामर्थ्य तथा भ्राता सहम का साधन —

सामर्थ्यमारात्तनुपं विशोध्य नक्तं विलोमं तनुपे कुगे तु ।
जीवाद्विशुध्येत्सततं पुरावद् भ्रातार्किहीनाद्गुरुतः सदोह्यः ॥९॥

भा०—दिनमें लग्नेश को मंगल में घटाना, रात्रि में विलोम करना, अगर मंगल ही लग्नेश हो तो दिन या रात्रि हो मंगलको बृहस्पति में घटाकर पूर्ववत् (लग्न जोड़ने से) सामर्थ्य सहम होता है। तथा दिन या रात्रि सर्वदा बृहस्पति में शनि को घटाने और पूर्ववत् क्रिया करने से भ्राता सहम होता है ॥९॥

उदा०—यहाँ लग्नेश मंगल ही है अतः मंगल ०।०।५३।१ को बृहस्पति ८।२।५९।५१ में घटा कर ८।२।६।२० इसमें लग्न जोड़ने से ८।१२।५२।७ भ्राता सहम हुआ ॥ ९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गौरव राजा और तात सहम साधन—

दिने गुरोश्चन्द्रमपास्य नक्तं रविं क्रमादर्कविधू च देयौ ।
रित्योक्तया गौरवमर्कमार्केरपास्य वामं निशि राजतातौ ॥१०॥

भा०—दिन में चन्द्रमा को बृहस्पति में घटा कर सूर्य को जोड़ना और रात्रि में सूर्य को बृहस्पति में घटा कर चन्द्रमा को जोड़ना पूर्ववत् (शोध्य शुद्धाश्रय के बीच में चन्द्र, सूर्य न हो तो) सैकता करने से गौरव सहम होता है। और दिन में शनि में सूर्य को घटाने और रात्रि में सूर्य में शनि को घटाने और पूर्ववत् लग्न जोड़ने से राज और तात सहम होते हैं ॥१०॥

उदाहरण—चन्द्रमा ०।२०।४९।२ को बृहस्पति ८।२।५९।५१ में घटा कर शेष ७।१२।१०।४९ में सूर्य ११।१२।२२।१७ को जोड़ने से ६।२४।३३।६ इसमें १ जोड़ कर गौरव सहम ७।२४।३३।६ हुआ । तथा शनि १०।२०।४६।२९ में सूर्य ११।१२।२२।१७ को घटाकर शेष ११।८।२४।१२ में लग्न जोड़ने से ११।१९।१०।५९ यही राज और तात सहम हुआ ॥१०॥

माता, पुत्र, जीवन, और जल सहम का साधन—

मातेन्दुतोपास्य सितं विलोमं नक्तं सुतोऽहर्निशमिन्दुमीज्यात् ।
स्याज्जीविताख्यं गुरुमार्कितोऽह्नि वामं निशीदं सममम्बयाम्बु ॥११॥

सं०—'दिने' इन्दुतः सितं अपास्य, नक्तं (रात्रौ) विलोमं तदा माता स्यात् । अहर्निशं इज्यात् इन्दुं अपास्य सुतः स्यात् । अह्नि आर्कितः गुरुं अपास्य, निशि वामं इदं जीविताख्यं स्यात् । अम्बया समं अम्बु (जलसहमं) स्यात् ॥११॥

भा०—दिन में चन्द्रमा में शुक्र को घटाने से और रात्रि में उल्टा ही घटाने से माता सहम होता है। दिन या रात्रि सर्वदा बृहस्पति में चन्द्रमा को घटा कर पुत्र सहम होता है। दिन में शनि में बृहस्पति को घटाने और रात्रि में विलोम करने से जीवित सहम होता है। और माता सहम के तुल्य ही जल सहम भी होता है ॥११॥

उदा०—चन्द्रमा ०।२०।४९।२ में शुक्र १०।१५।२५।५९ को घटाने से २।५।२३।३ इसमें लग्न ०।१०।४६।४७ जोड़ कर २।१६।९।५० यह माता सहम हुआ । तथा बृ० ८।२।५९।५१ में चन्द्रमा ०।२०।४९।२ को घटाकर ७।१२।१०।४९ इसमें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्न ०।१०।४६।४७ जोड़ कर सैक करने से ८।२२।५७।३६ यह पुत्र सहम हुआ। शनि १०।२०।४५।२९ में बृहस्पति ८।२।५०।५१ को घटाकर २।१७।४७।४०।३८ इस में लग्न जोड़ कर सैक करने से जीवित सहम २।१८।३२।२५ अर्थात् जीवन सहम हुआ। और माता सहम के तुल्य ही जल सहम समझना ॥११॥

कर्म-रोग मन्मथ-सहम का साधन—

कर्म ज्ञमारान्निशि वाममुक्तं रोगाख्यमिन्दुं तनुतः सदैव ।
स्यान्मन्मथो लग्नपमिन्दुतोऽह्नि वामं निशीन्दुं तनुपं सदाऽर्कात् ॥१२॥

भा०—दिन में बुध को मंगल में घटाने से और रात्रि में विलोम करने (मंगल को ही बुध में घटाने) से कर्म सहम होता है। सदा लग्न में चन्द्रमा को घटाने से रोग सहम होता है। तथा दिन में लग्नेश को चन्द्रमा में घटाने और रात्रि में उलटा घटाने से मन्मथ सहम होता है। यदि चन्द्रमा ही लग्नेश भी हो तो सदा सूर्य में घटा कर मन्मथ सहम होता है ॥१२॥

वि०—ग्रन्थ बढ़ जाने के भय से यहां से आगे उदाहरण नहीं दिखाये गये हैं। वह पूर्व रीति से साधन के अनुसार समझ लेना चाहिये। अर्थात् शुद्धाश्रय को शोध्य में घटाकर लग्न जोड़ने और पूर्व रीति से सैकता करने से सहम होते है।

कलि, क्षमा और शास्त्र सहम का साधन—

कलिक्षमे स्तो गुरुतो विशुद्धे कुजे विलोमं निशि पूर्वरीत्या ।
शास्त्रं दिने सौरिमपास्य जीवाद् वामं निशि ज्ञस्य युतिः पुरावत् ॥१३॥

भा०—मंगल को बृहस्पति में घटा कर और रात्रि में विलोम कर (मंगल में ही बृहस्पति को घटाकर) पूर्व रीति (लग्न जोड़ने) से कलि और क्षमा दोनों तुल्य ही होते हैं। और दिन में बृहस्पति में शनि को घटाने और रात्रि में विलोम करने (शनि में ही बृहस्पति को घटाने) से जो शेष बचे उसमें बुध को जोड़कर पूर्ववत् सैकता करने से शास्त्र सहम होता है ॥१३॥

वि०—शास्त्र सहम में लग्न नहीं जोड़ कर बुध जोड़ना और शोध्य शुद्धाश्रय के मध्य में बुध न हो तो १ जोड़ने से सहम होता है ॥१३॥

बन्धु, बन्दक, और मृत्यु सहम—

दिवानिशं ज्ञाच्छशिनं विशोध्य बन्ध्वाख्यमेतन्निशि बन्दकं स्यात् ।
वामं दिवैतन्मृतिरष्टमर्क्षादिन्दुं विशोध्योक्तवदार्कियोगात् ॥१४॥

भा०—दिन या रात्रि में बुध में चन्द्रमा को घटाकर पूर्ववत् 'लग्न जोड़ने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से' बन्धु सहम होता है। रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो यही बन्दक-सहम होता है, तथा दिन में विलोम (चन्द्रमा में ही बुध को घटा कर) बन्दक सहम होता है। तथा सर्वदा अष्टम भाव में चन्द्रमा को घटाकर शेष में शनि को जोड़े और शोध्य शुद्धाश्रय के मध्य में शनि नहीं हो तो सैक करने से मृत्यु सहम होता है ॥१४॥

देशान्तर और धन सहम साधन—

देशान्तराख्यं नवमाद्विशोध्य धर्मेश्वरं सन्ततमुक्तवत्स्यात् ।
अहर्निशं वित्तपमर्थभावाद्विशोध्य पूर्वोक्तवदर्थसद्म ॥१५॥

भा०—सर्वदा नवम भाव में नवमेश को घटाकर उक्तवत् (लग्न जोड़ने से) देशान्तर सहम होता है। और सर्वदा द्वितीय भाव में द्वितीयभावेश को घटाकर पूर्ववत् (लग्न जोड़ने से) धन सहम होता है ॥१५॥

सितादपास्यार्कमथान्यदाराह्वयं सदा प्राग्वदथान्यकर्म ।
चन्द्राच्छनिं वाममथो निशायां, शश्वद्वणिज्यं दिनबन्दकोक्त्या ॥१६॥

भा०—सर्वदा शुक्र में सूर्य को घटाकर पूर्ववत् (लग्न जोड़ने से) अन्य-दारा (परस्त्री) सहम होता है। और दिन में शनि को चन्द्रमा में घटाने और रात्रि में विलोम (चन्द्रमा को ही शनि में घटाने) से उक्तवत् लग्न जोड़ने से अन्यकर्म सहम होता है। और दिन में बन्दक सहम की रीति से साधित सर्वदा के लिये वाणिज्य सहम होता है ॥१६॥

कार्यसिद्धि और विवाह सहम साधन—

शनेर्दिवार्कं निशि चन्द्रमार्कें विशोध्य सूर्येन्दुभनाथयोगात् ।
स्यात्कार्यसिद्धिः सततं विशोध्य मन्दं सितात्स्यात्तु विवाहसद्म ॥१७॥

भा०—दिन में सूर्य को शनि में घटाकर सूर्यराशीश को जोड़ने से और रात्रि में चन्द्रमा को शनि में घटाकर चन्द्रराशीश को जोड़ने से कार्यसिद्धि सहम होता है। यहां भी पूर्ववत् क्रिया करना (अर्थात् शोध्यशुद्धाश्रय के मध्य सूर्यराशीश या चन्द्रराशीश नहीं हो तो सैक करना) और सर्वदा शनि को शुक्र में घटाकर पूर्ववत् (लग्न जोड़ने से) विवाह सहम होता है ॥१७॥

प्रसूति और सन्ताप सहम का साधन—

गुरोर्बुधं प्रोज्झ्य भवेत्प्रसूतिर्वामं निशीन्दुं शनितो विशोध्य ।
षष्ठं क्षिपेदुक्तदिशा सदैव सन्तापसद्मा "ऽऽरमपास्य शुक्रात्" ॥१८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—दिन में बुध को बृहस्पति में घटाने और रात्रि में विलोम करके पूर्ववत् (लग्न जोड़ने से) प्रसूति सहम होता है । और सदा शनि में चन्द्रमा को घटाकर शेष में षष्ठभाव को जोड़कर उक्त रीति से (शोध्य शुद्धाश्रयके मध्य षष्ठ भाव न हो तो सैक करने से) सन्ताप सहम होता है। "भारगपास्य शुक्रात्" इसका आगे के श्लोक से सम्बन्ध है ॥१८॥

श्रद्धा सदा प्रोक्तदिशाऽथ पुण्यं विद्याख्यातः प्रोज्झ्य सदा पुरोक्त्या ।
प्रीत्याख्यमुक्तं बलदेहसंज्ञे यशःसमे, "जाड्यमपास्य भौमात्" ॥१९॥

भा०—सर्वदा मंगल को शुक्र में घटाने से उक्त रीति से (लग्न जोड़ने से) श्रद्धा सहम होता है। 'तथा सर्वदा पुण्य सहम को विद्या सहम में घटाने से पूर्ववत् (लग्न जोड़ने) से प्रीति सहम होता है। तथा यश सहम के समान ही बल और देह सहम होते हैं । "जाड्यमपास्य भौमात्" इसका आगे के श्लोक में सम्बन्ध है ॥१९॥

जाड्य व्यापार और पानीयपतन सहम साधन—

शनिं विलोमं निशि चान्द्रियोगाद् व्यापारमाराज्ज्ञमपास्य शश्वत् ।
पानीयपातः शशिनं विशोध्य सौरेर्विलोमं निशि पूर्ववत्स्यात् ॥२०॥

भा०—दिन में शनि को मंगल में घटाकर रात्रि में विलोम (मंगल को ही शनि में घटाकर) शेष में चान्द्रि (बुध) को जोड़ने से जाड्य सहम होता है, यहां भी शोध्य शुद्धाश्रय के मध्य में बुध नहीं हो तो सैक करना चाहिये। तथा सर्वदा मङ्गल में बुध को घटाने से व्यापार सहम होता है। और दिन में चन्द्रमा को शनि में घटाने और रात्रि में विलोम करके पूर्ववत् (लग्न जोड़ने से) पानीयपात सहम होता है ॥२०॥

शत्रु, शौर्य और उपाय सहम का साधन—

मन्दं कुजात्प्रोज्झ्य रिपुर्विलोमं रात्रौ भवेद्भौमविहीनपुण्यात् ।
शौर्यं विलोमं निशि पूर्ववत्स्यादुपाय ईज्यं शनितो विशोध्य ॥२१॥

भा०—दिन में शनि को मंगल में घटाने से, रात्रि में विलोम (मंगल को ही शनि में घटाने) से पूर्ववत् लग्न जोड़ने से रिपु (शत्रु) सहम होता है। और दिन में मंगल को पुण्य सहम में घटाकर, रात्रि में विलोम कर पूर्ववत् लग्न जोड़ने से शौर्य सहम होता है । और दिन में बृहस्पति को शनि में घटाकर, रात्रि में विलोम करके पूर्ववत् लग्न जोड़ने से उपाय सहम होता है। यहां "वामं निशि" यह अग्रिम श्लोक से आता है ॥२१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दारिद्र्य और गुरुता सहम का साधन—

वामं निशि "ज्ञं तु विशोध्य पुण्याज्ज्ञयुग्विलोमं निशि तद्दरिद्रम् ।
सूर्योच्चतः सूर्यमपास्य नक्तं चन्द्रं तदुच्चाद्गुरुता पुरोक्त्या ॥२२॥

भा०—"वामं निशि" इसका पूर्व श्लोक से सम्बन्ध है । अब दिन में बुध को पुण्य सहम में घटाने और रात्रि में विलोम करने से शेष में पूर्ववत् बुध को ही जोड़ कर दारिद्र्य सहम होता है । तथा दिन में सूर्य के उच्च में सूर्य को घटाने और रात्रि में चन्द्रमा को चन्द्रोच्च में घटाने से पूर्ववत् (शेष में लग्न को जोड़कर) गुरुता सहम होता है ॥२२॥

जलपथ और बन्धन सहम का साधन—

कर्कार्धतः (३।१५) प्रोज्झ्य शनिं स्याज्जलाध्वान्यथा निशि ।
पुण्याच्छनिं विशोध्याह्नि वामं निशि तु बन्धनम् ॥२३॥

भा०—दिन में कर्क के आधा (३।१५।०।०) में शनि को घटाने से और रात्रि में उलटा (शनि में ३।१५।०।० को) घटाने से और पूर्ववत् लग्न जोड़ने से जलपथ सहम होता है । तथा दिन में शनि को पुण्य सहम में घटाने और रात्रि में उलटा करने से पूर्ववत् (लग्न योग और सैकता करने से) बन्धन सहम होता है ॥२३॥

कन्या और अश्व सहम का साधन—

चन्द्रं सितादपास्योक्तं सदा कन्याख्यमुक्तवत् ।
पुण्यादर्कमपास्याय-योगादश्वोऽन्यथा निशि ॥२४॥

भा०—सर्वदा चन्द्रमा को शुक्र में घटाने और पूर्वोक्तवत् (लग्न जोड़नेसे) कन्या सहम होता है । और दिन में सूर्य को पुण्य सहम में घटाने और रात्रि में विलोम करने से शेष में आय (एकादशभाव) जोड़कर अश्व सहम होता है । यहां भी शोध्य और शुद्धाश्रय के मध्य में एकादश भाव न हो तो सैक करना चाहिये ॥२४॥

सहम फल प्राप्ति समय का साधन—

स्वनाथहीनं सहमं तदंशाः स्वीयोदयघ्ना विहृतास्त्रिशत्या ।
तत्सद्मपाको दिवसैर्हि लब्धैः स्यात्तद्दशायां तदसम्भवे वा ॥२५॥

भा०—राश्यादिक सहम में सहमेश को घटाकर शेष के अंशादि बनाकर उसको सहमाक्रान्त राशि के स्वदेशीय उदय पल से गुनाकर ३०० का भाग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देने से लब्धि तुल्य दिनों में उस सहम का फल प्राप्त होता है। यदि ऐसा असम्भव हो [अर्थात् सहमेश और सहम का अन्तर शून्य हो जाने से लब्धि दिन शून्य हो जाय और फल प्राप्ति का सम्भव न हो] तो सहमेश की दशा में सहम फल होता हैं ॥ २५ ॥

वि०—सहमेश से जितने अंश आगे सहम रहता है लगभग उतने ही दिनों में सहम का फल प्राप्त होता है, इस से सिद्ध होता है कि सहमेश और सहम तुल्य ही हो तो सहम फल वर्तमान ही रहेगा अगर उस समय उस फल का असम्भव हो तो सहमेश की दशा अन्तर दशा में उसका फल लाभ कहना ॥ २५ ॥

उदा०—पुण्य सहम वृषराशि में है अतः सहमेश शुक्र हुआ। अतः पुण्य १।१९। १३।३२ में सहमेश शुक्र १०।१८।२५।५९ को घटाकर शेष ३।०।४७।३३ के अंशादि ९०।४७।३३ को वृषके मिथिला देशीय उदय मान २५१ से गुनाकर २२५९० ।११७९७।८२८३=२२७८८।५५।३ इसमें ३०० का भाग देने से लब्धि दिनादि ७५।५७।४७ अर्थात् वर्षारम्भ से इतने दिनों में विशिष्ट पुण्य का लाभ होगा ऐसा समझना ॥ २५ ॥

उप०—किमपि सहमं स्वस्वामिराश्यंशतुल्यं चेत् तदा वर्षप्रवेशकाल एव तत्सहम-फलस्य प्राप्तिर्भवति। अतः स्वस्वामितो यावद्भिरंशैरग्रतो भवति तदंशोत्पन्नदिनादिभिः कालैस्तत्फलं भवितुमर्हति। तदर्थमनुपातो यदि त्रिशदंशैः सहमनिष्ठराश्युदयपलानि लभ्यन्ते तदा स्वनाथोनसहमांशैः किमिति $= \frac{\text{सनिराउ} \times (\text{स}-\text{स्वना})}{३०}$ अन्तरांशसम्बन्धपलानि। दशभक्तानि तत्सम्बन्धिविषुवांशाः $= \frac{\text{सनिराउ} \times (\text{स}-\text{स्वना})}{३००}$ एत एव स्वल्पान्तरात् क्षेत्रांशाः सौरदिवसाः स्वीकृता आचार्येणाऽत उपपन्नम् ॥ २५ ॥

सहमेश का बल—

स्वोच्चादिसत्पदगतो यदि लग्नदर्शी
वीर्यान्वितः सहमपो यदि नेक्षतेऽङ्गम्।
नाऽसौ बली रविशशिश्रितभेशदर्श-
पूर्णान्तलग्नपबलस्य विचारणेत्थम् ॥ २६ ॥

भा०—यदि सहमेश स्वोच्च, आदि शब्द से स्वराशि, स्वनवांश, मित्र राशि, शुभ ग्रह की राशि आदि शुभ स्थान में हो और लग्न को देखता हो तो बली होता है। यदि लग्न को न देखता हो तो वह बली नहीं होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसी प्रकार रविराशीश, चन्द्रराशीश, दर्शान्तलग्नेश, पूर्णान्तलग्नेश के बल भी समझना चाहिये ॥ २६ ॥

पञ्चवर्गीबलेनोनो न हर्षस्थानमाश्रितः ।
अबलोऽयं, लग्नदर्शी बली स्वल्पेऽस्ति चेत्पदे ॥२७॥

भा०—यदि पञ्चवर्गी बल से हीन हो वा हर्ष स्थान में न हो तो वह निर्बल होता है। परञ्च यदि अपने अल्प पद (अधिकार) में भी होकर यदि लग्न को देखता हो तो बली होता है ॥ २७ ॥

वि०—स्वराशि, स्वोच्च उत्तम पद, स्वहद्दा मध्यमपद, और स्वद्रेष्काण स्वनवांश-स्वल्प पद कहाता है ॥ २७ ॥

सहम फल की वृद्धि और ह्रास—

स्वस्वामिना शुभखगैः सहितं च दृष्टं
स्वामी बली च यदि तत्सहमस्य वृद्धिः ।
यत्स्वामिना शुभखगैश्च न युक्तदृष्टं
तत्सम्भवो नहि भवेदिति चिन्त्यमादौ ॥२८॥

भा०—जो सहम अपने स्वामी और शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो और स्वामी बली हो तो उस सहम की वृद्धि होती है। तथा जो सहम अपने स्वामी या शुभ ग्रह से युत दृष्ट न हो उस सहम का सम्भव भी नहीं होता है। इसका पहिले ही विचार कर लेना चाहिये ॥ २८ ॥

अष्टमाधिपतिना युतेक्षितं पापदृग्युतमथेत्थशालि तैः ।
सम्भवेऽपि विलयं प्रयाति तत्तेन जन्मनि पुरेदमीक्ष्यताम् ॥२९॥

भा०—जो सहम अष्टमेश से युत दृष्ट हो, या पाप ग्रह से युत दृष्ट हो वा पाप या अष्टमेश से इत्थशाली हो तो उस सहम का सम्भव रहने पर भी (अर्थात् शुभ स्वामी से युत दृष्ट रहने पर भी) नाश हो जाता है। इसलिये जन्म काल में भी पहिले इसका विचार कर लेना चाहिये ॥ २९ ॥

वर्ष में किस किस सहम का फल कहना—

आदौ जन्मनि सर्वेषां सहमानां बलाऽबलम् ।
विमृश्य सम्भवो येषां तानि वर्षे विचिन्तयेत ॥३०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—पहले जन्म काल में सब सहमों का बलाबल विचार कर जिस का सम्भव हो (अर्थात् जो सहम शुभ स्वामी से युत दृष्ट हो, जिसका स्वामी बली हो) उसी सहम का विचार वर्ष में करना चाहिये ॥३०॥

पुण्य सहम की विशेषता—

सबले पुण्यसहमे धर्मसिद्धिर्धनागमः ।
शुभस्वामीक्षितयुते व्यत्यये व्यत्ययं विदुः ॥३१॥

भा०—यदि पुण्य सहम सबल हो और स्वामी शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो धर्म की सिद्धि और धन का लाभ होता है। यदि उल्टा हो तो फल भी उल्टा समझना (अर्थात् पुण्य सहम निर्बल हो शुभ स्वामी से युत दृष्ट न हो, पापग्रह से युत दृष्ट हो तो धर्म और धन की हानि समझना) ॥३१॥

अशुभ स्थानस्थ सहम का फल—

लग्नात्षष्ठाष्टरिःफस्थं धर्मभाग्ययशोहरम् ।
शुभस्वामिदृशा प्रान्ते सुखधर्मादिसम्भवः ॥३२॥

भा०—वर्ष लग्न से ६,८,१२, स्थान में सहम हो तो धर्म, भाग्य और यश का नाश करता है। यदि इन्हीं स्थानों में शुभ स्वामी से दृष्ट हो तो वर्ष के अन्त में सुख धर्म आदि का सम्भव होता है ॥३२॥

योग और दृष्टि में विशेषता—

पापयुक्शुभदृष्टं चेदशुभं प्राक् ततः शुभम् ।
शुभयुक्तं पापदृष्टमादौ शुभमसत्परे ॥३३॥

भा०—पापग्रह से युक्त और शुभग्रह से दृष्ट हो तो पहिले अशुभ फल पीछे शुभ फल। तथा शुभग्रह से युत और पाप से दृष्ट हो तो प्रथम शुभ पश्चात् अशुभ फल होता है। अर्थात् प्रथम योग का फल मिलता है, पीछे दृष्टि का फल प्राप्त होता है ॥३३॥

पुण्य सहम की प्रशंसा—

यत्राऽब्दे पुण्यसहमं शुभं सोऽत्र शुभावहः ।
अनिष्टेऽस्मिन् शुभो नेति पुण्यमादौ विचारयेत् ॥३४॥

भा०—जिस वर्ष में पुण्य सहम सबल हो वह वर्ष शुभप्रद होता है। और जिस वर्ष पुण्य सहम अनिष्ट स्थान में हो वह वर्ष शुभ नहीं होता है। इसलिये पुण्य सहम का प्रथम विचार करना चाहिये ॥३४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूतौ षष्ठाऽष्टषरिःफस्थं मध्ये पापहतं पुनः ।
पुण्यं धर्मार्थसौख्यघ्नं पत्यौ दग्धे फलं तथा ॥३५॥

भा०—यदि सूति (जन्मकाल) में ६,८,१२ स्थान में पुण्य सहम हो और वर्ष में पापग्रह से हत (युत दृष्ट) हो तो धर्म, अर्थ और यश का नाशकारक होता है। पुण्य सहमेश भी दग्ध (अस्त नीचादि गत) हो तो भी ऐसा ही फल समझना ॥३५॥

रोग और मृत्यु आदि सहम की विशेषता—

सहमान्यखिलानीत्थं सूतौ वर्षे विचिन्तयेत् ।
मान्द्यारिकलिमृत्यूनां व्यत्ययादादिशेत् फलम् ॥३६॥

भा०—इसी प्रकार जन्मकाल और वर्ष काल में समस्त सहमों का विचार करना चाहिये। रोग, शत्रु, कलि और मृत्यु सहम का फल विपरीत समझना चाहिये। अर्थात् ये सहम जितने सबल होंगे, उतने ही उस सहम फल की हानि और जितने निर्बल स्थान में होंगे उतने ही उस सहम की वृद्धि समझना। उदाहरणार्थं ४४ श्लोक देखो ॥३६॥

उदाहरण जैसे कार्य सिद्धि आदि सहमों के फल—

कार्यसिद्धिसहमं युतं शुभैर्दृष्टमूथशिलगं जयप्रदम् ।
सङ्गरेऽथ शुभपापदृष्टियुक् क्लेशतो जय उदीरितो बुधैः ॥३७॥

भा०—यदि कार्य सिद्धि सहम शुभ ग्रह से युत दृष्ट इत्थशाली हो तो संग्राम में जयप्रद होता है। यदि शुभ और पाप दोनों से युत दृष्ट हो तो क्लेश से विजय होती है। अर्थात् केवल पाप दृष्ट युत हो तो जय नहीं होती है ॥ ३७ ॥

कलिसद्म मिश्रखगदृष्टिसंयुतं यदि पापमूथशिलगं कलेर्मृतिम् ।
अथ तत्र सौम्यसहितावलोकिते जयमेति मिश्रदृशितः कलिव्यथे ॥३८॥

भा०—यदि कलि सहम पाप ग्रह से युत दृष्ट हो और पाप ग्रह से इत्थशाली हो तो कलह से मरण होता है। यदि केवल शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो कलह में जय होती है। यदि मिश्र (पाप शुभ दोनों) से दृष्ट हो तो कलह और व्यथा होती है ॥ ३८ ॥

विवाहसद्माधिपसौम्यदृष्टं युतं शुभैर्मूथशिलं शुभाप्तिम् ।
कुर्याद्यदा मिश्रसमेतदृष्टं कष्टादथ क्रूरमृतीश्वरैर्न ॥३९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—यदि विवाह सहम अपने स्वामी और शुभ ग्रह से युत दृष्ट या इत्थशाल योग करता हो तो शुभ प्राप्ति (अर्थात् विवाह प्राप्ति) होती है। मिश्र ग्रह से दृष्टयुत हो तो कष्ट (बहुत यत्न) से विवाह होता है। यदि पाप या अष्टमेश से युत दृष्ट हो तो विवाह नहीं होता है ॥ ३९ ॥

यशोऽधिपे नैधनगे खलेन युतेक्षिते सद्यशसो विनाशः।
पापार्जितस्यायशसोऽस्ति लाभो नष्टौजसि स्यात्कुलकीर्तिनाशः ॥४०॥

भा०—यश सहम का स्वामी ८ स्थान में हो, पाप ग्रह से युत दृष्ट हो तो सुयश का नाश, और पाप कर्म द्वारा सम्पादित अयश का लाभ होता है। यश सहम का स्वामी यदि निर्बल हो तो कुल की कीर्ति भी नष्ट हो जाती है ॥ ४० ॥

शुभेत्थशाले शुभदृग्युते वा बलान्विते स्याद्यशसोऽभिवृद्धिः।
युद्धे जयो वाहनशस्त्रलाभः पापेसराफाद्‌यशोऽर्थनाशः ॥४१॥

भा०—यश सहमेश शुभ ग्रह से इत्थशाल करता वा युत दृष्ट हो, बली हो तो सुयश की वृद्धि, युद्ध में विजय और वाहनवस्त्र की प्राप्ति होती है। यदि पाप ग्रह से ईसराफ योग हो तो अयश और धन का नाश होता है ॥४१॥

आशा तदीशश्च षडष्टरि:फविवर्जितः सौम्ययुतेक्षितश्च।
स्याद्वाञ्छितार्थाम्बरवाहनादिलाभः खलेक्षायुतितोऽतिदुःखम् ॥४२॥

भा०—आशा सहम और उसका स्वामी ६,८,१२ इनसे भिन्न स्थान में हो तथा शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो इच्छित धन, वस्त्र, वाहन का लाभ होता है। और पापग्रह से दृष्ट युत हो तो अत्यन्त दुःख होता है ॥४२॥

मान्द्याधिपः पापयुतेक्षितश्च पापः स्वयं रोगकरो विचिन्त्यः।
चेदित्थशालो मृतिपेन मृत्युस्तदा भवेद्धीनबलेतिकष्टात् ॥४३॥

भा०—मान्द्य (रोग) सहम का स्वामी पापग्रह से युत दृष्ट हो और स्वयं पाप भी हो तो रोग कारक समझना। अगर उसको अष्टमेश से इत्थशाल हो तो मृत्यु होती है। यदि रोग सहमेश हीन बल हो तो कष्ट से मृत्यु होती है ॥४३॥

स्वस्वामिसौम्येक्षणभाजि मान्द्ये नाथे सवीर्येऽष्टषडन्त्यवर्जे।
रोगस्तदा नैव भवेद्विमिश्रयुतेक्षिते रुग्भयमस्ति किञ्चित् ॥४४॥

भा०—रोग सहम अपने स्वामी और शुभग्रह से युत दृष्ट हो, रोग सहम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के स्वामी सबल होकर ६,८,१२, इनसे भिन्न स्थान में हो तो रोग नहीं होता है। यदि मिश्र ग्रह से युत दृष्ट हो तो कुछ रोग का भय समझना चाहिये ॥४४॥

अर्थाख्यं शुभनाथदृष्टसहितं द्रव्यागमात्सौख्यदं
पापैर्दृष्टयुतं च वित्तविलयं कुर्यादथो पापयुक् ।
सद्दृष्टं च शुभैत्थशालि यदि तत्पूर्वं धनं नाशयेत्
पश्चादर्थसमुद्भवं च ससुखं व्यत्यासतो व्यत्ययः ॥४५॥

भा०—धन सहम शुभग्रह और स्वामी से युत दृष्ट हो तो द्रव्य के लाभ से सुखप्रद होता है। पापग्रह से युत दृष्ट हो तो धन का नाश करता है। यदि पाप से युक्त और शुभग्रह से दृष्ट हो तो पहले धन का नाश, पश्चात् धन का लाभ कराता है। इससे उल्टा में उल्टा होता है (अर्थात् शुभ से युत और पाप से दृष्ट हो तो पहिले धनका लाभ, पीछे नाश कराता है) ॥४५॥

रिपुदृष्ट्या रिपोर्भीतिस्तस्करादेर्धनक्षयः ।
मित्रदृष्ट्या मित्रयोगाद्धनं मानो यशः सुखम् ॥४६॥

भा०—धनसहम पर शत्रु की दृष्टि हो तो शत्रु का भय तथा चोर आदि से धन का नाश होता है। और मित्र की दृष्टि हो तो मित्रों की सहायता से धन, मान, यश और सुख होता है ॥४६॥

सत्स्वामिदृष्टं युतमात्मजस्य लाभं सुखं यच्छति पुत्रसद्म ।
पापान्वितं सौम्यखगेत्थशालि प्राग्दुःखदं पुत्रसुखाय पश्चात् ॥४७॥

भा०—पुत्रसहम शुभग्रह, स्वामी से दृष्ट हो तो पुत्र का लाभ और सुख देता है। यदि पापग्रह से युत और शुभग्रह से इत्थशाली हो तो पहिले पुत्र का दुःख पीछे पुत्र का सुख होता है ॥४७॥

पापान्वितं पापकृतेसराफं नाशाय पुत्रस्य गतौजसीशे ।
मृतौ सुतेशः सहमेश्वरोऽब्दे पुत्रस्य लब्ध्यै शुभमित्रदृष्टः ॥४८॥

भा०—पुत्रसहम पाप ग्रह से युक्त और पाप ग्रह से ईसराफ योग करता हो और पुत्र सहमेश निर्बल हो तो पुत्र का नाशकारक होता है। यदि जन्म-कालिक पुत्र भावेश वर्षकाल में पुत्र सहमेश हो और शुभ मित्र से दृष्ट हो तो पुत्र लाभकारक होता है ॥४८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पित्र्यं सदीक्षितयुतं पतियुक्तदृष्टं
तातस्य यच्छति धनाम्बरमानसौख्यम् ।
पत्यौ गतौजसि मृतौ खलमूशरीफे
नाशः पितुश्चरगृहे परदेशयानात् ॥४९॥

भा०—पितृसहम यदि शुभ ग्रह से दृष्ट युत और स्वामी से दृष्ट युत हो तो पिता को धन, वस्त्र, मान और सुख देने वाला होता है । अगर पितृसहम का स्वामी निर्बल हो ८ वें स्थान में हो और पाप ग्रह से ईसराफ करता हो तो पिता का नाश होता है । यदि चर राशि में हो तो परदेश जाने से मरण होता है ॥४९॥

शुभेत्थशाले खलखेटयोगे गदप्रकोपः प्रथमं महान् स्यात् ।
पश्चात् सुखं विन्दति पूर्णवीर्ये नाथे नृपान् मानयशोऽभिवृद्धिः ॥५०॥

भा०—यदि तात सहम में शुभ ग्रह का इत्थशाल, और पाप ग्रह का योग हो तो पिता को पहिले विशेष रोग का प्रकोप किन्तु पीछे सुख होता है। यदि तात सहमेश पूर्ण बली हो तो राजा से मान और यश की वृद्धि होती है ॥५०॥

बन्धनाख्यसहमं युतेक्षितं स्वामिना नहि तदास्ति बन्धनम् ।
पापवीक्षितयुतेऽस्ति बन्धनं पापजे मुथशिले विशेषतः ॥५१॥

भा०—बन्धन सहम स्वामी से युत दृष्ट हो तो बन्धन नहीं होता है। यदि पाप ग्रह से युत दृष्ट हो तो बन्धन होता, अगर पापग्रह का इत्थशाल हो तो विशेष क़र बन्धन होता ही है ॥५१॥

गौरवाख्यसहमं युतेक्षितं स्वामिना शुभखगैः सुखाप्तये ।
राजगौरवयशोम्बराप्तये पापवीक्षितयुते पदक्षतिः ॥५२॥
शुभाऽशुभैर्दृष्टयुतं खलैश्चेत् कृतेत्थशालं धनमाननाशम् ।
पूर्वं विधत्ते चरमे शुभेत्थशाले सुखं वाहनशस्त्रलाभम् ॥५३॥

भा०—गौरव सहम स्वामी शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो सुख की प्राप्ति राजा के यहां गौरव और यश वस्त्र आदि की प्राप्ति होती है। पापग्रह की दृष्टि योग से पद (अधिकार) का नाश होता है। यदि शुभ अशुभ दोनों से दृष्ट युत हो और पाप से इत्थशाल हो तो पहले धन मान का नाश होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि शुभ ग्रह से इत्थशाल हो तो चरम (वर्ष के अन्त) में वाहन और शस्त्रों का लाभ होता है ॥५२-५३॥

कर्मभावसहमाधिपाः शुभैः स्वामिना मुथशिला बलान्विताः।
हेम-वाजि-गज-भूमि-लाभदाः पापदृष्टियुतितोऽशुभप्रदाः ॥५४॥

दग्धा वक्राः कर्मवैकल्यदास्ते युक्ता दृष्टाः सौरिणा ते विशेषात्।
राज्यभ्रंशः कर्मनाशश्च राजकर्मेशौ चेन्मूसरीफौ खलेन ॥५५॥

भा०—कर्म भाव और कर्म सहम तथा उनके स्वामी, शुभ ग्रह और अपने स्वामी से इत्थशाल योग करते हों तथा बली हों तो सुवर्ण, घोड़े, हाथी, और भूमि के लाभदायक होते हैं। यदि उन पर पाप ग्रह की दृष्टि या योग हो तो अशुभ फल देते हैं। यदि दग्ध (अस्त) हों वक्र हों तो कर्म में विफलताकारक होते हैं। यदि शनि से युत दृष्ट हों तो विशेष कर कर्म की विफलता करते हैं। यदि राजसहमेश और कर्मसहमेश पाप ग्रह से ईसराफ योग करें तो राज्य का नाश और कर्म के नाशकारक होते हैं ॥५४-५५॥

अब कुछ सहमों के नाम का स्पष्ट अर्थ कहते हैं—

उपदेष्टा गुरुर्ज्ञानं विद्या शास्त्रं श्रुति-स्मृती।
मोहो जाड्यं बलं सैन्यमङ्गं देहो जलं द्युतिः ॥५६॥
गुरुता मण्डलेशत्वं गौरवं मानशालिता।
निग्रहानुग्रहविभू राजा छत्रादिलिङ्गभाक् ॥५७॥

भा०—'गुरु' से यहाँ उपदेष्टा (गायत्री आदि उपदेश देने वाला), और विद्या शब्द से ज्ञान, शास्त्र शब्द से श्रुति (वेद), स्मृति (धर्मशास्त्र), जाड्य से मोह (अज्ञान), बल से सेना, देह से शरीर और जल शब्द से द्युति (शरीर की कान्ति) समझना चाहिये। तथा गुरुता से मण्डलेशत्व, गौरव से मानशालित्व (प्रतिष्ठा), राज शब्द से निग्रह अनुग्रह करने में समर्थ छत्र आदि चिह्न धारण करने वाला राजा समझना चाहिये ॥५६-५७॥

माहात्म्यं मन्त्रगाम्भीर्यं धृतिर्बुद्ध्यादिशालिता।
सामर्थ्यं देहजा शक्तिः शौर्यं यत्नोऽरिनिग्रहे ॥५८॥
आशेच्छोक्ता मतिर्धर्म्या श्रद्धा बन्दः पराश्रयः।
पानीयपतनं वृष्टिर्जलेऽकस्माच्च मज्जनम् ॥५९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—माहात्म्य शब्द से मन्त्रगाम्भीर्य (गोपनीय विचार को गुप्त रखना), धैर्य तथा बुद्धि से युक्त रहने को धृति समझना। और सामर्थ्य शब्द से देह की शक्ति तथा शौर्य शब्द से शत्रु के निग्रह करने का यत्न समझना। आशा इच्छा को कहते हैं। धर्म में बुद्धि श्रद्धा कहाती है। वन्दशब्द पराश्रय कहाता है। पानीयपतन से वर्षा अथवा अकस्मात् जल में डूबना समझा जाता है॥ ५८-५९॥

आधि-व्याधी तापमान्द्ये सपिण्डा बन्धवाः स्मृताः।
सत्यालीकं वणिग्वृत्तिराधानं प्रसवः स्मृतः॥६०॥
दासत्वं परकर्मोक्तमन्यत्स्पष्टं स्वनामतः।
निरूप्याणि यथायोग्यं कुलजातिस्वरूपतः॥६१॥

भा०—सन्ताप शब्द से आधि (मानसी-व्यथा), मान्द्य शब्द से व्याधि (रोग), बन्धु शब्द से सपिण्ड के लोग, वाणिज्य से सत्य, मिथ्या से व्यापार करना, और प्रसूति शब्द से गर्भाधान और परकर्म से नौकरी करना समझना चाहिये। और सहम अपने अपने नाम से स्पष्ट ही है। इस प्रकार कुल और जाति स्वरूप के अनुसार यथायोग्य फल का विचार करना चाहिये॥६०-६१॥

फल कहने में विशेषता—

शुभयोगेक्षणात्सौख्यं पत्युर्वीर्यानुसारतः।
दारिद्र्यमृतिमान्द्यारिकलिषूक्तो विपर्ययः॥६२॥

भा०—सहम पर शुभ ग्रह की दृष्टि और योग हो तो स्वामी के बल के अनुसार सहम का सुख कहना चाहिये। परञ्च दारिद्र्य, मृत्यु, रोग, शत्रु और कलि सहमों का फल विपरीत समझना (अर्थात् जिस प्रकार के योग से अन्य सहमों का शुभत्व कहा गया है उस प्रकार के योग से इन में अशुभत्व समझना चाहिये)॥ ६२॥

प्रश्नकालेऽपि सहमं विचार्य प्रष्टुरिच्छया।
सर्वेषामुपयोगोऽत्र चित्रं पृच्छन्ति यज्जनाः॥६३॥

* इति सहमफलविचारः *

भा०—पूछने वाले की इच्छा के अनुसार प्रश्न काल में भी सहमों का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विचार करना चाहिये। प्रश्न समय में भी सब सहमों का उपयोग होता है। क्योंकि लोग अनेकों प्रकार के प्रश्न करते हैं ॥६३॥

इति गूढार्थप्रकाशिकासहित-नीलकण्ठ्यां संज्ञातन्त्रे सहमाध्यायः ॥३॥

—०—

अथ दशाऽन्तर्दशाध्यायः ॥४॥

हीनांश के अनुसार दशाक्रम—

स्पष्टान् सलग्नान् खचरान् विधाय राशीन् विनाऽत्यल्पलवं तु पूर्वम् ।
निवेश्य तस्मादधिकाधिकांशक्रमादयं स्यात्तु दशाक्रमोऽब्दे ॥१॥

सं०—सलग्नान् स्पष्टान् खचरान् विधाय तु (पुनः) राशीन् विना अत्यल्पलवं (सर्वापेक्षया स्वल्पांशं ग्रहं) पूर्वं निवेश्य तस्मात् अधिकाधिकांशक्रमात् 'निवेश्याः' अयन्तु अब्दे (वर्षे) दशाक्रमः स्यात् ॥१॥

भा०—लग्न सहित रव्यादि सातों ग्रह स्पष्ट बनाकर राशियों को छोड़ कर सबसे अल्प अंश वाले को पहिले लिखै, फिर अधिकाधिक अंश वाले को क्रम से लिखे यही वर्ष में दशा का क्रम होता है ।। १ ।।

पात्यांश और दशा दिनादि साधन—

ऊनं विशोध्याधिकतः क्रमेण शोध्यं विशुद्धांशकशेषकैक्यम ।
सर्वाधिकांशोन्मितमेव तत्स्यादनेन वर्षस्य मितिस्तु भाज्या ॥२॥
शुद्धांशकांस्तान् गुणयेदनेन लब्धध्रुवाङ्केन भवेद्दशायाः ।
मानं दिनाद्यं खलु तद्ग्रहस्य फलान्यथासां निगदेत्तु शास्त्रात् ॥३॥

सं—अधिकतः (अधिकांशग्रहात्) ऊनं (स्वल्पांशं) विशोध्य क्रमेण शोध्यम् । विशुद्धांशकशेषकैक्यं 'यत्' तत् सर्वाधिकांशोन्मितमेव स्यात् । अनेन वर्षस्य मितिः (वर्षदिन-संख्या) भाज्या, लब्धध्रुवाङ्केन (दिनाद्येन) अनेन तान् शुद्धांशकान् गुणयेत् तत् दिनाद्यं ग्रहस्य दशायाः मानं भवेत् । अथ आसां (दशानां) फलानि शास्त्रात् निगदेत् (कथयेत्) ॥ २–३ ॥

भा०—अल्प अंश वाले को अपने से अधिक अंश वाले में घटा घटा कर क्रम से नीचे लिखे । इन घटाये हुए अंशों का योग–सबसे अधिकांश के तुल्य होता है । इससे वर्ष के मान (३६० सौर दिन) में भाग देकर लब्ध 'दिनादि' ध्रुवाङ्क से पृथक् पृथक् उन शुद्धांशों (पात्यांशों) को गुना करने से ग्रहों के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिनादि दशा के मान होते हैं। इन ग्रहों की दशाओं के फल शास्त्रानुसार कहना चाहिये ॥ २-३ ॥

दशा—उदाहरणचक्र—

स्पष्ट ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
राश्यादि	११	०	०	११	८	१०	१०	०
	१२	२०	०	३	२	१८	२०	१०
	२२	४९	५३	१७	५९	२५	४६	४६
	१७	२	३१	९	५१	५९	२९	४७
दशाक्रम ग्रह	मं	गु.	बु.	ल.	र.	शु.	श.	चं.
हीनांश	०	२	३	१०	१२	१८	२०	२०
	५३	५९	१७	४६	२२	२५	४६	४९
	३१	५१	९	४७	१७	५९	२९	२
पात्यांश	०	२	०	७	१	६	२	०
	५३	६	१७	२९	३५	३	२०	२
	३१	२०	१८	३८	३०	४२	३०	३३
दशादिनादि	१५	३६	४	१२६	२७	१०४	४०	०
	२५	२४	५९	३५	३१	४३	२९	४४
	२९	४३	१०	४०	३१	३५	४३	६
सूर्य— ११।१२।२२।१७	११	१	१	५	६	१०	११	११
	२७	४	९	१८	१६	१	११	१२
	४७	१२	११	४७	१८	८	३८	२२
	४६	२९	३९	१९	५०	२५	८	१४

उदा०—स्पष्टग्रहों में सब से अल्प अंश मंगल का है, इस लिये मंगल के अंशादि प्रथम कोष्ठ में लिखकर अधिकाधिकअंश क्रम से सब के अंशों को लिखकर हीनांश चक्र लिखा गया है। फिर पात्यांश कोष्ठ में प्रथम हीनांशको लिखकर फिर प्रथम को द्वितीय में, द्वितीय को तृतीय में इत्यादि क्रम से अपने अपने अग्रिम में घटाकर पात्यांश लिखे गये है। इन पात्यांशों का योग २०।४९।२ अधिकांशके तुल्य है। इस पात्यांश के योग से वर्ष के दिनमान (३६०) में भाग देकर लब्धि दिनादि ध्रुव १७।१७।३६ हुआ। इस ध्रुव १७।१७।३६ से मंगलके पात्यांश ०।५३।३१ को गुना करने से दिनादि १५।२५।२९ यह मंगल की दशा हुई। इसी प्रकार सब ग्रह के पात्यांशों को ध्रुवांक से गुना करने से दिनादि दशामान चक्र में लिखे गये हैं। दिनादि को सूर्य के अंशादि में जोड़नेसे अग्रिम दशारम्भ कालिक सूर्य होते हैं ॥ २-३॥

दशाक्रम में विशेष—

शुद्धांशसाम्ये बलिनो दशाद्या बलस्य साम्येऽल्पगतेस्तु पूर्वा।
साम्ये विलग्नस्य खगेन चिन्त्या बलादिका लग्नपतेर्विचिन्त्या ॥४॥

भा०—यदि ग्रहों में अंशादि की समता हो तो उनमें बली ग्रह की प्रथम दशा होती है। यदि बल में भी समता हो तो उनमें प्रथम दशा अल्प गति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रह की होती है। यदि लग्न के अंश या बल ग्रह के तुल्य हो तो लग्न के बल के स्थान में लग्न-पति के बल और गति ग्रहण कर विचार करना चाहिये ॥४॥

अन्तर्दशा साधन—

दशामानं समामानं प्रकल्प्योक्तेन वर्त्मना।
अन्तर्दशा साधनीया प्राक्पात्यांशवशेन तु।
आदावन्तर्दशापाकपतेस्तत्क्रमतोऽपरा ॥५॥

भा०—दशामान को ही वर्षमान कल्पना कर पूर्वोक्त पात्यांश द्वारा उक्त-रीति से अन्तर्दशा साधन करना चाहिये। अर्थात् दशामान में पात्यांश के योग से भाग देकर लब्ध ध्रुवांक से पृथक् पृथक् पात्यांश को गुना करने से अन्तर्दशा-मान दिनादिक होता है। पहिली अन्तर्दशा दशापति की होती है फिर उसी से आरम्भ कर क्रम से और ग्रहों की दशा होती है ॥ ५ ॥

अन्तर्दशा चक्र—

ग्रह	मं.	बृ.	बु.	ल.	र.	शु.	श.	चं.
अन्तर्द- शा दिनादि	० २९ ४१	१ ३३ ४१	० १२ ५०	५ ३३ २८	१ १० ५०	४ २९ ४४	१ ४४ १२	० १ ५३
सूर्य-	११ १३ १ ५८	११ १४ ३५ ३९	११ १४ ४८ २९	११ २० २१ ५७	११ २१ ३२ ४७	११ २६ २ ३१	११ २७ ४६ ४३	११ २७ ४८ ३६

उदा०—मङ्गल की दिनादि दशा १५।२५।२९ में पात्यांश योग का भाग देकर लब्ध-दिनादि ०।४४।३० अन्तर्दशा का ध्रुव हुआ। इस ध्रुव से प्रत्येक ग्रहों के पात्यांश को गुनाकर दिनादि अन्तर्दशा चक्र में लिखी गई है। इसी प्रकार से प्रत्येक ग्रह की दशा अन्तर्दशा होती है ॥ ५ ॥

इति गूढार्थप्रकाशिकासहित-नीलकण्ठ्यां दशान्तर्दशासाधनाध्यायः ॥४॥

स्ववंश वर्णन—

आसीदसीमगुणमण्डितपण्डिताग्र्यो-
व्याख्यद्भुजङ्गपगवीः श्रुतिवित्सुवृत्तः।
साहित्यरीतिनिपुणो गणितागमज्ञ-
श्चिन्तामणिर्विपुलगर्गकुलावतंसः ॥१॥

तदात्मजोऽनन्तगुणोऽस्त्यनन्तो योऽग्रोक्तदुक्तीः किल कामधेनुम्।
सत्तुष्टये जातकपद्धतिं च न्यरूपयद्दुष्टमतं निरस्य ॥२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पद्माम्बयाऽसावि ततो विपश्चिच्छ्रीनीलकण्ठः श्रुतिशास्त्रनिष्ठः ।
विद्वच्छिवप्रीतिकरं व्यधात्तं संज्ञाविवेके सहमावतंसम् ॥३॥

भा०—उच्च गर्ग वंश में भूषण स्वरूप, असीम गुणों से युक्त, पण्डितों में श्रेष्ठ, महाभाष्य की व्याख्या करने वाले, वेदार्थवेत्ता, सदाचारी, गणित शास्त्र को जानने वाले चिन्तामणि नामक पण्डित हुए। उनके पुत्र अनन्त गुणों से युक्त अनन्त नामक हुए। जिन्होंने उनकी उक्ति रूप कामधेनु को दूहा अर्थात्—'कामधेनुसारिणी' नामक ग्रन्थ पर टीका की, और पण्डितों के सन्तोषार्थ, अयुक्त मतों का निराकरण करते हुए जातक पद्धति बनाई। और जिनसे 'पद्मा नाम की माता' से वेद में और शास्त्र में निष्ठ पण्डित श्रीनीलकण्ठ की उत्पत्ति हुई। उस नीलकण्ठ ने पं० श्रीशिव के प्रसन्नार्थ संज्ञातन्त्र में सहमाध्याय को बनाया ॥ १-२-३ ॥

इति गूढार्थप्रकाशिकासहित-नीलकण्ठ्यां वंशवर्णनाध्यायः ॥ ५ ॥

—०*०—

वर्ष फलोपयोगी त्रिपताकि चक्र—(क्षेपक)—

रेखात्रयं तिर्यगथोर्ध्वसंस्थ-मन्योन्यविद्धाग्रगमेककोणात् ।
स्मृतं बुधैस्तत्त्रिपताकि चक्रं प्राङ्मध्यरेखाग्रगवर्षलग्नात् ॥१॥
न्यसेद्भचक्रं किल तत्र सैकां याताऽब्दसंख्यां विभजेन्नभोगैः ।
शेषोन्मिते जन्मगचन्द्रराशेस्तुल्ये च राशौ विलिखेच्छशाङ्कम् ॥२॥
परे चतुर्भाजितशेषतुल्ये स्थाने स्वराशेः खचरास्तु लेख्याः ।
स्वर्भानुविद्धे हिमगौ त्वरिष्टं पातार्किविद्धे सरुजो भवन्ति ॥३॥
महीजविद्धे तु शरीरपीडा शुभैश्च विद्धे बहुसौख्यलाभः ।
शुभाशुभं व्योमगवीर्यतोऽत्र फलञ्च वर्षस्य वदेत् सुधीमान् ॥४॥

भा०—३ पूर्वापर और ३ दक्षिणोत्तर रेखायें खींचकर परस्पर कोण से ३, ३ रेखाओं से विद्ध करने से त्रिपताकि चक्र बनता है। उसमें पूर्वापर रेखाओं के बीच वाली रेखा में वर्ष लग्न को लिख कर क्रम से १२ राशियों को लिखे। फिर गत वर्ष संख्या में १ जोड़ कर ९ का भाग देकर जो शेष बचे, जन्मकालिक चन्द्र राशि से उतने (शेष तुल्य) स्थान में चन्द्रमा को लिखे। फिर सैक गत वर्ष संख्या में ४ का भाग देकर जो शेष बचे—जन्मकालिक अपने २

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आश्रित स्थानों से उतने (शेष तुल्य) स्थान में अन्य ग्रहों को लिखे। इस प्रकार राहु और चन्द्रमा में वेध होने (एक रेखा में पड़ने) से अरिष्ट, केतु और शनि से चन्द्र वेध हो तो रोग, मंगल से चन्द्र वेध हो तो शरीर पीड़ा, और शुभ ग्रह से चन्द्र वेध हो तो सुख लाभ होता है। इस प्रकार ग्रहों के बलानुसार त्रिपताकि चक्र से वर्ष फल कहना चाहिये ॥ १-२-३-४ ॥

वि०—राहुकेतु को उल्टा चलाना चाहिये।

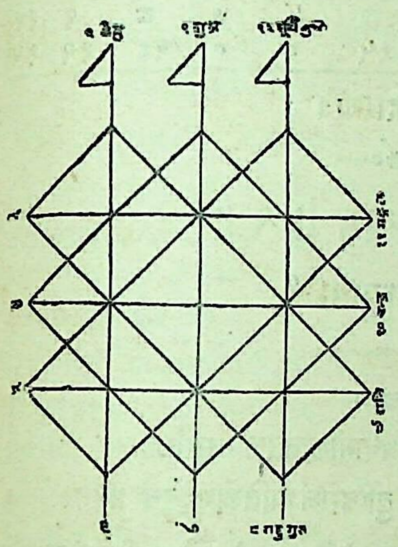

उदा०—गत वर्ष संख्या ३६ में १ जोड़ कर ३७ इसमें ९ भाग देकर शेष १ बचा इस लिये जन्मकालिक राशि में ही, चन्द्रमा हुआ। और इसी सैक गत वर्ष संख्या में ४ का भाग देने से भी शेष १ ही बचता है। इसलिये शेष सब ग्रह भी जन्म कालिक स्थान में पड़े। चक्र देखो। यहां चन्द्रमा को केवल शुक्र से वेध है इसलिये सुखलाभ फल कहना ॥४॥

अथ मुद्दादशा—(क्षेपक)

"जन्मर्क्षसंख्यासहिता गताब्दा द्वयूनिता नन्दहृतावशेषात्।
आ-चं-कु-रा-जी-श-बु-के-शु-पूर्वा मुद्दादशेशाः किल वर्षवेशे॥"

अर्थ—जन्म नक्षत्र की संख्या में गत वर्ष जोड़ कर जो हो उसमें २ घटाकर ९ का भाग देने से १ आदि शेष में क्रम से—सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्र की मुद्दादशा वर्ष में होती है। कोई इसीको मुग्धादशा भी कहते हैं।

मुद्दादशा के मासादिक मान चक्र—

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदाहरण—जन्म नक्षत्र उत्तराषाढा की संख्या २१ में गत वर्ष संख्या ३६ जोड़ कर ५७ इसमें २ घटाकर ९ का भाग देने से शेष १, अतः सूर्य की दशा आरम्भ में हुई उसी क्रम से वर्ष दशा चक—

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	
मास दिन	० १८	१ ०	० २१	१ २४	१ १८	१ २७	१ २१	० २१	२ ०	
रा. मं. सूर्य	११ १२	० ०	१ ०	१ २१	३ १५	५ ३	७ ०	८ २१	९ १२	११ १२

इति मुद्दादशा।

—०*०—

अथ वर्षतन्त्रम् ॥ २ ॥

वर्षफलाध्यायः १

मङ्गलाचरण—

स्वस्वाभिलाषं नहि लब्धुमीशा निर्विघ्नमीशानमुखाः सुरौघाः।
विना प्रसादं किल यस्य नौमि तं ढुण्ढिराजं मतिलाभहेतुम् ॥१॥

सं०—यस्य प्रसादं विना ईशानमुखाः (शिवाद्याः) सुरौघाः निर्विघ्नं स्वस्वाभिलाषं लब्धुं ईशा नहि 'भवन्ति' मतिलाभहेतुं तं ढुण्ढिराजं अहं नौमि ॥१॥

भा०—जिनके अनुग्रह विना शंकर आदि देव समूह भी विना विघ्न के अपने अपने मनोरथ को नहीं प्राप्त कर सकते हैं ऐसे बुद्धिलाभ के हेतु उन ढुण्ढिराज (गणेश) जी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥१॥

वर्षतन्त्र आरम्भ का प्रयोजन—

जातकोदितदशाफलं च यत् स्थूलकालफलदं स्फुटं नृणाम्।
तत्र न स्फुरति दैवविन्मतिस्तद्ब्रुवेऽब्दफलमादिताजिकात् ॥२॥

भा०—जातक शास्त्र में कहा हुआ दशाफल स्थूल काल (वर्ष से अधिक समय) में फलप्रद होता है, उसमें ज्यौतिषियों की बुद्धि स्पष्टरूप से कार्य नहीं करती है, इसलिये मैं आदिताजिक ग्रन्थों से वर्षफल को कहता हूँ ॥२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्मकालिक सूर्य से वर्ष, मास, दिन प्रवेश साधन—

तत्कालेऽर्को जन्मकालरविणा स्याद्यदा समः ।
तदा वर्षप्रवेशः स्यात् सौरादब्दमितिर्यतः ॥३॥
एकैकराशिवृद्ध्या चेत्तुल्योंऽशाद्यैर्यदा रविः ।
तदा मासप्रवेशो द्युप्रवेशश्चेत् कलासमः ॥४॥
मासार्कस्य तदाऽऽसन्नपंक्त्यर्केण सहान्तरम् ।
कलीकृत्यार्कगत्याप्त—दिनाद्येन युतोनितम् ॥५॥
तत्पङ्क्तिस्थं च वाराद्यं मासार्केऽधिकहीनके ।
तद्वाराद्ये मासवेशो द्युवेशोप्येवमेव च ॥६॥

भा०—जिस समय तात्कालिक सूर्य जन्मकालिक सूर्य के तुल्य होते हैं, उसी समय वर्षप्रवेश हुआ करता है, क्योंकि वर्ष का मान सौर से ही लिया जाता है। और जन्मकालिक सूर्य में १, १ राशि जोड़ने से द्वितीय आदि मास प्रवेशकालिक रवि होते हैं, उनके अंशादि बराबर रहते हैं। तथा एक एक अंश जोड़ने से दिन प्रवेश कालिक सूर्य होते हैं, उनके कलादि तुल्य होते हैं। इस प्रकार वर्ष प्रवेश और मास या दिन प्रवेश कालिक सूर्य का ज्ञान करके समीपस्थ पंक्तिस्थ (पञ्चाङ्ग गत) सूर्य के साथ अन्तर की कला बनाकर पंक्तिस्थ सूर्य की गति से भाग देने से लब्धि दिनादि को पंक्ति के दिनादि में जोड़ने, घटाने से (अर्थात् पंक्ति के सूर्य से मासप्रवेशादि का सूर्य अधिक हो तो जोड़ने से, अल्प हो तो घटाने से) मास आदि प्रवेश का समय हो जाता है ॥३—६॥

उदा०—जन्मकालिक सूर्य ११।१२।२२।१७ और इसका आसन्न पंक्ति चैत्र शुक्ल ३ बुधवार मिश्रमान ४५।७ कालिक सूर्य ११।१२।४।६ हैं, तो दोनों सूर्य के अन्तर की ०।०।१८।११ इसके कलादि १८।११ में पंक्तिस्थ सूर्य की गति ५९।२६ का भाग देकर लब्धि दिनादि ०।१८।२२ को पंक्ति के दिनादि ४।४५।७ में जोड़ने से ५।३।२९ यह पूर्व रीति से साधित के समान ही वर्ष प्रवेश का वारादि हुआ। इस प्रकार मास प्रवेश कालिक सूर्य से मास प्रवेश, और दिन प्रवेश कालिक सूर्य से दिन प्रवेश का समय निकालना चाहिये ॥३—६॥

अब वर्षेश के ५ अधिकारियों में वर्षलग्नपति १, जन्मलग्नपति २, मुन्थेश ३, त्रिराशीश ४, तथा सूर्यराशीश या चन्द्रराशीश ५, होते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि प्रश्न लग्न से वर्षफल कहा जाय तो गतवर्ष अज्ञात होने के कारण मुन्थेश, तथा जन्म लग्नेशका ज्ञान किस प्रकार करना?

उसका प्रकार कहते हैं—

द्विघ्नं प्रश्नाङ्गभागाद्यं शरलब्धं स्फुटेन्थिहा ।
प्रश्नाङ्गाद्धायनफले तुर्येशो लग्नपो भवेत् ॥७॥

भा०—प्रश्न कालिक लग्न के 'राशि छोड़कर' केवल अंशादि को २ से गुनाकर ५ के भाग देने से लब्ध राश्यादि स्पष्ट मुथहा होती है। और प्रश्न कालिक लग्न से वर्षफल कहने में चतुर्थेश ही लग्नपति (जन्म लग्नपति होता) है ॥७॥

वि०—वर्षेश के जो ५ अधिकारी हैं, वे प्रश्न लग्न से इस प्रकार होते हैं—(१) वर्ष लग्न पति के स्थान में प्रश्न लग्नेश, (२) उससे चतुर्थेश जन्म लग्नेश, (३) "द्विघ्नं प्रश्नाङ्गभागाद्यं" इस प्रकार से मुथहेश, (४) त्रिराशिपति पूर्ववत्, (५) सूर्यराशीश या चन्द्रराशीश पूर्ववत् । प्रश्न से वर्ष फल कहने में इस प्रकार पञ्चाधिकारियों का ज्ञान करना ॥७॥

उदा०—मानो किसी ने वर्ष फल समझने के लिये दिन में प्रश्न किया, प्रश्न लग्न २।११।१६।१५ मिथुन है। इसके अंशादि ११।१६।१५ को २ गुनाकर २२।३२।३० इसमें ५ का भाग देकर लब्धि राश्यादि ४।१५।१५।० मुथहा हुई। अतः यहाँ प्रश्नलग्नपति बुध (१) जन्म लग्नपति (तुर्यपति) बुध (२), मुन्थापति सूर्य (३), त्रिराशीश=शनि (४) सूर्य राशिपति गुरु (५)—ये अधिकारी हुए ॥७॥

प्रश्नलग्न

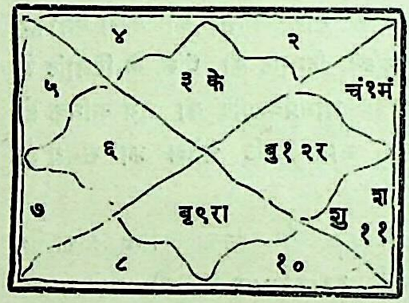

फल कहने के साधन—

तात्कालिकास्तु खचराः सुधिया विधेयाः
स्पष्टो विलग्नमुखभावगणो विधेयः ।
वीर्यं तथोक्तविधिना निखिलग्रहाणा-
मब्दाधिपोऽपि पुनरुक्तवदेव बोध्यः ॥८॥

भा०—प्रश्न या वर्षप्रवेश समय में तात्कालिक स्पष्ट ग्रह और द्वादश

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाव का साधन तथा सब के पञ्चवर्गी बल साधन पूर्वोक्त विधि से करना तथा पूर्वोक्त विधि से वर्षपति का भी ज्ञान करना चाहिये ॥८॥

वर्षेश का फल—

अब्दाऽधिपो व्ययषडष्टमभिन्नसंस्थो लब्धोदयोऽब्दजनुषोः सदृशो बलेन।
निःशेषमुत्तमफलं विदधाति काये नैरुज्य-राज्य-बललब्धिरतीवसौख्यम् ॥९॥

भा०—वर्षेश ६, ८, १२, इनसे भिन्न स्थान में हो, उदित हो, वर्ष और जन्म समय में बली हो तो पूर्ण उत्तम फल, शरीर में नीरोगता, राज्यलाभ और अत्यन्त सुखदायक होता है ॥९॥

बलपूर्णेऽब्दपे पूर्णं शुभं मध्ये च मध्यमम्।
अधमे दुःखशोकारिभयानि विविधाः शुचः ॥१०॥

भा०—वर्षेश पूर्ण बली हो तो शुभ फल पूर्ण, मध्य बली हो तो मध्यम फल देता है। यदि हीन बल हो तो दुःख शोक, शत्रु का भय और अनेक प्रकार की विपत्तियाँ होती हैं ॥१०॥

वर्षेश सूर्य का फल—

सूर्येऽब्दपे बलिनि राज्यसुखात्मजार्थलाभः कुलोचितविभुःपरिवारसौख्यम्।
पुष्टं यशो गृहसुखं विविधा प्रतिष्ठा शत्रुर्विनश्यति फलं जनिखेटयुक्त्या ॥११॥
स्यान्मध्यमे फलमिदं निखिलं तु मध्यं स्वल्पं सुखं स्वजनतोऽपि विवादमाहुः।
स्थानच्युतिर्न च सुखं कृशता शरीरे भीतिर्नृपान्मुथशिलो न शुभेन चेत्स्यात्॥१२
सूर्ये बलेन रहितेऽब्दपतौ विदेशयानं धनक्षयशुचोऽरिभयं च तन्द्राः।
लोकापवादभयमुग्ररुजोऽतिदुःखं पित्रादितोऽपि न सुखं सुतमित्रभीतिः॥१३॥

भा०—पूर्ण बली सूर्य वर्षेश हो तो राज्य सुख, पुत्र सुख, कुलाचार पालनता, परिवार सुख, सुयश, गृह सुख, विशेष प्रतिष्ठा होती और शत्रु का नाश होता है। परञ्च जन्मकालिक बल के अनुसार ही वर्ष काल में तारतम्य से फल कहना॥ मध्यम बली सूर्य वर्षेश हो तो उपरोक्त फल मध्यम रूप से, तथा अपने परिजनों में विवाद, स्थान की हानि, शरीर में कृशता, और राजा से भय होता है। परञ्च यदि शुभ ग्रह से इत्थशाल न होता हो तभी अशुभ फल समझना। अर्थात् शुभ ग्रह से इत्थशाल होने पर अशुभ फल नहीं होता है। एवं हीनबली का अशुभ फल स्पष्ट है ॥११-१३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्रर्क्षपे मुथशिलं येनाऽसावब्दपोऽस्य चेत् ।
कम्बूलमिन्दुना जन्म निशि वर्षं तदोत्तमम् ॥१४॥

भा०—रात्रि में जन्म हो और उस समय चन्द्रराशिपति को जिस ग्रह से इत्थशाल हो वह यदि वर्षेश हो और उसे चन्द्रमा से कम्बूल हो तो वर्ष अत्युत्तम होता है ॥१४॥

वि०—"जन्माङ्गपे मुथशिले" ऐसा भी पाठ किसी किसी हस्तलिखित पुस्तक में मिलता है । उसका अर्थ है कि जन्म लग्नेश को जिससे इत्थशाल हो वह वर्षेश होकर यदि चन्द्रमा से इत्थशाल करै तो वर्ष उत्तम होता है । परञ्च विश्वनाथ दैवज्ञ ने "चन्द्रेऽब्दपे मुथशिलं" इस प्रकार के पाठानुसार जो "चन्द्रमा वर्षेश होकर जिससे इत्थशाल करै वह वर्षपति हो और यदि उसे चन्द्रमा से कम्बूल (इत्थशाल) हो" ऐसा अर्थ किया है वह प्रामादिक और असङ्गत प्रतीत होता है, कारण कि—चन्द्रमा से इत्थशाली होकर वर्षपति हो तो फिर चन्द्रमा से कम्बूल कहना व्यर्थ होता है—हेतु यह कि चन्द्रमा से इत्थशाल होना ही कम्बूल योग होता है । इसलिये "चन्द्रर्क्षपे मुथशिले" यही पाठ सङ्गत है ॥१४॥

क्रम से पूर्ण-मध्य-हीन बली वर्षेश चन्द्र का फल—

वीर्यान्विते शशिनि वित्त-कलत्र-पुत्र-मित्रालयस्य विविधं सुखमाहुरार्याः ।
स्रग्गन्धमौक्तिकदुकूलसुखानु-भूतिर्लाभः कुलोचितपदस्य नृपैःसखित्वम्॥१५॥
वर्षाधिपे शशिनि मध्यबले फलानि मध्यान्यमूनि रिपुता सुत मित्रवर्गैः ।
स्थानान्तरे गतिरथो कृशता शरीरे श्लेष्मोद्भवा च यदि पापकृतेसराफः ॥१६॥
नष्टेऽब्दपे शशिनि शीत-कफादिरोगश्चौर्यादिभीः स्वजनविग्रहमप्युशन्ति ।
दूरे गताः सुतकलत्रसुखाप्तयश्च स्यान्मृत्युतुल्यमतिहीनबले शशाङ्के ॥१७॥

भा०—पूर्ण बली चन्द्र वर्षेश हो तो धन, स्त्री, पुत्र, मित्र, गृह आदि के अनेक सुख, वस्त्र आभरणादि सुख, कुलोचित पद का लाभ और राजा से मैत्री होती है । मध्यबली चन्द्र वर्षेश हो तो उक्त सुख मध्यम, यदि पाप ग्रह से ईसराफ योग हो तो पुत्र मित्र से भी शत्रुता, स्थानान्तर गमन, कफ विकार से शरीर में क्षीणता होती है । हीनबली चन्द्र वर्षेश हो तो कफादि रोग, चोर का भय, स्वजन में कलह, स्त्री पुत्र के सुख की प्राप्ति दूर होती है । यदि बलशून्य चन्द्रमा हो तो मरण तुल्य कष्ट की प्राप्ति होती है ॥१५–१७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्ण-मध्य-हीन-बली वर्षेश मंगल का फल—

भौमेऽब्दपे बलिनि कीर्तिजयारिनाशः सेनापतित्वरणनायकता प्रदिष्टा।
लाभः कुलोचितधनस्य नमस्यता च लोकेषु मित्रसुतवित्तकलत्रसौख्यम्॥१८॥
मध्येऽब्दपेऽवनिसुते रुधिरस्रुतिश्च कोपोऽधिको झकटशस्त्रहतिक्षतानि।
स्वामित्वमात्मगणतो बलगौरवं च मध्यं सुखं निखिलमुक्तफलं विचिन्त्यम्॥
हीनेऽब्दपेऽसृजि भयं रिपुतस्कराग्नेर्लोकापवादभयमात्मधियां विनाशः।
कार्यस्य विघ्नमतिरोगभयं विदेशयानं क्षयोऽपनयतो गुरुदृष्ट्यभावे॥२०॥

भा०—पूर्ण बली मंगल वर्षेश हो तो कीर्ति, और जय होती है, शत्रु का नाश, सेनापतित्व, धन लाभ, लोक में आदर पुत्रादि का सुख होता है। मध्य बली मंगल वर्षेश हो तो शोणित का स्रवण (निकलना) अधिक क्रोध, कलह, शस्त्र से आघात होता है। आत्मीय लोगों में प्रभुत्व, और पूर्वोक्त सुख मध्यम होता है। हीनबल मंगल वर्षेश हो और गुरु की दृष्टि नहीं हो तो शत्रु और अग्नि का भय इत्यादि अशुभ फल होते हैं। अर्थात् गुरु की दृष्टि हो तो कम अशुभ होते हैं॥१८-२०॥

पूर्ण-मध्य-हीन बली वर्षेश बुध का फल—

सौम्येऽब्दपे बलवति प्रतिवादलेख्यसच्छास्त्रसद्व्यवहृतौ विजयोऽर्थलाभः।
ज्ञानं कलागणितवैद्यभवं गुरुत्वं राजाश्रयेण नृपता नृपमन्त्रिता वा॥
अब्दाधिपे शशिसुते खलु मध्यवीर्ये स्यान्मध्यमं निखिलमेतदथाध्वयानम्।
वाणिज्यवर्तनमथात्मजमित्रसौख्यं सौम्येत्थशालवशतोपरथा न सम्यक्॥
सौम्येऽब्दपेऽधमबले बलबुद्धिहानिर्धर्मक्षयः परिभवो निजवाक्यदोषात्।
निक्षेपतो विपदतीव मृषैव साक्ष्यं हानिः परव्यवहृतेः सुतवित्तमित्रैः॥

भा०—पूर्णबली बुध वर्षेश हो तो प्रतिवाद, लेख, शास्त्र और व्यवहार में विजय और धनलाभ होता है, राजा के आश्रय से गौरव राजत्व वा मन्त्रित्व भी होता है। मध्य बली बुध वर्षेश हो तो उपरोक्त फल मध्यम, यदि शुभग्रह से इत्थशाल हो तो वाणिज्य आदि से सुख अच्छा होता है, अन्यथा सम्यक् फल नहीं होता है। अधम बली बुध वर्षेश हो तो बुद्धिहानि आदि अशुभ फल स्पष्ट है॥२१-२३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्ण मध्य–हीन बली वर्षेश गुरु का फल—

जीवेऽब्दपे बलयुते परिवारसौख्यं धर्मो गुणग्रहिलताधनकीर्तिपुत्राः ।
विश्वास्यता जगति सन्मति विक्रमाप्तिर्लोभोनिधेर्नृपतिगौरवमप्यरिघ्नम् ॥
अब्दाधिपे सुरगुरौ किल मध्यवीर्ये स्यान्मध्यमं फलमिदं नृपसङ्गमश्च ।
विज्ञानशास्त्रपरताप्यशुभेसराफे दारिद्र्यमर्थविलयश्च कलत्रपीडा ॥२५॥
जीवेऽब्दपेऽधमबले धनधर्मसौख्यहानिस्त्यजन्ति सुतमित्रजनाः सभार्याः ।
लोकापवादभयमाकुलतातिकष्टाद् वृत्तिस्तनौ कफरुजो रिपुभीः कलिश्च ॥

भा०—पूर्णबल गुरु वर्षेश हो तो परिवार सुख आदि शुभ फल, तथा मध्य बली गुरु वर्षेश हो तो उक्तफल मध्यम, परञ्च अशुभ ग्रह से ईसराफ योग हो तो दरिद्रता आदि अशुभ फल होता है। और हीनबली हो तो धनहानि आदि फल स्पष्टार्थ है ॥ २४-२६ ॥

पूर्ण-मध्य हीन बली वर्षेश शुक्र का फल—

शुक्रेऽब्दपे बलिनि नीरुजता विलाससच्छास्त्ररत्नमधुराशनभोगतोषाः ।
क्षेमप्रतापविजयावनिताविलासो हास्यं नृपाश्रयवशेन धनं सुखं च ॥२७॥
अब्दाधिपे भृगुसुते खलु मध्यवीर्ये स्यान्मध्यमं निखिलमेतदथाल्पवृत्तिः ।
सुखं च दुःखमखिलं सुनिबद्धवृत्तिः पापारिवीक्षितयुते विपदोऽर्थनाशः ॥२८॥
शुक्रेऽब्दपेऽधमबले मनसोतितापो लोकोपहासविपदो निजवृत्तिनाशः ।
द्वेषः कलत्रसुतमित्रजनेषु कष्टादन्नाशनं च विफलक्रियता न सौख्यम् ॥२९॥

भा०—पूर्णबली शुक्र वर्षेश हो तो नैरुज्य, विलास आदि शुभ फल, और मध्यबली हो तो मध्यम सुख, और पाप ग्रह से युत दृष्ट हो तो दुःख और धन नाश आदि, तथा हीन बली हो तो मनस्ताप आदि अशुभ फल स्पष्ट है॥२७-२९॥

पूर्ण-मध्य-हीन बली वर्षेश शनि का फल—

मन्देऽब्दपे बलिनि नूतनभूमिवेश्मक्षेत्राप्तिरर्थनिचयो यवनावनीशात् ।
आरामनिर्मितिजलाशयसौख्यमङ्गपुष्टिः कुलोचितपदाप्तिगुणाग्रणित्वम् ॥
अब्दाधिपे रविसुते खलु मध्यवीर्ये स्यान्मध्यमं निखिलमन्नभुजिस्तु कष्टात् ।
दासोष्ट्रमाहिषकुलान्यरितस्तु लाभः पापं फलं भवति पापयुगीक्षणेन ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्दे बलेन रहिते ऽब्दपतौ क्रियाणां बन्ध्यत्वमर्थविलयो विपदोरिभीतिः ।
स्त्रीपुत्रमित्रजनवैरकदन्नभुक्तं सौम्येत्थशालयुजि सौख्यमपीषदाहुः ॥

भा०—पूर्ण बली शनि वर्षेश हो तो नूतन भूमि लाभ आदि शुभ फल, तथा मध्य बली हो तो मध्य सुख और पाप से युत दृष्ट हो तो पाप फल होता है। हीन बली शनि वर्षेश हो तो क्रिया की व्यर्थता, धननाश आदि अशुभ फल स्पष्ट है, किन्तु शुभ ग्रह से इत्थशाल हो तो ईषद् (किञ्चित्) सुख भी होता है ॥ ३०-३२ ॥

विशेष—

वर्षेश्वरो भवति यः दशाधिपोऽब्दे ज्ञेयोऽखिलोऽब्दजनुषोर्बलमस्य चिन्त्यम् ।
वीर्यान्वितेऽत्र निखिलं शुभमब्दमाहुर्हीने त्वनिष्टफलता समता समत्वे ॥३३॥

भा०—जो वर्षेश होता है उसे सम्पूर्ण वर्ष का दशाधिप समझना, उसका जन्मकालिक और वर्षकालिक बल विचार करना, यदि वह पूर्ण बली हो तो सम्पूर्ण वर्ष शुभ, हीन बली हो तो सम्पूर्ण वर्ष अनिष्ट फल, तथा मध्य बली हो तो वर्ष फल मध्यम समझना ॥ ३३ ॥

येनेत्थशालोऽब्दपतेर्ग्रहोऽसौ स्वीयस्वभावात्सुफलं ददाति ।
शुभेसराफे शुभमस्ति किञ्चिदनिष्टमेवाशुभमूसरीफे ॥३४॥

भा०—जिस ग्रह को वर्षेश से इत्थशाल होता हो वह अपने स्वभावानुसार फल देता है। यदि शुभ ग्रह से ईसराफ योग हो तो अल्प सुख, और पापग्रह से ईसराफ योग हो तो अनिष्ट फल होता है ॥ ३४ ॥

हद्दे यादृशि यः खेट आधत्तेऽत्र च यो महः ।
जन्मन्यब्दे च तादृक्चेत्तदात्मफलदस्त्वसौ ॥३५॥

भा०—जो वर्षेश या ग्रह जन्मकाल जिस प्रकार के हद्दांश में हो और जिस प्रकार के ग्रह से तेज लेता हो (अर्थात् इत्थशाल करता हो) वर्षकाल में भी यदि उसी प्रकार के हद्दांश में हो और उसी प्रकार के ग्रह से तेज लेता हो तो वह ग्रह अपने फल को सम्यक् (पूर्णरूप से) देता है। अन्यथा मिश्रित फल देता है ॥ ३५ ॥

यो जन्मनि फलं दातुं विभुर्मूसरिफोऽस्य चेत् ।
अब्दलग्नाब्दपभवस्तस्मिन्नब्दे न तत्फलम् ॥३६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यत्यासे फलमादेश्यमित्थशाले विशेषतः ।
नोभयं चेत्तदाप्यस्ति जन्माश्रयमिति स्फुटम् ॥३७॥

भा०—जो ग्रह जन्म समय में फल देने में समर्थ भी हैं, परञ्च यदि वर्ष लग्नेश और वर्षेश से ईसराफ योग हो जाय तो उस वर्ष में उस ग्रह का फल नहीं होता है। इससे विपरीत में फल होता है। यदि इत्थशाल योग हो तो विशेष रूप से फल होता है। अगर दोनों (इत्थशाल, ईसराफ) में एक भी न हो तो जन्मकालिक शुभाशुभत्व के अनुसार शुभाशुभ फल दे सकता है ॥३६-३७॥

उदाहरण—

पुत्राधिपो जन्मनि पुत्रभावं पश्यन् सुतं दातुमसौ समर्थः ।
वर्षेशपुत्राधिपमूसरीफे पुत्रस्य नाशो भवतीति वर्षे ॥३८॥

भा०—जैसे पुत्राधीश जन्मकाल में पुत्रभाव को देखता हुआ पुत्र देने में समर्थ हो, और वर्षकाल में पुत्राधिप और वर्षाधिप में ईसराफ योग हो जाय तो उस वर्ष में पुत्र देने में असमर्थ हो जाता है ॥ ३८ ॥

अब्देश्वरो गुरुर्मित्रहद्दे मित्रदृशा शशी ।
महोऽत्राधादमूदृक्स वर्षेऽब्दस्तेन शोभनः ॥३९॥

भा०—तथा वर्षेश गुरु यदि जन्मकाल में मित्र के हद्दा में हो और चन्द्रमा से मित्र दृष्ट्या तेज लेता हो, और वर्षकाल में इसी प्रकार का हो तो वह वर्ष अत्यन्त शुभ फलप्रद होता है ॥ ३९ ॥

एवमुन्नेयमन्यच्च शुभाशुभफलं बुधैः ।
बलाबलविवेकेन योगत्रयविमर्शतः ॥४०॥

भा०—इस प्रकार तीनों योग (इत्थशाल, कम्बूल और ईसराफ) के विचार से बलाबल के अनुसार अन्य फल भी समझना चाहिये ॥४०॥

इति गूढार्थप्रकाशिकासहित–वर्षतन्त्रे वर्षेशफलाध्यायः ॥१॥

अथ मुथहाफलाध्यायः ॥ २ ॥

मुथहा का फल निरूपण—

स्वामिसौम्येक्षणात्सौख्यं क्षुतदृष्ट्या भयं रुजः ।
ददाति मुथहा तस्मात्फलमस्या निरूप्यते ॥१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्षलग्नात्सुखास्तान्त्यरिपुरन्ध्रेष्वशोभना ।
पुण्यकर्मायगा स्वाम्यं दत्तेऽन्यत्रोद्यमाद्धनम् ॥२॥

भा०— मुथहा अपने-स्वामी और शुभग्रह की दृष्टि से सुख देती है, और पापक्षुतदृष्टि से भय और रोग देती है। वर्ष लग्न से ४।७।१२।६।८ इन स्थानों में स्थित मुथहा अशुभप्रदा और ९।१०।११ स्थानों में राज्य सुख देतो है तथा शेष स्थानों में उद्यम से धन दिलाती है, अर्थात् मध्यम फल देती है ॥१-२॥

मुथहा के लग्नादि द्वादश भावफल—

शत्रुक्षयं मानसुताश्वलाभं प्रतापवृद्धिं नृपतेः प्रसादम् ।
शरीरपुष्टिं विविधोद्यमांश्च ददाति वित्तं मुथहा तनुस्था ॥३॥

भा०—मुथहा लग्न में हो तो शत्रु का नाश, मान, पुत्र सुख और सवारी का लाभ, राजा का अनुग्रह, शरीर में पुष्टता और अनेक प्रकार के उद्योग से लाभ हो ॥ ३ ॥

उत्साहतोर्थागमनं यशश्च स्वबन्धुसन्माननृपाश्रयाश्च ।
मिष्टान्नभोगो बलपुष्टिसौख्यं स्यादर्थभावे मुथहा यदाब्दे ॥४॥

भा०—द्वितीय भाव में मुन्था हो तो उत्साह से धन और यश का लाभ, बन्धुजनों में आदर, राजा के आश्रय, मधुर भोजन, बल, पुष्टि तथा सर्व सुख प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

पराक्रमाद्वित्तयशःसुखानि सौन्दर्यसौख्यं द्विजदेवपूजा ।
सर्वोपकारस्तनुपुष्टिकीर्तिर्नृपाश्रयश्चेन्मुथहा तृतीया ॥५॥

भा०—मुन्था तृतीय भाव में हो तो पराक्रम से धन, यश सुख, सुन्दरता, ब्राह्मण और देवता में श्रद्धा, शरीर की पुष्टता, और राजा से आश्रय का लाभ होता है ॥५॥

शरीरपीडा रिपुभीः स्ववर्ग्यवैरं मनस्तापनिरुद्यमत्वे ।
स्यान्मुथहायां सुखभावगायां जनापवादामयवृद्धिदुःखम् ॥६॥

भा०—चतुर्थ भाव में मुन्था हो तो शरीर में पीड़ा, शत्रु का भय, अपने कुटुम्बों में वैर, सन्ताप, आलस्य, अपवाद, रोग की वृद्धि और कष्ट होता है ॥६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदीन्थिहा पञ्चमगाब्दवेशे सद्बुद्धिसौख्यात्मजवित्तलाभः ।
प्रतापवृद्धिर्विविधा विलासा देवद्विजार्चा नृपतेः प्रसादः ॥७॥

भा०—मुन्था पञ्चम भाव में हो तो सुबुद्धि, सुख, पुत्र और धन का लाभ, प्रताप की वृद्धि, देव ब्राह्मणों में भक्ति और राजा का अनुग्रह हो ॥७॥

कृशत्वमङ्गेषु रिपूदयश्च भयं रुजस्तस्करतो नृपाद्वा ।
कार्यार्थनाशो मुथहारिगा चेद्दुर्बुद्धिवृद्धिः स्वकृतोऽनुतापः ॥८॥

भा०—षष्ठभाव में मुन्था हो तो देह में दुर्बलता, शत्रु की वृद्धि, चोर और राजा का भय, कार्य और धन का नाश, कुबुद्धि और अपने कुकर्मों से पश्चात्ताप करना पड़े ॥८॥

कलत्र-बन्धु-व्यसनारिभीतिरुत्साहभङ्गो धनधर्मनाशः ।
द्यूनोपगा चेन्मुथहा तनोः स्याद्रुजा मनोमोहविरुद्धचेष्टा ॥९॥

भा०—सप्तम भाव में मुथहा हो तो स्त्री और बन्धुओं में पीड़ा, शत्रु का भय, उत्साह का भङ्ग, धन, धर्म का नाश, शरीर में रोग, मन में उद्वेग और विरुद्ध कार्य की चेष्टा होती है ॥९॥

भयं रिपोस्तस्करतो विनाशो धर्मार्थयोर्दुर्व्यसनामयश्च ।
मृत्युस्थिता चेन्मुथहा नराणां बलक्षयः स्याद्गमनं च दूरे ॥१०॥

भा०—अष्टम भाव में मुथहा हो तो शत्रु का भय, धर्म और धन का नाश, दुर्व्यसन, रोग, बल का ह्रास और दूर गमन करना पड़ता है ॥१०॥

स्वामित्वमर्थोपगमो नृपेभ्यो धर्मोत्सवः पुत्र-कलत्रसौख्यम् ।
देवद्विजार्चा परमं यशश्च भाग्योदयो भाग्यगतेन्थिहायाम् ॥११॥

भा०—नवम भाव में मुन्था हो तो लोग में प्रभुत्व, राजा से धन लाभ, धर्मोत्सव, स्त्री पुत्र का सुख, देव ब्राह्मण में भक्ति, उत्तम सुयश, और भाग्योदय होता है ॥११॥

नृपप्रसादं स्वजनोपकारं सत्कर्मसिद्धिं द्विजदेवभक्तिम् ।
यशोऽभिवृद्धिं विविधार्थलाभं दत्तेऽम्बरस्था मुथहा पदाप्तिम् ॥१२॥

भा०—दशम भाव में मुन्था हो तो राजा का अनुग्रह, साधुओं का उपकार, सब कार्य की सिद्धि, देव-ब्राह्मणों में प्रेम, यश की वृद्धि, अनेक प्रकार से लाभ और अधिकार प्राप्त होता है ॥१२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदीन्थिहा लाभगता विलास-सौभाग्य-नैरुज्य-मनःप्रसादाः ।
भवन्ति राजाश्रयतो धनानि सन्मित्रपुत्राभिमताप्तयश्च ॥१३॥

भा०—मुन्थहा एकादश भाव में हो तो सुख, सौभाग्य, आरोग्य, मन की प्रसन्नता, राजा के आश्रय से धन लाभ, सुमित्र और पुत्र की प्राप्ति होती है ॥१३॥

व्ययोऽधिको दुष्टजनैश्च सङ्गो रुजा तनौ विक्रमतोऽप्यसिद्धिः ।
धर्मार्थहानिर्मुथहा व्ययस्था यदा तदा स्याज्जनतोपि वैरम् ॥१४॥

भा०—द्वादश भाव में मुन्था हो तो अधिक खर्चा, दुर्जनों का सङ्ग, देह में रोग, उद्योग में निष्फलता, धर्म की हानि और अपने परिजनों में वैर होता है ॥१४॥

फलों में विशेषता—

क्रूरैर्दृष्टः क्षुतदृशा यो भावो मुथहाऽत्र चेत् ।
शुभं तद्भावजं नश्येदशुभ चापि वर्धते ॥१५॥

भा०—जो भाव पापग्रह से क्षुतदृष्टि द्वारा देखा जाता हो उस भाव में यदि मुथहा हो तो उसका शुभ फल नष्ट हो जाता है। और अशुभ फल की वृद्धि होती है ॥१५॥

शुभस्वामियुक्तेक्षिता वीर्ययुक्सेन्थिहा स्वामिसौम्येत्थशालं प्रपन्ना ।
शुभं भावजं पोषयेन्नाशुभं साऽन्यथात्वेऽन्यथाभाव ऊह्यो विमृश्य ॥१६॥

भा०—शुभ स्वामी से युत दृष्ट बलवती मुथहा शुभ भाव फल को पुष्ट करती और अशुभ फल को नहीं बढ़ाती है। इससे अन्यथा (पाप से युत दृष्ट हो तो) विपरीत फल अर्थात् अशुभ की वृद्धि शुभ की हानि समझना ॥१६॥

जनुर्लग्नातोस्तान्त्यषण्मृत्युबन्धु-स्थिताब्दे हता क्रूरखेटैस्तु सा चेत् ।
विनश्येत्स यत्रेन्थिहा भाव एवं शुभस्वामिदृष्टो न नाशः शुभश्च ॥१७॥

भा०—जन्म लग्न से ७,१२,६,८,४ इन स्थान में हो और वर्ष में पाप ग्रह से युक्त हो तो जिस भाव में मुन्था हो उस भाव का फल नाश हो जाता है। यदि शुभ स्वामी से दृष्ट हो तो उस भाव फल का नाश नहीं होता है, प्रत्युत शुभ फल होता है ॥ १७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदोभयत्राऽपि हतो भावो नश्येत्स सर्वथा ।
उभयत्र शुभत्वे तु भावोऽसौ वर्धतेतराम् ॥१८॥

भा०--मुथहा यदि जन्म और वर्ष दोनों समय अनिष्ट स्थान में पाप युत हो तो उस भाव का नाश होता है। यदि दोनों समय शुभ स्थान में शुभ दृष्ट हो तो उस भाव की वृद्धि होती है ॥ १८ ॥

वर्षेप्यनिष्टगेहस्था यद्भावे जनुषि स्थिता ।
क्रूरोपघातात्तं भावं नाशयेच्छुभयुक् शुभा ॥१९॥

भा०--अगर वर्षकाल में अनिष्ट स्थान में पाप ग्रह से दृष्ट युत मुन्था हो तो जन्म काल में वह राशि जिस भाव में हो उस भाव का नाश होता है। शुभ युक्त हो तो शुभ होता है ॥ १९ ॥

जनुर्लग्नतस्तुर्यगा सौम्ययुक्ताब्दवेशे पितृस्वस्य लाभं विधत्ते ।
नृपाद्भीतिदा पापयुक्तातिकष्टाष्टमादावपीत्थं विमर्शो विधेयः ॥२०॥

भा०--उदाहरण जैसे वर्ष में जन्मलग्न से चतुर्थ में मुन्था हो और शुभ ग्रह से युक्त हो तो पिता के धन का लाभ अर्थात्-चतुर्थ भाव सम्बन्धी गृह-भूमि आदि का भी लाभ होता है। और पापयुक्त हो तो राजभय, और कष्ट देने वाली होती है। इसी प्रकार अष्टमादि स्थान में भी विचार करना ॥२०॥

यस्मिन्भावे स्वामिसौम्येक्षिता चेद्भावो जन्मन्येष यस्तस्य वृद्धिः ।
एवं पापैर्नाश उक्तश्च तस्येत्यूह्यं वीर्याद्वर्षपः सौख्यमेव ॥२१॥

भा०--वर्ष में जिस राशि में स्थित मुन्था स्वामी शुभ ग्रह से दृष्ट हो जन्म काल में वह राशि जो भाव हो उसकी वृद्धि होती है। और पाप से दृष्ट हो तो उस भाव का नाश होता है। इस प्रकार और भी फल तारतम्य से समझना। यदि वर्षेश बली हो तो सुख होता है ॥२१॥

सूर्यादिग्रहों की राशि में सूर्यादि ग्रहों से युक्त दृष्ट मुन्था का फल—

यदोन्थिहा सूर्यगृहे युता वा सूर्येण राज्यं नृपसङ्गमं च ।
दत्ते गुणानां परमामवाप्तिं स्थानान्तरस्येतिफलं दृशोऽपि ॥२२॥

भा०--मुन्था यदि सूर्य की राशि में सूर्य से युत वा दृष्ट हो तो राज्य लाभ, राजा का सङ्ग, उत्तमगुणों का लाभ होता है। सूर्य की दृष्टि से भी यही फल होता है ॥ २२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्रेण युक्तेन्दुगृहेथ दृष्टेन्दुनापि वा धर्मयशोभिवृद्धिम् ।
नैरुज्यसन्तोषमतिप्रवृत्तिं ददाति पापेक्षणतोऽतिदुःखम् ॥२३॥

भा०—चन्द्र की राशि में चन्द्रमा से दृष्ट हो तो धर्म आदि शुभ फल देती है। परञ्च पाप दृष्टि से दुःख आदि अशुभ फल देती है॥ २३ ॥

कुजेन युक्ता कुजभे कुजेन दृष्टा च पित्तोष्णरुजं करोति ।
शस्त्राभिघातं रुधिरप्रकोपं सौरीक्षिता सौरिगृहे विशेषात् ॥२४॥

भा०—मंगल की राशि में मङ्गल से युत दृष्ट हो तो पित्त रोग आदि अशुभ फल देती है। यदि शनि की राशि में शनि से युत दृष्ट हो तो विशेष कर अशुभ फल देती है॥ २४ ॥

बुधेन शुक्रेण युतेक्षिता वा तद्भेपि वा स्त्रीमतिलाभसौख्यम् ।
धर्मं यशश्चाप्यतुलं विधत्ते कष्टं च पापेक्षणयोगतः स्यात् ॥२५॥

भा०—बुध वा शुक्र की राशि में बुध शुक्र से युत दृष्ट हो तो स्त्री लाभादि शुभ फल स्पष्टार्थ है। परञ्च पापग्रह के योग या दृष्टि से कष्ट होता है ॥२५॥

युतेक्षिता वा गुरुणा गुरोर्भे यदीन्थिहा पुत्रकलत्रसौख्यम् ।
ददाति हेमाम्बररत्नभोगं शुभेत्थशालादिह राज्यलाभः ॥२६॥

भा०—गुरु की राशि में गुरु से युत दृष्ट हो तो पुत्र स्त्री का सुख सुवर्णादि द्रव्य वस्त्र का लाभ; तथा शुभग्रह से इत्थशाल हो तो राज्यलाभ होता है ॥२६॥

शनेर्गृहे तेन युतेक्षिता वा यदीन्थिहा वातरुजं विधत्ते ।
मानक्षयं वह्निभयं धनस्य हानिं च जीवेक्षणतः शुभाप्तिम् ॥२७॥

भा०—शनि की राशि में शनि से दृष्ट युत हो तो वातरोग आदि अशुभ फल देती है। यदि बृहस्पति की दृष्टि हो तो शुभ फल देती है ॥२७॥

तमोमुखे चेन्मुथहा धनप्राप्तिं यशः सुखं धर्मसमुन्नतिं च ।
सितेज्ययोगेक्षणतः पदाप्तिं सुवर्णरत्नाम्बरलब्धयश्च ॥२८॥

भा०—राहु के मुख (भोग्य) भाग में मुन्था हो तथा गुरु शुक्र की दृष्टि हो तो यश, धर्म की उन्नति, अधिकार और वस्त्रादि की प्राप्ति होती है ॥२८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तत्पृष्ठभागे न शुभप्रदा स्यात्तत्पुच्छभागाद्रिपुभीतिकष्टम् ।
पापेक्षणादर्थसुखस्य हानिश्चेज्जन्मनोत्थं गृहवित्तनाशः ॥२९॥

भा०—राहु के पृष्ठभाग में या पुच्छभाग में अशुभ फल देती है। यदि पाप से युक्त दृष्ट हो तो सुख की हानि और गृह धन का भी नाश होता है ॥२९॥

ये जन्मकाले बलिनोऽब्दकाले चेद्दुर्बलास्तैरशुभं समान्ते ।
विपर्यये पूर्वमनिष्टमुक्तं तुल्यं फलं स्यादुभयत्र साम्ये ॥३०॥

भा०—जो ग्रह जन्मकाल में बली और वर्ष में निर्बल होता है, वह वर्षारम्भ में शुभ और वर्ष के अन्त में अशुभ देता है। यदि जन्म काल ही में निर्बल और वर्ष में बली हो तो वर्ष के आरम्भ में ही अशुभ और अन्त में शुभ देता है। यदि दोनों समय एक रूप हो तो वर्ष भर तुल्य फल देता है ॥३०॥

षष्ठेऽष्टमेऽन्त्ये भुवि वेन्थिहेशोऽस्तगोऽथ वक्रोऽशुभदृष्टयुक्तः ।
क्रूराच्चतुर्थास्तगतश्च भव्यो न स्याद्रुजं यच्छति वित्तनाशम् ॥३१॥

भा०—मुथहा का स्वामी ६।८।१२।४ स्थान में हो, अस्त या वक्र या पाप दृष्ट, अथवा पापग्रह से ४।७ स्थान में हो तो शुभफल नहीं देकर धन-नाशकारक होता है ॥३१॥

यद्यष्टमेशेन युतोऽथ दृष्टः क्षुताख्यदृष्ट्या न शुभस्तदापि ।
योगद्वये स्यान्निधनं यदैकयोगस्तदा मृत्युसमत्वमाहुः ॥३२॥

भा०—मुथहेश यदि अष्टमेश से युत हो और पापग्रह से क्षुत दृष्टि से देखा जाता हो तो अशुभ फल होता है। ये दोनों योग हो तो मरण और एक हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है ॥३२॥

मुथहा तत्पतिर्वापि जन्मनीक्षितयुक्शुभैः ।
वर्षारम्भे शुभं दत्तेऽब्दे चेदन्तेऽन्यथाऽशुभम् ॥३३॥

भा०—मुथहा वा उसका स्वामी जन्म काल में शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो वर्षारम्भ में शुभ फल देता है। यदि वर्ष में शुभ युत दृष्ट हो तो वर्षान्त में शुभ फल देता है। अन्यथा अशुभ समझना ॥३३॥

इति गूढार्थप्रकाशिकासहितनीलकण्ठ्यां मुन्थानिरूपणम् ॥२॥

—०—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथारिष्टविचाराध्यायः ॥३॥

लग्नेशेऽष्टमगेऽष्टेशे तनुस्थे वा कुजेक्षिते।
ज्ञजीवयोरस्तगयोः शस्त्रघातो विपन्मृतिः ॥ १ ॥

भा०—लग्नेश अष्टम स्थान में, वा अष्टमेश लग्न में हों और मङ्गल से दृष्ट हो, अथवा बुध, गुरु दोनों सूर्यसान्निध्य से अस्त हों तो शस्त्राघात, विपत्ति और मृत्यु होती है ॥१॥

अब्दलग्नेशरन्ध्रेशौ व्ययाष्टहिबुकोपगौ।
मुथहासंयुतौ मृत्युप्रदौ तद्धातुकोपतः ॥ २ ॥

भा०—वर्ष लग्नेश और अष्टमेश ये १२,८,४ वें स्थान में मुथहा संयुत हो तो उस ग्रह की धातु, (कफ, पित्त या वात) के कोप से मरण होता है॥२॥

जन्मलग्नाधिपोऽवीर्यो मृतीशो वाऽस्तगो यदा।
सूर्यदृष्टो मृतिं दत्ते कुष्ठं कण्डूं तथा तथाऽपदः ॥ ३ ॥

भा०—जन्मलग्नेश निर्बल हो, अष्टमेश अस्तगत हो और सूर्य से दृष्ट हो तो, मरण, कोढ़, खुजली तथा आपत्ति होती है ॥३॥

अस्तगौ मुथहालग्ननाथौ मन्देक्षितौ यदा।
सर्वनाशो मृतिः कष्टमाधि-व्याधिभयं रुजः ॥ ४ ॥

भा०—मुथहेश और लग्नेश अस्तङ्गत हो और शनि से दृष्ट हो तो सर्वनाश, कष्ट व्यथा और रोगभय होता है ॥४॥

क्रूरमूसरिफोऽब्देशो जन्मेशः क्रूरितः शुभैः।
कम्बूलेऽपि विपन्मृत्युरित्थमन्याधिकारितः ॥ ५ ॥

भा०—वर्षेश को पाप ग्रह से ईसराफ हो जन्म लग्नेश पाप ग्रह हो तो शुभ ग्रह से कम्बूल योग होने पर भी विपत्ति और मृत्यु होती हैं, इसी प्रकार अन्य पञ्चवर्षाधिकारियों से भी समझना ॥५॥

क्रूरा वीर्याधिकाः सौम्या निर्बला रिपुरन्ध्रगाः।
तदाऽऽधि-व्याधिभीतिः स्यात्कलिर्हानिस्तथा विपत् ॥ ६ ॥

भा०—पाप ग्रह बली, शुभग्रह निर्बल हो और ६।८ स्थान में हो तो आधि-व्याधि भय, कलह, हानि तथा विपत्ति होती है ॥६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नीचे शुक्रो गुरुः शत्रुभागे सौख्यलवोऽपि न।
लग्नेशेऽष्टमगेऽष्टेशे तनौ वा मृतिमादिशेत् ॥ ७ ॥

भा०—शुक्र नीच में, गुरु शत्रु के नवांश में हो, तो लेशमात्र भी सुख नहीं होता है। वा लग्नेश अष्टम में अष्टमेश लग्न में हो तो मरण होता है ॥७॥

निर्बलौ धर्मवित्तेशौ दुष्टखेटास्तनौ स्थिताः।
लक्ष्मीश्चिरार्जिता नश्येद्यदि शक्रोऽपि रक्षिता ॥ ८ ॥

भा०—नवमेश और द्वितीयेश निर्बल हो, लग्न में पाप ग्रह हो तो इन्द्र से रक्षित होने पर भी चिरोपार्जित सम्पत्ति नष्ट हो जाती है ॥८॥

नीचे चन्द्रेऽस्तगाः सौम्या वियोगः स्वजनैः सह।
शरीरपीडा मृत्युर्वा साधिव्याधिभयं द्रुतम् ॥ ९ ॥

भा०—नीच में चन्द्रमा हो, शुभ ग्रह अस्त हो तो स्वजन से वियोग, शरीरपीड़ा, मरण, रोग तथा व्यथा का भय होता है ॥९॥

अब्दलग्नं जन्मलग्नराशिभ्यामष्टमं यदा।
कष्टं महाव्याधिभयं मृत्युः पापयुतेक्षणात् ॥१०॥

भा०—जन्म लग्न वा जन्म राशि से अष्टमराशि यदि वर्ष लग्न हो तो कष्ट और महारोग होता है। यदि पापग्रह से युत दृष्ट हो तो मरण होता है ॥१०॥

जन्मन्यष्टमगः पापो वर्षलग्ने रुगाधिदः।
चन्द्राब्दलग्नपौ नष्टबलौ चेत्स्यात्तदा मृतिः ॥११॥

भा०—जन्मलग्न से अष्टमगत पाप ग्रह—यदि वर्ष लग्न में हो तो रोग और आधि (मानसी व्यथा) होती है। यदि चन्द्रमा और वर्ष लग्नेश निर्बल हो तो मरण होता है ॥११॥

जन्माब्दलग्नपौ पापयुक्तौ पतितभस्थितौ।
रोगाऽऽधिदौ मृत्युकरावस्तगौ नेक्षितौ शुभैः ॥१२॥

भा०—जन्म लग्नेश, वर्ष लग्नेश दोनों पापग्रह से युक्त होकर अशुभ स्थान (६।८।१२) में हो तो रोग व्यथादायक होते हैं। यदि अस्त हों तो मरणप्रद होते हैं, यदि शुभग्रह से दृष्ट न हो ॥१२॥

व्ययाम्बुनिधनारिस्था जन्मेशाब्दपमुन्थहाः।
एकर्क्षगास्तदा मृत्युः पापक्षुतदृशा ध्रुवम् ॥१३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—जन्म लग्नेश, वर्षेश, मुन्थहा ये एकराशिगत होकर १२।४।८।६ स्थान में हों तो मृत्युदायक होते हैं। यदि पापग्रह से क्षुत दृष्टि से दृष्ट हो तो निश्चय मरणप्रद होते हैं ॥१३॥

चन्द्रो व्यये शनियुतः शुभः षष्ठोऽर्थनाशकृत् ।
चित्तवैकल्यमशुभेसराफान्न शुभेक्षणात् ॥१४॥

भा०—शनि युक्त चन्द्रमा यदि द्वादश भाव में हो और शुभग्रह षष्ठ भाव में हो तो धननाशकारक होते हैं। पापग्रह से ईसराफ हो तो चित्त की विकलता होती है, यदि शुभ की दृष्टि हो तो नहीं ॥१४॥

चन्द्रोऽर्कमण्डलगतो रिपुरिःफाष्टबन्धुगः ।
त्रिदोषतस्तस्य रुजा विबुधेज्यदृशा शुभम् ॥१५॥

भा०—चन्द्रमा यदि सूर्य सान्निध्य से अस्त होकर ६,१२,८,४ स्थान में हो तो त्रिदोष (कफ पित्त वात) से रोग होता है। परञ्च गुरु की दृष्टि हो तो रोग नहीं होता है ॥१५॥

हद्दाहायनलग्नेशौ सप्ताष्टान्त्ये खलान्वितौ ।
स्वदशायां निधनदौ शुभदृष्ट्या शुभं वदेत् ॥१६॥

भा०—वर्ष लग्न के हद्देश और लग्नस्वामी दोनों पापयुक्त होकर ७,८,१२ में हो तो अपनी दशा में मरणप्रद होते हैं। शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो शुभ कहना ॥१६॥

अब्दलग्नाद्दज्वनृजू व्ययार्थस्थौ रुजा तदा ।
एवं वर्षाब्दलग्नेशजन्मेशैरपि बन्धनम् ॥१७॥

भा०—वर्ष लग्न से द्वादश में मार्गी ग्रह, और द्वितीय में वक्री ग्रह हो तो रोग होता है। इसी प्रकार वर्षेश, वर्षलग्नेश जन्मलग्नेश से १२ और २ में ग्रह हो तो बन्धन होता है ॥१७॥

नीचे त्रिराशिपे पापदृष्टे कार्यं विनश्यति ।
इन्थिहेशेऽब्दपे वारिभेऽस्तं याते रुजा विपत् ॥१८॥

भा०—त्रिराशिपति नीच में हो पाप दृष्ट हो तो कार्य नष्ट होता है। मुथहेश और वर्षेश शत्रुराशि में या अस्तङ्गत हो तो रोग और विपत्ति होती है ॥१८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्रो रिःफषडष्टभूद्युनगतो दृष्टोऽशुभैर्नो शुभैः
सोऽरिष्टं विदधाति मृत्युमथवा भौमेक्षणादग्निभीः ।
शस्त्राद्वा शनि राहु-केतुभिररेर्भीतिं रुजं वायुजां
दारिद्र्यं रविणा, शुभं शुभदृशेऽज्यालोकनादादिशेत् ॥१९॥

भा०—चन्द्रमा १२,६,८,४,७, स्थान में पापग्रह से दृष्ट और शुभ ग्रह से अदृष्ट हो तो अरिष्ट अथवा मृत्युकारक होता है। यदि उपरोक्त स्थानस्थ चन्द्रमा मंगल से दृष्ट हो तो अग्नि वा शस्त्र भय, शनि, राहु, केतु इनसे दृष्ट हो तो शत्रु भय, वायु विकार से रोग, तथा रवि से दृष्ट हो तो दारिद्र्य होता है। यदि बृहस्पति शुभदृष्टि से देखें तो शुभफल कहना चाहिये ॥१९॥

क्रूरान्वितेक्षितयुता शनिनेन्थिहाऽऽधि-
व्याधिप्रदा जनुषि रिःफसुखारिरन्ध्रे ।
द्यूने च वर्षतनुनैधनगा मृतिं सा
दत्ते खलेक्षितयुतेत्यपि चिन्त्यमार्यैः ॥२०॥

भा०—मुथहा यदि दो पाप ग्रहों से युक्त हो, वा केवल शनि से युत दृष्ट हो तो व्यथा और रोगकारिणी होती है। जन्म राशि से १२,४,६,८ वा ७ में मुथहा हो और वर्ष लग्न से अष्टम स्थान में हो और पाप से दृष्ट युत हो तो मृत्यु होती है ॥२०॥

इति गूढार्थप्रकाशिकासहित-नीलकण्ठ्यां वर्षारिष्टविचाराध्यायः ॥ ३ ॥

—०—

अथ अरिष्टभङ्गाऽध्यायः ॥ ४ ॥

लग्नाधिपो बलयुतः शुभेक्षितयुतोऽपि वा ।
केन्द्रत्रिकोणगोऽरिष्टं नाशयेत्सुखवित्तदः ॥ १ ॥

भा०—लग्नेश बलवान् होकर शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो अथवा लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो तो सब अरिष्टों का नाशकारक और सुख धनदायक होता है ॥ १ ॥

गुरुः केन्द्रे त्रिकोणे वा पापादृष्टः शुभेक्षितः ।
लग्नचन्द्रेन्थिहारिष्टविनाशार्थसुखं दिशेत् ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—गुरु यदि केन्द्रत्रिकोण में पापग्रह से अदृष्ट और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो लग्न चन्द्र-मुथहा सम्बन्धी अरिष्टों का नाश करके धन सुख को देता है ॥ २ ॥

सुखं स्वामियुतं सद्भिर्दृष्टं सौख्ययशोऽर्थदम् ।
गुरुर्लग्ने तृतीयेऽर्थे जन्मेट् सौख्यार्थदः सुखे ॥ ३ ॥

भा०—सुख भाव यदि स्वामी शुभग्रह से युत दृष्ट हो तो सुख, यश अर्थ-दायक होता है। यदि गुरु जन्मलग्नेश होकर लग्न २, ३, या चतुर्थ में हो तो सुखप्रद होता है ॥ ३ ॥

लग्ने द्युनेशस्तनुगः सुरेज्यः क्रूरैरदृष्टः शुभमित्रदृष्टः ।
रिष्टं निहन्त्यर्थयशः सुखाप्तिं दिशेत्स्वपाके नृपतिप्रसादम् ॥ ४ ॥

भा०—सप्तमेश और गुरु लग्न में हो पाप से अदृष्ट और शुभ मित्र से दृष्ट हो तो अपनी दशा में अरिष्ट को नाश कर सुख की प्राप्ति और राजा की कृपा कराता है ॥ ४ ॥

बलान्वितौ धर्मधनाधिनाथौ क्रूरैरदृष्टौ तनुगौ यदाऽऽस्ताम् ।
राज्यं गजाश्वाम्बररत्नपूर्णं रिष्टस्य नाशोऽप्यतुलं यशश्च ॥ ५ ॥

भा०—बलवान् नवमेश और धनेश पापग्रह से अदृष्ट लग्न में हो तो राज्य आदि सुख देता है। अरिष्ट का नाश, तथा अतुल सुयश को देता है ॥५॥

त्रिषष्ठलाभोपगतैरसौम्यैः केन्द्रत्रिकोणोपगतैश्च सौम्यैः ।
रत्नाम्बरस्वर्णयशःसुखाप्तिर्नाशोऽप्यरिष्टस्य तनोश्च पुष्टिः ॥ ६ ॥

भा०—३, ६, ११ भावों में पाप और त्रिकोण केन्द्र में शुभग्रह हों रत्न वस्त्रादि का लाभ, अरिष्ट का नाश, और शरीर की पुष्टि आदि सुख होता है ॥ ६ ॥

यदा सवीर्यो मुथहाधिनाथो लग्नाधिपो जन्मविलग्नपो वा ।
केन्द्रत्रिकोणायधनस्थितास्ते सुखार्थहेमाम्बरलाभदाः स्युः ॥ ७ ॥

भा०—यदि मुथहेश बली हो वा वर्षलग्नेश जन्मकालिक लग्नेश बली होकर केन्द्र त्रिकोण में हो तो सुख, सुवर्ण वस्त्र का लाभ होता है ॥ ७ ॥

तुङ्गे शनिर्वा भृगुजो गुरुर्वा शुभेत्थशालाद्यवनाद्धनाप्तिम् ।
बली कुजो वित्तगतो यशोर्थतेजांस्यकस्माच्च सुखानि दद्यात् ॥८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—शनि, वा गुरु वा शुक्र उच्च में होकर शुभ ग्रह से इत्थशाल करता हो तो यवनों से धन की प्राप्ति कहना। यदि वली मंगल धन भाव में हो तो यश, धन, कान्ति और अनायास सुख की प्राप्ति होती है ॥ ८ ॥

सूर्येज्यशुक्रा मिथ इत्थशालं कुर्युस्तदा राज्ययशःसुखार्थाः।
सूर्यः कुजो वोपचये ददाति भद्रं यशो मङ्गलमिन्थिहायाः ॥९॥

भा०—रवि, गुरु, शुक्र ये परस्पर इत्थशाल करते हों तो राज्य, सुख और धन मिलता है। यदि मुथहा से उपचय, स्थान में सूर्य मंगल हो तो सुयश और कल्याण होता है ॥ ९ ॥

शुक्रज्ञचन्द्रा हद्दे स्वे पापास्त्र्यायगता यदि।
स्वबाहुबलतो हेमसुखकीर्तीर्नरोऽश्नुते ॥ १० ॥

भा० —शुक्र, बुध, चन्द्रमा अपने अपने हद्द (वर्ग) में हों और पाप ग्रह ३।११ में हों तो मनुष्य अपने बाहुवल से धन और सुख भोग करता है ॥१०॥

बुधशुक्रौ मुसरिफौ गुरुर्विक्रमभावगः।
तदा राज्ययशोहेममुक्ताविद्रुमलब्धयः ॥११॥

भा०—बुध शुक्र में ईसराफ योग हो और गुरु तृतीय भाव में हो तो राज्य यश सुवर्ण मोती, मूंगा आदि का लाभ होता है ॥११॥

भौमो मित्रगृहेऽब्देशः कम्बूली स्वगृहादिगैः।
गजाश्वहेमाम्बरभूलाभं धत्ते सुखादिकम् ॥१२॥

भा०—मंगल वर्षेश होकर मित्र के घर में हों और स्वगृह स्वोच्चस्थ ग्रहों से कम्बूल योग हो तो हाथी घोड़े आदि का लाभ होता है ॥१२॥

इत्थं जन्मनि वर्षे च योगकर्तुर्बलाबलम्।
विमृश्य कथयेद्राजयोगं तद्भङ्गमेत्र च ॥१३॥

भा०—इस प्रकार जन्म और वर्ष काल में योग कारक ग्रहों के बलाबल विचार करके राजयोग अथवा योग का भंग कहना चाहिये ॥१३॥

अब्देन्थिहेशादिखगाः खलैश्चेद्युतेक्षिता अस्तगनीचगा वा।
सौम्या बलोना नृपयोगभङ्गं तदा वदेद्वित्तसुखक्षयांश्च ॥१४॥

भा०—वर्षेश, मुथहेश लग्नेश आदि पञ्चाधिकारी ग्रह यदि पाप से युत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दृष्ट हों, अस्त हों, या नीच हों और शुभ ग्रह सब निर्बल हों तो राजयोग का भङ्ग और जन सुख का नाश होता है ॥१४॥

श्रीगर्गान्वयभूषणं गणितविच्चिन्तामणिस्तत्सुतो-
ऽनन्तोऽनन्तमतिर्व्यधात्खलमतध्वस्त्यै जनुःपद्धतिम् ।
तत्सूनुः खलु नीलकण्ठविबुधो विद्वच्छिवानुज्ञया-
ऽवोचद्वर्षपमुन्थहाफलमथारिष्टादिसद्योगयुक् ॥१५॥

भा०—स्पष्टार्थं ॥१५॥

इति गूढार्थप्रकाशिकासहितनीलकण्ठ्यामरिष्टभङ्गाध्यायः ॥४॥

—०—

अथ भावफलाध्यायः ॥५॥

यो भावः स्वामिसौम्याभ्यां दृष्टो युक्तोयमेधते ।
पापदृष्टयुतो नाशो मिश्रैर्मिश्रफलं वदेत् ॥१॥

भा०—जो भाव स्वामी शुभ ग्रह से दृष्ट युक्त हो उस भाव फल की वृद्धि, जो पाप ग्रह से दृष्ट हो उस भाव का नाश, मिश्र (पाप, शुभ) से युत दृष्ट हो तो मिश्र फल होता है ॥१॥

(१) लग्न (तनु) भाव फल—

लग्नाधिपे वीर्ययुते सुखानि नैरुज्यमर्थागमनं विलासः ।
स्यान्मध्यवीर्येऽल्पसुखार्थलाभः क्लेशाधिकत्वं विपदल्पवीर्ये ॥२॥

भा०—लग्नेश पूर्ण बली हो तो नैरुज्य, धन का लाभ आदि शुभ फल, तथा मध्य बली हो तो अल्प सुख, और हीन बली हो तो अधिक क्लेश आदि अशुभ फल होता है ॥२॥

सूर्य आदि ग्रह पञ्चाधिकारी होकर निर्बल हो तो उनका फल—

जन्माब्दाङ्गपतीन्थिहापतिसमानाथाद्यधीकारवान्
सूर्यो नष्टबलस्त्वगक्षिविलयं कुर्यान्निरुत्साहताम् ।
नीचत्वं पितृमातृतोप्यभिभवश्चन्द्रेक्षिकार्यक्षयो
दारिद्र्यं च पराभवो गृहकलिर्व्याध्याधिभीतिस्तदा ॥३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भौमे चलत्वं भीरुत्वं बुधे मोहपराभवौ ।
जीवे धर्मक्षयः कष्टफला जीवनवृत्तयः ॥४॥
शुक्रे विलाससौख्यानां नाशः स्त्रीभिः समं कलिः ।
सौरे भृत्यजनाद्दुःखं रुजो वातप्रकोपतः ॥५॥

भा०—जन्म लग्नेश, वर्ष लग्नेश आदि पञ्चाधिकारी होकर यदि सूर्य हीनबली हो तो, त्वचा और नेत्र की हानि, अनुत्साह, नीचता, माता पिता से अनादर होता है। चन्द्रमा अधिकारी होकर हीन बल हो तो, नेत्र हानि, कार्यनाश, दारिद्र्य, पराभव, घर में झगड़ा, व्याधि भय तथा मंगल में चंचलता, भय, तथा बुध में मोह और पराभव, गुरु में धर्म हानि, और जीविका का कष्ट, शुक्र में सुख विलास का नाश और स्त्री से कलह तथा शनि में नौकर से कष्ट और वातरोग होता है॥ ३–५ ॥

लग्नं पापयुतं सौम्यैरदृष्टं सहितं नृणाम् ।
विवादं वञ्चनां दुष्टमशनं चाऽपि विन्दति ॥६॥

भा०—लग्न पापयुत और शुभ ग्रह से अदृष्ट तथा अयुक्त हो तो विवाद, धूर्तों से ठगे जाना, कुभोजन आदि अशुभ फल होता है॥ ६ ॥

जन्माब्दाङ्गपरन्धपाऽब्दमुथहानाथा बलाढ्यास्तदा
रम्यं वर्षमुशन्ति सर्वमतुलं सौख्यं यशोऽर्थागमः ।
षष्ठाष्टान्त्यगता न चेदिह पुनस्ते दुःखभीतिप्रदा
निर्वीर्या यदि वर्षमेतदशुभं वाच्यं शुभेक्षां विना ॥७॥

भा०—जन्म लग्नेश, वर्ष लग्नेश, अष्टमेश, वर्षेश और मुन्थेश ये बल युक्त हों और ६,८,१२ इन स्थान में न हो तो वर्ष में उत्तम फल अतुल सौख्य आदि होता है। यदि ६,८,१२ इन स्थान में हो तो दुःख भयप्रद होते हैं। यदि निर्बल हों और शुभग्रह की दृष्टि न हो तो वर्ष अशुभ समझना ॥७॥

सूतौ धनप्रदः खेटो धनाधीशश्च तौ यदि ।
वर्षे नष्टौ वित्तनाशान्यनिक्षेपापवाददौ ॥८॥

भा०—जन्म काल में धनयोगकारक ग्रह और धनभावेश ये दोनों वर्ष में नष्ट बल हो तो धन का नाश और दूसरे के पास रखे हुए धन का भी अपवाद

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होता है अर्थात् जिसके पास धन रखा हो वह भी बेईमानी कर जाता है कि तुमने मुझे नहीं दिया है ॥ ८ ॥

एवं समस्तभावानां सूतौ नाथाश्च पोषकाः ।
अब्दे नष्टबलास्तेषां नाशायोह्या विचक्षणैः ॥९॥

भा०—इसी प्रकार सब भावों के स्वामी जन्मसमय भाव के पोषक भी हों और वर्ष काल में नष्ट बल हो जाय तो उन भावों के फल का भी नाश समझना चाहिये ॥९॥

(२) द्वितीय (धन) भाव का फल—

वित्ताधिपो जन्मनि वित्तगोऽब्दे जीवो यदा लग्नपतीत्थशाली ।
तदा धनाप्तिः सकलेऽपि वर्षे क्रूरेसराफे धनधान्यहानिः ॥१॥

भा०—जन्मसमय गुरु धनभावेश हो और वर्ष काल में धन भाव में हो तथा वर्ष लग्नेश से इत्थशाल करता हो तो समस्त वर्ष में धन लाभ, यदि पाप से ईसराफ योग हो तो धन नाश होता है ॥१॥

जन्मन्यर्थावलोकीज्योऽब्देऽब्देशो बलवान् यदा ।
तदा धनाप्तिर्बहुला विनाऽयासेन जायते ॥२॥

भा०—जन्म काल में बृहस्पति द्वितीय भाव को देखता हो, और वर्ष में वर्षपति होकर बली हो तो विना यत्न से अधिक धन लाभ होता है ॥२॥

एवं यद्भावपो जन्मन्यब्दे तद्भावगो गुरुः ।
लग्नेशेनेत्थशाली चेत्तद्भावजसुखं भवेत् ॥३॥

भा०—इसी प्रकार जन्म काल में गुरु जिस भाव का स्वामी हो, यदि वर्ष में उसी भाव में होकर लग्नेश से इत्थशाल करै तो निश्चय उस भाव का विशेष सुख होता है ॥ ३ ॥

तथा जनुषि यं पश्येद्भावमब्देऽब्दपो गुरुः ।
तदा तद्भावजं सौख्यमुक्तं ताजिकवेदिभिः ॥४॥

भा०—इसी प्रकार जन्म काल में जिस भाव को बृहस्पति देखता हो और वर्ष में वर्षपति हो तो उस भाव का भी विशेष सुख समझना चाहिये ॥४॥

जन्मषष्ठाधिपः सौम्यः षष्ठोऽब्दे स्वल्पलाभदः ।
पापार्दिते गुरौ रन्ध्रेऽर्थे वा दण्डः पतेद्ध्रुवम् ॥५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—यदि बुध जन्म और वर्ष काल दोनों समय षष्ठेश होकर षष्ठ भाव में हो तो स्वल्प धन लाभ होता है। यदि पापयुत गुरु ८ वें स्थान में हो तो धन पर राजदण्ड पड़ता है ॥५॥

गुरुर्वित्ते शुभैर्दृष्टयुतो वा राज्यसौख्यदः ।
जन्मन्यब्दे च मुथहाराशिं पश्यन्विशेषतः ॥६॥

भा०—जन्म और वर्ष काल में गुरु धन भाव में शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो राज्य सुख देता है । यदि मुथहा को भी देखता हो तो विशेष सुखप्रद समझना ॥६॥

एवं सितेऽब्दपे भूरि द्रव्यं धान्यं च जायते ।
वित्ताङ्गेशेसराफश्चेद् वित्तसौख्यविनाशदः ॥७॥

भा०—इस प्रकार शुक्र वर्षेश होकर धनाभाव में हो तो वहुत धन लाभ होता है। यदि धनेश और लग्नेश में ईसराफ योग हो तो धन सुख का नाश होता है ॥७॥

एवं धे सवीर्ये स्याल्लिपिज्ञानोद्यमैर्धनम् ।
जन्मलग्नगताः सौम्या वर्षेऽर्थे धनलाभदाः ॥८॥

भा०—इसी प्रकार बली बुध वर्षेश होकर धन भाव में हो तो लेख आदि उद्योगों से धन लाभ होता है। जन्म कालिक लग्न गत शुभ ग्रह वर्ष में धन भाव में हो तो धनप्रद होते हैं ॥८॥

मालसद्मनि वित्ते वा बुधेज्यसितसंयुते ।
तैर्वा दृष्टे धनं भूरि स्वकुले राज्यमाप्नुयात् ॥९॥

भा०—माल सद्म (धन सहम) वा धन भाव बुध, गुरु, शुक्र से युत वा दृष्ट हो तो वहुत धन और कुल का राज्य लाभ होता है ॥९॥

अर्थार्थसहमेशौ चेच्छुभैर्मित्रदृशेक्षितौ ।
बलिनौ सुखतो लाभप्रदौ यत्नादरेर्दृशा ॥१०॥

भा०—बली धनभावेश और धन सहमेश को शुभ ग्रह मित्र दृष्टि से देखते हो तो सुख पूर्वक धन लाभ तथा शत्रु दृष्टि से देखते हो तो यत्न करने पर धन लाभ होता है ॥१०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मित्रदृष्ट्या मुथशिलेऽर्थाङ्गपोः सुखतो धनम् ।
तयोर्मूसरिफे वित्तनाशदुर्नयभीतयः ॥११॥

भा०—धनेश और लग्नेश में मित्र दृष्टि से इत्थशाल हो तो अनायास धन लाभ होता है। यदि उन दोनों में ईसराफ योग हो तो धन का नाश और अनीति का भय रहता है ॥ ११ ॥

जन्मनोज्योऽस्ति यद्राशौ स राशिर्वर्षलग्नगः ।
शुभस्वामीक्षितयुतो नैरुज्यस्वाम्यवित्तदः ॥१२॥

भा०—जन्म काल में गुरु जिस राशि में हो वही राशि वर्ष लग्न हो और शुभ स्वामी से युत दृष्ट हो तो आरोग्य, प्रभुत्व और धन लाभ होता है ॥१२॥

सूतौ लग्ने रविर्वर्षे धनस्थो धनसौख्यदः ।
शनौ वित्ते कार्यनाशो लाभोऽल्पोऽथ धनव्ययः ॥१३॥
भ्रातृसौख्यं गुरुयुते भूतयः स्युः शुभेक्षणात् ।
क्रूरयोगेक्षणात्सर्वं विपरीतं फलं भवेत् ॥१४॥

भा०—जन्मकाल में सूर्य लग्न में, और वर्ष में धन भाव में हो तो धन सुख होता है। तथा धन भाव में शनि हो तो कार्य का नाश अल्प लाभ और धन का नाश होता है। यदि शनि बृहस्पति से युक्त और शुभग्रह से दृष्ट हो तो भाई का सुख और ऐश्वर्य होता है, तथा पापग्रह की दृष्टि से विपरीत (अशुभ) फल समझना ॥१३–१४॥

वित्तेशो जन्मनि गुरुर्वर्षे वर्षेशतां दधत् ।
यद्भावगस्तमाश्रित्य लाभदो लग्न आत्मनः ॥१५॥
वित्ते सुवर्णरूप्यादेर्भ्रात्रादेः सहजर्क्षगः ।
पितृ-मातृ-क्षमादिभ्यो वित्तं सुहृदि पञ्चमे ॥१६॥
सुहृत्तनयतः षष्ठेऽरिवर्गाद्धानिभीतिदः ।
स्त्रीभ्यो द्यूनेऽष्टमे मृत्युरर्थहेतुः पथोऽङ्कगे ॥१७॥
खे नृपादेर्नृपकुलादायेऽन्त्ये व्ययदो भवेत् ।
इत्थं विमृश्य सुधिया वाच्यमित्थं परे जगुः ॥१८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—जन्मकाल में गुरु धनभावेश हो वही वर्षपति होकर जिस भाव में रहै उस भाव के द्वारा ही लाभप्रद होता है—जैसे—लग्न में हो तो अपने बाहु-बल से, धनभाव में हो तो द्रव्य के द्वारा, तृतीय में हो तो भाई के द्वारा, चतुर्थ में हो तो माता पिता जमीन और मित्र से, पञ्चम में हो तो पुत्र से धन होता है। षष्ठ में हो तो शत्रु से धन नाश, सातवें में स्त्री से धन, आठवें में हो तो धन हेतु मृत्यु, नवम में मार्ग से, दशवें में राजा से, ११ में राज-कुल से धन लाभ, १२ में हो तो धन का व्यय होता ॥ १५-१८ ॥

(३) तृतीय (सहज) भाव फल—

अब्देशेऽर्के सिते वाऽपि सबले पापवर्जिते ।
सौख्यं मिथः सोदराणां व्यत्ययाद्व्यत्ययं वदेत् ॥१॥

भा०—सबल सूर्य वा शुक्र वर्षेश हो पाप से दृष्ट युत नहीं हो तो सहोदरों में परस्पर सुख होता है। यदि निर्बल और पापदृष्ट हो तो सोदरों में विरोध समझना ॥ १ ॥

दग्धे कलिः सहजपेऽब्दपतौ तयोर्वा जीवे बलेन रहिते सहजे सहोत्थैः ।
वैरं तृतीयभवनाधिपतीसराफे मान्द्यं कलिं स्वजनसोदरतश्च विद्यात् ॥२॥

भा०—सहज भावेश वर्षेश होकर दग्ध (अस्त) हो वा उन दोनों (सूर्य, शुक्र) में से कोई वर्षेश होकर अस्त हों और निर्बल बृहस्पति तृतीय भाव में हो तो सोदरों में वैर। तथा वर्षेश और तृतीयेश में ईसराफ योग हो तो रोग और सहोदरों में कलह समझना ॥ २ ॥

यदीत्थशालः सहजेश्वरेण गुरुस्तृतीये सहजात्सुखाप्तिः ।
सारे विधौ स्यात्कलहस्तृतीये दृष्टौ युतौ नो गुरुणा यदा तौ ॥३॥

भा०—वर्षेश या वर्षलग्नेश को तृतीयेश से इत्थशाल हो और गुरु तृतीय-भाव में हो तो सोदरों से सुख, यदि कुज सहित चन्द्रमा तृतीय भाव में हो और बृहस्पति से युत दृष्ट न हो तो सहोदरों में कलह समझना ॥ ३ ॥

सहजे सहजाधीशेऽधिकारिणि समापतेः ।
लग्नपो वा मुथशिले मिथः सौख्यं सहोत्थयोः ॥४॥

भा०—वर्षेश का अधिकारी होकर तृतीयेश तृतीय भाव में हो वा लग्नेश से इत्थशाल योग करता हो तो सोदरों में परस्पर सुख समझना ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रूरेसराफे कलहः शनौ भौमर्क्षगे रुजः ।
ज्ञर्क्षेऽसृज्यनुजे मान्द्यं वदेत्सहजगे स्फुटम् ॥५॥

भा०—सहजेश को पापग्रह से ईसराफ योग हो तो भाइयों में कलह, शनि, मङ्गल की राशि में होकर तृतीयभाव में हो तो रोग, बुध राशिस्थ मङ्गल तृतीय में हो तो छोटे भाइयों को रोग कहना ॥ ५ ॥

मन्दर्क्षगेऽसृजि बुधे कुजर्क्षे सहजे शुभैः ।
युतेक्षिते सोदराणां मिथः सौख्यं सुखं बहु ॥६॥

भा०—शनि की राशि में स्थित मङ्गल अथवा मङ्गल की राशि में स्थित बुध तृतीय भाव में हो और शुभग्रह से युत दृष्ट हो तो परस्पर सोदरों में अधिक सुख होता है ॥ ६ ॥

जन्माब्दयोर्बुधसितौ सबलौ तृतीये सोदर्यबन्धुगणसौख्यकरौ गुरुश्च ।
वीर्यान्वितेन्दुगृहगोभृगुजोऽधिकारीसूत्यब्दयोः सहजबन्धुगणस्यवृद्ध्यै ॥७॥

भा०—जन्म तथा वर्षकाल में बली बुध शुक्र तृतीय भाव में हो और गुरु बलवान् हो तो बन्धुओं में सुख कारक होते हैं । तथा पञ्चाधिकारों में किसी प्रकार का अधिकारी शुक्र यदि जन्म और वर्षकाल में बलवान् चन्द्र की राशि में हो तो सोदरों की वृद्धि होती है ॥७॥

पापान्विते तु सहजे सहमेशभावनाथेक्षणेन रहिते सहजस्य दुःखम् ।
एवं सहोत्थसहमेऽपि वदेत्तदीशौ दग्धौ यदा सहजनाशकरौ विचिन्त्यौ ॥८॥

भा०—सहजभाव में पाप ग्रह हो और सहज भावेश या सहमेश से दृष्ट न हो तो सोदरों का दुःख कहना । इस प्रकार भ्रातृ सहम से भी फल समझना । यदि उन दोनों (भ्रातृ भाव—और भ्रातृ सहम) के स्वामी अस्त हो तो सोदरों के नाशकारक होते हैं ॥८॥

तृतीयपादब्दपतौ द्युनस्थे लग्नेश्वरे वा सहजैर्विवादः ।
तृतीयगो जन्मनि तादृगब्दे शुभेक्षितस्तत्र सहोत्थतुष्ट्यै ॥९॥

भा०—यदि तृतीयेश से सप्तम भाव में वर्षेश या वर्ष लग्नेश हो तो सहोदरों में विवाद होता है । यदि तृतीयेश जन्म और वर्ष में तृतीय भाव में शुभग्रह से दृष्ट हो तो सोदरों का सन्तोषकारक होता है ॥९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(४) चतुर्थ (सुख) भावफल—

तुर्ये रवीन्दू पितृमातृपीडा पापान्वितौ पापनिरीक्षितौ च ।
जन्मस्थसूर्यर्क्षगतेऽर्कपुत्रेऽवमानना वैरकली च पित्रा ॥१॥
चन्द्रे जनन्यैवमुशन्ति बन्धौ सुखाधिपे प्रीतिसुखानि पित्रोः ।
तुर्याधिपे लग्नपतीत्थशाले वीर्यान्विते सौख्यमुशन्ति पित्रोः ॥२॥

भा०—चतुर्थ भाव में सूर्य पापयुत दृष्ट हो तो पिता को पीड़ा, यदि चन्द्रमा पापयुत दृष्ट चतुर्थ भाव में हो तो माता को पीड़ा होती है। यदि जन्मकाल में सूर्य के साथ शनि हो तो लोगों में अपमान, पिता से शत्रुता और कलह होता है। इसी प्रकार जन्मकालिक चन्द्रमा के साथ शनि हो तो माता से बैर और कलह समझना चाहिये। यदि चतुर्थेश चतुर्थ भाव में हो तो माता पिता से प्रेम और सुख तथा बली चतुर्थेश और लग्नेश में इत्थशाल हो तो माता पिता का सुख समझना ॥१-२॥

सौख्याधिपो जनुषि नष्टबलोऽब्दसूत्योः पित्रोरनिष्टकृदथो सहमे तयोस्तु ।
दग्धे तुरीयगृहगे च यदीन्थिहातो नाशस्तयोः सहमयोरपि दग्धयोःस्यात् ॥३॥

भा०—जन्मकालिक चतुर्थेश यदि जन्म और वर्ष दोनों समय निर्बल हो तो माता पिता का कष्टकारक होता है। तथा मातृ पितृ सहम भी पाप से युत दृष्ट होकर मुथहा से चतुर्थ भवन में हो, अथवा मातृ पितृ सहमेश भी दग्ध (अस्त) हो तो माता पिता का नाश समझना ॥३॥

जन्मन्यम्बुगृहं यच्च तत्पतिस्तत्पदोपगौ ।
शन्यारौ क्लेशदौ पित्रोर्न चेत्सौम्यनिरीक्षितौ ॥४॥

भा०—जन्मकालिक चतुर्थभाव और चतुर्थेश इन दोनों के साथ यदि शनि मङ्गल हो और शुभग्रह से युत दृष्ट न हो तो माता पिता को क्लेशदायक होते हैं ॥४॥

मातुः पितुश्च सहमे तनुपेत्थशाले तुर्येपि चेत्थमवगच्छ सुखानि पित्रोः ।
चेदष्टमाधिपतिना कृतमित्थशालं पित्रोर्विपद्भयमनिष्टकृतेसराफे ॥५॥

भा०—मातृ-पितृ सहम और चतुर्थ भाव को यदि लग्नेश से इत्थशाल योग हो तो माता पिता का सुख समझना। अगर अष्टमेश से इत्थशाल हो तथा पापग्रह से ईसराफ योग हो तो माता पिता को विपत्ति और भय कहना॥५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(५) पञ्चम (सुत) भावफल—

पुत्रायगो वर्षपतिर्गुरुश्चेत्सूर्यारशौम्योशनसोऽथवेत्थम् ।
सत्पुत्रसौख्याय खलार्दितास्ते दुःखप्रदाः पुत्रत एव चिन्त्याः ॥१॥

भा०—गुरु, अथवा सूर्य, मङ्गल, बुध, शुक्र इनमें कोई भी वर्षेश होकर, ५,११ भाव में हो तो पुत्र सुख, यदि ये ग्रह पापग्रह से पीड़ित हो तो पुत्र से दुःख समझना ॥१॥

पुत्रे सुतस्य सहमे सबले सुताप्तिः सौम्येक्षितेऽप्यतिसुखं यदि तत्र वर्षेट् ।
सौम्येक्षितः शुभगृहे सकुजो बुधश्चेत्पुत्रायगः सुतसुखं विबलः सुतार्तिम् ॥२॥

भा०—पञ्चम भाव में सबल पुत्र सहम हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो, वा बली वर्षेश पञ्चम भाव में शुभ ग्रह से दृष्ट हो, वा मङ्गल सहित बुध शुभ ग्रह की राशि में होकर ५,११ स्थान में हो तो पुत्र सुख होता है। निर्बल हो तो पुत्र को पीड़ा होती है ॥२॥

जीवो जन्मनि यद्राशावब्देऽसौ सुतगो बली ।
पुत्रसौख्याय भौमो ज्ञो वर्षेशोऽत्र सुताप्तिदः ॥३॥

भा०—जन्म काल में गुरु जिस भाव में हो वह राशि बलवान् होकर वर्ष लग्न से पञ्चम में हो, वा मङ्गल या बुध वर्षेश होकर पुत्रभाव में हो तो पुत्र-सुख होता है ॥३॥

यत्रेज्यो जनुषि गृहे विलग्नमेतत्पुत्राप्त्यै बुध-सितयोरपीत्थमूह्यम् ।
यद्राशौ जनुषि शनिः कुजश्च सोऽब्दे पुत्राऽसिं तनुसुतगः करोति नूनम् ॥४॥

भा०—जिस भाव में जन्म समय बृहस्पति हो वह राशि वर्षलग्न हो तो पुत्र लाभ होता है। इसी प्रकार बुध, शुक्र की राशि से भी समझना। तथा जन्म समय शनि, मंगल जिस राशि में हो वह वर्ष में लग्न या पञ्चम में पड़े तो भी निश्चय पुत्र का लाभ होता है ॥४॥

पुत्रे पुण्यस्य सहमं पुत्राऽप्त्यै शुभदृष्टियुक् ।
लग्नपुत्रेश्वरौ पुत्रे पुत्रदौ बलिनौ यदि ॥५॥

भा०—शुभ ग्रह से दृष्ट पुण्य सहम पुत्र भाव में हो, वा बलवान् लग्नेश पञ्चमेश पुत्र भाव में हो तो पुत्र सुखप्रद होते हैं ॥५॥

१६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्रो जीवोऽथवा शुक्रः स्वोच्चगः सुतदः सुते ।
वक्री भौमः सुतस्थश्चेदुत्पन्नसुतनाशनः ॥६॥

भा०—अपने उच्च में चन्द्र, गुरु, या शुक्र पुत्र भाव में हो तो निश्चय पुत्र होता है। यदि वक्री मंगल सुत भाव में हो तो पुत्रनाशक होता है ॥६॥

सुताधिपो जन्मनि भार्गवोऽब्दे पुत्रे विलग्नाधिपतीत्थशाली ।
पुत्रप्रदो मन्दपदस्थपुत्रे पापाधिकारीक्षित आत्मजार्तिः ॥७॥

भा०—जन्म कालिक पञ्चमेश होकर शुक्र वर्ष में पञ्चम भाव में हो और लग्नेश से इत्थशाल हो तो सुतप्रद होता है। यदि जन्मकालिक शनि की राशि वर्ष में पुत्र भाव में पड़ै और .पापग्रहों से दृष्ट हो तो पुत्र को पीड़ा होती है ॥७॥

यद्राशिगो ग्रहः सूतौ स राशिस्तत्पदाभिधः ।
बली जन्मोत्थसौख्याय वर्षे तद्दुःखदोऽन्यथा ॥८॥

भा०—जन्मकाल में जो ग्रह जिस राशि में हो वह उसका पद कहाता है। वह राशि वर्ष में बली हो तो उस भाव का शुभ फल देता है, निर्बल हो तो दुःखप्रद होता है ॥८॥

इति पञ्चमभावः ।

---

(६) षष्ठ (रिपु) भाव फल

मन्देऽब्दपेऽनृजुगतौ पतिते रुगार्तिः स्यात्सन्निपातभवभीररिगेऽत्र शूलम् ।
गुल्माक्षिरोगविषमज्वरभीर्गुरौ तु पापार्दितेऽनिलरुजोऽपि कबूलशून्ये ॥१॥

स्यात्कामलाख्यरुगपीत्थमसृज्यसृग्भीः
पित्तं च रिःफगरवौ दृशि शूलरोगः ।
पित्तं पुना रिपुगृहेऽत्र भृगौ नृभेऽरौ
श्लेष्मा भपेक्षितयुतेऽपि कफोऽरिगेन्दौ ॥२॥

एवं बुधे पापयुतेऽब्दपेऽरौ वातोत्थरोगो जनिलग्ननाथः ।
पापोऽब्दपेन क्षुतदृष्टिदृष्टो रोगप्रदो मृत्युकरः सपापः ॥३॥

भा०—वक्री शनि वर्षेश हो और पापग्रह सहित षष्ठ भाव में हो तो सन्निपात, शूल, गुल्म आदि रोग होता है। एवं बृहस्पति वक्री होकर पाप

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सहित षष्ठ भाव में हो और चन्द्रमा से कम्बूल योग नहीं होता हो तो वात और कामला रोग, मंगल हो तो रक्त विकार, रवि हो तो पित्त रोग, रवि द्वादश में हो तो नेत्र में पीड़ा, शुक्र षष्ठ भाव में हो तो पित्तरोग वही शुक्र पुरुष-राशि में वर्षेश से दृष्ट हो तो श्लेष्मा रोग, और चन्द्रमा पाप युत षष्ठ स्थान में हो तो कफ रोग होता है। इस प्रकार वर्षेश बुध पाप युक्त होकर षष्ठ में हो तो वात रोग होता है। यदि जन्म लग्नेश पापग्रह हो उसे वर्षेश क्षुत दृष्टि से देखता हो तो रोगप्रद, यदि पाप से युक्त भी हो तो मृत्यु-प्रद होता है ॥१—३॥

सूत्यार्किभे लग्नगते रुक्षशीतोष्णरुग्भयम् ।
शनीक्षिते याप्यता स्यात्सपापे मृत्युमादिशेत् ॥४॥
एवं भौमे क्षुतदृशा रक्त-पित्त-रुजोऽग्निभीः ।
ततोऽन्ये बहुला रोगाः शुभदृष्टौ रूगल्पता ॥ ५ ॥

भा०—जन्म कालिक शनि की राशि वर्ष लग्न में हो और शनि से दृष्ट हो तो शीतोष्ण रोग का भय, यदि पाप युक्त भी हो तो मरणप्रद होता है । एवं जन्म कालिक मंगलाक्रान्त राशि वर्ष लग्न में हो और मंगल से क्षुत दृष्टि से देखा जाता हो तो रक्त पित्त रोग और अग्नि भय, और भी बहुत से रोग होते हैं। यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो अल्प रोग होता है ॥ ४-५ ॥

लग्नाधिपाब्दपतिषष्ठपतीत्थशालो रोगप्रदः खचरधातुविकारतः स्यात् ।
कान्दर्पिकामयभयं पतिते सितेऽर्कस्थानेऽथ षष्ठ इह रुक्सहमं सपापम्॥ ६ ॥

भा०—लग्नेश, वर्षेश और षष्ठेश में इत्थशाल हो तो ग्रह सम्बन्धी धातु के विकार से रोग होता है। और पतित (अनिष्ट ६,८,१२ स्थान स्थित) शुक्र, यदि सूर्य के स्थान में हो, तथा पाप युक्त रोग सहम षष्ठ भाव में हो तो कन्दर्प सम्बन्धी रोग होता है ॥ ६ ॥

सपापे गुरौ रन्ध्रगे लग्न आरे स तन्द्राऽस्ति मूर्च्छाङ्गनाशः सचन्द्रे ।
खलाःसूतिकेन्द्रेऽब्दलग्ने रूगाप्त्यै कफोद्व्यङ्घ्रिगैरीक्ष्यमाणे सिते स्यात् ॥७॥

भा०—पाप युक्त गुरु अष्टम भाव में और मङ्गल लग्न में हो तो तन्द्रा सहित मूर्च्छा रोग, अगर चन्द्रमा से भी युक्त हो तो अङ्ग का नाश होता है। जन्मकाल में पाप ग्रह केन्द्र में हो वह यदि वर्षलग्न में पड़े तो रोग की प्राप्ति होती है । द्विपद राशिस्थ पाप ग्रह शुक्र को देखता हो तो कफ रोग होता है ॥ ७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिनेऽब्दप्रवेशो विलग्नेऽब्दसूत्योर्यदा दृक्कहद्दागृहाद्योऽधिकारः ।
रवेर्वा कुजस्याऽत्र पीडा ज्वरात्स्याद्दृशा सौम्यखेटोत्थयान्ते सुखाप्तिः ॥८॥

भा०—दिन में वर्षप्रवेश हो और जन्म तथा वर्षकालिक लग्न में सूर्य या मङ्गल का हद्दा द्रेष्काण आदि अधिकार (वर्ग) हो तो ज्वर से पीड़ा, यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो वर्ष के अन्त में सुख की प्राप्ति होती है ॥ ८ ॥

निशि सूतौ वर्धमाने चन्द्रे भौमेत्थशालतः ।
रुग्नश्येदेधते मन्देत्थशालाद्व्यत्ययोऽन्यथा ॥९॥

भा०—शुक्लपक्ष की रात्रि में जन्म हो चन्द्रमा को मङ्गल से इत्थशाल हो तो रोग का नाश, शनि से इत्थशाल हो तो रोग की वृद्धि होती है । इससे उल्टा में उल्टा (अर्थात् कृष्णपक्ष और दिन में जन्म हो तो चन्द्रमा के शनि से इत्थशाल हो तो रोगवृद्धि, मङ्गल से इत्थशाल हो तो रोग का नाश) समझना ॥९॥

रवावोदृशि वित्केतुयुतेऽब्दं निखिलं गदाः ।
अधिकारी बली सूतावब्दे केतुज्ञयुक् तथा ॥१०॥

भा०—केतु, बुध युक्त रवि को अगर इस प्रकार मङ्गल से इत्थशाल हो तो सम्पूर्ण वर्ष रोग का भय रहता है । तथा जन्मकालिक बलवान् अधिकारी ग्रह वर्ष में केतु, बुध युक्त हो तो रोगप्रद होता है ॥ १० ॥

चतुर्थेऽस्ते च मुथहा क्षुतदृष्ट्या शनीक्षिता ।
शूलपीडा पापखगैर्दृष्टा तत्तद्धातुविकारजा ॥११॥

भा०—लग्न से ४।७ में मुथहा को क्षुतदृष्टि से शनि देखता हो तो शूलरोग, यदि अन्य पाप से भी देखा जाता हो तो उस ग्रह के धातु विकार से शूलपीड़ा समझना ॥ ११ ॥

जन्मस्थजीवसितराशिगते महीजे सूर्यांशुगे पिटकशीतलिकादिमान्द्यम् ।
शीतोष्णगण्डभवरुक्सबुधे च सेन्दौ कुष्ठं भगन्दररुजोऽपि सगण्डमालाः ॥१२॥

भा०—जन्मकालस्थ गुरु, शुक्र की राशि में वर्षकाल में मङ्गल होकर सूर्य के सान्निध्य से अस्त हो तो पिड़की आदि रोग, यदि जन्मकालिक गुरु, शुक्र की राशि में बुध से युत मङ्गल हो तो शीत गण्ड आदि रोग तथा चन्द्रमा से युक्त हो तो कुष्ठ और भगन्दर होता है ॥ १२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्मलग्नेन्थिहानाथौ षष्ठे पापान्वितेक्षितौ ।
निर्बलौ ज्वरपीडाङ्गवैकल्याद्यतिकष्टदौ ॥१३॥

भा०—निर्बल जन्मलग्नेश और मुन्थेश, वर्षलग्न से षष्ठ भाव में पापग्रह से दृष्टयुक्त हो तो ज्वर आदि कष्टदायक होते हैं ॥ १३ ॥

मुथहालग्नतन्नाथा पापान्तःस्थास्तु रोगदाः ।
षष्ठेशे षष्ठगे सौम्ये स्त्रियः प्राप्तिरितीर्यते ॥१४॥

भा०—मुथहा, वर्षलग्न और इन दोनों के स्वामी, पापग्रहों के मध्य में पड़ें तो रोगप्रद होते हैं । यदि शुभग्रह षष्ठेश होकर षष्ठभाव में हो तो स्त्री को रोग की प्राप्ति होती है ॥

यथा समर सिंह का वाक्य—

"षष्ठाधिपे च षष्ठं प्राप्ते सौम्ये भवेत् स्त्रियां गदप्राप्तिः ।" इति ॥१४॥

रोगकर्ता यत्र राशावंशे स्यादनयोर्बली ।
तत्स्थानं तस्य रोगस्य वाच्यं राशिस्वरूपतः ॥१५॥

भा०—रोगकारक ग्रह की राशि और नवांश में जो बली हो उस राशि के स्वरूपानुसार रोग का स्थान–धातु आदि कहना ॥ १५ ॥

जन्मषष्ठाधिपे भौमे वर्षे षष्ठगते रुजा ।
क्रूरेत्थशाले विपुलः शुभदृग्योगतस्तनुः ॥१६॥

भा०—जन्मलग्न से षष्ठेश मंगल हो और वह वर्ष में षष्ठभाव में हो तो रोग होता है । यदि पाप ग्रह से इत्थशाल हो तो अधिक, शुभग्रह से इत्थशाल हो तो अल्प रोग होता है ॥ १६ ॥

इति षष्ठभावः ।

—*—

(७) सप्तम (स्त्री) भावफल—

बली सितोऽब्दाधिपतिः स्मरस्थः स्त्रीपक्षतः सौख्यकरो विचिन्त्यः ।
ईज्येक्षितोऽत्यन्तसुखं कुजेनाऽधिकारिणा प्रीतिकरो मिथः स्यात् ॥१॥

भा०—बली शुक्र सप्तमेश होकर लग्न में हो तो स्त्री से सुख, और गुरु की दृष्टि हो तो अत्यन्त सुख होता है । यदि मंगल अधिकारी होकर देखता हो तो स्त्री पुरुष में परस्पर प्रेम कहना ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुधेक्षिते जारता स्याल्लघ्व्या मन्देन वृद्धया ।
गुरुदृष्ट्या नवा भार्या सन्ततिस्त्वरितस्ततः ॥२॥

भा०—उस सप्तमस्थ वर्षेश शुक्र पर बुध की दृष्टि हो तो अपने से छोटी वयस की परस्त्री से, और यदि शनि की दृष्टि हो तो अधिक वयस वाली परस्त्री से प्रेम कहना। गुरु की दृष्टि हो तो नवीना विवाहिता स्त्री से सुख और शीघ्र सन्तति होती है ॥ २ ॥

जन्मलग्नाधिपेऽस्तस्थे दारसौख्यं बलान्विते ।
जन्मशुक्रर्क्षमस्तेऽब्दे स्त्रीलाभाय सितेऽब्दपे ॥३॥

भा०—जन्म लग्नेश बलवान हो कर वर्ष लग्न से सप्तम भाव में हो, वा जन्मकालिक शुक्र की राशि वर्ष लग्न से सप्तम में हो और शुक्र वर्षेश हो तो स्त्री लाभ होता है ॥ ३ ॥

वि०—विवाहयोग—"शुक्रो जन्मनि यद्राशौ वर्षे लग्नेश्वरो यदि ।
तद्राशौ सप्तमस्थेऽपि पुंसः परिणयस्तदा ॥" इति ॥

लग्नास्तनाथयोरित्थशाले स्त्रीलाभमादिशेत् ।
सहमेशो भावपो वा विनष्टः कष्टदः स्त्रियः ॥४॥

भा०—लग्नेश और सप्तमेश में इत्थशाल हो तो स्त्री का लाभ, और स्त्री सहमेश, वा स्त्री भावेश नष्ट हो तो स्त्री को कष्ट कहना ॥ ४ ॥

विनष्ट ग्रह का लक्षण—

"क्रूराक्रान्तः क्रूरयुतः क्रूरदृष्टश्च यो ग्रहः ।
विरश्मितां प्रपन्नश्च स "विनष्टो" बुधैः स्मृतः ॥" इति ॥ ४ ॥

नष्टेन्दौ शुक्रपदगे मैथुनं स्वल्पमादिशेत् ।
जन्मशुक्रर्क्षगो भौमः स्त्रीसुखोत्सवकृद्बली ॥५॥

भा०—नष्ट चन्द्रमा शुक्र के स्थान में हो तो थोड़ा मैथुन कहना। जन्मकालिक शुक्र की राशि में वर्ष में मंगल हो तो स्त्रीसुखकारक होता है ॥ ५ ॥

जन्मास्तपेऽब्दपसितेन युगीक्षिते स्यात्
स्त्रीसङ्गमो बहुविलाससुखप्रधानः ।
केन्द्रत्रिकोणगगुरौ जनिशुक्रभस्थे
स्त्रीसौख्यमुक्तमिति हृद्दविवाहयोश्च ॥६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—जन्मकालिक सप्तमेश यदि वर्षेश शुक्र से युत दृष्ट हो तो स्त्री से विशेष सुख, तथा जन्म कालिक शुक्राक्रान्त राशि में वर्ष में गुरु होकर केन्द्र त्रिकोण में हों, अथवा वर्ष लग्न के इद्दा का स्वामी, वा विवाह सहम का स्वामी जन्म कालिक शुक्र राशिस्थ होकर वर्ष लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो तो स्त्री का सुख समझना ॥६॥

अधिकारिपदस्थेऽर्के स्त्रीभ्यो व्याकुलताऽनिशम् ।
इन्थिहाधिकृतस्थाने गुरुदृष्टा विवाहकृत् ॥७॥

भा०—पञ्चाधिकारियों में किसी अधिकार में सूर्य हो तो स्त्री के लिये व्याकुलता कहना । तथा मुथहा यदि अधिकारियों के स्थान में गुरु से दृष्ट हो तो विवाहकारिणी होती है ॥७॥

इन्थिहाकार्युग् द्यूने क्रूरिते सहमे स्त्रियाः ।
स्त्रीपुत्रेभ्यो भवेत्कष्टं पापदृष्ट्या विशेषतः ॥८॥

भा०—मङ्गल और सूर्य से युक्त मुथहा सप्तम भाव में हो और स्त्री का सहम पाप युक्त हो तो स्त्री-पुत्र से कष्ट होता है । पाप दृष्ट हो तो विशेष कष्ट समझना ॥८॥

सूतौ द्यूनाधिपः शुक्रोऽब्दे द्यूने बलवान् भवेत् ।
लग्नेशेनेत्थशालश्चेत्स्त्रीलाभं कुरुते ध्रुवम् ॥ ९ ॥
भौमेऽब्दपे शितदृशा शुक्रेऽब्देशे कुजेक्षया ।
तद्दृष्टे दारसहमे स्त्रीलाभो भवति ध्रुवम् ॥१०॥
सूतौ वा दारसहमे तद्दृष्टे योषिदाप्यते ।
स्वामिदृष्टं स्त्रीसहमं शुक्रदृष्टं विवाहकृत् ॥११॥
सूतौ द्यूनाऽधिपे वर्षे सहमेशे स्त्रियाः सुखम् ।
जन्मास्तपेन्थिहानाथवर्षेशाः खे द्युने तथा ॥१२॥

भा०—जन्म कालिक सप्तमेश शुक्र बली होकर वर्ष लग्न में सप्तम में हो और लग्नेश से इत्थशाली हो तो स्त्री का लाभ होता है । मङ्गल वर्षेश हो और शुक्र से दृष्ट हो वा शुक्र वर्षेश हो मङ्गल से दृष्ट हो, वा स्त्री सहम शुक्र मङ्गल से दृष्ट हो अथवा जन्म कालिक स्त्री सहम उन दोनों (शुक्र, मङ्गल) से दृष्ट हो तो स्त्री का लाभ होता है । विवाह सहम स्वामी और शुक्र से दृष्ट

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो तो विवाह कारक होता है । जन्मकालिक सप्तमेश वर्ष काल स्त्री सहमेश हो, वा जन्म कालिक सप्तमेश, मुथहेश और वर्षेश १०, ७ स्थान में हो तो स्त्री का सुख होता है ॥९—१२॥

मुथहातो द्यूनसंस्थः स्वगृहोच्चगतः शशी ।
विदेशगमनं कुर्यात् क्लेशः पापेक्षणाद्भवेत् ॥१३॥

भा०—अपनी राशि या उच्च में स्थित चन्द्रमा यदि मुथहा से सप्तम में हो तो विदेश गमन होता है । यदि पाप ग्रह से दृष्ट हो तो क्लेश कारक भी होता है ॥१३॥

—०—

(८) अष्टम (मृत्यु) भावफल—

भौमेऽब्दपे क्रूरहतेऽयसा घातो बलोज्झिते ।
अग्निभीरग्निभे क्रूरनराद्द्विपदभे मृतिः ॥१॥
वियत्यवनिपाऽमात्य-रिपु-तस्करजं भयम् ।
तुर्ये मातुः पितृव्याद्वा मातुलात्पितृतो गुरोः ॥२॥

भा०—पाप से पराजित और निर्बल मङ्गल वर्षेश हो तो लोहे से आघात होता है । वही मङ्गल अग्नितत्त्ववाली राशि में हो तो अग्नि भय, और द्विपद राशि में हो तो क्रूरमनुष्य द्वारा मृत्यु, यदि दशम भाव में हो तो राजा, मन्त्री, शत्रु और चोर का भय, चतुर्थ में हो तो माता, चाचा, मामा, और पिता से भय कहना चाहिये ॥१—२॥

लग्नेन्थिहापतिसमापतयो मृतीशाच्चेदित्थशालिन इमे निधनप्रदाः स्युः ।
चेत्पाकरिष्टसमये मृतिरेव तत्र सार्के कुजे नृपभयं दिवसेऽब्दवेशे ॥३॥

भा०—वर्ष लग्नेश, मुथहेश, वर्षेश ये अष्टमेश से इत्थशाल करते हों तो मरण प्रद होते हैं । दशा के अरिष्ट समय में मरण होता है । यदि दिन में वर्ष प्रवेश हो और सूर्य मङ्गल साथ में हो तो राजा से भय कहना चाहिये ॥३॥

सूर्ये मूसरिफे सितेन जनने वर्षेऽधिकारी तथा
केन्द्रे राजगदाद्भयं च रुगसृक्स्थानेऽधिकारीन्दुजे ।
सौम्ये क्रूरदृशा कुजस्य रुगसृग्दोषादिनांशुस्थिते
दग्धे बन्धमृतो विदेशत इति प्राहुर्बुधे तादृशे ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—जन्मकाल में सूर्य शुक्र से ईसराफ योग करता हो और वर्ष में अधिकारी होकर केन्द्र में हो तो राजभय, और रोगभय होता है। जन्म कालिक मङ्गल के स्थानस्थित बुध यदि अधिकारी (पञ्चाधिकारी में एक) हो तो रोगकारक होता है। वा अधिकारी बुध यदि मङ्गल से क्षुत दृष्टि से देखा जाता हो तो रक्त विकार दोषादि से रोग होता है। वा इनांशु (सूर्यकिरणों) में स्थित होकर बुध अस्त हो और दग्ध (पापयुक्त) हो तो विदेश जाने से बन्धन और मरण कहना चाहिये ॥ ४ ॥

भौमस्थानेऽधिकारीन्दौ गुप्तं नृपभयं रुजः ।
मन्दोऽधिकारी खे लोहहतेः पीडाकरः स्मृतः ॥ ५ ॥

भा०—जन्मकालिक मङ्गल के स्थानस्थ चन्द्रमा वर्ष में अधिकारी हो तो गुप्त राजभय और रोग होता है। यदि शनि अधिकारी होकर दशम स्थान में हो तो लोह के आघात से पीड़ा होती है।

अधिकारी शब्द से सर्वत्र पञ्चाधिकारियों में कोई एक समझना ॥५॥

भौमेऽष्टमे भयं वह्नेः प्रहारो वा नृपाद्भयम् ।
आरे खस्थे चतुष्पाद्भ्यः पातो दुःखं रुजोऽसृजा ॥ ६ ॥

भा०—अष्टम स्थान में मङ्गल हो तो अग्नि भय, अस्त्र प्रहार और राजभय, तथा दशम स्थान में मङ्गल हो तो घोड़े आदि सवारियों से गिरना तथा रक्त विकार से रोग होता है ॥६॥

वित्ताष्टगेज्यो धनहा यद्यब्देशोऽशुभेक्षितः ।
मन्दे द्युने दुर्वचनापवादकलिभर्त्सनम् ॥७॥

भा०—गुरु वर्षेश होकर २।८ स्थान में हो और पाप ग्रह से दृष्ट हो तो धन नाशक होता है। तथा सप्तम भाव में शनि हो तो अपवाद, कलह और गञ्जन होता है ॥७॥

पतिते ज्ञे क्रूरदृशाऽऽरेत्थशाले मृतिं वदेत् ।
कुजहद्दास्थिते नाशः सौम्यदृष्ट्या शुभं भवेत् ॥८॥

भा०—बुध नीचादि स्थान में होकर शत्रु दृष्टि से मंगल के साथ इत्थशाल करे तो मरण, वही बुध, मंगल के हद्दा में हो तो द्रव्य नाश, परञ्च शुभ दृष्ट हो तो शुभ होता है ॥८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्नाधिपे नष्टदग्धे योषिद्वादोऽशुभान्विते ।
जन्मन्यष्टमगो जीवो नाधिकारी कलिः पृथुः ॥९॥
जयः शुक्रेक्षणादुक्तः प्रत्युत्तरवशेन तु ।
भौमेऽन्त्यगे धने सूर्ये वादात्क्लेशं विनिर्दिशेत् ॥१०॥

भा०—लग्नेश निर्बल, अस्त, और पापयुक्त हो तो स्त्री से कलह, यदि जन्मकाल में बृहस्पति अष्टम हो और वर्ष का अधिकारी न हो तो महाकलह होता है। किन्तु शुक्र की दृष्टि हो तो प्रत्युत्तर से विजय होती है। यदि मङ्गल १२वें स्थान में और सूर्य २रे स्थान में हो तो वाद से क्लेश होता है ॥९—१०॥

रिपुगोत्रकलिर्भीतिः सङ्ख्ये कुजहतेऽब्दपे ।
दग्धो जन्माङ्गपो वर्षेऽष्टमो रोगकलो दिशेत् ॥११॥
सूत्यब्दयोरधिकृतो भौमस्थाने गुरुर्हतः ।
पापैर्वादः स्फुटोप्येवं तादृशीन्दौ शनेः पदे ॥१२॥

भा०—वर्षेश यदि मंगल से पीड़ित (पराजित) हो तो शत्रु और गोतियों से कलह, संग्राम में भय, तथा जन्मलग्नेश अस्त होकर वर्षलग्न से अष्टम में हो तो रोग और कलह होता है। जन्म और वर्षकाल में अधिकारी गुरु मङ्गल की राशि में होकर पाप से पराजित हो तो लोगों से साफ विवाद होता है। इसी प्रकार अधिकारी चन्द्रमा पापहत होकर शनि के स्थान में हो तो विवाद जानना ॥११–१२॥

सूत्यब्दयोरधिकृते चन्द्रे बुधपदे हते ।
क्रूरैर्विदेशगमनं वादः स्याद्विमनस्कता ॥१३॥

भा०—जन्म और वर्ष काल में अधिकारी चन्द्रमा बुध के स्थान में होकर पापों से हत हो तो विदेश गमन और वैमनस्य समझना चाहिये ॥१३॥

मेषे सिंहे धनुष्यारे वृषे रन्ध्रेऽसितो भयम् ।
मृतौ मृतीशलग्नेशौ मृत्युदौ पापदृग्युतौ ॥१४॥

भा०—मेष, सिंह, धनु अथवा वृष में मंगल होकर अष्टम स्थान में हो तो असि (तलवार) का भय होता है। और अष्टमेश, लग्नेश दोनों अष्टम स्थान में पाप ग्रह से दृष्टयुत हो तो मरण प्रद होता है ॥१४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यत्रर्क्षे जन्मनि कुजः सोऽब्दलग्नोपगो यदा ।
बुधो वर्षपतिर्नष्टबलस्तत्र न शोभनम् ॥१५॥

भा०—जन्म काल में मंगल जिस राशि में हो वह वर्ष लग्न गत हो और हीन बली बुध वर्षेश हो तो वह वर्ष शुभ नहीं होता है ॥१५॥

सार्के शनौ भौमयुते खाष्टस्थे वाहनाद्भयम् ।
सार्के भौमेऽष्टमस्थे तु पतनं वाहनाद्भवेत् ॥१६॥

भा०—सूर्य मंगल सहित शनि १० या ८ स्थान में हो तो वाहन का भय तथा रवि सहित मङ्गल ८ स्थान में हो तो वाहन से पतन होता है ॥१६॥

सारेऽब्दपेऽष्टमे मृत्युश्चन्द्रेन्त्यारिमृतौ मृतिः ।
उदिते मृतिसद्मेशे निर्बले जीविते मृतिः ॥१७॥

भा०—मंगल सहित वर्षेश अष्टम स्थान में हो, वा चन्द्रमा १२,६,८ वें स्थान में हो तो मरण होता है । मृत्यु सहमेश उदित और निर्बल हो तो जीते ही जी मरण समझना चाहिये ॥१७॥

पुण्यसद्मेश्वरः पुण्यसहमादष्टगो यदा ।
सूत्यष्टमेशः पुण्यस्थो मृतिदः पापदृग्युतः ॥१८॥

भा०—पुण्य सहमेश्वर यदि पुण्य सहम से अष्टम में हो, और जन्मकालिक अष्टमेश पुण्य सहम के साथ पापयुत हो तो मृत्युप्रद होता है ॥१८॥

सूत्यष्टमगतो राशिः पुण्यसद्मनि नाथयुक् ।
अब्दलग्नाऽष्टमर्क्षे वा चेदित्थं स्यान्मृतिस्तदा ॥१९॥

भा०—जन्मकालिक अष्टम भाव वर्ष काल में पुण्य सहम स्थान में अपने स्वामी से युक्त हो वा वर्ष कालिक अष्टम भाव यदि पुण्य सहम और स्वामी से युक्त हो तो मृत्यु होती है ॥१९॥

पुण्यसद्माशुभाक्रान्तं मृतीशोऽन्त्यारिरन्ध्रगः ।
मुथहेशोऽब्दपो वापि मृत्युं तत्र विनिर्दिशेत् ॥२०॥

भा०—पुण्य सहम पाप ग्रह युक्त हो और अष्टमेश, मुथहेश वा वर्षेश १२।६।८ स्थान में पापाक्रान्त हो तो भी मृत्यु कहना ॥२०॥

सक्रूरे जन्मपे मृत्यौ मृतिश्चेदिन्थिहार्कियुक् ।
भौमक्षुतेक्षणे तत्र मृत्युः स्यादात्मघाततः ॥२१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—पाप ग्रह के साथ जन्मलग्नेश अष्टम भाव में हो और मुथहा शनि युक्त हो तो मरण होता है। यदि उस पर मंगल की क्षुत दृष्टि हो तो आत्मघात से मरण होता है ॥२१॥

मन्दोऽष्टमे मृतीशेत्थशालान्मृत्युकरः स्मृतः ।
शुभेत्थशालात् सर्वेऽपि योगा नाशुभदायकाः ॥२२॥

भा०—शनि अष्टम स्थान में हो और अष्टमेश से इत्थशाल हो तो मरण होता है। और शुभ ग्रह से इत्थशाल होने पर कोई भी योग अशुभदायक नहीं होता है ॥२२॥

सूतिरन्ध्रपतिर्मन्दोऽष्टमोऽब्दे लग्नपेन चेत् ।
इत्थशाली क्रूरदृशा तत्कालं मृत्युदायकः ॥२३॥

भा०—जन्मकालिक अष्टमेश होकर शनि यदि वर्ष में अष्टम स्थान में लग्नेश से क्रूर दृष्टि से इत्थशाल करता हो तो तत्काल ही में मरण होता है ॥२३॥

पुण्यसद्मनि विधुस्तनौ तथाऽस्ते खलो मृतिरथार्थरिष्फगौ ।
मृत्युदौ खलखगावथो जनुर्वर्षवेशतनुपौ मृतौ मृतिः ॥२४॥

भा०—पुण्य सहम में चन्द्रमा लग्न में और पापग्रह सप्तम में हो, वा २ पाप ग्रह द्वितीय द्वादश में हों, अथवा जन्मलग्नेश और वर्षलग्नेश अष्टम भाव में हो तो मरणप्रद होता है ॥ २४ ॥

—०—

(९) नवम (भाग्य) भावफल—

भौमेऽब्दपे त्रिनवगे क्रूरायुक्ते बलान्विते ।
गुणावहस्तदा मार्गश्चिरं कार्यं स्थिरं ततः ॥ १ ॥
त्रिधर्मस्थोऽब्दपः सूर्यः कम्बूली मार्गसौख्यदः ।
अन्यप्रेषणयानं स्यात्स चेन्नाधिकृतो भवेत् ॥ २ ॥
शुक्रेऽब्दपे त्रिनवगे मार्गे सौख्यं विलोमगे ।
अस्ते वा कुगतिः सौम्ये देवयात्रा तथाविधे ॥ ३ ॥
क्रूरार्दिते कुयानं स्यादूगुरावेवं विचिन्तयेत् ।
इत्थशाले लग्नधर्मपत्यो-र्यात्रास्त्यचिन्तिता ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—मङ्गल वर्षेश होकर ३।९ स्थान में पाप से रहित और बलवान हो हो तो मार्ग (यात्रा) लाभ प्रद होती और चिरकाल पर्यन्त कार्य स्थिर रहता है। यदि सूर्य वर्षेश होकर ३।९ में होकर कम्बूल योग करता हो तो मार्ग सुखप्रद होता है, यदि वह (सूर्य) अधिकारी न हो तो दूसरे के भेजने से उसकी यात्रा होती है। तथा शुक्र वर्षेश होकर ३।९ में हो तो मार्ग में सुख, यदि वक्र वा अस्त हो तो यात्रा ठीक नहीं होती है। इस प्रकार बुध वर्षेश होकर ३।९ में हो तो देव दर्शनार्थ यात्रा होती है। यदि शुक्र वा बुध पाप से पीड़ित हो तो कुयात्रा होती है। इसी प्रकार बृहस्पति से भी फल समझना। यदि लग्नेश, और धर्मेश में इत्थशाल हो तो अचिन्तित यात्रा करनी पड़ती है॥ १-४॥

लग्नेशो धर्मपं यच्छेन् स्वं महश्चिन्तिताध्वदः।
एवं लग्नाब्दपोर्योगे मुथहाङ्गपयोरपि॥ ५॥

भा०—लग्नेश यदि धर्मेश को तेज देता हो (इत्थशाल करता हो) तो अभिलषित यात्रा होती है। इसी प्रकार लग्नेश वर्षेश, वा मुथहेश लग्नेश में इत्थशाल से भी समझना॥ ५॥

गुरुस्थाने कुजे धर्मे सद्यात्रा भृत्यवित्तदाः।
ज्ञस्थाने लग्नगो भौमो दृष्टः सद्यानसौख्यदः॥ ६॥
स्वस्थानगो वा बलवान् लग्नदर्शी सुयानदः।
जन्माधिकारी ज्ञो मन्दस्थाने क्रूरयुतो यदा॥ ७॥
पन्था रिपोर्झकटकाद्गुरुरध्वेन्दुजीवयोः।
धर्मे शनिर्नाधिकारी पन्थानमशुभं वदेत्॥ ८॥
इत्थं गुरौ दूरयात्रा नृपसङ्गस्ततो गुणः।
कुजेऽब्दपे नष्टबले स्वजनाद्दूरतो गतिः।
द्यूनेन्थिहा धर्म इन्दौ सबलेऽध्वा विदेशगः॥ ९॥

भा०—जन्मकालिक गुरु के स्थान में स्थित मङ्गल नवम भाव में हो तो यात्रा से नौकर तथा धन की प्राप्ति होती है। तथा जन्मकालिक बुध स्थानस्थ मङ्गल यदि वर्ष लग्न में हो और लग्नेश से दृष्ट हो तो यात्रा में सुखप्रद होता है। वा अपने स्थान में होकर बलवान् मङ्गल लग्न को देखै तौ भी सुखप्रद यात्रा होती है। जन्मकाल में अधिकारी बुध यदि शनि के स्थान में पापग्रह से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

युक्त हो तो शत्रु के कलह से यात्रा होती है। इस प्रकार चन्द्रमा और बृहस्पति हो तो लम्बी यात्रा होता है। यदि अधिकारहीन शनि नवम स्थान में हो तो अशुभ यात्रा होती है। इसी प्रकार गुरु अधिकारहीन होकर नवम भाव में हो तो दूर यात्रा में राजा से सङ्ग और धन लाभ होता है। यदि वर्षेश मङ्गल हीनबली हो तो भी दूरयात्रा होती है। वा इन्थिहा सप्तम में, सबल चन्द्रमा नवम भाव में हो तो विदेश की यात्रा होती है ॥ ६-९ ॥

वर्षेशो बलवान् पापायुतः केन्द्रेऽधिकारवान् ॥१०॥
अधिकारो गतिः संख्ये सेनापत्येपि वा वदेत् ।
एवं बुधे कुजे जीवयुतेऽर्कान्निर्गते पुनः ॥११॥
परसैन्योपरि गतिर्जयः ख्यातिसुखावहः ।
जीवान्नवमगे भौमे शुभा यात्रा नृणां भवेत् ॥१२॥

भा०—पाप से रहित बलवान् वर्षेश केन्द्र में हो वा पञ्चाधिकारी में कोई अधिकारी केन्द्र में हों तो संग्राम में गमन वा सेनापति का अधिकार होता है। इसी प्रकार बुध वा मङ्गल उदित हों और बृहस्पति से युत हों तो शत्रु की सेना पर यात्रा तथा विजय सुख होता है। बृहस्पति से नवम स्थान में मङ्गल हो तो शुभयात्रा होती है ॥ १०-१२ ॥

अथ दशम (राज, व्यापार) भावविचारः ।

सबलेऽब्दपतौ खस्थे राज्यार्थसुखकीर्तयः ।
स्थानान्तराप्तिरन्यस्मिन् केन्द्रे गृहसुखाप्तयः ॥ १ ॥
इत्थं बली रविर्भूस्थः पूर्वार्जितपदाप्तिकृत् ।
एकादशेऽस्मिन् सख्यं स्यान्नृपामात्यगणोत्तमैः ॥ २ ॥

भा०—सबल वर्षेश दशम भाव में हो तो राज्य, सुख, कीर्ति होती है। अन्य केन्द्र (१।४।७) में हो तो स्थानान्तर की प्राप्ति और गृह सुख का लाभ होता है। इस प्रकार बली रवि वर्षेश होकर चतुर्थ स्थान में हो तो पूर्व पद का लाभ होता है। यदि ११ भावमें हो तो राजा और मन्त्रीसे मैत्री होती है ॥१-२॥

रविस्थानेन्थिहा लग्ने खे वा राज्याप्तिसौख्यदा ।
नीचेऽर्कः पापसंयुक्तो भूपाद्बन्धवधं दिशेत् ॥ ३ ॥

भा०—जन्मकालिक रवि के स्थान में इन्थिहा लग्न में या १० में हो तो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राज्यसुख होता है। यदि सूर्य नीच में पापयुक्त हों तो राजा से बन्धन या मरण प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

सिंहे रविर्बली खस्थः स्थानलाभो नृपाश्रयः ।
स्थानान्तराधिकाराप्तिरिन्दुरारपदे बली ॥ ४ ॥

भा०—वलवान् सूर्य सिंह में दशम स्थान में हो तो राजाका आश्रय और स्थान का लाभ होता है। बली चन्द्र यदि मङ्गल के स्थान में हो तो स्थानान्तर का अधिकार होता है ॥ ४ ॥

खेश-लग्नेश-वर्षेशेत्थशाली राज्यदायकः ।
वर्षेशे राज्यसहमेऽर्केत्थशाले महानृपः ॥ ५ ॥

भा०—दशमेश, लग्नेश, वर्षेश में इत्थशाल हो तो राज्यदायक होता है। यदि वर्षेश राज्यसहम में हो और सूर्य से इत्थशाल हो तो महाराज होता है ॥५॥

शनिस्थाने कुजः पश्यन्मुथहां पापकर्मतः ।
नृपभीतिं वित्तनाशं दद्याद्दशमगो यदि ॥ ६ ॥
ईदृशे त्रिनवस्थेऽस्मिन् दग्धनष्टेऽघसञ्चयः ।
मन्दोऽब्दपोधिकारी त्रि-धर्मगो धर्मवृद्धिदः ॥ ७ ॥
तस्मिन् दग्धे विनष्टे च पापकृद्धर्मनिन्दकः ।
ईदृशे दृक्फलं सूर्ये गुरावित्थं नयार्थभाक् ॥ ८ ॥

भा०—जन्म कालिक शनि की राशि में मङ्गल वर्ष में दशम स्थान में हो और मुथहा को देखै तो पाप कर्म से राज दण्ड और धन नाश होता है। यदि वही मङ्गल ३। ९ स्थान में अस्त और हीन बली हो तो पाप की वृद्धि होती है। तथा शनि यदि वर्षेश वा अधिकारी होकर ३।९ में हो तो धर्मवृद्धि होती है। यदि वह (शनि) अस्त वा नीच में हो तो पाप करने वाला और धर्म निन्दक होता है। इसी प्रकार सूर्य का फल भी समझना। यदि इस प्रकार बृहस्पति हो तो नीति से धन होता है ॥ ६-७-८ ॥

तत्रस्था मुथहा पुण्यागमं पापं खलाश्रयात् ।
सूतौ खेशे रवौ खस्थे वर्षे मुथशिलं यदि ॥ ९ ॥
लग्नाधिपेन राज्याप्तिरुक्ता वीर्यानुमानतः ।
धर्मकर्माधिपौ दग्धौ धर्मराज्यक्षयावहौ ॥१०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—यदि उन (३।९) स्थान में मुथहा हो तो पुण्य लाभ, यदि पाप ग्रह युत हो तो पाप होता है। जन्म कालिक दशमेश होकर सूर्य यदि वर्षलग्न से दशम में हो और लग्नेश से मुथशील हो तो बल के अनुसार राज्य लाभ होता है। यदि धर्मेश वा कर्मेश अस्त नीचादि अशुभ स्थान में हो तो धर्म और कर्म का नाश समझना ॥९–१०॥

इति राज्यभावविचारः।

—०—

(११) एकादश (आय) भाव फल—

अब्दपे ज्ञेऽर्थगे लाभो वाणिज्याच्छुभदृग्युते।
सेन्थिहेऽस्मिँल्लग्नगते लाभः पठनलेखनात् ॥ १ ॥
अस्मिन् षष्ठाष्टान्त्यगते सक्रूरे नीचकर्मकृत्।
क्रूरेक्षणे न वा लाभोऽस्तङ्गते लिखनादितः ॥ २ ॥

भा०—शुभ ग्रह से दृष्ट युत वर्षेश होकर बुध धन भाव में हो तो वाणिज्य से लाभ, तथा इन्थिहा से युक्त बुध लग्न में हो तो लेख पाठ क्रिया से धन लाभ होता है। वही (बुध) यदि ६,८,१२ स्थान में पाप ग्रह युत हो तो नीच कर्म कारक होता है, उस पर यदि पाप की दृष्टि भी हो अथवा अस्त हो तो लेख आदि से लाभ नहीं होता है ॥१–२॥

जीवेऽब्दपे क्रूरहते लग्ने हानिर्भयं नृपात्।
अस्मिन्नधिकृते द्यूने व्यवहाराद्धनाप्तयः ॥ ३ ॥

भा०—बृहस्पति वर्षेश होकर पाप ग्रह से पीड़ित लग्न में हो तो राजा से भय और वही (गुरु) अधिकारी होकर सप्तम भाव में हो तो व्यवहार से धन लाभ होता है ॥३॥

लग्नायेशेत्थशाले स्याल्लाभः स्वजनगौरवम्।
सर्वेऽपि लाभे वित्ताप्त्यै सबला निर्बला न तु ॥ ४ ॥

भा०—लग्नेश और एकादशेश में इत्थशाल हो तो लाभ और अपने वर्गों में गौरव होता है। एकादश भाव में कोई भी ग्रह सबल हो तो लाभदायक होता है। किन्तु निर्बल ग्रह लाभदायक नहीं होता ॥४॥

सवीर्यो ज्ञः समुथहो लग्नेऽर्थसहमे शुभाः।
तदा निखातद्रव्यस्य लाभः पापदृशा न तु ॥ ५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—बली बुध मुथहा सहित लग्न में हो वा शुभ ग्रह अर्थ सहम में होकर लग्न में हो तो गाड़े हुए धन का लाभ होता है । पाप ग्रह की दृष्टि हो तो लाभ नहीं होता है ॥५॥

—०—

(१२) द्वादश (व्यय) भावफल—

लग्नाब्दपौ हतबलौ व्ययषण्मृतिस्थौ यद्राशिगौ तदनुसारफलं विचिन्त्यम् ।
षष्ठेऽब्दपे भृगुसुतेऽथ विनष्टवीर्ये दृष्टे खलैः क्षुतदृशाद्विपदर्क्षसंस्थे ॥१॥
भृत्यक्षतिस्तुरगहा चतुरङ्घ्रिभस्थेऽन्यस्मिन्नपीदमुदितं फलमब्दनाथे ।
खस्थे कुजे शशियुते तुरगादिनाशः स्याद्व्याकुलत्वमशुभोपहते व्यये वा॥२॥

भा०—लग्नेश और वर्षेश निर्बल होकर ६।८।१२ स्थान में (द्विपद आदि) जिस राशि में हो तदनुसार ही अशुभ फल समझना । यथा उदाहरण—निर्बल शुक्र वर्षेश होकर षष्ठ भाव में द्विपद राशि में हो तो नौकरों का नाश, यदि चतुष्पद राशि में हो तो घोड़े आदि चौपायों का नाश होता है । इसी प्रकार दूसरे वर्षेश से भी समझना । यदि चन्द्र सहित मङ्गल दशम स्थान में हो तो भी घोड़े आदि का नाश होता है, यदि पाप ग्रहों से युक्त व्यय भाव में हो तो व्याकुलता होती है ॥ १–२ ॥

षष्ठे रवौ खलहते चतुरङ्घ्रिभस्थे भृत्यैः समं कलिरथाष्टमरिःफगेऽपि ।
चन्द्रेऽब्दपे बलयुते रिपुरिःफसंस्थे भूवासनद्रुमजलाशयनिर्मितिश्च ॥३॥

भा०—पाप ग्रह से युक्त वर्षेश सूर्य यदि चतुष्पद राशिस्थ षष्ठ वा अष्टम, द्वादश में हो तो नौकरों से कलह होता है । यदि बली चन्द्रमा वर्षेश होकर ६।१२ स्थान में हो तो भूवास (ग्राम) द्रुम (वृक्ष) और जलाशय के निर्माण करने में व्यय होता है ॥ ३ ॥

स्वर्क्षोच्चगे कर्मणि सूर्यपुत्रे नैरुज्यमर्थाधिगमश्च जीवे ।
सूर्ये नृपाद्बाहुबलात्कुजेऽर्थो बुधे भिषग्ज्योतिषकाव्यशिल्पैः ॥ ४ ॥

भा०—अपनी राशि वा उच्च में होकर वर्षेश शनि वा बृहस्पति कर्म [१०] भाव में हो तो आरोग्य और द्रव्य लाभ होता है । और वर्षेश सूर्य यदि स्वोच्च राशिस्थ होकर १० में हो तो राजा से, मङ्गल हो तो बाहु बल से और बुध १० में हो तो वैद्यक ज्योतिष, काव्य शिल्प से धन लाभ होता है ॥ ४ ॥

मन्देऽब्दपे गतबले नैराश्यं दौःस्थ्यमादिशेत् ।
सूर्येऽब्दपे शशिस्थाने मन्देऽब्दजनुषोर्हते ॥५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्वकर्मसु वैफल्यं वक्रेऽस्ते च तथा पुनः ।
कर्मकर्मेशसहमनाथाः शनियुतेक्षिताः ॥६॥

भा०—शनि वर्षेश होकर निर्बल हो तो निराशता और दुःस्थिति कहना। यदि सूर्य वर्षेश हो तथा जन्म और वर्ष काल में निर्बल शनि जन्म कालीन चन्द्र स्थान में हो ... कर्म में विफलता, यदि वे वक्र वा अस्त हो तो भी कर्म में विफलता, ... भाव कर्म सहम और दोनों के स्वामी ये शनि से युत दृष्ट हो तो भी सब ... में विफलता समझना ॥ ५–६ ॥

षडष्टव्ययगेऽब्देशे कर्मेशे च बलोज्झिते ।
सूतावब्दे च न शुभं तत्राऽब्दे मृतिपे तथा ॥७॥

भा० - वर्षेश ६।८।१२ स्थान में हों और कर्मेश यदि जन्म और वर्ष काल में निर्बल हो तो उस वर्ष में शुभ नहीं होता है। इसी प्रकार अष्टमेश से भी फल समझना ॥ ७ ॥

यत्र भावे शुभफलो दुष्टो वा जन्मनि ग्रहः ।
वर्षे तद्भावगस्तादृक् तत्फलं यच्छति ध्रुवम् ॥८॥

भा० – जन्म समय जिस प्रकार के शुभ या अशुभ भाव में ग्रह हों वर्ष में यदि उसी भाव में हो तो उस फल को अवश्य देते हैं ॥ ८ ॥

ये जन्मनि स्युः सबला विवीर्या वर्षे शुभं प्राक्चरमे त्वनिष्टम् ।
दद्युर्विलोमं विपरीततायां तुल्यं फलं स्यादुभयत्र साम्ये ॥९॥

भा०—जो ग्रह जन्म में बली और वर्ष में निर्बल [अशुभ] हो तो वर्षारम्भ में शुभ और अन्त में अशुभ फल देता है। इस से उल्टा हो तो उल्टा फल [अर्थात् जन्म में निर्बल (अशुभ स्थान) में और वर्ष में बली (शुभ स्थानमें) हो तो आरम्भ में अशुभ और वर्षान्त में शुभ फल] देता है। अर्थात् दोनों समय अशुभ हो तो अशुभ, यदि दोनों समय शुभ हो तो शुभ फल देता है ॥९॥

श्रीगर्गान्वयभूषणं गणितविच्चिन्तामणिस्तत्सुतो-
ऽनन्तोऽनन्तमतिर्व्यधात्खलमतध्वस्त्यै जनुःपद्धतिम् ।
तत्सूनुः खलु नीलकण्ठविबुधो विद्वच्छिवानुज्ञया
सत्तुष्ट्यै व्यदधाद्विवेचनमिदं भावेषु सत्ताजिकात् ॥१०॥

भा०—स्पष्टार्थ ॥१०॥

इति गूढार्थप्रकाशिकासहितनीलकण्ठ्यां भावफलाध्यायः ॥५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ दशाफलाध्यायः ॥ ६ ॥

सबल-लग्नदशमफल—

हेममुक्ताफलद्रव्यलाभमारोग्यमुत्तमम् ।
कुरुते स्वामिसन्मानं दशा लग्नस्य शोभना ॥ १ ॥

भा०—सबल लग्न की दशा में सुवर्ण-मोती आदि द्रव्य, फलादि का लाभ, आरोग्य और राजा से सम्मान होता है ॥ १ ॥

मध्यबल-लग्नदशाफल—

लाभं दृष्टेन वित्तस्य मानहीनस्य सेवनम् ।
मनसो विकृतिं कुर्याद्दशा लग्नस्य मध्यमा ॥ २ ॥

भा०—मध्यबल लग्न की दशा में संयोग से धन लाभ, मान हीन जन की नौकरी और मन में चिन्ता होती है ॥ २ ॥

अल्पबललग्नदशाफल—

विदेशगमनं क्लेशबुद्धिनाशं कदव्ययम् ।
मानहानिं करोत्येव कष्टा लग्नदशा फलम् ॥ ३ ॥

भा०—अल्पबल लग्न की दशा में विदेशगमन, कष्ट, बुद्धिनाश, व्यर्थ खर्च और अनादर होता है ॥ ३ ॥

क्रूरलग्नदशा मध्या सौख्यं स्वल्पं धनव्ययम् ।
अङ्गपीडां त्वपुष्टिं च कुरुते मृत्युविग्रहम् ॥ ४ ॥

भा०—निर्बल लग्नकी दशा में थोड़ा सुख, धन का व्यय, शरीर में कृशता, पीड़ा और मृत्यु भय होता है ॥ ४ ॥

पूर्णबल सूर्य दशाफल—

दशा रवेः पूर्णबलस्य लाभं गजाश्वहेमाम्बररत्नपूर्णम् ।
मानोदयं भूमिपतेर्ददाति यशश्च देवद्विजपूजनादेः ॥५॥

भा०—पूर्णबल रविकी दशा में हाथी घोड़े आदि सवारी, सुवर्ण वस्त्रादि का लाभ, राजा से आदर, देव ब्राह्मणों में श्रद्धा होती है ॥ ५ ॥

मध्यबल सूर्य दशाफल—

दशा रवेर्मध्यबलस्य पूर्वमिदं फलं मध्यममेव दत्ते ।
ग्रामाधिकारव्यवसायधैर्यैः कुलानुमानाच्च सुखादिलाभः ॥ ६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—मध्यबल सूर्य की दशा में पूर्वोक्त फल मध्यम होता है। अधिकार, व्यवसाय, और धैर्य से कुलानुसार सुखलाभ होता है ॥ ६ ॥

अल्पबल सूर्यदशाफल—

दशा रवेरल्पबलस्य पुंसां ददाति दुःखं स्वजनैर्विवादात् ।
मतिभ्रमं पित्तरुजं स्वतेजोविनाशनं धर्षणमप्यरिभ्यः ॥ ७ ॥

भा०—अल्पबल रवि की दशा में कष्ट और परिजनों में विवाद, मतिभ्रम, पित्तरोग, बल का ह्रास और शत्रु से संघर्ष होता है ॥ ७ ॥

नष्टबल सूर्य दशाफल—

दशा रवेर्नष्टबलस्य पुंसां नृपाद्रिपोर्वा भयमर्थनाशम् ।
स्त्रीपुत्रमित्रादिजनैर्विवादं करोति बुद्धिभ्रममामयं च ॥ ८ ॥

भा०—निर्बल सूर्य की दशा में राजा और शत्रु से भय, धन का नाश, स्त्री पुत्र मित्रादि से विवाद, मतिभ्रम और रोग का भय होता है ॥ ८ ॥

विशेष—

लग्नाद्रविः षट्त्रिदशायसंस्थो निन्द्योऽपि दत्ते शुभमर्धमेव ।
मध्यत्वमूनः शुभतां च मध्या यातीत्थमत्यन्तशुभः शुभः स्यात् ॥९॥

भा०—लग्न से ६,३,१०,११ स्थान में, नष्ट बल सूर्य हो तो आधा शुभ फल देता है। हीन बल सूर्य मध्य बली हो जाता है। मध्य बली हो तो शुभ हो जाता है, तथा पूर्ण बली सूर्य अत्यन्त शुभ हो जाता है। इसी प्रकार सब ग्रहों के स्थान विशेष में फल तारतम्य से कहे गये हैं। और सब स्पष्टार्थ है ॥ ९ ॥

पूर्णबल चन्द्रदशाफल—

इन्दोर्दशा पूर्णबलस्य दत्ते शुक्लाम्बरस्रङ्मणिमौक्तिकाद्यम् ।
स्त्रीसङ्गमं राज्यसुखं च भूमिलाभं यशःकान्तिबलाभिवृद्धिम् ॥१०॥

भा०—पूर्णबल चन्द्र की दशा में वस्त्र, मणि, मोती, आदि द्रव्य का लाभ, स्त्री और राज सुख, भूमिलाभ, यश, कान्ति, बलकी वृद्धि होती है ॥ १० ॥

मध्यबल चन्द्र दशाफल—

इन्दोर्दशा मध्यबलस्य सर्वमिदं फलं मध्यममेव दत्ते ।
वाणिज्यमित्राम्बरगेहसौख्यं धर्मे मतिं कृषणतोऽन्नलाभम् ॥११॥

भा०—मध्यबल चन्द्र की दशा में उपरोक्त फल मध्यम मान से होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाणिज्य, मित्र, वस्त्र और गृह सुख, धर्म में प्रेम, खेती से लाभ भी मध्यम मान से होता है ॥ ११ ॥

अल्पबल चन्द्र दशाफल—

इन्दोर्दशा स्वल्पबलस्य दत्ते कफामयं कान्तिविनाशमाहुः ।
मित्रादिवैरं जननं कुमार्या धर्मार्थनाशं सुखमल्पमत्र ॥१२॥

भा०—अल्पबल चन्द्र की दशा में कफ रोग, कान्ति-नाश, मित्र से शत्रुता, कन्या का जन्म, अर्थ धर्म की हानि और अल्प सुख होता है ॥ १२ ॥

नष्टबल चन्द्र दशाफल—

इन्दोर्दशा नष्टबलस्य लोकापवादभीतिं धनधर्मनाशम् ।
शीतामयं स्त्रीसुतमित्रवैरं दौःस्थ्यं च दत्ते विरसान्नभुक्तिम् ॥१३॥

भा०—नष्टबल चन्द्र की दशा में लोकापवाद भय, धन धर्म की हानि, शीत रोग, स्त्री पुत्र मित्र से वैर, चिन्ता और कदन्न भोजन प्राप्त होता है ॥१३॥

विशेष—

षष्ठाष्टमान्त्येतरराशिसंस्थो निन्द्योऽपि दत्तेऽर्धसुखं दशायाम् ।
मध्यत्वमूनः शुभतां च मध्यो यातीत्थमिन्दुः सुशुभः शुभः स्यात् ॥१४॥

भा०—यदि ६,८,१२ से भिन्न स्थान में चन्द्रमा हो तो निर्बल होने पर भी आधा फल, अल्प बली कुछ कम (३ चरण), मध्यबली शुभ हो जाता है और पूर्णबली हो तो पूर्ण शुभ फल देता है। अर्थात् ६, ८, १२ में हो तो शुभ भी अशुभ फल देता है ॥ १४ ॥

पूर्णबल मङ्गल दशाफल—

दशापतिः पूर्णबलो महीजः सेनापतित्वं तनुते नराणाम् ।
जयं रणे विद्रुमहेमरत्नवस्त्रादिलाभं प्रियसाहसत्वम् ॥ १५ ॥

भा०—पूर्णबल मङ्गल की दशा में सेनापतित्व, रण में विजय, रत्न, सुवर्ण, वस्त्र आदि का लाभ, साहस की वृद्धि होती है ॥ १५ ॥

मध्यबल मङ्गल दशाफल—

दशापतिर्मध्यबलो महीजः कुलानुमानेन धनं ददाति ।
राजाधिकारोऽप्यथ तत्परत्वं तेजस्विता कान्तिबलाभिवृद्धिम् ॥१६॥

भा०—मध्यबल मङ्गल की दशा में कुलानुसार धन का लाभ, राज्यादि अधिकार, कार्य में तत्परता, देह में कान्ति और बल की वृद्धि होती है ॥ १६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अल्पबल मङ्गल दशाफल—

दशापतिः स्वल्पबलो महीजो ददाति पित्तोष्णरुजं शरीरे ।
रिपोर्भयं बन्धनमास्यतोऽसृक्स्रवं च वैरं स्वजनैश्च शश्वत् ॥ १७॥

भा०—अल्पबल मङ्गल की दशा में पित्त रोग, शत्रु का भय, बन्धन, मुख से रुधिर-स्राव, परिवार में विवाद होता है ॥ १७ ॥

नष्टबल मङ्गल दशाफल—

दशापतिर्नष्टबलो महीजो विवादमुग्रं जनयेद्रणं वा ।
चौराद्भयं रक्तरुजं ज्वरं च विपत्तिमन्यस्वहृतिं च खर्जूम् ॥१८॥

भा०—नष्टबल मङ्गल की दशा में लोगों से विवाद, कलह, चोर-भय, शोणित के विकार से रोग, ज्वर, विपत्ति, दूसरे का धन अपहरण करना और खुजली होती है ॥ १८ ॥

विशेष—

त्रिषडायगतो भौमो नष्टवीर्यः शुभार्धदः ।
मध्यो हीनः शुभो मध्यः शुभोऽत्यन्तं शुभावहः ॥ १९ ॥

भा०—यदि ३, ६, ११ भाव में हो तो नष्टबल मङ्गल भी आधा शुभ फल, अल्पबली ३ चरण, मध्यबली शुभ और पूर्णबली अत्यन्त शुभ हो जाता है ॥१९॥

पूर्णबल बुध दशाफल—

दशापतिः पूर्णबलो बुधश्चेद्यशोऽभिवृद्धिं गणितात्सुशिल्पात् ।
तनोति सेवां सफलां नृपादेर्दौत्यं च वैदूष्यगणोदयं च ॥२०॥

भा०—पूर्णबली बुध की दशा में यश की वृद्धि, गणित तथा शिल्प से लाभ, राजादि की सेवा में सफलता और चतुरता में वृद्धि होती है ॥ २० ॥

मध्यबल बुध दशाफल—

दशापतिर्मध्यबलो बुधश्चेद् गुरोः सुहृद्भ्यो लिपिकाव्यशिल्पैः ।
धनाप्तिदायी सुतमित्रबन्धुसमागमान्मध्यममेव सौख्यम् ॥२१॥

भा०—मध्यबल बुध की दशा हो तो गुरु, मित्र, शिल्प, काव्य से धन लाभ, पुत्र मित्रादि से सुख मध्यममान से होता है ॥ २१ ॥

अल्पबल बुध दशाफल—

दशापतौ स्वल्पबले बुधे स्यान्मानस्य नाशः स्वजनापवादः ।
अकार्यकोपस्खलनाद्यनिष्टं धनव्ययं रोगभयं च विन्द्यात् ॥२२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—अल्पबल बुध की दशा में मान की हानि, लोगों में अपवाद, अकारण क्रोध, धन व्यय, रोग भय आदि अनिष्ट होता है ॥ २२ ॥

नष्टबल बुध दशाफल—

दशापतौ हीनबले बुधे स्यात् स्वबुद्धिदोषो वधबन्धभीतिः ।
दूरे गतिर्वातकफामयार्त्तिर्निखातवित्तस्य च नोपि लाभः ॥२३॥

भा०—निर्बल बुध की दशा में मति में भ्रम, बन्धन का भय, दूरगमन, वात कफ रोग से पीड़ा और रक्षित द्रव्य का भी लाभ नहीं होता है ॥२३॥

विशेष—

षडष्टान्त्येतरर्क्षस्थो नष्टो ज्ञोऽर्धशुभप्रदः ।
मध्यो हीनः शुभो मध्यः शुभोत्यन्तं शुभावहः ॥२४॥

भा०—यदि ६,८, १२ से भिन्न स्थान में बुध हो तो नष्टबल आधा शुभ, अल्प बल ३ चरण, मध्यबल शुभ और पूर्ण बल बुध हो तो अत्यन्त शुभ फल देता है ॥ २४ ॥

पूर्णबल गुरु दशाफल—

गुरोर्दशापूर्णबलस्य दत्ते मानोदयं राजसुहृद्गुरुभ्यः ।
कीर्त्यर्थलाभोपचयं सुखानि राज्यं सुताप्तिं रिपुरोगनाशम् ॥२५॥

भा०—पूर्णबल गुरु की दशा में राजा, मित्र, गुरुजनों में आदर, यश, धन की वृद्धि, अनेक सुख, राज्य, पुत्र की प्राप्ति और शत्रु तथा रोग का नाश होता है ॥ २५ ॥

मध्यबल गुरु दशाफल—

गुरोर्दशा मध्यबलस्य धर्मे मतिं सखित्वं नृपमन्त्रिवर्गैः ।
तनोति मानार्थसुखाभिलाभं सिद्धिं सदुत्साहबलातिरेकाम् ॥२६॥

भा०—मध्यबल गुरु की दशा में धर्म में बुद्धि, राजपुरुषों से मैत्री, मान; धन सुख का लाभ, उत्साह और बल की वृद्धि होती है ॥ २६ ॥

अल्पबल गुरु दशाफल—

दशा गुरोरल्पबलस्य दत्ते रोगं दरिद्रत्वमथारिभीतिम् ।
कर्णामयं धर्मधनप्रणाशं वैराग्यमर्थं च गुणं न किञ्चित् ॥ २७ ॥

भा०—अल्पबल गुरु की दशा में रोग, दारिद्र्य और शत्रु का भय,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कणरोग, धर्म, धन की हानि, वैराग्य होता, तथा किसी भी प्रकार के धन वा गुण का लाभ नहीं होता है ॥ २७ ॥

नष्टबल गुरु दशाफल—

गुरोर्दशा नष्टबलस्य पुंसां ददाति दुःखानि रुजं कफार्तिम् ।
कलत्रपुत्रस्वजनारिभीतिं धर्मार्थनाशं तनुपीडनं च ॥२८॥

भा०—नष्टबल गुरु की दशा में दुःख, कफ रोग, स्त्री-पुत्रादि परिजन से अनादर, धन धर्म की हानि और शरीर में पीड़ा होती है ॥ २८ ॥

विशेष—

षडष्टरिःफेतरगो गुरुर्नन्द्योर्धसत्फलः ।
मध्यो हीनः शुभो मध्यः शुभोऽत्यन्तं शुभावहः ॥२९॥

भा०—६, ८, १२ से भिन्न स्थान में गुरु हो तो नष्ट बल होने पर भी आधा शुभ फल, अल्पबली ३ चरण और मध्यबली पूर्ण शुभ तथा पूर्णबली हो तो अत्यन्त शुभदायक होता है ॥ २९ ॥

पूर्णबल शुक्र दशाफल—

दशा भृगोः पूर्णबलस्य सौख्यं सुगन्धहेमाम्बरकामिनीभ्यः ।
हयादिलाभः सुतकीर्तितोषा नैरुज्यगान्धर्वरतिः पदाप्तिः ॥३०॥

भा०—पूर्णबल शुक्र की दशा में, गन्ध-माला, सुवर्ण-वस्त्र, स्त्री से सुख, घोड़े आदि सवारी, यश, सन्तोष, आरोग्य, गाना बजाना में प्रेम और स्थान की प्राप्ति होती है ॥ ३० ॥

मध्यबल शुक्र दशाफल—

दशा भृगोर्मध्यबलस्य दत्ते वाणिज्यतोऽर्थागमनं कृषेश्च ।
मिष्टान्नपानाम्बरभोगलाभं तथा च योषित्सुतसौख्यलाभम् ॥३१॥

भा०—मध्यबली शुक्र की दशा में वाणिज्य और खेती से लाभ, उत्तम भोजन, वस्त्र, स्त्री पुत्रादि का सुख लाभ होता है ॥ ३१ ॥

अल्पबल शुक्र दशाफल—

दशा भृगोरल्पबलस्य दत्ते मतिभ्रमं ज्ञानयशोऽर्थनाशम् ।
कदन्नभोज्यं व्यसनामयार्तिं स्त्रीपक्षवैरं कलिमप्यरिभ्यः ॥३२॥

भा०—अल्पबल शुक्र की दशा में मतिभ्रम, ज्ञान यश और धन की हानि, कुभोजन, व्यसन, पीड़ा, स्त्री से वैर और शत्रु से भी कलह होता है ॥ ३२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नष्टबल शुक्र दशाफल—

दशा भृगोर्नष्टबलस्य दत्ते विदेशयानं स्वजनैर्विरोधम् ।
पुत्रार्थभार्याविपदो रुजश्च मतिभ्रमोऽपि व्यसनं महच्च ॥३३॥

भा०—नष्टबल शुक्र की दशा में विदेशगमन, परिजनों से विरोध, पुत्र, धन और स्त्री वर्ग में आपत्ति, रोग और मतिभ्रम होता है ॥ ३३ ॥

विशेष—

षडष्टरिःफेतरगो भृगुर्निन्द्योऽर्धसत्फलः ।
मध्यो हीनः शुभो मध्यः शुभोऽत्यन्तं शुभावहः ॥३४॥

भा०—६,८,१२ से भिन्न स्थान में शुक्र हो तो नष्टबल भी आधा शुभ, अल्पबल ३ चरण, मध्यबल पूर्ण शुभ और पूर्णबल अत्यन्त शुभप्रद होता है ॥३४॥

पूर्णबल शनि दशाफल—

दशा शनेः पूर्णबलस्य दत्ते नवीनवेश्माम्बरभूमिसौख्यम् ।
आरामतोयाश्रयनिर्मितिश्च म्लेच्छातिसङ्गान्नृपतेर्धनाप्तिः ॥३५॥

भा०—पूर्णबल शनि की दशा में नवीन गृह, वस्त्र भूमि से सुख, बगीचा, जलाशय का निर्माण, नीच जातियों के सङ्ग तथा राजा से धनलाभ होता है ॥३५

मध्यबल शनि दशाफल—

दशा शनेर्मध्यबलस्य दत्ते खरोष्ट्रपाखण्डजतो धनाप्तिम् ।
वृद्धाङ्गनासङ्गमदुर्गरक्षाऽधिकारचिन्ता-विरसान्नभोगः ॥३६॥

भा०—मध्यबल शनि की दशा में गदहे, ऊँट और पाखण्डपना से धनलाभ, वृद्धास्त्री का सङ्ग, दुर्ग की रक्षा, अधिकार की चिन्ता, और कुभोजन की प्राप्ति होती है ॥ ३६ ॥

अल्पबल शनि दशाफल—

दशा शनेः स्पल्पबलस्य पुंसां तनोति दुःखं रिपुतस्करेभ्यः ।
दारिद्र्यमात्मीयजनापवादं रोगं च शीतानिलकोपमुग्रम् ॥३७॥

भा०—अल्पबल शनि की दशा में शत्रु और चोर का भय, दरिद्रता, जन में अपवाद, कफ-वायु प्रकोप से रोग होता है ॥ ३७ ॥

नष्टबल शनि दशाफल—

दशा शनेर्नष्टबलस्य पुंसामनेकधातुव्यसनानि दत्ते ।
स्त्रीपुत्रमित्रस्वजनैर्विरोधं रोगाभिवृद्धिं मरणेन तुल्यम् ॥३८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—निर्बलशनि की दशा में कफादि अनेक धातु के प्रकोप से रोग, स्त्री-पुत्र-मित्र आदि से वैर, मरणतुल्य रोग का कष्ट होता है ॥ ३८ ॥

विशेष—

त्रिषष्ठलाभोपगतो मन्दो निन्द्योऽर्धसत्फलः ।
मध्यो हीनः शुभो मध्यः शुभोऽत्यन्तं शुभावहः ॥३९॥

भा०—३, ६, ११ में नष्टबल शनि हो तो आधा शुभफल, अल्पबल शनि ३ चरण, मध्यबल पूर्ण शुभ और पूर्णबल शनि अत्यधिक शुभफल देता है ॥३९॥

लग्न के फल में विशेष—

दशा तनोः स्वामिबलेन तुल्यं फलं ददातीत्यपरो विशेषः ।
चरे शुभा मध्यफलाऽधमा च द्विमूर्तिभेऽस्माद्विपरीतमूह्यम् ॥४०॥
अनिष्टमिष्टं च समं स्थिरर्क्षे क्रमाद्दृकाणैः फलमुक्तमाद्यैः ।
सत्स्वामियोगेक्षणतः शुभं स्यात्पापेक्षणात्कष्टफलं च वाच्यम् ॥४१॥

भा०—लग्नदशा के फल लग्न के स्वामी के बलानुसार समझना । और विशेष यह है कि चरराशि में प्रथम द्रेष्काण में शुभ, द्वितीय में मध्यम, तृतीय में अधमफल । तथा द्विस्वभावलग्न में प्रथम द्रेष्काण में अधम, द्वितीय मध्यम, तृतीय शुभ । तथा स्थिरराशि लग्न के प्रथम द्रेष्काण अशुभ, द्वितीय शुभ, तृतीय मध्यम समझना चाहिये । तथा शुभग्रह और स्वामी से युक्त दृष्टलग्न हो तो शुभ और पापग्रह से युक्त दृष्ट हो तो अशुभ दशाफल समझना ॥ ४०–४१ ॥

रव्यादि ग्रहों की दशा में शुभ अशुभ अन्तर्दशा—

चन्द्रारजीवाः सौम्येज्यशुक्रा रविविधू तथा ।
मन्देज्यशुक्राः सूर्येन्दुभौमाः सौम्येज्यसूर्यजाः ॥४२॥
जीवज्ञशुक्राः सूर्यादेः शुभा अन्तर्दशा इमाः ।
अन्येषामशुभा ज्ञेया इति वामनभाषितम् ॥४३॥

भा०—सूर्य की दशा में चन्द्र, मङ्गल, और बृहस्पति की अन्तर्दशा, शुभ होती है । एवं चन्द्र की दशा में बुध, बृहस्पति, शुक्र की अन्तर्दशा तथा मङ्गल की दशा में रवि, चन्द्रमा की, बुध की दशा में शनि, बृहस्पति, शुक्र की, गुरु की दशा में सूर्य, चन्द्र, मङ्गल की, शुक्र की दशा में बुध, गुरु, शनि की और शनि की दशा में गुरु, बुध, शुक्र की अन्तर्दशा शुभ होती है; शेष अन्तर्दशा अशुभ समझना ॥४२–४३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सामान्य रीति से लग्नादि द्वादश भावों में ग्रहों का शुभाशुभ फल—

उनमें प्रथम लग्नस्थ ग्रहों का फल—

सूर्यारमन्दास्तनुगा ज्वरार्तिं धनक्षयं पापयुगिन्दुरित्थम् ।
शुभान्वितः पुष्टतनुश्च सौख्यं जीवज्ञशुक्रा धनधान्यलाभम् ॥४४॥

भा०—लग्न में सूर्य, मङ्गल, शनि और क्षीणचन्द्रमा हो तो ज्वरपीड़ा और धनहानि होती है। गुरु, बुध और शुक्र लग्न में हों तो शरीरपुष्टि और धनलाभ आदि सुख होता है ॥ ४४ ॥

द्वितीय भावस्थ ग्रहों का फल—

चन्द्रज्ञजीवास्फुजितो धनस्था धनागमं राज्यसुखं च दद्युः ।
पापा धनस्था धनहानिदाः स्युर्नृपाढ्यं कार्यविघातमार्किः ॥४५॥

भा०—बुध, गुरु, शुक्र धन भाव में हो तो धनलाभ, राजसुख आदि शुभ फल और रवि, शनि, मङ्गल, द्वितीयभाव में अशुभफल देते हैं । २ पापग्रह हों चाहे शनिमात्र हो तो कार्यनाशक होते हैं ॥ ४५ ॥

तृतीय भावस्थ ग्रहों का फल—

दुश्चिक्यगाः खलखगाधनधर्मराज्यलाभप्रदा बलयुताः क्षितिलाभदाः स्युः ।
सौम्याः सुखार्थसुतमानयशोविलासलाभाय हर्षमतुलं किल तत्र चन्द्रः ॥४६॥

भा०—तृतीयभाव में पापग्रह हों तो धन, धर्म, राज्यलाभ होता है। यदि बलवान् पाप ग्रह हो तो भूमिलाभ होता है। शुभग्रह तृतीय भाव में हो तो सुख, पुत्र, धन, आदर, सुयश, विलास का लाभ होता है, उन में भी चन्द्रमा तृतीय-भाव में हो तो अत्यन्त हर्ष निश्चय होता है ॥ ४६ ॥

चतुर्थ भावस्थ ग्रहों का फल—

चन्द्रः सुखे खलयुतो व्यसनं रुजं च पुष्टः शुभेन सहितः सुखमातनोति ।
सौम्यः सुखं विविधमत्र खलाः सुखार्थनाशं रुजं व्यसनमप्यतुलं भयं च ॥४७॥

भा०—चतुर्थभाव में पापयुतचन्द्रमा हो तो कष्ट, रोग, तथा पूर्णचन्द्रमा शुभयुक्त हो तो सुख की वृद्धि होती है। शुभग्रह चतुर्थभाव में हो तो अनेक सुख और पापग्रह हो तो धन सुख का नाश और रोग, भय होता है ॥ ४७ ॥

पञ्चम भावस्थ ग्रहों का फल—

पुत्रवित्तसुखसञ्चयं शुभाः पुत्रगा भृगुसुतोऽतिहर्षदः ।
पुत्रवित्तधनबुद्धिहारकास्तस्करामयकलिप्रदाः खलाः ॥४८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—पञ्चम भाव में शुभग्रह हो तो पुत्र और धन की वृद्धि होती है। शुक्र विशेष कर आनन्दप्रद होते हैं। पञ्चम भाव में पापग्रह पुत्र, धन, बुद्धि की हानि करता है तथा चोर और रोग का भय, और कलहप्रद होता है ॥ ४८ ॥

षष्ठ भावस्थ ग्रहों का फल—

षष्ठे पापा वित्तलाभं सुखाप्तिं भौमोऽत्यन्तं हर्षदः शत्रुनाशम् ।
सौम्या भीतिं वित्तनाशं कलिं च चन्द्रो रोगं पापयुक्तः करोति ॥४९॥

भा०—षष्ठभाव में पापग्रह धन और सुखदायक होता है। मङ्गल विशेष हर्षप्रद और शत्रु का नाशकारक होता है। और शुभग्रह हो तो भय, धननाश, कलह होता है और पापयुक्त चन्द्रमा षष्ठभाव में हो तो रोगकारक होता है ॥४९॥

सप्तम भावस्थ ग्रहों का फल—

सपापः शशी सप्तमे व्याधिभीतिं खलाः स्त्रीविनाशं कलिं भृत्यभीतिम् ।
शुभाः कुर्वते वित्तलाभं सुखाप्तिं यशो राजमानोदयं बन्धुसौख्यम् ॥५०॥

भा०—सप्तमभाव में चन्द्रमा पापयुक्त हो तो व्याधिभय, केवल पाप ग्रह हो तो स्त्रीकष्ट, कलह और नौकरों से भय होता है। शुभ ग्रह हो तो धन, सुख, यश, राजा से आदर, और बन्धुओं का सुख होता है ॥ ५० ॥

अष्टम भावस्थ ग्रहों का फल—

चन्द्रोष्टमे निधनदः खलखेटयुक्तः पापाश्च तत्र मृतितुल्यफलं च दद्युः ।
सौम्याः स्वधातुवशतो रुजमर्थहानिं मानक्षयं मुथशिले शुभजे शुभञ्च ॥५१॥

भा०—अष्टमभाव में पापयुक्त चन्द्रमा मरणकारक और केवल पापग्रह मरण तुल्य कष्टदायक होता है। और शुभग्रह अपने धातु (कफ आदि) के विकार से रोगप्रद तथा धन मान का नाशकारक होता है। यदि शुभग्रहों से इत्थशाल योग हो तो शुभफल समझना ॥ ५१ ॥

नवम भावस्थ ग्रहों का फल—

तपसि सोदरभीः पशुपीडनं खलखगोऽतिमुदो रविरत्र चेत् ।
शुभखगा धनधर्मविवृद्धिदाः खगखगेऽपि शुभे त्वपरे जगुः ॥५२॥

भा०—नवमभाव में शनि, मङ्गल हो तो सहोदर से भय और पशुओं को कष्ट होता है। रवि नवमभाव में हो तो अत्यन्त हर्षदायक होता है। और शुभग्रह हो तो धन, धर्म की वृद्धि होती है, यदि शुभग्रह पापग्रह के साथ भी हो तो शुभ होता है ऐसे बहुत आचार्य कहते हैं ॥ ५२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशम भावस्थ ग्रहों का फल—

गगनगो रविजः पशुवित्तहा रविकुजौ व्यवसायपराक्रमौ।
धनसुखानि परे च धनात्मजाऽवनिपसङ्गसुखानि वितन्वते ॥५३॥

भा०— दशमभाव में शनि हो तो पशु और धन का नाशक, रवि मङ्गल हो तो व्यवसाय और पराक्रम की वृद्धि, और शुभग्रह हो तो धन, पुत्र, राजा से सुख प्राप्त होता है ॥ ५३ ॥

एकादश भावस्थ ग्रहों का फल—

लाभे धनोपचयसौख्ययशोऽभिवृद्धिं सन्मित्रसङ्गबलपुष्टिकराश्च सर्वे।
क्रूरा बलेनरहिताः सुतबित्तबुद्धिनाशं शुभास्तु तनुतां स्वफलस्य कुर्युः॥५४॥

भा०—एकादशभाव में सभी ग्रह धन सुख की वृद्धि, मित्र-सुख, शरीर में वलवृद्धिकारक होते हैं। परञ्च पापग्रह निर्बल हो तो पुत्र-धन और बुद्धि के हानिकारक तथा शुभग्रह निर्बल हो तो अल्प शुभफल देते हैं ॥ ५४ ॥

द्वादश भावस्थ ग्रहों का फल—

पापा व्यये नेत्ररुजं विवादं हानिं धनानां नृपतस्करादेः।
सौम्या व्ययं सद्व्यवहारमार्गे कुर्युः शनिर्हर्षविवृद्धिमत्र ॥५५॥

भा०—द्वादशभाव में पापग्रह हो तो नेत्रपीडा, विवाद, राजा और चोर से धन की हानि होती है। शुभग्रह हो तो सत्कार्य में व्यय होता है। परञ्च केवल शनि हो तो आनन्दसुखदायक होता है ॥५५॥

श्रीगर्गान्वयभूषणं गणितविच्चिन्तामणिस्तत्सुतो-
ऽनन्तोऽनन्तमतिर्व्यधात्खलमतिध्वस्त्यै जनुःपद्धतिम्।
तत्सूनुः खलु नीलकण्ठविबुधो विद्वच्छिवानुज्ञया
भावस्थग्रहपाकदौःस्थ्यसुखतायुक्तं फलं सोऽभ्यधात् ॥५६॥

भा०— स्पष्टार्थ ॥५६॥

इति गूढार्थप्रकाशिकासहित-नीलकण्ठ्यां भाव-फलाध्यायः ॥६॥

—०—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ मासदिनफलाध्यायः ॥७॥

मासेश के षडधिकारी—

मासप्रवेशकाले ज्ञो ग्रहान्भावांश्च साधयेत् ।
तत्र मासतनोर्नाथो मुथहाजन्मपस्तथा ॥ १ ॥
त्रिराशिपो दिननिशो रवीन्दुभपतिस्तथा ।
अब्दप्रवेशलग्नेश एषां वीर्याधिकस्तनुम् ॥ २ ॥
पश्यन्मासपतिर्ज्ञेयस्ततो वाच्यं शुभाशुभम् ।
अपरे मासलग्नेशं मासाधिपतिमूचिरे ॥ ३ ॥
दिनेशं दिनलग्नेशं तथा प्रोचुर्विचक्षणाः ।
मासघस्रेशयोर्वाच्यं फलं वर्षेशवद्बुधैः ॥ ४ ॥

भा०—पूर्वोक्त रीति से साधित मास काल में रव्यादिक स्पष्टग्रह और लग्नादि द्वादशभाव का साधन करना फिर मास लग्नेश १, मुथहेश २, जन्म लग्नेश ३, त्रिराशीश ४ तथा दिन में सूर्यराशीश, रात्रि में चन्द्र राशीश ५, और वर्ष लग्नेश ६, इन ६ अधिकारियों में जो सब से बली होकर लग्न को देखता हो वह मासेश होता है । उस पर से मास फल कहना । यहाँ भी बलादि समता में पूर्ववत् विचार करना । दूसरे आचार्य मास लग्नेश को ही मासेश और दिन लग्नेश को दिनेश कहते हैं । वर्षेश के समान ही मासेश और दिनेश का भी फल समझना चाहिये ॥ १–४ ॥

मास फल—

लग्नांशाधिपतिर्विलग्नपनवांशेशेन मैत्रीदृशा
दृष्टो वा सहितः शशी च यदि तौ मैत्रीदृशालोकते ।
तस्मिन्मासि तनौ सुखं बहुविधं नैरुज्यमित्थं फलं
तावद्यावदिमे स्युरित्थमथ तान्संचार्य वाच्यं फलम् ॥ ५ ॥

भा०—मास लग्न का नवांशपति यदि लग्नेश के नवांशपति से मैत्रीदृष्टि से देखा जाता हो वा युक्त हो तथा इन दोनों को चन्द्रमा मैत्रीदृष्टि से देखता हो तो उस महीने में तब तक शरीरादि का सुख कहना । जब तक ऐसा योग रहै । फिर चारवश शुभ या अशुभ फल समझना ॥ ५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यथा--

तौ चेच्छत्रुदृशा मिथश्च शशिना दृष्टौ मनोदुःखदौ
रोगाधिक्यकरौ च कश्चिदनयोर्नीचोऽस्तगो वा यदि ।
कष्टात्सौख्यमिह द्वयं यदि पुनर्नीचास्तगं स्यान्मृतिः
सूत्यब्दोद्भवरिष्टतो मृतिसमं स्यादन्यथेत्यूचिरे ॥ ६ ॥

भा० --वे दोनों (लग्नांशस्वामी और लग्नेशनवांशस्वामी) परस्पर शत्रु-दृष्टि से दृष्टयुत हो और चन्द्रमा भी शत्रुदृष्टि से दोनों को देखै तो तब तक उस महीने में मनोदुःख आदि अशुभफल समझना । इन दोनों में यदि एक अस्त वा नीच में हो तो कष्ट से किञ्चित् सुख, यदि दोनों अस्त नीच में हो और जन्मकाल तथा वर्षकाल में अरिष्ट योग हो तो मरण, अन्यथा (अर्थात् अरिष्ट योग न हो तो) मरण तुल्य कष्ट कहना ॥ ६ ॥

इसी प्रकार सब भावों का शुभाशुभ फल कहने का प्रकार--

भावांशाधिपतिः स्वभावपनवांशेशेन मैत्रीदृशा
दृष्टो वा सहितः शशी च यदि तौ मैत्रीदृशालोकते ।
तद्भावोत्थसुखं विलोक्यमथ तद्व्यत्यासतः कीर्तितं
नीचास्तादिफलं च लग्नवदिदं विद्वद्भिरूह्यं धिया ॥ ७ ॥

भा०—इसी प्रकार जिस भाव का नवांशपति और भावेश का नवांशपति परस्पर मित्रदृष्टि से दृष्ट हो और दोनों चन्द्रमा से भी दृष्ट हो तो उस भाव का शुभफल कहना । इससे विपरीत में अशुभ समझना । और अस्त नीचादि स्थिति से लग्न के समान ही सब भावों में समझना चाहिये ॥ ७ ॥

लग्नेश-मासेश-समेश्वरांशनाथा यदंशाधिपमित्रदृष्ट्या ।
दृष्टा युता वा शशिना च तत्तद्भावोत्थसौख्याय न चेदनिष्टम् ॥ ८ ॥

भा०—लग्नेश, मासेश, वर्षेश इनके नवांशस्वामी जिस भाव के नवांश-पतिद्वारा दृष्टयुत होकर चन्द्रमा से भी दृष्टयुत हो तो उस भाव का शुभ, अन्यथा अशुभ समझना ॥ ८ ॥

विशेष—

निर्बला व्ययषष्ठाष्टांशपाः सत्फलदायकाः ।
अन्ये सवीर्याः शुभदा व्यत्यये व्यत्ययः स्मृतः ॥ ९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०--१२, ६, ८ इन भावों के नवांशस्वामी निर्बल हो तो शुभ, तथा अन्य भावों के नवांशस्वामी सबल हो तो शुभफल, अन्यथा अशुभ समझना ॥

लग्नेश-मासेश-समेश-मुन्थाधीशाः षडष्टोपगताः सपापाः ।
दृष्टाः खलैः शत्रुदृशाऽत्र मासे व्याध्यादिविद्विड्भयदुःखदाः स्युः ॥१०॥
केन्द्रत्रिकोणायगतास्तु लग्नमासाब्दपा वीर्ययुता नराणाम् ।
नैरुज्य-शत्रुक्षय-राज्यलाभमानोदयात्यद्भुतकीर्तिदाः स्युः ॥११॥

भा०—लग्नेश, मासेश, वर्षेश, मुन्थेश आदि ६, ८, १२ स्थान में पापग्रहों से शत्रुदृष्टि से देखे जाते हों तो उस मास में रोग और शत्रुभय होता है। यदि वेही केन्द्रत्रिकोण में हो तो नैरुज्य, राज्यलाभादि शुभ फल होता है ॥१०-११॥

अन्याचार्य का मत और उसका खण्डन—

इन्थिहालग्नयो राशियों बली तत्र हद्दपाः ।
दशेशाः स्वांशतुल्याहैरित्युक्तं कैश्चिदागमात् ॥१२॥
रवीन्द्वोरसमावेशान्नैतद्युक्तं परे जगुः ।
दशान्तरदशाच्छेदे फलमाब्दं तु युज्यते ॥१३॥

भा०—मुथहा और मासलग्न की राशियों में जो बली हो उसमें क्रम से जो हद्दाधिप पठित हैं वे ही क्रम से मास में दशाधिप होते हैं। परञ्च हद्दाधिपति में सूर्य और चन्द्रमा का समावेश नहीं है, इसलिये बहुत से लोग इसको युक्त नहीं मानते हैं। अतः मासदशा अन्तर्दशा में वर्षोक्त रीति से ही फल विचार उपयुक्त है ॥ १२-१३ ॥

अथ दिनेश फल—

दिनप्रवेशकालेऽपि खेटान्भावांश्च साधयेत् ।
चन्द्रलग्नांशकाभ्यां तु फलं तत्र वदेद्बुधः ॥१४॥

भा०—दिनप्रवेशकाल में भी ग्रह, भावों का साधन कर चन्द्रमा और लग्न के नवांश से शुभाशुभफल कहना चाहिये ॥ १४ ॥

दिनेश का निर्णय और फल—

चतुष्कमिन्थिहेशादिदिनमासाऽब्दलग्नपाः ।
एषां बली तनुं पश्यन्दिनेशः परिकीर्तितः ॥१५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिकोणकेन्द्रायगताः शुभाश्चेच्चन्द्रात्तनोर्वा बलिनः खलास्तु।
षट्त्र्यायगास्तत्र दिने सुखानि विलासमानार्थयशोयुतानि ॥१६॥
षडष्टरिःफोपगता दिनाऽब्दमासेन्थिहेशाः खलखेटयुक्ताः।
गदप्रदा मानयशोहराश्च केन्द्रत्रिकोणायगताः सुखाप्त्यै ॥१७॥

भा०—मुथहेथ आदि ४ (मुथहेश, जन्मलग्नेश, त्रिराशिपति, और चौथा सूर्यराशीश या चन्द्रराशीश) तथा दिनलग्नेश ५, मासलग्नेश ६, वर्षलग्नेश ७ इन सातों में जो बली होकर लग्न को देखता हो वह पूर्वोक्त प्रकार से दिनपति होता है। दिनफल "त्रिकोणकेन्द्रायगताः" इत्यादि स्पष्टार्थ है॥ १५-१७॥

दिन के शुभाशुभ फल—

लग्नांशकः सौम्यखगैः समेतो दृष्टोऽपि वा मित्रदृशेन्दुनाऽपि।
नैरुज्यराज्यादिशरीरपुष्टिर्मासोक्तिवद्दुःखमतोऽन्यथात्वे ॥१८॥

भा०—दिनप्रवेशकालिक लग्ननवांश यदि शुभग्रहों से युत दृष्ट हो और मित्रदृष्टि से चन्द्रमा से भी दृष्ट हो तो नैरुज्य आदि शुभफल, अन्यथा अशुभफल समझना॥ १८॥

प्रतिदिन प्रत्येक भाव सम्बन्धी शुभाशुभ समझने का प्रकार—

यदंशपः सौम्ययुतेक्षितो वा स्निग्धेक्षणाद्भावजसौख्यकृत्सः।
दुःखप्रदः प्रोक्तवदन्यथात्वे सर्वेषु भावेष्वियमेव रीतिः॥१९॥

भा०—एवं धन आदि जिस भाव का नवांशपति मित्रदृष्टिद्वारा शुभग्रह से दृष्ट वा युत हो तो उस भाव सम्बन्धी फल शुभ, और पाप से युत हो तो अशुभ फल होता है॥ १९॥

विशेष—

षष्ठांशकः सौम्ययुतो रोगदः पापयुक् शुभः।
व्ययांशे शुभयुग्दृष्टे सद्व्ययः पापतस्त्वसत् ॥२०॥
जायांशः सौम्ययुग्दृष्टः स्वस्त्रीसौख्यविलासकृत्।
पापैर्गृहकलिर्दुःखं पापान्तःस्थे मृतिं वदेत् ॥२१॥
शुभमध्यस्थिते स्त्र्यंशे बहुलं कामिनीसुखम्।
स्वस्यां रतिर्गुरावन्यखगेऽन्यासु रतिं वदेत् ॥२२॥

२०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—षष्ठभाव का नवांश शुभग्रह से युत हो तो रोगकारक, और पापयुत हो तो शुभ होता है । तथा व्ययभाव का नवांश शुभयुक्त हो तो सद्व्यय, पापयुक्त हो तो असद्व्यय होता है। सप्तमभावांश शुभयुत दृष्ट हो तो स्त्रीसुख, पापयुत हो तो कलह, तथा दो पाप के मध्य में हो तो मरण, तथा शुभग्रह के मध्य में हो तो बहुत सुख होता है। यदि सप्तम भाव के नवांश में गुरु हो तो स्वस्त्री में, दूसरा ग्रह हो तो परस्त्री में प्रेम कहना ॥२०-२२॥

मृत्यंशे मृत्युगैः सौम्यैर्युग्दृष्टे मरणं रणे ।
मिश्रैर्मिश्रं खलैः सौख्यं वर्षलग्नानुसारतः ॥२३॥

भा०—अष्टमभाव का नवांश अष्टमस्थशुभग्रह से युत दृष्ट हो तो रण में मरण, और मिश्रग्रह से मिश्रफल और पापग्रह से सुख इस प्रकार वर्ष लग्न के अनुसार समझना चाहिए ॥२३॥

द्विर्द्वादशे खला हानिं व्यये सौम्याः शुभव्ययम् ।
कर्तरी पापजा रोगं करोति शुभजा शुभम् ॥२४॥

भा०—लग्न से २,१२ दोनों में ग्रह हो तो कर्तरी होती है। यदि पापग्रह से कर्तरी हो तो हानि और रोग, तथा शुभग्रह से हो तो सद्व्यय और शुभफल होता है ॥२४॥

चन्द्रमा का अनिष्ट फल—

लग्नेऽष्टमे वा क्षीणेन्दुर्मृत्युदः पापदृग्युतः ।
रोगो वा ग्रहणं वाऽपि रिपुतः शत्रुभीरपि ॥२५॥

भा०—क्षीणचन्द्रमा पापग्रह से दृष्ट या युत होकर लग्न वा अष्टम में हो तो मृत्यु, वा रोग, वा शत्रु से हानि और भय होता है ॥२५॥

चन्द्रे सभौमे निधनारिसंस्थे नृणां भयं शस्त्रकृतं रिपोर्वा ।
पापैः सुखस्थैः पतनं गजाश्वयानात्तनौ स्याद्बहुला च पीडा ॥२६॥

भा०—मङ्गलसहित चन्द्रमा ६,८ भाव में हो तो शत्रु से शस्त्र भय, तथा चतुर्थभाव में पापग्रह हो तो सवारी पर से पतन, और लग्न में पापग्रह हो तो शरीर में पीड़ा होती है ॥२६॥

सप्तम, द्वितीय और नवम स्थानस्थित शुभग्रह का शुभफल—

शुभा द्यूने विजयदा द्यूतादर्थे सुखावहाः ।
नवमे धर्मभाग्यार्थराजगौरवकीर्तिदाः ॥२७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—सप्तम भाव में शुभग्रह विजयप्रद, धन भाव में सुखप्रद तथा नवम-भाव में धर्म, भाग्य, धन, राजा से आदर और यश के वर्धक होते हैं ॥२७॥

दिन प्रवेश में चन्द्रमा के अवस्थानुसार फल समझना—

दिनप्रवेशेऽस्ति विधुरवस्थायां तु यादृशि ।
तदवस्थातुल्यमसौ फलं दत्ते न संशयः ॥२८॥

भा०—दिन प्रवेश के समय चन्द्रमा जिस अवस्था में रहता है तदनुसार ही फल भी देता है ॥२८॥

चन्द्रावस्था के नाम (क्षेपक)—

"प्रवास–नाशौ मरणं जयश्च हास्यारतिः क्रीडितसुप्तभुक्ताः ।
ज्वराख्य–कम्पस्थिरता अवस्था मेषात् क्रमान्नामसदृक्फलाः स्युः ॥ स्पष्टार्थं ॥

चन्द्रावस्था साधन प्रकार—

विहाय राशिं चन्द्रस्य भागा द्विघ्नाः शरोद्धृताः ।
लब्धं गताः अवस्थाः स्युर्भोग्यायाः फलमादिशेत् ॥२९॥

भा०—स्पष्ट चन्द्रमा की राशियों को छोड़कर केवल अंशादिकों को २ से गुनाकर ५ का भाग देकर लब्धि गत अवस्था होती है, उससे आगे की वर्तमान अवस्था का फल कहना ॥२९॥

अवस्थाओं के फल—

प्रवासः प्रवासोपगे रात्रिनाथेऽर्थनाशस्तु नष्टोपगे मृत्युभीतिः ।
मृतावस्थिते स्याज्जयायां जयस्तु विलासस्तु हास्योपगे कामिनीभिः ॥३०॥
रतौ स्याद्रतिः क्रीडिता सौख्यदात्री प्रसुप्ताऽपि निद्रा कलिं देहपीडाम् ।
भयं तापहानी सुखं स्यात्तु भुक्ताज्वराकम्पितासुस्थिरासु क्रमेण ॥३१॥

भा०—(१) प्रवास अवस्था में प्रवास, (२) नाश अवस्था में धननाश (३) मरणावस्था में मृत्युभय, (४) जयावस्था में जय, (५) हास्यावस्था में विलास, (६) रति अवस्था में स्त्री सुख, (७) क्रीडितावस्था में क्रीड़ा, (८) सुप्तावस्था में निद्रा, (९) भुक्तावस्था में भय, (१०) ज्वरावस्था में ताप, (११) कम्प में हानि, (१२) स्थिरतावस्था में सुख समझना ॥३०-३१॥

उदा०—चन्द्रमा २।९।१५।२० इसके अंशादि ९।१५।२० को २ से गुनाकर १८।३०।४० इसमें ५ का भाग देने से लब्ध ३ तृतीय गत अवस्था, चतुर्थ वर्तमान जयावस्था शुभ हुई ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजा का आखेट (शिकार खेलना)—

सवीर्यौ कुजज्ञौ नृपाखेटसिद्ध्यै न सिद्धिर्यदा वीर्यहीनाविमौ स्तः ।
जलाखेटमाहुः सवीर्यैर्ग्रहर्क्षैर्जलस्थैर्नगास्थैर्नगाखेटमाहुः ॥३२॥

लग्नास्तनाथौ केन्द्रस्थौ निर्बलौ क्लेशदायिनी ।
मृगयोक्ता, शुभफला वीर्याढ्यौ यदि तौ पुनः ॥३३॥

भा०—यदि मङ्गल और बुध बली हो तो आखेट (शिकार) की सिद्धि होती है, निर्वल हो तो नहीं । यदि सबल जलचर राशि हो तो जल का आखेट तथा पर्वत या वनचर राशि सबल हो तो जंगल का आखेट सिद्ध होता है। तथा दिन प्रवेश कालिक लग्नेश और सप्तमेश वली हो तो शिकार से सुख, निर्वल हो तो दुःख होता है ॥३२-३३॥

भोजन विचार—

लग्नाधिपो भोज्यदाता सुखेशो भोज्यमीरितम् ।
बुभुक्षा मदपः कर्मपतिर्भोक्तेति चिन्तयेत् ॥३४॥

भा०—लग्नेश भोजनदाता, चतुर्थेश भोज्य, सप्तमेश बुभुक्षा (क्षुधा= भूख), और दशमेश भोक्ता (खाने वाला) है । इन ग्रहों के शुभाशुभवश इन सबों का शुभाशुभ जानना चाहिये ॥३४॥ यथा—

लग्ने मदे च सत्खेटयुतदृष्टे सुभोजनम् ।
जीवे लग्ने सिते वाऽपि सुभोज्यं दुःस्थितावपि ॥३५॥

भा०—उदा०—जैसे लग्न और सप्तम में शुभ ग्रह हो तो भोजन दाता, और क्षुधा इन दोनों स्थान के शुभ होने से उस दिन सुभोजन मिलेगा ऐसा समझना । यदि लग्न में बृहस्पति हो तो घर में अन्न के अभाव में भी सुभोजन प्राप्त होता है ॥३५॥

मन्दे तमसि वा लग्ने सूर्येणाऽऽलोकिते युते ।
लभ्यते भोजनं नाऽत्र शस्त्रभीतिस्तदा क्वचित् ॥३६॥

रविदृष्टं युतं वापि लग्नं न यदि तत्र हि ।
उपवासस्तदा वाच्यो नक्तं वा विरसाशनम् ॥३७॥

भा०—दिन प्रवेशकालिक लग्न में शनि या राहु सूर्य से युत दृष्ट हो तो उस दिन भोजन नहीं मिलता है, तथा चोट लगने की सम्भावना रहती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि लग्नगत शनि राहु पर सूर्य की दृष्टि या युति न हो तो भी उपवास या रात्रि में नीरस भोजन मिलता है ॥३६-३७॥

चन्द्रे कर्मगते भोज्यमुष्णं शीतं सुखे कुजे ।
तुर्ये खेटस्य वसतो भोज्यान्ने रसमादिशेत् ॥३८॥

भा०—दशम भाव में चन्द्रमा हो तो उष्ण, तथा चतुर्थ भाव में मङ्गल हो तो शीतल (ठण्डा) भोजन मिलता है । चतुर्थ भाव ग्रहयुक्त हो तो सरस भोजन मिलता है ॥३८॥

स्निग्धमन्नं सिते तुर्ये तैलसंस्कृतमर्कजे ।
नीचोपगे कदशनं विरसं न च संस्कृतम् ॥३९॥

भा०—चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो दुग्ध घृतयुक्त, शनि हो तो तैलपक्व, तथा नीच का ग्रह हो तो नीरस और खराब भोजन मिलता है ॥३९॥

भोजन के स्थान—

सूर्यादिभिर्लग्नगतैः सवीर्यै राजादिगेहे भुजिमामनन्ति ।
सुखे सुखेशे सबले सुभोज्यं चरादिकं स्यादसकृत्सकृद्द्विः ॥४०॥

भा०—सूर्यादि ग्रहबली होकर लग्न में हो तो राजगृह में भोजन, चतुर्थेश चतुर्थ में हो तो सुभोजन, चर राशिलग्न हो तो अनेक बार, स्थिर राशि हो तो एकबार, द्विस्वभाव हो तो दो बार, भोजन कहना ॥४०॥

मूलत्रिकोणगे खेटे लग्ने पितृगृहेऽशनम् ।
मित्रालये मित्रभस्थे शत्रुगेहेऽरिगेहगे ॥ ४१ ॥
शुभेक्षितयुते लग्ने बलाढ्ये स्वगृहे भुजिः ।
गृहराशित्वभावेन यत्नादन्यत्र चिन्तयेत् ॥ ४२ ॥

भा०—लग्न स्थित ग्रह अपने मूल त्रिकोण में हो तो पिता के घर में, मित्र राशि में हो तो मित्र के घर में शत्रुराशि में हो तो शत्रु के घर में, और अपने गृह में हो तथा शुभग्रह से दृष्टयुत हो तो अपने घर में भोजन होता है । अन्य राशियोंमें राशियोंके स्वाभावानुसार यत्नसे भोजन प्राप्त होता है ॥४१-४२॥

तिलान्नमर्के हिमगौ सुतण्डुला भौमे मसूराश्चणकाश्च भोज्यम् ।
बुधे समुद्गाः खलु राजमाषा गुरौ सगोधूमभुजिः सवीर्ये ॥ ४३ ॥

भा०—सूर्य बली हो तो तिल, चन्द्रमा बली हो तो चावल, मङ्गल बली

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो तो मसूर, चना, बुध बली हो तो मूँग, उड़द और गुरू बली हो तो गेहूँ भोजन में प्राप्त होता है ॥ ४३ ॥

शुक्रे यवा वाजरिकाः सवीर्ये शनौ कुलित्थादिसमाषमन्नम् ।
भोज्यं तृणान्नं शिखिराहुवीर्याच्छुभेक्षणालोकनतः सहर्षम् ॥ ४४ ॥

भा०—शुक्र बली हो तो जौ, बाजरा और शनि बली हो तो कुलथी, माष तथा राहु केतु बली हो तो तृणोत्पन्न अन्न भोजन में प्राप्त होता है ॥ ४४ ॥

सूर्ये मूलं पुष्पमिन्दौ कुजे स्यात्पत्रं शाखा चापि शाकं सवीर्ये ।
शुक्रेज्यज्ञैर्व्यञ्जनं भूरिभेदं मन्देनेत्थं सामिषं राहुकेत्वोः ॥ ४५ ॥

भा०—मङ्गल बली हो तो मूली, चन्द्र बली हो तो फूल, मङ्गल बली हो तो साग, पात तथा बुध, गुरु, शुक्र बली हो तो अनेक प्रकार के और शनि, राहु केतु बली हो तो मत्स्य, मांस का व्यञ्जन (तरकारी) भोजन में प्राप्त होता है ॥ ४५ ॥

स्वप्न विचार—

लग्नांशगेऽर्के तनुगेऽपि वाऽस्मिन् दुःस्वप्नमीक्षेत यथार्कबिम्बम् ।
रक्ताम्बरं वह्निमथापि चन्द्रे शुभ्राश्वरत्नाम्बरपुष्पवज्रम् ॥ ४६ ॥

स्त्रियः सुरूपाश्च कुजे सुवर्णरक्ताम्बरस्रङ्मणिविद्रुमाणि ।
बुधे हयस्वर्गतिधर्मवार्ता गुरौ रतिर्धर्मकथा सुरेक्षा ॥ ४७ ॥

भा०—लग्न के नवांश या लग्न में सूर्य हो तो सूर्यबिम्ब, रक्त वस्त्र अग्नि आदि दुःस्वप्न देखने में आता है। चन्द्रमा हो तो स्वच्छ वस्त्र, श्वेत घोड़ा, रत्न, श्वेत पुष्प, सुन्दरी स्त्री, तथा मङ्गल हो तो सोना, रक्त वस्त्र, माला मणि, मूँगा, और बुध हो तो घोड़ा, स्वर्ग जाना, धर्म की बात, तथा गुरु हो तो रति, धर्मकथा, देवदर्शन आदि सुस्वप्न देखने में आता है ॥ ४७ ॥

सद्बन्धुसंगश्च सिते जलानां पारे गतिर्देवरतिर्विलासः ।
शनावरण्याद्रिगतिश्च नीचैः सङ्गश्च राहौ शिखिनीत्थमेव ॥४८॥

भा०—लग्न में शुक्र हो तो मित्र का समागम, जल में तैरना, देवदर्शन, विलास और शनि हो तो वन या पर्वत में जाना, नीचों की सङ्गति स्वप्न देखने में आता है। राहु केतु से भी शनि के समान ही स्वप्न देखने में आता है ॥

सहजधीमदनायरिपुस्थितो यदि शशी गुरुभानुसितेक्षितः ।
नवमकेन्द्रगते तु शुभग्रहे स्वबलया मनुजो रमते तदा ॥ ४९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०-दिन प्रवेश लग्न से ३, ५, ७, ११, ६, में चन्द्रमा हो और गुरु, रवि, शुक्र से, दृष्ट हो अथवा नवम और केन्द्र में शुभग्रह हो तो स्वप्न में सुन्दरी स्त्रियों का समागम होता है ॥ ४९ ॥

आसीदसीमगुणमण्डितपण्डिताग्र्यो व्याख्यद् भुजङ्गपगवीः श्रुतिवित्सुवृत्तः।
साहित्यरीतिनिपुणो गणितागमज्ञश्चिन्तामणिर्विपुलगर्गकुलावतंसः ॥५०॥
तदात्मजोऽनन्तगुणोऽस्त्यनन्तो योऽधोक्सदुक्तिं किल कामधेनुम्।
सत्तुष्टये जातकपद्धतिं च न्यरूपयद्दुष्टमतं निरस्य ॥५१॥
पद्माम्बयासावि ततो विपश्चित्श्रीनीलकण्ठः श्रुतिशास्त्रनिष्ठः।
विद्वच्छिवप्रीतिकरं व्यधासीत्समाविवेके मृगयावतंसम् ॥५२॥

शाके नन्दाङ्कबाणेन्दु [१५०९] मित आश्विनमासके।
शुक्लेऽष्टम्यां समातन्त्रं नीलकण्ठबुधोऽकरोत् ॥ ५३ ॥

भा०—स्पष्टार्थ ॥ ५१–५३ ॥

इति गूढार्थप्रकाशिकासहितनीलकण्ठ्यां वर्षतन्त्रम् ॥ २ ॥

—०*०—

अथ प्रश्नतन्त्रम्

प्रश्न विचार का प्रयोजन और प्रश्न करने की रीति—

दैवज्ञतो हि दैवेन सदसत्फलवाञ्छया।
अवश्यं गोचरे मर्त्यः सर्वः समुपनीयते ॥ १ ॥
अश्रौषीच्च पुरा विष्णोर्ज्ञानार्थे समुपस्थितः।
वचनं लोकनाथोऽपि ब्रह्मा प्रश्नादिनिर्णयम् ॥ २ ॥

तस्मान्नृपः कुसुमरत्नफलाग्रहस्तः
प्रातः प्रणम्य वरयेदपि प्राङ्मुखस्थः।
होराङ्गशास्त्रकुशलान् हितकारिणश्च
संहृत्य दैवगणकान् सकृदेव पृच्छेत् ॥ ३ ॥

भा०—मनुष्य प्रारब्ध के द्वारा शुभ अशुभ फल जानने की इच्छा से दैवज्ञ (फलितवेत्ता ज्यौतिषी) के पास जाकर उनसे समय समय में होने वाला

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपना समस्त फल समझ सकता है। सुना जाता है कि पूर्व समय में स्वयं लोकनाथ ब्रह्मा भी प्रश्ननिर्णय ज्ञान करने के लिये विष्णु के समीप गये थे। इसलिये राजा आदि समस्तजन फल फूल द्रव्य आदि लेकर जातकशास्त्र में पारङ्गत और अपने हितैषी से प्रातः (पूर्वाह्न) समय में प्रणाम करके जो कुछ पूछना हो एक ही बार पूछे ॥१-३॥

प्रश्नोत्तर करने का अधिकारी—

* दशभेदग्रहगणितं जातकमवलोक्य निरवशेषमपि ।
यः कथयति शुभमशुभं तस्य न मिथ्या भवेद्वाणी ॥ ४ ॥

भा०—दीप्तादि दश अवस्था भेद से दश प्रकार के जो ग्रह हैं उन ग्रहों के गणित और समस्त जातकशास्त्र का अवलोकन करनेवाला जो शुभाशुभ कहता है, उसकी वाणी मिथ्या नहीं होती है ॥४॥

श्रद्धा युक्त विनय पूर्वक पूछने वालों को ही शुभाशुभ कहने का आदेश—

विनयावनताय दीयमाना ।
प्रभवेत्कल्पलतेव सत्फलायेति ॥ ५ ॥

भा०—जो विनय से नम्र होकर पूछने वाले को प्रश्नोत्तर कहते हैं उनकी विद्या कल्पलता के तुल्य सत्यफल बताने वाली होती है ॥५॥

श्रुति प्रमाण—

विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मा शेवधिष्टेऽहमस्मि ।
असूयकायानृजवे शठाय न मा ब्रूयादवीर्यवती तथा स्यामिति ॥ ६ ॥

भा०—ब्राह्मणों से विद्या कहती है कि–मैं तुम्हारी निधि (रक्षणीय सम्पत्ति) हूँ तुम मेरी रक्षा करो। असूयक, कुटिल, धूर्त इन लोगों के यहाँ मेरा प्रचार नहीं करो क्योंकि इस प्रकार मैं बलहीना हो जाती हूँ ॥६॥

प्रश्न करने वाला साधु है या कुटिल उसका ज्ञान—

ऋजुरयमनृजुर्वाऽयं प्रष्टा पूर्वं परीक्ष्य लग्नबलात् ।
गणकेन फलं वाच्यं दैवं तच्चित्तगं स्फुरति ॥ ७ ॥

---

* प्राचीन प्रकाशित पुस्तकों में लेखक और संशोधक के प्रमाद से "दशभेद" कहीं "देशभेद" इस प्रकार के अशुद्ध पाठ हैं। यहाँ वास्तव—"दशभेदग्रहगणितं" यही पाठ समीचीन है। अर्थात् दीप्तादि अवस्था भेद से १० प्रकार के भेद हैं जिनके, ऐसे ग्रहों का गणित। यहाँ "दश भेदा येषां ते च ते ग्रहाश्चेति दश भेदग्रहास्तेषां गणितमिति दशभेदग्रहगणितम्" इस प्रकार बहुव्रीहि समास है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—ज्यौतिषी को चाहिये कि पूछनेवाला साधु है या कुटिल ? यह प्रश्नलग्न से पहिले समझ कर ही फल कहै । ऐसे करने से हृदय में प्रष्टा के प्रारब्ध फल स्फुरित होता है ॥७॥

उदाहरण—

लग्नस्थे शशिनि शनौ केन्द्रस्थे ज्ञे दिनेशरश्मिगते ।
भौमज्ञयोः समदृशा लग्नगचन्द्रेऽनृजुः प्रष्टा ॥ ८ ॥
लग्ने शुभग्रहयुते सरलः क्रूरान्विते भवेत्कुटिलः ।
लग्नेऽस्ते सौम्यदृशा विधुगुरुदृष्ट्या च सरलोऽयम् ॥ ९ ॥
यदि गुरुबुधयोरेकः पश्यत्यस्ताधिपञ्च रिपुदृष्ट्या ।
तत्कुटिलः प्रष्टा खल्वनयोरेकस्तयोः साधुः ॥१०॥

भा०—जैसे लग्न में चन्द्रमा, केन्द्र में शनि, बुध, सूर्य के साथ अस्त हो वा मङ्गल और बुध की समदृष्टि लग्न या चन्द्रमा पर हो तो प्रश्नकर्ता को कुटिल समझना । पापग्रह हो तो कुटिल तथा लग्न और सप्तम भाव पर बुध, चन्द्र, गुरु की दृष्टि हो तो साधु, एवं बुध या बृहस्पति एक भी सप्तमेश को शत्रुदृष्टि से देखता हो तो कुटिल, यदि बुध गुरु में एक भी उन दोनों (लग्न या सप्तम) में हो तो साधु समझना ॥८—१०॥

यदि एक ही साथ बहुत प्रश्न हों तो उत्तर कहने का आदेश—

आदिमं लग्नतो ज्ञानं चन्द्रस्थानाद्द्वितीयकम् ।
सूर्यस्थानात्तृतीयं स्यात्तुर्यं जीवगृहाद्भवेत् ॥११॥
बुधभृग्वोर्बली यः स्यात्तद्गृहात्पञ्चमं पुनः ।
किन्त्वेवं नैव युक्तं स्याद् वराहादेरसम्मतात् ॥१२॥

भा०—अनेक प्रश्न हों तो प्रथम लग्न से, द्वितीय चन्द्रमा से, तृतीय सूर्य से, चतुर्थ बृहस्पति से, और पञ्चम शुक्र बुध में जो बली हो उससे कहना चाहिये । ऐसा किसी ने कहा; किन्तु वराहादि आचार्यों के असम्मत होने के कारण यह युक्त नहीं है । अर्थात् एक समय में एक ही प्रश्न का उत्तर कहना चाहिये ॥११-१२॥

जैसे ज्ञानमुक्तावली में कहा है—

सम्यग्विचार्य लग्नं ब्रूयात्प्रश्नं सकृद्यथा शास्त्रम् ।
यस्त्वेकं ब्रूतेऽसौ तस्य न मिथ्या भवेद्वाणी ॥१३॥

२१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—जो शास्त्रानुसार प्रश्नलग्न को अच्छी तरह विचार कर एक प्रश्न का एक ही उत्तर कहता है, उसकी वाणी मिथ्या नहीं होती है ॥१३॥

तथा प्रश्नचिन्तामणि में भी–प्रश्न पूछने की विधि—

राशिचक्रं समभ्यर्च्य फलैः पुष्पैः सरत्नकैः ।
प्रष्टा सुभूमौ दैवज्ञानेकं पृच्छेत्प्रयोजनम् ॥१४॥

भा०—प्रश्न करनेवाला–फल, पुष्प, और यथाशक्ति द्रव्य से भूमि पर ग्रह और नक्षत्रों का पूजन करके ज्यौतिषी से एक समय में किसी एक ही प्रयोजन का प्रश्न पूछे ॥१४॥

दशभेदग्रहाणां च गणितं भावजं तथा ।
विमृश्यैकञ्च कथयेन्नानेकं प्राह पद्मभूरिति ॥१५॥

भा०—दश प्रकार के ग्रह और भावों को समझ कर एकही प्रश्न का उत्तर ज्यौतिषी कहै । क्योंकि ग्रहों के दीप्त आदि दशभेदों को और भाव बल समझ कर जो फल कहता है, वह अन्यथा नहीं होता है ऐसा ब्रह्मा ने कहा है ॥५१॥

दीप्त आदि दश भेदों के नाम और लक्षण—

दीप्ताद्यं दशभेदं च ग्रहाणां भांशजं फलम् ।
विचार्य प्रवदेद्यस्तु तस्योक्तं नाऽन्यथा भवेत् ॥१६॥
दीप्तो दीनोऽथ मुदितः स्वस्थः सुप्तो निपीडितः ।
मुषितः परिहीनश्च सुवीर्यश्चाधिवीर्यकः ॥१७॥
स्वोच्चे दीप्तः समाख्यातो नीचे दीनः प्रकीर्तितः ।
मुदितो मित्रगेहस्थः स्वस्थश्च स्वगृहे स्थितः ॥१८॥
शत्रुगेहस्थितः सुप्तो जितोऽन्येन निपीडितः ।
नीचाभिमुखगो हीनो मुषितोऽस्तङ्गतो ग्रहः ॥१९॥
सुवीर्यः कथितः प्राज्ञैः स्वोच्चाभिमुखसंस्थितः ।
अधिवीर्यो निगदितः सुरश्मिः शुभवर्गजः ॥२०॥

भा०—दीप्त दीन, मुदित, स्वस्थ, सुप्त, निपीडित, मुषित, परिहीन, सुवीर्य और अधिवीर्य ये ग्रहों के दश भेद होते हैं ॥ इनके लक्षण ये हैं कि-ग्रह अपने उच्च में दीप्त १, नीच में दीन २, मित्रराशि में मुदित ३, स्वराशि में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वस्थ ४, शत्रु राशि में सुप्त ५, दूसरे से पराजित निपीड़ित ६, उच्च से आगे नीच की तरफ जाने वाला हीन ७, अस्तङ्गत मुषित ८, उच्चाभिमुख जाने वाला सुवीर्य ९, शुभ ग्रहों के वर्ग में और अधिक रश्मिवाला ग्रह अधिवीर्य १० कहाता है ॥१६-२०॥

दीप्तादि ग्रहों से कार्य में शुभाशुभ फल—

दीप्तैः सिद्धिश्च कार्याणां दीने दुःखसमागमः ।
स्वस्थे कीर्तिस्तथा लक्ष्मीरानन्दो मुदिते महान् ॥२१॥
सुप्ते रिपुभयं दुःखं धनहानिर्निपीडिते ।
मुषिते परिहीने च कार्यनाशोऽर्थसंक्षयः ॥२२॥
गजाश्वकनकावाप्तिः सुवीर्ये रत्नसम्पदः ।
अधिवीर्ये राज्यलब्धिर्ग्रहे मित्रार्थसङ्गमः ॥२३॥

भा०—कार्याधीश दीप्त हो तो कार्यसिद्धि, दीन हो तो दुःख, स्वस्थ हो तो कीर्ति और धनलाभ, मुदित हो तो आनन्द, सुप्त हो तो शत्रुभय, निपीड़ित हो तो धनहानि, मुषित हो तो कार्यनाश, परिहीन हो तो अर्थनाश, सुवीर्य हो तो हाथी, घोड़े, सुवर्ण, रत्न की प्राप्ति और अधिवीर्य हो तो राज्यलाभ मित्र और धन का लाभ हो ॥ २१-२३ ॥

फल कहने में उपयुक्त ग्रहों के स्वरूप—

(र)–पूर्वः सत्त्वं नृपस्तातः क्षत्रं ग्रीष्मोरुणश्चलः ।
मधुदृक् पैत्तिको धातुः शूरः सूक्ष्मकचो रविः ॥२४॥
(चं)–कफो वर्षा मृदुर्माता पयो गौरश्च सात्त्विकः ।
जीवो वैश्यश्चरो वृत्तो मारुतांशो विधुः सुदृक् ॥२५॥
(मं)–ग्रीष्मः क्षत्रतमो रक्तो याम्यः सेनाग्रणीश्चरः ।
युवा धातुश्च पिङ्गाक्षः क्रूरः पित्तं शिखी कुजः ॥२६॥
(बु)–शरदीशो हरिद्दीर्घः षण्ढो मूलं कुमारकः ।
लिपिज्ञ उत्तरेशश्च शूद्रः सौम्यस्त्रिधातुकः ॥२७॥
(गु)–सत्त्वं वित्तो हिमः श्लेष्मा दीर्घो मन्त्री द्विजो नरः ।
मध्यैशानो सुधीर्जीवो मधुपिङ्गलदृक तथा ॥२८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(शु)–शुक्रः शान्तो द्विजो नारी सुखी मन्त्री चरः सितः।
आग्नेयी दिक्कफश्चाम्लः कुटिलासितमूर्धजः ॥२९॥
(श)–कृष्णस्तमः कृशो वृद्धः षण्ढो मूलान्त्यजोऽलसः।
शिशिरः पवनः क्रूरः पश्चिमो वातुलः शनिः ॥३०॥
(रा)–राहुर्धातुः शिखी मूलं शेषमन्यच्च मन्दवत्।
चिन्तनीयं विलग्नेशात् केन्द्रगाद्वा बलाधिकात् ॥३१॥

भा०—पूर्वदिशा का स्वामी, सात्त्विक, राजा, पिता, क्षत्रिय, ग्रीष्म ऋतु का स्वामी, चञ्चल, मधु समान दृष्टि वाला, पित्त-प्रकृति, धातु, संग्रामप्रिय, थोड़े केशवाला सूर्य है ॥ कफ-प्रकृति वर्षा ऋतु का स्वामी, मृदु, माता, जल तत्त्व, गौरवर्ण, सात्त्विक, जीव, वैश्य, चर, गोलाकार, वातप्रकृति, सुन्दरनेत्रवाला चन्द्रमा है ॥ ग्रीष्म ऋतु, क्षत्रिय, तमोगुणी, लालवर्ण, दक्षिण का स्वामी, सेनापति, चर, युवा, धातु, पिङ्गलनेत्र, क्रूर, पित्तप्रकृति और अग्नितत्त्व मङ्गल है। शरद् ऋतु का स्वामी, हरितवर्ण, लम्बाकद, नपुंसक, मूल, राजकुमार, लेखक, उत्तरदिशा का स्वामी. शूद्रवर्णाधिप, शुभ और कफ पित्त वात तीनों प्रकृतिवाला बुध है ॥ 'सात्त्विक' धातु, हेमन्त ऋतु का स्वामी, कफ प्रकृति, लम्बाकद, मन्त्री, ब्राह्मण, पुरुष, मध्यवयस, ईशान का स्वामी, बुद्धिमान्, और मधुसमान पिङ्गल-दृष्टिवाला गुरु है ॥ शान्तस्वभाव (सात्त्विक) ब्राह्मण, स्त्री ग्रह, सुखी, मन्त्री, चर, श्वेतवर्ण, अग्निदिक् स्वामी, कफ-प्रकृति, अम्लरस-प्रिय और काले घुँघराले बाल वाला शुक्र है ॥ कृष्णवर्ण, तामसी, कृश, वृद्ध, नपुंसक मूल, नीच, जाति का स्वामी, आलसी, शिशिरऋतु का स्वामी, वायुतत्त्व, पापग्रह, पश्चिमका स्वामी, वातप्रकृति शनि है ॥ राहु धातु और केतु मूल है और शेष स्वरूप शनि के समान है। इस प्रकार प्रश्नादि कालिक लग्नेश से, वा केन्द्र-गत-ग्रह से केन्द्र में अधिक ग्रह हो तो बली ग्रह से जातक और चोर आदि का स्वरूप समझना ॥ २४-३१ ॥

किस प्रश्न का किस भाव से विचार करना चाहिये सो कहते हैं—

सौख्यमायुर्वयो जातिरारोग्यं लक्षणं गुणः।
क्लेशाकृती रूपवर्णास्तनोश्चिन्त्या विचक्षणैः ॥३२॥
मुक्ताफलञ्च माणिक्यं रत्नधातुधनाम्बरम्।
सुहृत्कार्याध्वविज्ञानं वित्तस्थानाद्विलोकयेत् ॥३३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भगिनीभ्रातृभृत्यानां दासकर्मकृतामपि ।
कुर्वीत वीक्षणं विद्वान् सम्यग्दुश्चिक्यवेश्मतः ॥३४॥
वाटिका-खलक-क्षेत्र-महौषधि-निधीनपि ।
विवरादिप्रवेशं च पश्येत्पातालतो बुधः ॥३५॥
गर्भापत्यविनेयानां मन्त्रसन्धानयोरपि ।
विद्याबुद्धिप्रबन्धानां सुतस्थाने विनिर्णयः ॥३६॥
चौरभीरिपुसंग्रामखरोष्ट्रक्रूरकर्मणाम् ।
मातुलातङ्कभृत्यानां रिपुस्थानाद्विनिर्णयः ॥३७॥
वाणिज्यं व्यवहारं च विवादं च समं परैः ।
गमाऽऽगमकलत्राणि पश्येत्प्राज्ञः कलत्रतः ॥३८॥
नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये दुर्गे शात्रवसङ्कटे ।
नष्टे दुष्टे रणे व्याधौ छिद्रे छिद्रं निरीक्षयेत् ॥३९॥
वापी-कूप-तडागादिप्रपा-देवगृहाणि च ।
दीक्षां यात्रां मठं धर्मं धर्मान्निश्चिन्त्य कीर्तयेत् ॥४०॥
राज्यं मुद्रां परं पुण्यं स्थानं तातं प्रयोजनम् ।
वृष्ट्यादिव्योमवृत्तान्तं व्योमस्थानान्निरीक्षयेत् ॥४१॥
गजाश्वयानवस्त्राणि सस्य-काञ्चन-कन्यकाः ।
विद्वान् विद्यार्थयोर्लाभं लक्षयेल्लाभभावतः ॥४२॥
त्याग-भोग-विवादेषु दानेष्टकृषिकर्मसु ।
व्ययस्थानेषु सर्वेषु विद्धि विद्वन्! व्ययं व्ययात् ॥४३॥

भा०—सुख, आयु, वयस, जाति, आरोग्य, लक्षण, गुण, दुःख, आकार, स्वरूप, वर्ण, इन विषयों का प्रश्न हो तो लग्न से विचार करना चाहिये। मोती, माणिक्य रत्न, धातु, धन, वस्त्र, मित्र का कार्य, मार्ग का विचार ये द्वितीय भाव से विचारणीय हैं। बहिन, भाई और नौकरों का विचार तृतीयभाव से करना चाहिये। बगीचा, खलिहान, खेती, औषधी, निधि (गड़ा हुआ धन) गुहा आदि में प्रवेश करना ये चतुर्थ भाव से देखना। गर्भ, सन्तान, मन्त्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(रहस्य विचार), मैत्री, विद्या, बुद्धि आदि पञ्चम भाव से देखना। चोरभय, शत्रु, संग्राम, गदहा, ऊँट, क्रूरकार्य, मामा, आतङ्क, नौकर ये षष्ठ भाव से देखना। वाणिज्य व्यवहार, दूसरों से विवाद, गमन, आगमन, स्त्री ये सप्तमभाव से देखना। नदी से पार उतरना, रास्ता की विषमता, दुर्ग, शत्रु से संकट, नष्ट-वस्तु, रण, रोग और छिद्र ये अष्टमभाव से विचारना। बावली, कूप, आदि जलाशय, देवमन्दिर, दीक्षा, यात्रा, मठ और धर्म ये नवमभाव से विचारना। राज्य रूपया पैसा उत्कृष्ट पुण्य, स्थान, पिता, वर्षा आदि आकाश के विचार दशम भाव से करना। हाथी, घोड़ा आदि सवारी, वस्त्र, अङ्ग, सुवर्ण, कन्या, विद्या और धन का लाभ एकादश भाव से देखना। त्याग, भोग, विवाद, दान, कृषिकर्म आदि प्रत्येक विषय में व्यय का विचार द्वादशभाव से करना चाहिये॥

इति गूढार्थप्रकाशिकासहित–नीलकण्ठ्यां प्रश्नविचाराध्यायः॥ १॥

—०-۞-०—

अथ भावप्रश्नाध्यायः॥२॥

भावों से कार्य सिद्धि–असिद्धि का ज्ञान—

यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्यात्तस्य तस्यास्ति वृद्धिः।
पापैरेवं तस्य भावस्य हानिर्निर्देष्टव्या पृच्छतो जन्मतो वा॥१॥
सौम्ये विलग्ने यदि वा स्ववर्गे शीर्षोदये सिद्धिमुपैति कार्यम्।
अतो विपर्यस्तमसिद्धिहेतुः कृच्छ्रेण संसिद्धिकरं विमिश्रम्॥२॥

भा०—जो भाव अपने स्वामी और शुभग्रह से दृष्ट और युत हो उस भाव की वृद्धि, और जो भाव पापग्रह से दृष्ट युत हो उस भाव की हानि होती है। जैसे—उदाहरण कहते हैं कि—प्रश्न लग्न में शुभग्रह हो, या अपना वर्ग हो या अपना वर्ग हो या शीर्षोदय राशि लग्न हो तो कार्यसिद्धि होती है, इससे विपरीत (पापग्रह से युत या पापवर्ग लग्न में) हो तो कार्य सिद्धि नहीं होती है। मिश्र-ग्रह हो तो यत्न से सिद्धि कहना॥ १–२॥

लग्नपतिर्यदि लग्नं कार्याधिपतिश्च वीक्षते कार्यम्।
लग्नाधीशः कार्यं कार्येशः पश्यति विलग्नम्॥३॥
लग्नेशः कार्येशं विलोकयेल्लग्नपं तु कार्येशः।
शीतगुदृष्टौ सत्यां परिपूर्णा कार्यसंसिद्धिः॥ ४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—लग्नेश लग्न को, और कार्येश कार्यभाव को देखै। अथवा लग्नेश कार्यभाव को और कार्येश लग्न को देखै, अथवा लग्नेश कार्येश को, और कार्येश लग्नेश को देखै और उन पर चन्द्रमा की दृष्टि (अर्थात् कम्बूलयोग) हो तो पूर्णरूप से कार्यसिद्धि होती है। अर्थात् चन्द्रमा की दृष्टि नहीं हो तो थोड़ा कार्य होता है ॥३—४॥

कार्य सिद्धि में न्यूनाधिकता कल्पना की युक्ति—

कथयन्ति पादयोगं पश्यति सौम्यो न लग्नपो लग्नम्।
लग्नाधिपं च पश्यति शुभग्रहश्चार्धयोगोऽत्र ॥ ५ ॥
एकः शुभो ग्रहो यदि पश्यति लग्नाधिपं विलग्नं वा।
पादोनयोगमाहुस्तदा बुधाः कार्यसंसिद्धौ ॥ ६ ॥
लग्नपतौ दृष्टे सति शुभग्रहौ द्वौ त्रयोऽथवा लग्नम्।
पश्यन्ति यदि तदानीमाहुर्योगं त्रिभागोनम ॥ ७ ॥
क्रूरावेक्षणवर्ज्यश्चन्द्रः सौम्यश्च खेचरा लग्नम्।
लग्नेशदर्शने सति पश्यन्तः पूर्णयोगकराः ॥ ८ ॥
क्रूराकान्तः क्रूरयुतः क्रूरदृष्टश्च यो ग्रहः।
निरश्मितां प्रपन्नश्च सोऽनिष्टफलदायकः ॥ ९ ॥

भा०—लग्न को शुभग्रह देखता हो और लग्नेश नहीं देखता हो तो एक चरण कार्य की सिद्धि कहना। यदि लग्न और लग्नेश दोनों को शुभ ग्रह देखता हो तो आधा कार्य की सिद्धि कहना। एक शुभग्रह यदि लग्नेश को या लग्न को देखै तो पादोन (३ चरण) योग समझना। लग्नेश को देखते हुए दो या तीन शुभग्रह लग्न को भी देखै तो त्रिभागोन कार्यसिद्धि समझना। चन्द्रमा पर पापग्रह की दृष्टि न हो और शुभग्रह तथा लग्नेश लग्न को देखै तो पूर्णयोगकारक होते हैं। जो ग्रह पापग्रह से आक्रान्त हो, पापग्रह से युत, दृष्ट या रश्मि हीन हो तो वह अशुभ फल देता है ॥५—९॥

समरसिंहोक्त उदाहरण—

अमुकं गदेति कार्यं कदा भविष्यत्यमुत्र पृच्छायाम्।
लग्नाधिपतिः कार्यं लग्नं कार्याधिपः पश्येत् ॥१०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्नस्थः कार्येशः पश्यति चेल्लग्नपं तदैव भवेत् ।
तत्कार्यं यद्यन्यस्थितं तदा सत्वरं न स्यात् ॥११॥
पश्यति तथा च लग्नं द्रक्ष्यति चन्द्रं विलग्नपं च यदा ।
लग्ने कार्ये च यदा द्वयोश्च योगे तदा सिद्धिः ॥१२॥
यदि लग्नपं न पश्यति कार्याधीशो विलग्नमथ तस्य ।
कार्यस्य हानिरुक्ता लग्नमृते किमपि नो वाच्यम् ॥१३॥

भा०—"मेरा अमुक कार्य कब होगा" इस प्रकार के प्रश्न में यदि लग्नेश कार्यभाव को और कार्येश लग्न को देखै वा लग्न में स्थित कार्येश लग्नेश को देखै, तो अपने अधीन का कार्य बहुत शीघ्र होता है। यदि कार्य दूसरे के हाथ में हो तो विलम्ब से होता है। लग्न या कार्य भाव में स्थित कार्येश यदि लग्न को, चन्द्र को और लग्नेश को देखता हो अथवा दोनों का योग हो तो कार्य-सिद्धि कहना। यदि लग्न या लग्नेश को कार्येश न देखै तो कार्य की हानि होती है ॥१०–१३॥

ताजिक प्रश्नतन्त्रोक्त प्रत्येक भाव विषयक प्रश्न निरूपण—

भूतं भवद्भविष्यन्मम किं कथयेति जातपृच्छायाम् ।
लग्नपतेः शशिनो वा बलमन्वेष्यं बलाभावे ॥१४॥
दृष्ट्वा नवांशकबलं शुभदृग्योगं च सर्वकालेषु ।
प्रष्टुः शुभमादेश्यं विपरीतं व्यत्ययादेवम् ॥१५॥

भा०—"भूत, भविष्य या वर्तमान समय का फल कैसा है?" इस प्रकार के प्रश्न में लग्नेश और चन्द्रमा का बल देखना चाहिये, दोनों बली हों उन पर शुभग्रह की दृष्टि या योग हो तो तीनों काल में शुभफल कहना। यदि लग्नेश और चन्द्रमा निर्बल हो तो दोनों के नवांश यदि शुभग्रह से दृष्ट युत हो तो भी सब समय में शुभ कहना। अन्यथा (पापग्रह से युत दृष्ट हो निर्बल हो तो) अशुभफल कहना ॥१४–१५॥

भूत–भविष्य–वर्तमान कहने का विचार—

लग्नेशो मूसरिफो यस्मादस्मादतीतमाख्येयम् ।
येन युतस्तस्माद्भवदेष्यं यो योक्ष्यते तस्मात् ॥१६॥

भा०—लग्नेश को जिस भावेश से मुसरीफ योग हो उससे भूतफल,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिससे इत्थशाल वर्तमान हो उससे वर्तमान फल और जिससे इत्थशाल होनेवाला (भविष्यत इत्थशाल) हो उससे भविष्यफल कहना। उदाहरण आगे स्पष्ट है ॥ १६ ॥

लग्न भाव (देह-सम्बन्धी) प्रश्न फल निरूपण—

यदि लग्ने लग्नपतिः सौम्ययुतो वा विलोकितः सौम्यैः ।
तत्प्रष्टुर्व्याकुलता शरीरदोषा विनश्यन्ति ॥१७॥
पापो यदि लग्नपतिस्तदा कलिव्याधिधननाशाः ।
सौम्ये निर्वृत्तिबुद्धिर्द्रव्याप्तिः सौख्यमतुलं च ॥१८॥

भा०—देह-सम्बन्धी प्रश्न में लग्नेश यदि लग्न में हो शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो प्रश्नकर्ता की शरीर की विकलता और सब प्रकार के दोष (क्लेश आदि) नाश होता है। यदि लग्नेश पाप हो और पाप से युत दृष्ट हो तो कलह, रोग और धनहानि समझना। यदि लग्नेश पाप होकर भी शुभग्रह से युत दृष्ट हो तो निष्पन्न बुद्धि, धनागम और सुख कहना चाहिये ॥१७-१८॥

द्वितीय भाव (धन) सम्बन्धी प्रश्न—

धनलाभस्य प्रश्ने लग्नेशेनेन्दुनाऽथ धननाथः ।
कुरुते यदीत्थशालं शुभयुतिदृष्ट्या भवेल्लाभः ॥१९॥
क्रूरग्रहैर्धनस्थैर्दूरे लाभोऽन्यदप्यशुभम् ।
क्रूरमुथशिले धनेशे प्रष्टा म्रियतेऽथवा विलग्नेशे ॥२०॥

भा०—धन लाभादि द्वितीयभाव सम्बन्धी प्रश्न में धनेश यदि लग्नेश और चन्द्रमा से इत्थशाल करता हो और शुभग्रह से युत दृष्ट हो तो धन का लाभ कहना। यदि पापग्रह धनभाव में हो तो धनलाभ तो दूर रहता है; परञ्च और भी अनेक प्रकार का अशुभ होता है। यदि धनेश या लग्नेश को पापग्रह से मुथशीलयोग हो तो प्रश्नकर्ता का मरण समझना ॥१९-२०॥

किसके द्वारा धन लाभ होगा उसका निरूपण—

लग्नधनपेत्थशाले मन्दगतिर्यत्र भावानाम् ।
तनुधनसहजादीनां प्रष्टुस्तद्द्वारतो लाभः ॥२१॥

भा०—लग्नेश और धनेश को इत्थशाल हो तथा इन दोनों में जो मन्दगति हो वह तनु, धन, सहज, बन्धु आदि भावों में जिस भाव में हो उसके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वारा (अर्थात् लग्न में हो तो अपने द्वारा, द्वितीयभाव में हो तो धन, और कुटुम्बों के द्वारा, तृतीयभाव में हो तो सहोदरों के द्वारा, चतुर्थ में हो तो माता, या मित्रादिकों के द्वारा इत्यादि) धनलाभ समझना ॥२१॥

प्रश्नदीपकोक्तविचार—

लग्नस्थं चन्द्रजं चन्द्रः क्रूरो वा यदि पश्यति ।
धनलाभो भवत्याशु किन्त्वनर्थोऽपि पृच्छतः ॥२२॥
चन्द्रलग्नधनाधीशा दृष्टा युक्ताः परस्परम् ।
धनकेन्द्रत्रिकोणस्थाः सद्यो लाभकराः स्मृताः ॥२३॥
शुभदस्वामिषड्वर्गे लग्ने सौम्ययुतेक्षिते ।
प्रष्टुस्तात्कालिकी लब्धिरलब्धिस्तु विपर्यये ॥२४॥
चतुर्थे सप्तमे चन्द्रे खे रवौ लग्नगे शुभे ।
प्रष्टुः सद्योऽर्थलाभः स्याल्लग्ने वा सुरमन्त्रिणि ॥२५॥

भा०—लग्न में बुध हो उसे चन्द्रमा या पापग्रह देखता हो तो प्रश्नकर्ता को धन लाभ तो होता है परन्तु अन्य प्रकार अशुभ भी होता है। चन्द्र, लग्नेश और धनेश ये यदि परस्पर युक्त दृष्ट हों और केन्द्र त्रिकोण में हो तो शीघ्र धन लाभ होता है। लग्न में शुभ ग्रह या अपने स्वामी का षड्वर्ग हो और शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो तत्काल ही में धन लाभ होता है। अन्यथा लाभ नहीं होता है। चतुर्थ या सप्तम में चन्द्रमा हो, दशम में रवि हो और लग्न में शुभ ग्रह हो तो इस योग में शीघ्र धन लाभ कहना। अथवा केवल बृहस्पति मात्र लग्न में हो तो भी शीघ्र धन लाभ होता है ॥२२–२५॥

तृतीय भाव (सहोदर आदि) सम्बन्धी प्रश्ननिरूपण—

सहजपतिर्यदि सहजं पश्यति चेत्तद्द्वयं शुभैर्दृष्टम् ।
तद्भ्रातरा गतरुजः स्वस्थाः क्रूरेक्षणे वामम् ॥२६॥
यदि सहजपतिः षष्ठे तत्पतिना मुथशिलेऽथ तन्मान्द्यम् ।
षष्ठेशे सहजस्थे सहजपतौ क्रूरिते वापि ॥२७॥
सूर्यस्य रश्मिसंस्थे भयावहं प्रष्टुरादेश्यम् ।
षष्ठाष्टमभावेशौ यद्भावेशेत्थशालिनौ स्याताम् ॥२८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पीडां तस्य प्रवदेत्षष्ठाष्टमसंस्थिते चापि।
एवं सर्वे भावाः पित्रोस्तुर्ये सुते सुतानां च ॥२९॥
रिपौ चतुष्पदवर्गस्यास्ते स्त्रीणां च सुहृदो ये।

भा०—तृतीयेश यदि तृतीय को देखता हो और उन दोनों को शुभ ग्रह देखता हो तो प्रश्नकर्ता के सहोदर को स्वस्थ और सुखी कहना। यदि पापग्रह से दृष्ट हो तो दुखी समझना॥ यदि तृतीयेश षष्ठ भाव में हो और षष्ठेश के साथ इत्थशाल हो अथवा षष्ठेश तृतीय में हो और सहजेश पाप युक्त हो तो षष्ठेश के धातुजन्य विकार से सहोदर को रोग समझना चाहिये॥ और सहजेश यदि सूर्य के किरण में प्राप्त (अस्त) हो तो सहोदर को अधिक भयदायक होता है। जिस भावेश को षष्ठेश या अष्टमेश से इत्थशाल हो अथवा जो भावेश षष्ठाष्टम स्थान स्थित हो उस भाव की हानि (पीड़ा) समझना। उदाहरण जैसे चतुर्थभावेश षष्ठाष्ट स्थान में हो या षष्ठेश अष्टमेश से इत्थशाली हो तो माता या पिता को कष्ट, पञ्चमेश ६, ८ में हो तो पुत्र को, षष्ठेश हो तो चतुष्पदवर्ग को सप्तमेश हो तो स्त्री वर्ग को कष्ट होता है ॥२६–२९॥

चतुर्थभाव (गृह, खेती, माता आदि) सम्बन्धी प्रश्ननिरूपण—

लग्नपतीन्दुचतुर्थाधिपमुथशीलेऽथवाऽम्बुगास्ते स्युः ॥३०॥
प्रष्टुः पृथ्वीलाभप्रदा न चेत् पापदृग्युक्ताः।
यदि पृच्छति कृषिको मे क्षेत्राल्लाभो भवेन्नो वा ॥३१॥
लग्नं कृषिकस्तुर्यं भूमिर्द्यूनं कृषिस्तरुर्दशमम्।
लग्ने क्रूरोपगते स्याच्चौरोपद्रवस्तु कृषिकर्तुः ॥३२॥
वक्रातिचारवर्ज्ये क्रूरे चौरस्य कृषिलाभः।
लग्नस्थे शुभखेटे साफल्यं कर्षकस्य कृषितः स्यात् ॥३३॥
तुर्ये च क्रूरगते त्यक्त्वा भूमिं प्रयात्येषः।
द्यूने च शुभोपगते शुभं कृषेस्त्वन्यथा तु विपरीतम् ॥३४॥

भा०—लग्नेश, चतुर्थेश और चन्द्रमा इन तीनों में परस्पर इत्थशाल योग हो अथवा ये तीनों चतुर्थ भाव में हो तो भूमि का लाभ कराते हैं। यदि पाप ग्रहों की दृष्टि या योग हो तो भूमि लाभ नहीं होता है। यदि कोई गृहस्थ पूछे कि—"खेती से मुझे लाभ होगा या नहीं?" तो इस प्रकार के प्रश्न

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में लग्न को कृषक, चतुर्थ को क्षेत्र (खेत), सप्तम को कृषि (अन्नादि) और दशम भाव को वृक्ष समझना चाहिये। यदि लग्न में पापग्रह हो तो कृषि में चोर का उपद्रव समझना। यदि वह पापग्रह वक्री या अतिचारी नहीं हो तो भी उस कृषि से चोर को ही लाभ होगा ऐसा कहना। यदि प्रश्न लग्न में शुभ ग्रह हो तो कृषक (खेती करने वाला प्रश्न कर्ता) को कृषि से लाभ होगा। यदि चतुर्थ स्थान में पापग्रह हो तो कृषक भूमि (खेत) को छोड़ कर चला जायगा ऐसा समझना। अन्यथा (अर्थात् पापग्रह सप्तम में हो तो) अन्न का उपज नहीं होता है ॥३०-३४॥

दशमे दशमपतौ वा शुभयुतदृष्टे शुभा वृक्षाः।
भूभाटकपृच्छायां लग्नं प्रष्टा च भाटकं द्यूने ॥३५॥
तस्योत्पत्तिर्दशमे तथाऽवसानं चतुर्थे स्यात्।
लग्नस्य लग्नपस्य च शुभयोगे शुभमशोभनं वामे ॥३६॥
द्यूने क्रूरोपगते यस्मादपि भाटकस्ततोऽनर्थः।
दशमे क्रूरोपगते नोत्पत्तिर्बहुतरा भवेत्प्रष्टुः ॥३७॥
क्रूरार्दिते तु तुर्ये स्यादवसाने शुभं नास्य।

भा०—दशमभाव में दशमेश हो या शुभग्रह से युत दृष्ट हो तो वृक्ष उत्तम होते हैं। जमीन या मकान के किराया का प्रश्न हो तो लग्न को प्रश्न कर्ता और सप्तम को किराया, दशम को आरम्भ स्थान, और चतुर्थभाव को अवसान (अन्त) स्थान मानना। इस प्रश्न में लग्न और लग्नेश को शुभग्रह से योग हो तो पूछने वाले को शुभफल, यदि पापग्रह से योग हो तो अशुभफल कहना। सप्तमभाव में पापग्रह हो तो किराया वाले से अनेक प्रकार का अनर्थ (नुकसानी) समझना। यदि दशमभाव में पापग्रह हो तो आरम्भ में किराया उचित नहीं मिलता है। यदि चतुर्थ भाव में पापग्रह हो तो अन्त में हानि होती है। अर्थात् शुभग्रह से शुभ समझना ॥३५-३७॥

पञ्चम भाव (गर्भ सन्तान सम्बन्धी) प्रश्न—

यदि पृच्छत्येतस्याः स्त्रियो भवेन्मे प्रजा न वा ? कश्चित् ॥३८॥
लग्नेन्द्वोः सुतपतिना मुथशिलभावे प्रसूतिः स्यात्।
सुतभावपतिर्लग्ने लग्नपचन्द्रौ सुतेऽथवा स्याताम् ॥३९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सत्वरितमेव वाच्या सविलम्बं नक्तयोगेन।
द्विशरीरे च विलग्ने शुभयुतपुत्रे द्व्यपत्ययोगोऽस्ति ॥४०॥
यदि लग्नेशसुतेशौ पुंराशौ स्यात्तदा सुतो ग ।

भा०—कोई प्रश्न करै कि—"इस स्त्री में मुझे, किस प्रकार की सन्तति होगी ?" तो वहाँ लग्न और चन्द्रमा को यदि पञ्चमेश से इत्थशाल हो तो सन्तान अवश्य होती है। अथवा पञ्चमेश लग्न में तथा लग्नेश और चन्द्रमा पञ्चमभाव में हो तो शीघ्र सन्तानोत्पत्ति कहना। यदि नक्तयोग हो तो विलम्ब से सन्तान कहना। यदि द्विस्वभाव राशि लग्न हो और पञ्चमभाव शुभग्रह से युक्त हो तो गर्भ में दो सन्तान का योग समझना। और यदि लग्नेश, पञ्चमेश पुरुष (विषम) राशि में हो तो गर्भ में पुत्र समझना ॥३८–४०॥

चन्द्रमा से पुत्र–कन्या ज्ञान—

पुंराशौ पुंग्रहकृतमुथशिलयुक्तस्तदाऽपि सुतगर्भः ॥४१॥
अथवा विधुरपराह्णे सूर्यात्पृष्ठे तदा स्त्री स्यात्।
होरास्वामी पुरुषः पुंराशौ चेत्तथाऽपि सुतगर्भः ॥४२॥
चन्द्रयुक्तेक्षिते गर्भे सौम्ययुक्तेक्षितेऽपि वा।
उच्चस्थेऽभ्युदिते तत्र पुण्यापत्यं प्रजायते ॥४३॥
एषा गर्भवती किल न वा प्रमाणं प्रयाति गर्भोऽयम्।
प्रश्ने लग्नपशशिनोः सुतस्थयोर्गर्भवत्येव ॥४४॥
यद्येतयोर्मुथशिलं केन्द्रे सुतपेन गर्भिणी तदपि।
आपोक्लिमेत्थशालादनीक्षणाल्लग्नपुत्रयोर्नैवम् ॥४५॥
चरलग्ने क्रूरेन्द्वोर्मुथशिलभावे विनश्यति हि गर्भः।
लग्नपशशिनोस्तत्पतिवक्रिग्रहमुथशिलेपि तथा ॥४६॥

भा०—चन्द्रमा–विषम राशि में हो और पुरुष ग्रह (रवि, मङ्गल, गुरु) से इत्थशाल करता हो तो गर्भ में पुत्र कहना। यदि अपराह्ण में प्रश्न हो और सूर्य से पीछे चन्द्रमा हो (अर्थात् कृष्णपक्ष) हो तो गर्भ में कन्या समझना। लग्न विषम राशि हो और रवि की होरा हो तो भी पुत्र समझना। पञ्चमभाव चन्द्रमा से युत दृष्ट हो अथवा किसी शुभग्रह से युत दृष्ट हो तो पुण्यशील

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन्तति होती है। "अमुक स्त्री गर्भवती है या नहीं?" इस प्रकार के प्रश्न में यदि लग्नेश या चन्द्रमा पुत्रभाव में हो तो निश्चय गर्भवती समझना। अथवा लग्नेश और चन्द्रमा को केन्द्रस्थ पञ्चमेश से इत्थशाल योग हो तो भी गर्भिणी समझना। तथा आपोक्लिमस्थ पञ्चमेश से इत्थशाल हो अथवा लग्न और पञ्चम को यदि पञ्चमेश नहीं देखे तो गर्भ नहीं कहना। यदि चर-लग्न हो और चन्द्रमा को पापग्रह से मुथशील योग हो अथवा लग्नेश चन्द्र को वक्री पञ्चमेश से इत्थशाल हो तो गर्भ नष्ट होगा ऐसा कहना ॥४१-४६॥

सन्तान के जीवन मरण सम्बन्धी प्रश्न—

जीवितमरणप्रश्ने बालानामन्त्यपे शुभैर्दृष्टे।
केन्द्रस्थे सितपक्षे शुभयुक्तेऽन्त्ये विधौ जीवेत् ॥४७॥
क्रूरश्चेदन्त्यपतिर्दग्धश्चापोक्लिमे युक्तः।
क्रूरैस्तु जातमात्रो म्रियते बालोऽथ वा गर्भे ॥४८॥

भा०—सन्तान के जीवन मरण सम्बन्धी प्रश्न में द्वादशेश शुभग्रह से युत दृष्ट केन्द्र में हो अथवा शुक्लपक्ष हो और चन्द्रमा शुभग्रह से युत दृष्ट द्वादशभाव में हो तो सन्तान को जीवित कहना। यदि द्वादशेश पाप ग्रह हो और पाप से युक्त आपोक्लिम में हो तो गर्भ में या जन्म लेने पर सन्तान का मरण कहना ॥ ४७-४८ ॥

गर्भ के निश्चय होने पर प्रसवज्ञान प्रश्न—

प्रसवज्ञानप्रश्ने भुक्ताँल्लग्नांशकान् परित्यज्य।
भोग्याद्विचिन्त्य शेषाननुमित्येवं वदेद्दिवसान् ॥४९॥

भा०—कितने दिन का गर्भ है या कितने दिन में प्रसव होगा? इस प्रश्न में लग्न के भुक्तनवांशसंख्या तुल्य मास गर्भ का गतमास और भोग्य नवांश तुल्य मास में आगे प्रसव कहना चाहिये ॥ ४९ ॥

वि०—एक नवांश (२०० कला) में १ मास होता है। अतः नवांश सख्या तुल्य मास और शेष कला पर से अनुपात से अर्थात् शेष की कला को ३० से गुना कर २०० के भाग देकर दिन समझना चाहिये। जैसे लग्न ३।१४°।२५′ है तो इसके भुक्तनवांश चार १३°।२०′ पञ्चमनवांश का भुक्तांश १°।५′ इसकी कला ६५ को ३० से गुनाकर २०० का भाग देने से दिनादि ९।४५ अतः गर्भ के भुक्तमासादि ४।९।४५।० इसको ९ मास में घटाने से ४।२०।१५ इतने मासादि में प्रसव होगा, ऐसा कहना ॥ ४९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भुवनदीपक में प्रसव ज्ञान—

मासज्ञानस्य पृच्छायां गर्भिण्या भृगुनन्दनः ॥५०॥
लग्नात्स्याद्यावति स्थाने मासानाख्याति तावतः।
सुतात्संख्या तदा वाच्या यदा धर्मात्परङ्गतः ॥५१॥

भा०—प्रसव के मास जानने के लिये प्रश्नलग्न से जितनी संख्या स्थान पर शुक्र हो उतने मास में प्रसव कहना। यदि शुक्र नवमस्थान से आगे (१०।११।१२) में हो तो सुत (५) भाव से शुक्र तक मास की संख्या समझनी चाहिये ॥ ५०–५१ ॥

दिन रात्रि प्रसव ज्ञान निरूपण—

लग्नान्तर्दिनराशिर्दिवाग्रहो लग्नपश्च दिनराशौ ।
तद्दिवसे प्रसवः स्याद् विपरीते व्यत्ययश्चैषाम् ॥५२॥
अथ रात्रिलग्नमह्वा तदधिपतिश्चेत्तु तस्य राशिपतेः।
बलमूह्यं दिनहोरापुंराशिस्त्रीगृहेऽप्येवम् ॥५३॥

भा०—प्रश्नलग्न मे दिनबली राशि हो, लग्नेश भी दिवाबली और दिन बली राशि में हो तो दिन में, यदि रात्रिबली हो तो रात्रि में जन्म कहना यदि लग्न रात्रिबली राशि हो और लग्नेश दिनबली हो तो लग्नेश के अनुसार प्रसव का समय समझना। इसी प्रकार दिन, होरा सम्बन्धी पुरुष राशि स्त्री राशि से भी बलानुसार प्रसव का काल जानना चाहिये ॥ ५२–५३ ॥

गर्भ ज्ञान प्रश्ननिरूपण—

अस्मिन्वर्षेऽपत्यं भविता ? विलग्नपञ्चमाधीशौ ।
भजतो यदीत्थशालं तत्रैवाऽब्दे भवति नूनम् ॥५४॥
यदि वा मिथो गृहगतौ स्यातामेतौ च सन्ततिस्तदपि।
वाच्या तस्मिन्वर्षे शुभयोगादन्यथा न पुनः ॥५५॥

भा०—"इस वर्ष में गर्भ होगा या नहीं ?" इस प्रकार के प्रश्न में यदि लग्नेश और पञ्चमेश में इत्थशाल हो अथवा लग्नेश पञ्चम में और पञ्चमेश लग्न में हो तो उस वर्ष में अवश्य गर्भ होगा अन्यथा नहीं ॥ ५४-५५ ॥

प्रसूता-अप्रसूता स्त्री का ज्ञान—

सूताप्रसूतयुवतिज्ञाने सुतपोऽथ षष्ठपः सूर्यात् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निर्गत्योदयमायात्ततः प्रसूते च नारीयम् ॥५६॥
अथ जीव-सौम्य-शुक्रा आकाशे उदयिनस्तथाप्येवम् ।

भा०—"स्त्री प्रसूता है या अप्रसूता ?" इस प्रश्न में यदि पञ्चमेश और षष्ठेश सूर्य के योग से अस्त होकर उदित होगया हो, अथवा गुरु, बुध, शुक्र उदित हों तो स्त्री को प्रसूता अन्यथा अप्रसूता समझना ॥ ५६ ॥

षष्ठभाव (रोग-शत्रु आदि) सम्बन्धी, प्रश्न निरूपण—

रोगादयमुत्थास्यति न वेति लग्नं भिषक् द्यूनम् ॥५७॥
व्याधिर्दशमं रोगी हिबुकं भेषजमिहाऽऽहुराचार्याः ।
क्रूरार्दिते विलग्ने वैद्यान्नगुणस्तदौषधाद्रोगः ॥५८॥
वृद्धिमुपयाति दशमे क्रूरैर्निजबुद्धितोऽप्यगुणः ।
अस्ते च क्रूरयुक्ते मान्द्यान्मान्द्यं तथौषधाद्बन्धौ ॥५९॥
सौम्योपगतैरेतैररोगता रोगिणो भवति ।
लग्नेशेन्द्वोः सौम्यैत्थशालतो रोगनाशनं वाच्यम् ॥६०॥
वक्रे तु तत्र खेटे भूयोऽपि गदः समुपयाति ।
भूमिस्थे लग्नस्थे द्यूनस्थे शशिमुथशिले भवेन्मृत्युः ॥६१॥
लग्नस्थे रन्ध्रपतौ लग्नपशशिनोर्विनाशे वा ।

भा०—'अमुक व्यक्ति रोग से विमुक्त होगा या नहीं ?" इस प्रश्न में लग्न को वैद्य, सप्तम को रोग, दशमभाव को रोगी, और चतुर्थभाव को औषध समझना चाहिये। यदि लग्न में पापग्रह हो तो वैद्य से लाभ नहीं समझना प्रत्युत उसकी औषधी से रोग की वृद्धि ही समझना चाहिये। यदि दशमभाव में पापग्रह हो तो अपने कुपथ्य से रोग समझना। सप्तम में पापग्रह हो तो एक रोग से अनेक रोग की उत्पत्ति। तथा चतुर्थभाव में पाप हो तो औषध से रोग की वृद्धि समझना। यदि इन स्थानों में शुभग्रह का योग हो तो रोगी रोग से शीघ्र मुक्त होगा ऐसा कहना। यदि लग्नेश और चन्द्रमा में इत्थशाल हो तो रोग का नाश होता है। यदि चतुर्थ, लग्न, सप्तम में वक्री ग्रह हो तो रोग छूटकर फिर होता है। यदि उस वक्री ग्रह को चन्द्रमा से इत्थशाल हो तो रोगी की मृत्यु समझना। अष्टमेश लग्न में हो या लग्नेश या चन्द्रमा से विनाश (अष्टमभाव) में हो तो रोगी का मरण समझना ॥ ५७–६१ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्नाधिपे च सूर्ये चन्द्रः सप्तेशमुथशिलविधायी ॥६२॥
सप्तेशे षष्ठस्थे तन्मरणं रोगिणो वाच्यम् ।
रन्ध्रेशेन विनष्टेनास्तमितेनाऽपि केन्द्रस्थे ॥६३॥
लग्नेशे मुथशीले मृत्युः स्याद्रोगपृच्छायाम् ।
अथ वा तयोश्च केन्द्रे मुथशिलतः क्रूरपीडिते मरणम् ॥६४॥
सूर्यद्वादशभागं प्रविष्टलग्नेश्वरेऽप्येवम् ।

भा०—चन्द्रमा यदि लग्नेश सूर्य और सप्तमेश से इत्थशाल करता हो और सप्तमेश षष्ठभाव में हो तो रोगी को मृत्यु कहना। पापयुक्त, या अस्तङ्गत अष्टमेश से केन्द्रस्थित लग्नेश को इत्थशाल हो, अथवा लग्नेश, अष्टमेश दोनों केन्द्रस्थ होकर इत्थशाल करे और पापग्रह से पराजित हो तो रोग के प्रश्न में मरण कहना। तथा लग्नेश यदि सूर्य के द्वादशांश में हो तथापि मरण समझना ॥६२–६४॥

लग्ने चरे च रोगी क्षणे स्यादरुक् सरुक्चाऽपि ॥६५॥
द्विशरीरे पररोगः स्थिरे स्थिरत्वं गदस्यैव ।
शशिनो वक्रमुथशिले स्थिररोगो मन्दमुथशिले पूर्वम् ॥६६॥
मूत्रनिरोधाद्रोगोत्पत्तिर्ज्ञेया कृतप्रश्ने ।

भा०—प्रश्न लग्न चरराशि हो तो कभी नीरोग और कभी रोग युक्त, यदि द्विस्वभाव लग्न हो तो दो प्रकार के रोग और यदि स्थिर लग्न हो तो रोग को स्थिर समझना चाहिये। चन्द्रमा यदि वक्री ग्रह से इत्थशाल करता हो तो भी रोग को स्थिर समझना। यदि शनि से चन्द्रमा इत्थशाल करै तो मूत्र के निरोध से रोगोत्पत्ति समझना ॥६५–६६॥

अथ पृच्छायाः पूर्वं सप्ताहानि च विलोक्य चत्वारि ॥६७॥
यदि तेषु शशाङ्करवी शुभयुतदृष्टौ तदा शस्तम् ।
मन्दोऽयमथ न वेति प्रश्ने लग्नेश्वरोऽथ चन्द्रो वा ॥६८॥
षष्ठेशमुथशिली स्यादस्तमितो वा तदा मन्दः ।

भा०—रोग के प्रश्नकाल से पूर्व सात दिन और आगे ४ दिन में यदि चन्द्रमा रवि दोनों शुभग्रह से युत दृष्ट हो तो शुभ समझना। तथा—"अमुक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यक्ति को रोग है या नहीं" इस प्रश्न में यदि लग्नेश वा चन्द्रमा षष्ठेश से इत्थशाल करता हो अथवा अस्त हो तो रोग कहना। अन्यथा नहीं ॥६७-६८॥

नौकरी विषय का प्रश्न निरूपण—

ईशोऽन्यो मम भविता न वेति लग्नेश्वरस्य यदि केन्द्रे ॥६९॥
नो भवति मुथशिलं षष्ठान्त्यपतिभ्यां तदा नान्यः ।
वक्री वाऽन्येन समं लग्नपतिः सहजनवमसंस्थेन ॥७०॥
कुरुते यदोत्थशालं तदाऽन्यनाथो भवेत्प्रष्टुः ।
लग्नपतौ केन्द्रस्थे रिपुदृष्ट्या क्रूरवीक्षिते पुण्ये ॥७१॥
रविरश्मिगतेऽथ भवेद्यावज्जीवं च नान्यपतिः ।
अयमीशो भद्रो मे पृच्छायां लग्नपस्य कम्बूले ॥७२॥
स्वामी स एव भव्यो द्यूनेशस्य च शुभोन्येशः ।

भा०—कोई पूछे कि 'मुझे इस मालिक के यहाँ रहना होगा ? या दूसरे स्थान में नौकरी करनी होगी ।' इस प्रश्न में यदि लग्नेश केन्द्र में हो और उसे षष्ठेश या द्वादशेश से इत्थशाल नहीं होता हो तो 'दूसरा मालिक नहीं होगा, यहां ही रहना होगा' ऐसा कहना । यदि लग्नेश वक्री होकर तृतीय नवम स्थानस्थित किसी दूसरे ग्रह से इत्थशाल करता हो तो दूसरे की नौकरी करनी पड़ती है । यदि लग्नेश केन्द्र में और पापग्रह शत्रुदृष्टि से पुण्य (नवमभाव) को देखता हो अथवा लग्नेश अस्त हो तो जीवन पर्यन्त एक ही आदमी की नौकरी करता है । कोई प्रश्न करे कि—"मेरा यह मालिक अच्छा है या दूसरा" तो लग्नेश को चन्द्रमा से कम्बूल हो तो यही स्वामी अच्छा है । यदि सप्तमेशको चन्द्रमा से कम्बूलयोग हो तो दूसरा स्वामी अच्छा होगा, ऐसा कहना ॥६९-७२॥

गृह-भूमि-स्थानानां लग्नप्रश्ने पुरोक्त एव विधिः ॥७३॥

भा०—गृह, भूमि, स्थान सम्बन्धी प्रश्न में पूर्वोक्त ३५ श्लोकों के अनुसार शुभाशुभ कहना चाहिये ॥७३॥

सम्यग्विचार्य वाच्यं शुभमशुभं पृच्छतः स्वधिया ।
भृत्यचतुष्पदलाभं प्रश्ने लग्नेशशीतगू षष्ठे ॥७४॥
षष्ठेशमुथशिलो वा लग्ने षष्ठेश्वरोऽथ तल्लाभः ।
भृत्यस्य वाहनस्य च यद्वा प्रश्ने च लग्नलग्नपती ॥७५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थी दाता सप्तमसप्तमपौ तद्बलात्प्राप्तिः।

भा०—नौकर और पशु के लाभ सम्बन्धी प्रश्न में यदि लग्नेश और चन्द्रमा षष्ठभाव में हो अथवा षष्ठेश से इत्थशाल करता हो तो नौकर या पशु का लाभ कहना। अथवा नौकर और वाहन के प्रश्न में लग्न और लग्नेश को अर्थी (चाहने वाला), तथा सप्तमभाव और सप्तमेश को दाता मान कर फल कहना अर्थात् दोनों में इत्थशाल हो तो लाभ, अन्यथा नहीं कहना चाहिये ॥७४–७५॥

सप्तमभाव (स्त्री) सम्बन्धी प्रश्न निरूपण—

स्त्रीलाभस्य प्रश्ने स्मराधिपे लग्नपेन शशिना वा ॥७६॥
कृतमुथशिले युवत्या अयाचिताया भवेल्लाभः।
यदि लग्नपो विधुर्वा द्यूने तद्याचितां स्त्रियं लभते ॥७७॥
लग्नेशान्मूसरिफे चन्द्रेऽस्तपमुथशिले स्वयं लाभः।
येन समं तु मुथशिलस्तत्र विनष्टे च पापयुतदृष्टे ॥७८॥
निकटीभूय तदा किल विनश्यति स्त्रीगतं कार्यम्।
पापेऽत्र रन्ध्रनाथे स्त्रीजातेरेव विघटते कार्यम् ॥७९॥
सहजपतौ भ्रातृभ्यस्तुर्येशे पितृत एव नाऽन्येभ्यः।
सौम्यकृतयुतिदृग्भ्यां पूर्वोक्तस्थानतः शुभं वाच्यम् ॥८०॥

भा०—स्त्रीलाभ सम्बन्धी प्रश्न में यदि सप्तमेश को लग्नेश या चन्द्रमा से इत्थशाल हो तो बिना प्रार्थना के ही युवती स्त्री का लाभ कहना। यदि लग्नेश या चन्द्रमा सप्तम भाव में हो तो प्रार्थी होने पर स्त्री का लाभ कहना। यदि चन्द्रमा को लग्नेश से ईसराफ और सप्तमेश से इत्थशाल योग हो तो भी अनायास स्त्री का लाभ कहना। परञ्च जिससे चन्द्रमा को इत्थशाल हो वह यदि अस्त या पाप युत दृष्ट हो तो उपस्थित हुआ भी स्त्री सम्बन्धी कार्य नष्ट हो जाता है। यदि पाप ग्रह अष्टमेश होकर सप्तम में हो तो स्त्री द्वारा, यदि तृतीयेश होकर ग्रह सप्तम में हो तो भाई के द्वारा, यदि चतुर्थेश होकर पापग्रह सप्तम में हो तो माता पिता के द्वारा कार्य विघटन (नष्ट) होता है। तथा अन्य भावेश से कार्य विघटन नहीं होता। परञ्च यदि शुभग्रह की दृष्टियोग हो तो शुभ ही कहना ॥ ७६–८० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्री से प्रेम सम्बन्धी प्रश्न निरूपण—

प्रीतिस्थानप्रश्ने स्मरपतिलग्नेशमुथशिले स्नेहः ।
झकटकदृशा झकटकः शशिकम्बूले तु साऽपि शुभा ॥८१॥
यदि मन्दो लग्नेशः केन्द्रे च स्यात्तदा बली प्रष्टा ।
अस्तेश्वरे च मन्दे केन्द्रे प्रतिवादिनोऽस्ति बलम् ॥८२॥
उभयोरेकस्थितयोर्ज्ञातव्या झकटकं तयोः प्रीतिः ।
सूर्ये न शुभं विबले नरस्य शुक्रे स्त्रियो द्वयोरुभयोः ॥८३॥

भा०—स्त्री से प्रीतिसम्बन्धी प्रश्न में—सप्तमेश और लग्नेश में मित्र दृष्टि से मुथशील हो तो अतिशय प्रेम कहना, यदि शत्रुदृष्टि से इत्थशाल हो तो परस्पर कलह कहना। किन्तु यदि चन्द्रमा से कम्बूल हो तो शत्रु दृष्टि भी शुभ ही होती है। यदि लग्नेश मन्दगति होकर केन्द्र में हो तो पुरुष को बली कहना, यदि सप्तमेश मन्दगति होकर केन्द्र में हो तो स्त्री को बलवती समझना। यदि लग्नेश और सप्तमेश एक स्थान में हो तो दोनों के कलह में भी परस्पर प्रेम समझना। प्रश्न समय में सूर्य निर्बल हों तो पुरुष का अशुभ तथा शुक्र निर्बल हो तो स्त्री का अशुभ तथा दोनों निर्बल हो तो दोनों के लिये अशुभ समझना। अर्थात् दोनों बली हो तो दोनों का शुभ समझना ॥ ८१-८३ ॥

रुष्टा (रूठी हुई) स्त्री के आगमन सम्बन्धी प्रश्न निरूपण—

मम गृहिणी रुष्टा पुनरेष्यति नो वाऽथ भूम्यधःस्थरवौ ।
भूपरिगते च शुक्रे नैति पुनर्वक्रितेऽभ्येति ॥८४॥
सूर्यान्निर्गतशुक्रे वक्रेऽपि समेति चाऽन्यथा रुष्टा ।
क्षीणेन्दौ बहुदिवसैः पूर्णविधौ च द्रुतमुपैति ॥८५॥

भा०—कोई प्रश्न करे कि—"मेरी स्त्री रुष्ट होकर चली गई वह आवेगी या नहीं" तो भूमि (चतुर्थ लग्न) से पीछे (प्रथम लग्न चतुर्थ लग्न के मध्य) सूर्य हो तो नहीं आवेगी। तथा यदि चतुर्थभाव से आगे सप्तम पर्यन्त में शुक्र हो तो भी नहीं आवेगी, यदि शुक्र वक्री हो तो स्त्री लौटकर आवेगी ऐसा कहना। यदि सूर्य से योग कर शुक्र आगे बढ़ गया हो, (अर्थात् सूर्य से ईसराफ योग करता हो) तो स्त्री लौटकर आती है। अन्यथा रूठी ही रहती है। यदि क्षीण चन्द्रमा हो तो अधिक दिनों में, यदि पूर्ण चन्द्रमा हो तो शीघ्र ही लौट कर आती है ॥ ८४-८५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कन्या में दोष गुण ज्ञान सम्बन्धी प्रश्न—

एषा कुमारिका किल निर्दोषा किन्न वेति पृच्छायाम् ।
लग्ने स्थिरे स्थिरर्क्षे लग्नपशशिनोश्च निर्दोषा ॥८६॥
चरराशिगतैरेतैरियं कुमार्यपि च जातदोषा स्यात् ।
द्विशरीरस्थे चन्द्रे चरलग्ने स्वल्पदोषा स्यात् ॥८७॥
शशिभौमावेकर्क्षे स्थिरवर्जे तत्परेण गुप्तमियम् ।
रमिता शनिचन्द्रमसोर्लग्नगयोः प्रकटमुपभुक्ता ॥८८॥
यदि भौमशनी केन्द्रे विधुदृष्टो वृश्चिकेऽथ शुक्रः स्यात् ।
तद्द्रेष्काणेऽथ तदा निभ्रान्तं जातदोषैषा ॥८९॥

भा०—"इस कन्या में दोष है या नहीं" इस प्रकार के प्रश्न में लग्न, लग्नेश और चन्द्रमा यदि स्थिर राशि में हो तो निर्दोषा, यदि चरराशि में हो तो दोषयुक्ता तथा द्विस्वभाव में हो तो स्वल्पदोष (अपवाद मात्र से) युक्ता समझना चाहिये । यदि चन्द्र, मङ्गल दोनों एक ही राशि में चर या द्विस्वभाव में हो तो गुप्त रूप से परपुरुष से भुक्ता समझना । यदि शनि, चन्द्रमा, लग्न में हो तो प्रकट रूप से भुक्ता समझना । यदि मङ्गल, शनि केन्द्र में हो अथवा वृश्चिक में शुक्र हो और चन्द्र से दृष्ट हो अथवा वृश्चिक के द्रेष्काण में शुक्र हो तो प्रत्यक्ष दोष युक्ता कन्या को समझना चाहिये ॥८६-८९॥

प्रसूता अप्रसूता का ज्ञान—

एषा किल प्रसूता सिते घटे ज्ञे हरौ च नो सूता ।
अनयोरलि-वृषगतयोः सूता नारी परिज्ञेया ॥९०॥

भा०—यदि शुक्र वा बुध कुम्भराशि में हो तो प्रसूता, यदि सिंह राशि में हो तो अप्रसूता समझना । अथवा शुक्र, बुध, वृश्चिक या वृष में हो तो प्रसूता समझना चाहिये ॥ ९० ॥

भौमबुधशुक्रचन्द्रा द्विशरीरे चापवर्जिते चेत्स्युः ।
अग्रेऽस्ति तत्प्रसूतिश्चापे नाग्रे न पृष्ठतः सूता ॥९१॥
क्रूरश्चेच्चरराशौ परतः सूता स्थिरे तु निजपत्युः ।
मिश्रे तु मिश्रमूह्यं जातकसन्देहपृच्छायाम् ॥९२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुर्विण्येषा पत्युः परपुरुषाद्वेति लग्नसुतपत्योः ।
शुभयुतिदृग्भ्यां स्वपतेः शनिभौमदृशाऽन्यतो गुर्वी ॥९३॥

भा०—धनु छोड़कर अन्य द्विस्वभाव [मिथुन, कन्या, मीन] में मंगल, बुध, शुक्र, चन्द्र हो तो आगे प्रसव समझना। यदि वे धनु में हो तो न आगे और न पहिले ही प्रसूता होती है। यदि पापग्रह सब चरराशि में हो तो परपुरुष से, यदि स्थिर में हो तो अपने पति से ही गर्भ कहना चाहिये। द्विस्वभाव में हो तो मिश्रफल समझना। "अमुक स्त्री को अपने पति का गर्भ है या किसी दूसरे का ?" इस प्रश्न में लग्नेश और पञ्चमेश पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो अपने पति से, यदि शनि, मंगल की दृष्टि हो तो परपुरुष से गर्भ समझना चाहिये ॥ ९१-९३ ॥

सतीत्व परीक्षा-प्रश्न निरूपण—

कुलटा सतीयमथवा लग्नपतिश्चन्द्रमाश्च भौमेन ।
एकांशे मुथशिलकृत्तदैव भवने भजत्यन्यम् ॥९४॥
यदि निजगृहगो भौमस्तदाऽन्यदेशं प्रयाति जारकृते ।
रविणेति मुथशिले सत्युपभुक्ता सा तु राजपुरुषेण ॥९५॥
सौम्येन लेखकेन च निजभे शुक्रेण योषयैव स्त्री ।
एतैर्योगैरसती विपरीते सुचरितेति विज्ञेयम् ॥९६॥
लग्नपतिनाऽथ शशिना मूसरिफे भूसुते भवेज्जारः ।
युक्तः पुनर्गुरुदृशा पुत्रभयाद्बुधदृशा च राजभयात् ॥९७॥
सितदृष्ट्या परनारीभयात्सितज्ञैकराशिगतदृष्ट्या ।
जारस्य स्थविरत्वाद्विलज्जिता त्यजति जारं सा ॥९८॥

भा०—"अमुक स्त्री कुलटा है या सती" इस प्रकार के प्रश्न में लग्नेश और चन्द्रमा यदि तुल्य अंश में रहकर मंगल से इत्थशाल करता हो तो वह स्त्री अपने ही घर में ही परपुरुष से प्रेम करती है। यदि मंगल अपने घर में हो तो दूसरे स्थान में जाकर परपुरुष से मिलती है। यदि लग्नेश और चन्द्रमा रवि से इत्थशाल करता हो तो वह स्त्री राजपुरुष से, पापयुत बुध से इत्थशाली हो तो लेखक से प्रेम करती है। यदि शुक्र स्वगृह में हो तो अन्य स्त्री के द्वारा ही अपनी कामाग्नि शान्ति करती है। प्रश्नसमय इन योगों से स्त्री को कुलटा, अन्यथा पति-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्रता समझना चाहिये । लग्नेश या चन्द्रमा से मंगल को ईसराफ योग हो तो उस स्त्री को जार (परपुरुष) से प्रेम समझना । यदि उस पर गुरु की दृष्टि हो तो पुत्र के भय से, रवि की दृष्टि हो तो राजा के भय से, शुक्र की दृष्टि हो तो परोसिन स्त्री के भय से जार पुरुष से मिलने नहीं पाती है । यदि एक राशिगत बुध, शुक्र की दृष्टि हो तो जार पुरुष को वृद्ध समझ कर या लज्जिता होकर त्याग देती है ॥ ९४–९८ ॥

अष्टम भाव सम्बन्धी प्रश्न—उनमें प्रथम संग्राम में जय पराजय विचार—

नृपसंग्रामप्रश्ने विलग्नलग्नेशसंस्थितात्खेटात् ।

शशिमुथशीलात्प्रष्टास्तास्तपसंस्थेन्दुमुथशिलाच्छत्रुः ॥९९॥

भा०—संग्राम के प्रश्न में लग्न और लग्नेश के साथ रहने (या इत्थशाल करने) वाले ग्रह को यदि चन्द्रमा से इत्थशाल हो तो प्रश्नकर्ता को बली समझना । तथा सप्तमभाव और सप्तमेश के साथ वाले ग्रह से चन्द्रमा इत्थशाल करै तो प्रष्टा के शत्रु को ही बलवान समझना । अर्थात् दोनों में सदृश योग हो तो दोनों को तुल्य बल समझना चाहिये ॥ ९९ ॥

अथवा शनिकुजजीवाः शीघ्रेभ्यो बलयुता उपरि चराः ।

बुधसितचन्द्रास्तेभ्या त्रिवशश्चाधश्चराश्च सञ्चिन्त्या ॥१००॥

भा०—अथवा शनि, मंगल, गुरु, (सूर्य से ऊपर रहने वाले मन्दगति) ये यदि शीघ्र (सूर्याधःस्थ बुध, शुक्र, चन्द्रमा) से अधिक अंश में हों तो बली और अल्प अंश में हो तो दुर्बल समझे जाते हैं । इस प्रकार शनि, मंगल, गुरु के बली होने पर प्रष्टा की विजय, दुर्बल होने पर पराजय समझना । क्योंकि मन्दगति (शनि, मंगल गुरु) ये प्रष्टा के ग्रह समझे जाते हैं । तथा शीघ्र (बुध, शुक्र, चन्द्र ये) शत्रु के ग्रह हैं । इसको ध्यान में रखना चाहिये ॥ १०० ॥

लग्नपतावस्तपतौ षट्त्रिदशायमुथशिले स्नेहः ।

वगद्वयमध्याधः पतितः सोऽन्येन वध्यः स्यात् ॥१०१॥

वर्गद्वयाधिपानां मूसरिफेऽङ्गस्तेन रणदैर्घ्यम् ।

लग्नस्वामिनि मन्दे कम्बूले उपरिगे जयः प्रष्टुः ॥१०२॥

एवं गुणे तु तस्मिन्विप्रविनष्टेस्तपे च नीचस्थे ।

केन्द्रेऽस्ते वास्तपतौ प्रष्टुर्हानिः प्रवक्तव्या ॥१०३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—सप्तमेश से ६।३।१०।१ (उपचय) स्थानस्थ लग्नेश को इत्थशाल हो तो परस्पर स्नेह [सन्धि] । तथा प्रष्टा ग्रह, और शत्रुग्रह दोनों में जों अल्पांश हो वह दूसरे से वध्य [पराजित] होता है । दोनों प्रकार के ग्रहों को यदि अस्त-ग्रह से ईसराफ योग हो तो बहुत दिनों तक संग्राम समझना । यदि लग्नेश मन्द-गति अधिक अंश में होकर कम्बूल योग करता हो तो प्रष्टा की जय होती है । इस प्रकार के योग में भी यदि सप्तमेश प्रणष्ट [अस्त] हो वा बीच में हो अथवा अस्त होकर सप्तमेश केन्द्र में हो तो प्रष्टा की हानि समझना ॥ १०१–१०३ ॥

लग्नादधः शुभे सति उपरि च मन्दे शुभः सहायः स्यात् ।
लग्नपतौ रन्ध्रस्थे रन्ध्रपतिमुथशिले मृतिः प्रष्टुः ॥१०४॥
सप्तेशे धनसंस्थे धनेशकृतमुथशिले रिपोर्नाशः ।
लग्नेशदशमपत्यार्मुथशिलतः पृच्छकस्य जयवीर्ये ॥१०५॥
तुर्यास्तपयोरेवं शत्रोर्योगे जयो ज्ञेयः ।
उभयवर्गेऽपि केन्द्रे तत्पतिकृतमुथशिले बलं ज्ञेयम् ॥१०६॥

भा०—लग्न से पीछे शुभ [बुध, शुक्र, चन्द्र] और लग्न से आगे मन्द [गुरु, शनि, मंगल] हों तो प्रष्टा को अच्छे सहाय मिलते हैं । लग्नेश अष्टम में हो और अष्टमेश से इत्थशाल हो तो प्रष्टा का मरण कहना । यदि सप्तमेश द्वितीयभाव में हो और द्वितीयेश में इत्थशाल हो तो शत्रु का ही नाश समझना । और लग्नेश दशमेश में इत्थशाल हो तो प्रश्नकर्ता की जय होती है । चतुर्थेश सप्तमेश में इत्थशाल हो तो शत्रु की जय होती है । दोनों वर्ग के ग्रह केन्द्र में हो और केन्द्रेश से इत्थशाल हो तो जिस वर्ग से ग्रह को बली ग्रह से इत्थशाल हो उसकी जय समझना ॥ १०४–१०६ ॥

चरराशौ सबलत्वं विजयः प्रान्ते विनाशस्तु ।
लग्नपतावन्त्यस्थे प्रष्टा नश्यति परोऽस्तपे षष्ठे ॥१०७॥
खपतौ लग्ने प्रष्टुस्तुर्येशोऽस्ते रिपोः सहायबलम् ।
यन्मुथशिलौ रवीन्दू तस्य बलं मुसरिफे हानिः ॥१०८॥

भा० —जो ग्रह चरराशि में हो उसको बली समझना और उसी की जय होती है । यदि द्विस्वभाव में हो तो नाश (पराजय) समझना । लग्नेश १२ वें में हो तो प्रश्नकर्ता का नाश और सप्तमेश १२ वें में हो तो उसके शत्रु का नाश

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होता है । दशमेश लग्न में हो तो प्रश्नकर्ता को दूसरे की सहायता से बल होता है । यदि चतुर्थेश सप्तम हो तो शत्रु को दूसरे से सहायता मिलती है । जिस ग्रह से रवि, चन्द्रमा को इत्थशाल हो उसको बली, तथा जिससे इसराफ हो उसकी हानि समझना ॥१०७–१०८॥

अथ नवमभाव (यात्रा–आदि) सम्बन्धी निरूपण—

मम गमनं भविता किं न वेति लग्नेश्वरेण वा केन्द्रे ।
नवमेशमुथशिले सति नवमेशे वा भवेद्गमनम् ॥१०९॥
लग्नस्थे नवमपतौ लग्नाधिपमुथशिले च सञ्चारात् ।
रहितो याति पुनर्नो नवमदृशा वेक्षिते योगे ॥११०॥
लग्नपतौ केन्द्रस्थे सहजग्रहमुथशिले च विक्रूरे ।
गमनं स्यादस्मिन्वा केन्द्रे क्रूरे च नास्ति गतिः ॥१११॥
अस्ते क्रूरेऽपि च यत्कार्ये निर्याति विघ्नमत एव ।
आकाशस्थे पापे राजकुलाज्ज्येष्ठतो निजाद्वापि ॥११२॥
नवमेशो मुथशिलगे लग्नाधीशेन पापरिपुदृष्टे ।
गमनेऽवसानतः स्यात्प्रष्टुः कष्टं क्षयोऽर्थस्य ॥११३॥

भा०—"मेरी यात्रा होगी या नहीं" इस प्रश्न में यदि केन्द्रस्थ लग्नेश से नवमेश को इत्थशाल हो वा नवमेश केन्द्र में हो तो यात्रा होती है । नवमेश लग्न में हो और लग्नेश से इत्थशाल हो, वा लग्नेश नवम दृष्टि से नवमेश को देखता हो या दोनों का योग हो तो यात्रा से लौटा हुआ भी मनुष्य फिर यात्रा करता है । लग्नेश केन्द्र में हो और पापरहित तृतीय भावस्थ ग्रह से इत्थशाल हो तो गमन कहना । तथा केन्द्र में पापग्रह हो तो यात्रा नहीं होती है । सप्तमभाव में पापग्रह हो तो जिस कार्य के लिये यात्रा करै उसी कार्य से विघ्न होता है । दशम भाव में पापग्रह हो तो राजकुल से वा अपने ज्येष्ठ भाई या पिता से कार्य में विघ्न होता है । नवमेश यदि लग्नेश से इत्थशाल करता हो और पापग्रह से दृष्ट हो तो यात्रा के अन्त में प्रष्टा को कष्ट होता और धन का नाश होता है ॥१०९–११३॥

लग्नेशो नवमेशो मुथशिलकृति रन्ध्रसंस्थिते कष्टम् ।
उदये तस्मिन्ग्रामाद्विनिःसृतिः स्यात्सुखकरः पन्थाः ॥११४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—लग्नेश से इत्थशाली नवमेश यदि अष्टमभाव में हो तो कष्ट होता है। यदि नवमेश लग्न में हो तो यात्रा अवश्य होती है तथा मार्ग सुखकारी होता है ॥११४॥

लग्नान्मार्गानुभवो व्योम्नः कार्यं स्मराद्गतिस्थानम्।
भूमेः कार्ये परिणतिरेवं लग्ने शरीरसुखम् ॥११५॥
दशमे शुभे च सिद्धिः कार्यस्यास्ते प्रयाति यत्स्थाने।
तत्र शुभं च चतुर्थे परिणामः सुन्दरः कार्ये ॥११६।

भा०—लग्न के अनुसार मार्ग का अनुभव (अर्थात् लग्न विषमोदय हो तो विषम, समोदय हो तो सरल मार्ग इत्यादि) तथा दशम भावानुसार कार्य, सप्तमभाव से गम्य स्थान (जिस स्थान में जाने वाला हो उसका) तथा चतुर्थभाव के अनुसार कार्य का परिणाम समझना चाहिये। जैसे उदाहरण कहते हैं कि—लग्न शुभ हो तो मार्ग में शरीर सुख, दशमभाव शुभ हो तो कार्य सिद्धि, सप्तम शुभ हो तो जहाँ जाने वाला है वहाँ पहुँच कर शुभ और चतुर्थ में शुभ हो तो कार्य का परिणाम उत्तम होता है ॥११५-११६॥

लग्नेशं शशिनं वा यः क्रूरस्तुदति तत्र मनुजर्क्षे।
मनुजत्रिराशिके वा तदा भयं द्विपदतो गन्तुः ॥११७॥
जलराशौ वारिभयं चतुष्पदर्क्षे तथाश्वादेः।
घटचापे द्रुमकण्टकभयं हरौ व्याघ्रसिंहादेः ॥११८॥

भा०—तथा लग्न या चन्द्रमा जिस पापग्रह से युत दृष्ट हो वह पापग्रह यदि द्विपदराशि में या द्विपद द्रेष्काण में हो तो मार्ग में मनुष्य का भय, जलचर राशि में हो तो जल जन्तु का भय, चतुष्पद राशि में हो तो घोड़े आदि चतुष्पद का भय कहना। यदि कुम्भ और धनु में हो तो वृक्ष और काँटे का भय, सिंह में हो तो वाघ सिंह का भय कहना चाहिये ॥११७-११८॥

किसी नगर (शहर) से लाभालाभ प्रश्न—

नगरप्रवेशतोऽस्मात् फलमस्ति न वा प्रवेशलग्नमिह।
तस्मिन्धनपे वक्रे नो हरणं कार्यसिद्धिर्वा ॥११९॥
अतिचरिते लहुदिवसं हरणं नो कार्यसिद्धिरीषदपि।
नवमतृतीयगतेऽस्मिन्कार्यं कृत्वाऽऽशु निजपुरं याति ॥१२०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्ने कर्मण्याये धनपयुते शोभनं ज्ञेयम् ।
सक्रूरसप्तमस्थे पथि विघ्नाज्झकटकश्चतुर्थस्थे ॥१२१॥

भा०—"इस नगर में प्रवेश करने से लाभ होगा या नहीं ?" इस प्रकार के प्रश्न लग्न में यदि वक्री द्वितीयेश हो तो वहाँ हरण (स्थिति=रहना) वा कार्यसिद्धि नहीं होती है। यदि द्वितीयेश अतिचारी हो तो बहुत दिन रहना और कुछ भी कार्यसिद्धि नहीं होती है। यदि धनेश तृतीय या नवमभाव में हो तो शीघ्र कार्य सम्पन्न करके अपने घर आता है। लग्न, दशम और एकादश भाव में द्वितीयेश हो तो शुभ फल कहना और पापग्रह सहित सप्तम में हो तो मार्ग में विघ्न तथा चतुर्थ स्थान में हो तो कलह होता है ॥११९–१२१॥

अथ दशम भाव (राज्यलाभादि) प्रश्न निरूपण—

राज्याप्तिप्रश्नलग्ने लग्नेशे शशिनि वा नभःपतिना ।
कृतमुथशिलेऽम्बरदृशा राज्यं रूपक्रमाद्भवति ॥१२२॥
अन्योन्यभवनगमनात् क्रूराभावेऽथ चिन्तितप्राप्तिः ।
लग्नस्थेनान्येन च सौम्येनाम्बरपमुथशिलेऽप्येवम् ।
पापार्दिते तु मन्दे निकटीभूयोत्तरत्यधो राज्यम् ॥१२३॥

भा०—राज्यलाभसम्बन्धी प्रश्न में लग्नेश वा चन्द्रमा को यदि दशमेश से दशम दृष्टि से इत्थशाल हो तो अपने कुलानुसार राज्य-लाभ कहना। यदि लग्नेश दशम में और दशमेश लग्न में पापग्रह से रहित हो तो इच्छित राज्य का लाभ होता है। अथवा लग्नस्थ किसी शुभ ग्रह से दशमेश का इत्थशाल हो तो भी इच्छित राज्य मिलता है। यदि उन दोनों में मन्दगति ग्रह पापग्रह से युक्त हो तो राज्य-लाभ निकट होकर फिर नहीं होता है ॥१२२-१२३॥

भूमिस्थे क्रूरदृशा त्वपवादः शुभदृशा कीर्तिः ।
मन्दग्रहे बलवति क्रूरवियुक्ते यदा शशी विबलः ॥१२४॥
मन्दबलेन भ्रमणात् राज्यप्राप्तिर्भवेत्प्रष्टुः ।
लग्नाधिपतौ स्वगृहे लाभो राज्यस्य तुङ्गगे भौमे ॥१२५॥
लग्नाम्बराधिपौ यदि कम्बूलौ केन्द्रगेन्दुमुथशिलतः ।
उत्तमराज्यावाप्तिः स्वर्क्षस्थे चेन्दुतो विपुला ॥१२६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—लग्नेश या दशमेश यदि चतुर्थ स्थान में पापग्रह से दृष्ट हो तो अपवाद, तथा शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो सुयश होता है। लग्नेश और दशमेश में जो मन्दगति हो वह बली और पाप से रहित हो और चन्द्रमा निर्बल हो तो थोड़ी सेना के साथ भ्रमण करने से राज्य लाभ कहना। लग्नेश अपनी राशि में हो और मङ्गल उच्च में हो तो राज्य लाभ होता है। लग्नेश और दशमेश में इत्थशाल हो और केन्द्रगत चन्द्रमा के इत्थशाल से यदि कम्बूल योग हो तो उत्तम राज्य का लाभ होता है, यदि चन्द्रमा स्वराशि में हो तो बड़ा विशाल राज्य का लाभ होता है ॥१२४–१२६॥

यत्रर्क्षे लग्नेशस्तत्पतिरशुभे गृहे तदा कार्यम् ।
न स्यादस्ते कष्टाद्दशमदृशा कटुकता कार्ये ॥१२७॥

भा०—जिस राशि में लग्नेश हो उस राशि का स्वामी अशुभ स्थान में हो तो कार्यसिद्धि नहीं होती है। सप्तम में हो तो कष्ट से सिद्धि, यदि दशम भाव पर दृष्टि हो तो कार्य में विघ्न कहना ॥१२७॥

राज्यप्राप्तौ सत्यां यदि चेच्छति कोऽपि परिणतिं च तदा ।
लग्नं शरीरकार्यं गृहकर्मास्तं नभश्च राज्यार्थम् ॥१२८॥
लाभो मित्रस्यार्थे चतुर्थकं कर्मणोऽवसितये च ।
द्रव्यं धनाय सहजं भृत्येभ्यो रिपुगृहं च वैरिभ्यः ॥१२९॥
एतैः शुभैः शुभं स्यादशुभे वामं च सर्वकार्याणाम् ।
वित्तस्वामिनि भौमे नीचस्थे पारदारिके व्ययकृत ॥१३०॥
जीवे धर्माय रवौ गुरुपूजायै सिते विलासाय ।
वाणिज्याय ज्ञे पुनरिन्दौ मुथशिलिनि चान्यथान्यर्थम् ॥१३१॥

भा०—राज्य प्राप्ति होने पर कोई उसकी परिणति (दृढ़ता) के लिये प्रश्न पूछे तो लग्न को शरीर सम्बन्धी कार्य, सप्तम को गृहसम्बन्धी कार्य, दशम भाव को राज्य सम्बन्धी कार्य, एकादश को मित्र कार्य, चतुर्थ भाव को कर्म का ज्ञान, द्वितीय को धन, तृतीय को नौकर, और षष्ठ को शत्रुओं का भाव समझना। इनमें जो भाव शुभ हो उसका शुभ, जो अशुभ हो उसका अशुभ फल समझना। जैसे उदाहरण कहते हैं—कि-मङ्गल धनेश होकर नीच में हो तो परस्त्री के अर्थ धन का व्यय होता है। वृहस्पति द्वितीयेश हो तो धर्म कार्य में, यदि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य हो तो गुरुपूजा में व्यय होता है। तथा द्वितीयेश शुक्र हो तो विलास के लिये, बुध हो तो वाणिज्य व्यवसाय के लिये धन का व्यय कराता है, यदि चन्द्रमा से इत्थशाल हो तो विशेष रूप से व्यय होता है। अन्यथा अन्य कार्यों में व्यय कहना चाहिये ॥१२८-१३१॥

लग्नपतौ पतितस्थे विबले राज्यात्ययस्तु कम्बूले ।
कोऽपि गुणः स्यात्पापाक्रान्तैरशुभं च्युतो भवति ॥१३२॥

भा०—यदि लग्नेश निर्बल होकर नीच स्थान में हो तो राज्य का नाश होता है। यदि कम्बूल योग हो तो कुछ शुभ फल भी होता है। यदि पाप ग्रह से आक्रान्त हो तो अशुभ ही होता है ॥ १३२ ॥

नरपतिसचिवस्नेहप्रश्ने कम्बूललग्नसप्तमयोः ।
मुथशिलयोः शुभदृष्ट्या शुभता राज्ये मिथः स्नेहः ॥१३३॥
राज्यं चरं स्थिरं वा लग्नपगगनेशयोः सहयोः ।
यद्येको मन्दः स्यात्केन्द्रे तत्स्थितमतोऽन्यथा वाच्यम् ॥१३४॥
यदि वा स वाममार्गे भूमौ वा प्रच्युतिर्भवेत्पूर्वम् ।
कम्बूले सति लभते शीघ्रन्त्वथ मुसरिफे न पुनः ॥१३५॥

भा०—राजा और मन्त्री में परस्पर प्रेम सम्बन्धी प्रश्न में लग्नेश सप्तमेश में कम्बूल हो, अथवा मित्रदृष्टि से मुथशील हो तो राज्य में कल्याण और राजा मन्त्री में परस्पर प्रेम कहना। राज्य चल है या स्थिर इस प्रकार के प्रश्न में लग्नेश और दशमेश एक राशि में हो और एक मन्दगति ग्रह केन्द्र में हो तो राज्य को स्थिर, अन्यथा चल समझना। यदि वह (मन्दगति ग्रह) वक्र होकर चतुर्थ में हो तो राज्यच्युति होती है, यदि कम्बूलयोग हो तो शीघ्र पुनः राज्य-लाभ होता है। ईसराफ योग हो तो राज्यलाभ नहीं होता है ॥१३३-१३५॥

अथैकादश (आय भाव) प्रश्न विचार—

नृपतेर्गौरवलाभाशादि मम स्यान्न वेति च प्रश्ने ।
आयेशलग्नपत्योः स्नेहदृशा मुथशिले द्रुतं भवति ॥१३६॥
रिपुदृष्ट्या बहुदिवसैः केन्द्रे चायेशचन्द्रकम्बूले ।
वाच्या पूर्णैवाशा चरस्थिरद्विस्वभावगे स्वनामफलम् ॥१३७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्दे क्रूरोपहते भूत्वाशाशु प्रणाशमुपयाति ।
क्रूरयुक्ते च शुभयुज्यधिकारवशेन लब्ध्याशा ॥१३८॥

भा०—"मुझे राजा से गौरव आदि लाभ की आशा है या नहीं" इस प्रश्न में यदि लग्नेश एकादशेश को मित्रदृष्टि से मुथशील हो तो शीघ्र लाभ, यदि शत्रुदृष्टि से मुथशील हो तो विलम्ब से लाभ कहना। यदि लाभेश केन्द्र में हो और कम्बूल योग हो तो आशा पूर्ण होती है। परञ्च चर में हो तो शीघ्र, द्विस्वभाव में हो तो कुछ विलम्ब से और स्थिर में हो तो अधिक दिनों में आशा पूरी होती है। यदि मन्दगति ग्रह पापयुक्त हो तो लाभ होकर नष्ट हो जाता है। पाप से युक्त रहने पर भी यदि शुभ ग्रह से योग हो तो योग्यतानुसार लाभ की आशा कहना ॥ १३५–१३८ ॥

मित्रेण सह प्रीतिर्भविता लग्नेश्वरायपत्योश्च ।
मित्रदृशा मुथशिलतः प्रीतिर्वाऽन्योन्यगृहयानात् ॥१३९॥
केन्द्रे स्थितयोरनयोर्मैत्री किल पूर्वजातैव ।
पणफरगतौ पुरस्तादापोक्लिमतो महाप्रीतिः ॥१४०॥

भा०—"मुझे मित्र से प्रीति बनी रहेगी?" इस प्रश्न में यदि लग्नेश एकादशेश में मित्र दृष्टि से मुथशील हो या परस्पर स्थान में स्थित हो तो प्रीति कहना। यदि ये दोनों (लग्नेश, लाभेश) केन्द्र में हो तो पूर्व से ही मैत्री कहना, यदि पणफर में हो तो आगे प्रीति होगी। यदि आपोक्लिम में हो तो परस्पर अत्यन्त प्रेम कहना ॥ १३९–१४० ॥

गुप्तं कार्यमिदं मे सिद्धयति लग्नेश्वरेऽथ चन्द्रमसि ।
शुभमुथशिलगे केन्द्रे तन्निकटे वाऽथ सिद्धिः स्यात् ॥१४१॥

भा०—"मेरा गुप्त (मानसिक) कार्य सिद्ध होगा?" इस प्रश्न में लग्नेश या चन्द्रमा को शुभग्रह से मुथशील हो, केन्द्र में हो या पणफर से हो तो सिद्ध होता है ॥ १४१ ॥

अथ व्यय भाव विचार—

रिपुनिग्रहपृच्छायां बलवति षष्ठे रिपुः सबलः ।
द्वादशपे शुभदृष्टे बलवति वाच्यं बलं प्रष्टुः ॥१४२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रिपुविग्रहपृच्छायां नामोच्चारे रिपोर्बलिन्यस्ते ।
गुप्ते च द्वादशपे बलवति वाच्यं बलं प्रष्टुः ॥१४३॥

भा०—शत्रु निग्रह सम्बन्धी प्रश्न में—षष्ठेश बली हो तो शत्रु को बली समझना। यदि द्वादशेश बलवान् होकर केन्द्र में हो तो प्रश्नकर्ता को बली समझना। रिपुविग्रह के विषय में यदि शत्रु के नाम उच्चारण करके प्रश्न करै और षष्ठेश बली हो तो शत्रु की विजय होती है। यदि शत्रु का नाम न बताकर प्रश्न करे और द्वादशेश बली हो तो प्रश्नकर्ता की विजय होती हैं ॥

शुभयुतदृष्टे सद्व्ययमशुभेक्षणयोगतो व्ययमनर्थात् ।
एवं भावेष्वखिलेषूह्यं सदसत्फलं सुधिया ॥१४४॥

भा०—व्ययसम्बन्धी प्रश्न में—द्वादशभाव यदि शुभग्रह से युत दृष्ट हो तो शुभकार्य में और पापग्रह से युत दृष्ट हो तो पापकार्य में व्यय कहना। इसी प्रकार सब भावों में शुभाशुभ समझना ॥१४४॥

इति गूढार्थप्रकाशिकासहित-नीलकण्ठ्यां प्रश्नतन्त्रे भावप्रश्नाध्यायः ॥२॥

—०*०—

अथ विशेषप्रश्नाध्यायः ॥ ३ ॥

समरसिंहोक्त पथिकागमनप्रश्न—

आगमने पृच्छायां लग्नेशे लग्नमध्यसंस्थेन ।
कृतमुथशिले समेति हि सुखमस्ततुरीयगे कष्टात् ॥ १ ॥

स्थानाच्चलितः प्रश्ने लग्नपतौ सहजनवमगृहसंस्थे ।
लग्नस्थेन मुथशिले पन्थानं वहति पथिकोऽयम् ॥ २ ॥

रन्ध्रेऽथ धने तस्मिन्नाकाशस्थेन मुथशिलेऽप्येवम् ।
केन्द्रस्थितेत्थशाले लग्नेक्षणवर्ज्यमेति न कदाऽपि ॥ ३ ॥

लग्नाधिपतौ वक्रे लग्नं पश्यत्यमुत्र चन्द्रे वा ।
वक्रगमुथशिले सति समेति पथिकः सुखं शीघ्रम् ॥ ४ ॥

अन्त्यस्थितलग्नपतौ शशिना कृतमुथशिले द्रुतमुपैति ।
लग्नाद्वाऽपि चतुर्थाच्छुभा द्वितीये तृतीयगा वापि ॥ ५ ॥

कथयन्ति नष्टलाभं प्रवासिनश्चाऽऽगमं त्वरितम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०— परदेशी के आगमन सम्बन्धी प्रश्न में— लग्नेश को लग्नस्थित या दशमस्थित ग्रह से इत्थशाल हो तो परदेशी सुखपूर्वक आता है। तथा सप्तम और चतुर्थस्थग्रह से इत्थशाल हो तो कष्टयुक्त होकर आता है। यदि लग्नेश ३, ९ भाव में हो तो परदेशी अपने स्थान से चला, यदि लग्नस्थ ग्रह से मुथशील योग हो तो पथिक मार्ग में है ऐसा कहना। लग्नेश यदि अष्टम, द्वितीय में हो और दशमस्थ ग्रह से मुथशील हो तो मार्ग में कहना, यदि लग्न पर दृष्टि न हो तो केन्द्रस्थ ग्रह से मुथशील होने पर भी नहीं आता है। लग्नेश वक्री हो और लग्न को देखता हो अथवा चन्द्रमा को वक्रगति ग्रह से मुथशील हो तो पथिक सुखपूर्वक शीघ्र आता है। लग्नेश द्वादशभाव में चन्द्रमा से मुथशील योग करता हो तो पथिक शीघ्र आता है। लग्न वा चतुर्थ से २, ३ भाव में शुभग्रह हो तो नष्ट वस्तु का लाभ और पथिक का आगमन शीघ्र कहना॥ १–५॥

प्रश्नचिन्तामणि—

ग्रहः षष्ठेऽथ ज़ामित्रे वाक्पतिः कण्टके स्थितः।
पथिकागमनं ब्रूते सिते ज्ञे वा त्रिकोणगे ॥ ६ ॥
पृष्ठोदये पापदृष्टे शुभदृग्वर्जिते बुधः ।
लग्नात्षष्ठे यदा पापा यातुश्च निधनं वदेत् ॥ ७ ॥
यदा क्रूरास्तृतीयस्था देशाद्देशान्तरं गतः।
चौरेणैव हृतस्वश्च पथिकः केन्द्रगा यदि ॥ ८ ॥
पापैः षष्ठत्रिलाभस्थैः कण्टकस्थैः शुभग्रहैः।
प्रवासी सुखमायाति दूरस्थोऽपि सुनिश्चितम् ॥ ९ ॥

भा०—षष्ठ या सप्तमभाव में कोई ग्रह हो, केन्द्र में बृहस्पति, और त्रिकोण में बुध या शुक्र हो तो पथिक का आना कहना। पृष्ठोदय लग्न पाप से दृष्ट और शुभ से अदृष्ट हो तथा लग्न से षष्ठभाव में पापग्रह हो तो परदेशी का मरण कहना। यदि पापग्रह तृतीयभाव में हो तो परदेशी अपने एक स्थान से दूसरे देश गया ऐसा कहना। तथा केन्द्र में पापग्रह हो तो पथिक का धन चोरी गया है ऐसा समझना। यदि पापग्रह ३, ६, ११ स्थान में हो और शुभग्रह केन्द्र में हो तो दूर में रहनेवाला भी सुख पूर्वक शीघ्र आता है॥ ६-९॥

चतुरस्रे त्रिकोणे वा पापगेहस्थितः शनिः।
पापदृष्टश्च नियतं बन्धनं यातुरादिशेत् ॥१०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुभयुक्ते स्थिरे लग्ने स्थिरो बन्धश्चरेऽन्यथा ।
द्वितनौ सौम्यसंयुक्ते बन्धमोक्षौ क्रमेण तु ॥११॥
पापास्त्रिकोणजामित्रे विलग्ने पृष्ठकोदये ।
शत्रुभिर्वीक्ष्यमाणाश्च यातुः कष्टं वदेत्सुधीः ॥१२॥

भा०—पापग्रह की राशि में स्थित शनि यदि ४।८।५।९ में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो पथिक का कैद (बन्धन) समझना। यदि स्थिर लग्न शुभग्रह से युक्त हो तो बन्धन स्थिर (अधिक दिन का), चर लग्न हो तो शीघ्र बन्धन से मुक्त समझना। यदि द्विस्वभाव लग्न हो तो बन्धन से मुक्त होकर फिर बन्धन समझना। यदि पापग्रह ५।९।७ और-लग्न स्थान में हो और अपने शत्रु से दृष्ट हो तथा पृष्ठोदय लग्न हो तो पथिक को कष्ट से युक्त समझना ॥१०–१२॥

मार्गस्थानगतैः सौम्यैर्मार्गं तस्य शुभं वदेत् ।
क्रूरैर्दुःखं विलग्नस्थैः पापैः क्लेशमवाप्नुयात् ॥१३॥
चरलग्ने चरांशे वा चतुर्थे चन्द्रमाः स्थितः ।
प्रवासी सुखमायाति कृतकार्यश्च वेश्मनि ॥१४॥
कण्टकैः सौम्यसंयुक्तैः पापग्रहविवर्जितैः ।
प्रवासी सुखमायाति निधनस्थे सुधाकरे ॥१५॥

भा०—यदि नवमभाव में शुभग्रह हो तो पथिक का मार्ग सकुशल, और पापग्रह हो तो मार्ग में दुःख तथा लग्न में पापग्रह हो तो भी क्लेश समझना। यदि चरराशि और चरनवांश में स्थित चन्द्रमा लग्न या चतुर्थभाव में हो तो प्रवासी सुखपूर्वक कृतकार्य होकर घर आता है। केन्द्र में शुभग्रह हो, पापग्रह न हो और अष्टमभाव में चन्द्रमा हो तो भी सुखपूर्वक घर आता है ॥१३–१५॥

गमाऽऽगमौ तु न स्यातां योगे दुरुधरकृते ।
शुभैः शुभकृतो रोधः पापैस्तस्करतो भयम् ॥१६॥
गमाऽऽगमौ हि न स्यातां स्थिरराशौ विलग्नगे ।
न रोगोपशमो नाशो द्रव्याणां न पराभवः ॥१७॥
विपरीतं चरे वाच्यं फलं मिश्रं द्विमूर्तिषु ।
स्थिरवत्प्रथमे खण्डे परार्धे चरराशिवत् ॥१८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—गमनागमन प्रश्न में यदि चन्द्रमा से द्वितीय द्वादश में ग्रह हो तो गमन या आगमन नहीं कहना। यदि शुभग्रह हो तो, शुभकार्य के लिये रुकना, और पापग्रह हो तो चोर आदि के भय से रोध (रुकना) समझना। अथवा स्थिर राशि लग्न हो तो भी गमन या आगमन, रोग का नाश, पराजय आदि नहीं कहना। यदि चर लग्न हो तो जो प्रश्न हो उसकी सिद्धि कहना। द्विस्वभाव लग्न में पूर्वार्ध में स्थिर और उत्तरार्ध में चरराशिवत् फल समझना ॥१६-१८॥

प्रवासी शीघ्रमायाति गुरुशुक्रौ त्रिवित्तगौ ।
चतुर्थस्थानगावेतौ शीघ्रमायाति कार्यकृत् ॥१९॥
इन्दुः सप्तमगो लग्नात् पथिकं वक्ति मार्गगम् ।
मार्गाधिपश्च राश्यर्धात्परभागे व्यवस्थितः ॥२०॥
शुक्रार्कजीवसौम्यानामेकोऽपि स्याद्धनायगः ।
तदाऽऽशु गमनं ब्रूयात्प्रष्टुर्न गमनं व्यये ॥२१॥

भा०—गुरु और शुक्र यदि २,३,४, स्थान में हो तो प्रवासी कृतकार्य होकर शीघ्र आता है। चन्द्रमा लग्न् से सप्तम में हो अथवा नवमेश राशि के उत्तरार्द्ध में हो तो प्रवासी को मार्ग में समझना। शुक्र, रवि, गुरु, बुध इनमें एक भी २,११ में हो तो शीघ्र आगमन और १२ में कोई हो तो नहीं कहना चाहिये॥१९-२१॥

आगमन का समय ज्ञान—

लग्नाद्यावतिथे स्थाने बली खेटो व्यवस्थितः ।
ब्रूयात्तावतिथे मासे पथिकस्य निवर्तनम् ॥२२॥
एवं कालं चरांशस्थे द्विगुणं च स्थिरांशके ।
द्विस्वभावांशगे खेटे त्रिगुणं चिन्तयेत्सुधीः ॥२३॥
यातुर्विलग्नाज्जामित्रभवनाधिपतिर्यदा ।
करोति वक्रमावृत्तेः कालं तु ब्रुवते परे ॥२४॥

भा०—सब से बली ग्रह लग्न से जै वाँ स्थान में हो उतने मास में पथिक का आगमन यदि चरनवांश में हो तो कहना, यदि स्थिर नवांश में हो तो उसके द्विगुणित, द्विस्वभाव नवांश में उससे त्रिगुणित मास में पथिक का आगमन कहना। कोई लग्न से सप्तमेश जितने समय में वक्री हो उतने दिनों में पथिक का आगमन कहते हैं ॥२२-२४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्थे दशमे वापि यदि सौम्यग्रहो भवेत् ।
तदा न गमनं क्रूरैस्तत्रस्थैर्गमनं भवेत् ॥२५॥
लग्नाद्वा लग्ननाथाद्वा यत्संख्याः क्रूरखेचराः ।
नवमे द्वादशे वापि तत्संख्याः स्युरुपद्रवाः ॥२६॥
लग्नाद्वा लग्ननाथाद्वा यावन्तः सौम्यखेचराः ।
मार्गे तत्रोदया वाच्याः स्थाने स्थाने विचक्षणैः ॥२७॥

भा०—गमन के प्रश्न में लग्न से चतुर्थ या दशम में शुभ ग्रह हो तो गमन नहीं कहना । यदि पापग्रह ४।१० में हो तो गमन कहना चाहिये । लग्न या लग्नेश से ९।१२ में जितने पापग्रह हों उतने उपद्रव मार्ग में समझना । तथा जितने शुभ ग्रह ९।१२ में हों उतने प्रकार के अभ्युदय मार्ग में होते हैं ॥२५–२७॥

क्रूरयुक्तेक्षितो मन्दः शुभदृग्योगवर्जितः ।
धर्मस्थस्तनुते व्याधिं प्रोषितस्याष्टगो मृतिम् ॥२८॥
जामित्रस्य शुभोत्थे याता नायाति दुरुधरायोगे ।
मित्रस्वामिनिषेधात्पापोत्थे शत्रुरुक्चौरात् ॥२९॥
चन्द्रार्कयोश्छिद्रगयोर्यमेन संदृष्टयोः स्यात्परशस्त्रभीतिः ।
रन्ध्रे सिते ज्ञे च सुखाप्तिरारे मन्दे भयं पापयुगीक्षितेऽध्वनि ॥३०॥

भा०—यदि पापग्रह से युत दृष्ट शनि नवम स्थान में हो और शुभ ग्रह की दृष्टि से हीन हो तो प्रवासी को रोग भय कहना । इस प्रकार अष्टम भाव में हो तो मरण कहना । यदि ६।८ दोनों स्थान में शुभ ग्रह हो तो मित्र या मालिक के कहने से, यदि पापग्रह ६।८ दोनों में हो तो चोर के भय वा रोग से प्रवासी नहीं आता है । चन्द्रमा और रवि ८ स्थान में शनि से दृष्ट हों तो शत्रु से अस्त्र का भय कहना । यदि शुक्र या बुध ८ में हो तो सुख प्राप्ति और मङ्गल या शनि ८ में पापग्रह से दृष्ट हो तो मार्ग में भय कहना ॥२८–३८॥

परदेशी के जीवन-मरण सम्बन्धी प्रश्न विचार—

लग्नेश्वरे शीतकरेऽथ षष्ठे तुर्येऽष्टमे वाप्यतिनीचगे वा ।
अस्तङ्गते छिद्रपतीत्थशाले युक्ते शुभैर्दूरगतो मृतः स्यात् ॥३१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमेरधःस्थेन च वक्रगेण यदीत्थशालं कुरुते शशाङ्कः ।
सौम्यैरदृष्टे मरणं प्रकुर्याद्दूरस्थितस्यापि विदेशगस्य ॥३२॥
सौम्यैः षष्ठान्त्यरन्ध्रस्थैर्विबलैश्च शुभेक्षितैः ।
पापयुक्तौ शशाङ्कार्कौ तदा दूरस्थितो मृतः ॥३३॥

भा०—लग्नेश और चन्द्रमा यदि ६।४।८ भाव में, नीच में, वा अस्त हो वा अष्टमेश से इत्थशाल करता हो, वा पाप से युक्त हो तो परदेशी का मरण कहना। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रह से अदृष्ट हो और लग्न तथा चतुर्थ के मध्य में स्थित वक्रगति ग्रह से इत्थशाल योग करता हो तो भी परदेशी का मरण कहना। यदि शुभ ग्रह ६।१२।८ स्थान में हो और पापग्रह से दृष्ट हो तथा रवि चन्द्रमा भी पाप से युक्त हो तो परदेशी का मरण समझना॥३१-३३॥

पृष्ठोदये पापयुते त्रिकोणकेन्द्राष्टषष्ठोपगतैश्च पापैः ।
सौम्यैरदृष्टैः परदेशसंस्थो मृतो गदार्तो नवमे च सूर्ये ॥३४॥
तुर्योपरिस्थेन खगेन चन्द्रमा यदीत्थशालं कुरुते शुभेक्षितः ।
सौम्यैर्युतो वा परदेशसंस्थितः सुखी च जीवेत्पथि सौख्यमेति ॥३५॥

भा०—पापग्रह से युत पृष्ठोदय लग्न हो और पापग्रह त्रिकोण, केन्द्र, ८,६ स्थान में हो शुभ ग्रह से अदृष्ट हो तो परदेशी का मरण, यदि नवम स्थान में सूर्य हो तो परदेशी को रोगयुक्त समझना। चतुर्थ भाव से दशम भाव पर्यन्त स्थित ग्रह से चन्द्रमा को इत्थशाल हो तथा शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो परदेशी को सुखपूर्वक जावित समझना ॥३४-३५॥

षट्पञ्चाशिकोक्त शत्रु के आगमन सम्बन्धी प्रश्न निरूपण—

मार्गान्निवर्तते शत्रुः पापैः शत्रुगृहाश्रितैः ।
चतुर्थगैरपि प्राप्तः शत्रुर्भग्नो निवर्तते ॥३६॥
झषालिकुम्भकर्कटा रसातले यदा स्थिताः ।
रिपोः पराजयस्तदा चतुष्पदैः पलायनम् ॥३७॥
मेषधनुःसिंहवृषा यद्युदयस्था भवन्ति हिबुके वा ।
शत्रुर्निर्वर्ततेऽत्र ग्रहसहिता वा वियुक्ता वा ॥३८॥
नागच्छति परचक्रं यदार्कचन्द्रौ चतुर्थभवनस्थौ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुबुधशुक्रा हिबुके यदा तदा शीघ्रमायाति ॥३९॥
स्थिरोदये जीवशनैश्चरे स्थिते गमागमौ नैव वदेत्तु पृच्छतः।
त्रिपञ्चषष्ठा रिपुसङ्गमाय पापाश्चतुर्थो विनिवर्तनाय ॥४०॥
दशमोदयसप्तमगाः सौम्या नगराधिपस्य विजयकराः।
आरार्की ज्ञगुरुसिताः प्रभङ्गदौ विजयदा नवमे ॥४१॥
उदयर्क्षाच्चन्द्रक्ष भवति च यावद्दिनैश्च तावद्भिः ।
आगमनं स्याच्छत्रोर्यदि न हि मध्ये ग्रहः कश्चित् ॥४२॥

भा०—इन श्लोकों का अर्थ षट्पञ्चाशिका की मेरी टीका में देखो ॥३३-४२॥

दैत्येज्यवाचस्पतिसोमपुत्रैरेकर्क्षगैर्लग्नगतैर्बलाढ्यैः ।
द्वाभ्यामथेज्ये भृगुजेऽथ लग्ने हन्याद्रणे यायिनृपं पुरेशः ॥४३॥
सूर्येन्दुभौमार्कजसैंहिकेयैः सर्वैश्चतुर्भिस्त्रिभिरेव लग्नगैः ।
हन्यात्तदा स्थायिनमाशु यायी द्यूनस्थितैर्यायिनृपं पुरेशः ॥४४॥
दैतेज्यशीतांशुबुधामरेज्यैः सर्वैस्त्रिभिर्द्यूनगतैर्बलाढ्यैः ।
हन्याद्रणे स्थायिनमाशु यायी सुखास्पदस्थैश्च शुभैः सुसन्धिः॥४५॥

भा०—बलवान् बुध, गुरु, शुक्र ये तीनों एक राशि में होकर लग्न में हों अथवा इनमें दो वा केवल गुरु या शुक्र लग्न में हों तो यायी को स्थायी पराजित करता है। यदि सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, शनि और राहु इनमें से पांचों, या चार अथवा तीन भी लग्न में हों तो स्थायी को यायी पराजित करता है। यदि वे ही ग्रह सप्तम में हो तो यायी को स्थायी पराजित करता है। शुक्र, चन्द्र, बुध, गुरु ये चारों या तीन यदि बली होकर सप्तम भाव में हों तो स्थायी को यायी पराजित कर देता है। यदि ४।१० स्थान में शुभ ग्रह हों तो दोनों में सन्धि (मेल) हो जाता है ॥४३–४५॥

कुजेत्थशाले हिमगौ विलग्ने बन्धोऽथ मृत्युर्युधि नागरस्य ।
भौमेत्थशाले च विधौ कलत्रे मृतिं वा लभतेऽत्र यायी ॥४६॥
लग्नेशजामित्रपयोश्च मध्ये भवेद्ग्रहो यः स्वगृहोच्चसंस्थः ।
तद्वर्गमत्या नृपयोश्च सन्धिर्ज्ञेयो बुधे लेखकपण्डिताभ्याम् ॥४७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—यदि मंगल से इत्थशाली होकर चन्द्रमा लग्न में हो तो स्थायी का मरण अथवा बन्धन होता है । यदि मंगल से इत्थशाली चन्द्रमा सप्तम में हो तो यायी का मरण या बन्धन समझना । लग्नेश और सप्तमेश में जो ग्रह स्वराशि स्वोच्च में हो उस वर्ग (श्रेणी) के मनुष्य की अनुमति से यायी और स्थायी में सन्धि होती है । यदि बुध स्वराशि स्वोच्च में हो तो लेखक और पण्डितों की अनुमति से दोनों में सन्धि होती है ॥४६-४७॥

टि०—जैसे स्वोच्च स्वराशि में रवि या चन्द्रमा हो तो राजा की अनुमति से, गुरु शुक्र हो तो मन्त्री की अनुमति से, मंगल हो तो सेनापति की, शनि हो तो सेना (भृत्य) की अनुमति से सन्धि होती है ।

क्रूरे कलत्रे ह्युदये शुभग्रहो यच्छेद्धनं यायिनृपाय नागरः ।
विपर्ययाद्यायिनृपः पुरेश्वरं दुर्गाद्विनिष्काश्य ददाति वासपदम् ॥४८॥
रवीत्थशाले शशिजे सुगुप्ताश्चरा भवेयुश्च कुजेसराफात् ।
ग्रहाच्छशाङ्केन युते च तस्मिन् ये येऽन्यवेषाश्च भवन्ति चाराः ॥४९॥

भा०—सप्तम में पापग्रह और लग्न में शुभग्रह हो तो यायी को स्थायी धन समर्पण कर देता है । यदि लग्न में पाप और सप्तम में शुभ हो तो यायी द्वारा स्थायी दुर्ग से निकाल दिया जाता है । चार (भेदिया) विषयक प्रश्न में—यदि बुध और रवि में इत्थशाल हो तो भेदिया गुप्त रहता है । यदि किसी ग्रह से मङ्गल इसराफ योग करता हो और बुध चन्द्रमा से युत हो तो जो जो दूसरे वेष में हो उन्हें चार समझना चाहिये ॥ ४८–५९ ॥

प्रश्नचिन्तामणि में दुर्ग विषयक प्रश्न विचार—

प्रश्ने विलग्ने क्रूरे वा दुर्गभङ्गो न जायते ।
विशेषतो भूमिपुत्रे राहौ वा मूर्तिगे सति ॥५०॥
सप्तमे सिंहिकासूनौ दुर्गं शीघ्रेण लभ्यते ।
जामित्रोदयगे क्रूरे रिःफगे लग्ननायके ॥५१॥
द्वितीये वाऽष्टमे षष्ठे तदा दुर्गं न लभ्यते ।
सक्रूरो लग्नपो वक्री युद्धदः केन्द्रसंस्थितः ॥५२॥

भा०—यदि प्रश्नलग्नमें पापग्रह विशेषकर मंगल या राहु हो तो दुर्ग का भङ्ग नहीं होता है । सप्तम में राहु हो अथवा सप्तमलग्न में कोई पापग्रह हो तथा लग्नेश द्वादशभाव में हो तो दुर्ग शीघ्र कब्जा में आता है । यदि २,८,६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इनमें पापग्रह हो तो दुर्ग का लाभ नहीं होता है। यदि पापग्रह युत लग्नेश वक्री होकर केन्द्रगत हो तो युद्ध अवश्य होता है ॥ ५०-५२ ॥

षष्ठाधिपे द्यूनगते पापे वा युद्धमादिशेत् ।
पृच्छायां केन्द्रगैः क्रूरैः कोटे दुर्गे वधो नृणाम् ॥५३॥
भौमाष्टमेशावेकत्र तदापि निधनं नृणाम् ।
स्वायपुत्रस्थिते जीवे कोटमध्ये भयं नहि ।
शनौ भौमे च केन्द्रस्थे बहूनां बधबन्धनम् ॥५४॥
लग्नगतो यदि पापः पापेन युतेक्षितो वा स्यात् ।
लग्नात्पूर्वापरगौ पापौ युद्धं तदा घोरम् ॥५५॥

भा०—षष्ठेश वा पापग्रह सप्तमभाव में हो तो युद्ध कहना चाहिये। प्रश्न-समय केन्द्र में पापग्रह हो तो दुर्गका भङ्ग और मरण होता है। मङ्गल और अष्टमेश एक राशि में हो तो भी मरण होता है। यदि २।११।५ इन स्थान में गुरु हो तो भय नहीं कहना। यदि शनि और मङ्गल केन्द्र में हो तो बहुतों का बन्धन और मरण कहना। लग्न में पापग्रह हो, पाप से युत दृष्ट हो, अथवा लग्न से द्वितीय द्वादश में पापग्रह हो तो महाघोर संग्राम कहना चाहिये ॥

रोगियों के शुभाशुभ प्रश्न विचार—

विलग्ने षष्ठपः पापो जन्मराशिं निरीक्षते ।
रोगिणस्तस्य मरणं निश्चयेन वदेद् बुधः ॥५६॥
चतुर्थाष्टमगे चन्द्रे पापमध्यगतेऽपि वा ।
मृतिः स्याद्बलसंयुक्तसौम्यदृष्ट्या चिरात्सुखम् ॥५७॥
विधौ लग्ने स्मरे भानौ रोगी याति यमालयम् ।
प्रश्ने क्रूरगृहे लग्ने रोगवृद्धिश्चिकित्सकात् ॥५८॥

भा०—षष्ठेश पापग्रह प्रश्नलग्न में स्थित होकर जन्मराशि को देखता हो तो रोगी का मरण कहना चाहिये। तदि चन्द्रमा ४,८ भाव में हो या पापग्रहों के मध्य में हो तो भी मरण होता है। यदि बलवान् शुभग्रह से दृष्ट हो तो अधिक दिनों में रोग से मुक्त होकर सुखी होता है। यदि लग्न में चन्द्रमा, और सप्तम में सूर्य हो तो भी मरण होता है। प्रश्न लग्न में पापग्रह हो तो वैद्य के उपचार से रोग की वृद्धि कहना ॥ ५६-५८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा लग्नगते सौम्ये वैद्योक्तममृतं वचः ।
लग्नं वैद्यो द्युनं व्याधिः खं रोगी तुर्यमौषधम् ॥५९॥
रोगिणो भिषजो मैत्री मैत्री भेषजरोगयोः ।
व्याधेरुपशमो वाच्यः प्रकोपः शात्रवे तयोः ॥६०॥
लग्ननाथे च सबले केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे ।
उच्चगे वा त्रिकोणे वा रोगी जीवति निश्चयम् ॥६१॥
एकः शुभो बली लग्ने त्रायते रोगपीडितम् ।
सौम्या धर्मारिलाभस्थास्तृतीयस्था गदापहाः ॥६२॥

भा०—लग्न में शुभ ग्रह हो तो वैद्य का उपचार अमृत तुल्य होता है। रोग के प्रश्न में लग्नको वैद्य, सप्तम को रोग, दशमभाव को रोगी और चतुर्थ भाव को औषध समझना। रोगी, वैद्य (दशमेश, लग्नेश) में मैत्री हो तथा रोग औषध (सप्तमेश, चतुर्थेश) में मैत्री हो तो रोग की शान्ति, यदि शत्रुता हो तो रोग का प्रकोप कहना। लग्नेश बली हो और केन्द्र में शुभ ग्रह हो अथवा लग्नेश उच्च या त्रिकोण में हो तो रोगी रोग से मुक्त होकर अधिक दिन जीता है। एक भी शुभ ग्रह लग्न में हो तो रोगी की रक्षा करता है। तथा ९,६,११,३ इन भावों में शुभ ग्रह हो तो रोग की शान्ति होती है॥ ५९–६२॥

किस देवता के प्रकोप से रोग हुआ उसका ज्ञान—

वह्यङ्कद्वादशे षष्ठे लग्नात्पापग्रहो यदि ।
हतो गदैर्जलैश्शस्त्रैस्तस्य दोषः कुलोद्भवः ॥६३॥
प्रेताश्च राहौ पितरः सुरेज्ये चन्द्रेऽम्बुदेव्यस्तपनेऽपि देव्यः ।
स्वगोत्रदेव्यश्च शनौ बुधे च भूतानि विन्द्याद्व्ययरन्ध्रसंस्थे ॥६४॥
शाकिन्य आरे भृगुजेऽम्बुदेव्यो गृह्णन्ति मर्त्यं विमुखं मुकुन्दात् ।
स्वर्क्षोच्चगे वीर्ययुते च साध्याश्चन्द्रे च नीचे विबले न साध्याः ॥६५॥

भा०—प्रश्नलग्न से ३,९,१२,६ भावमें पाप ग्रह हो तो कुल-क्रमागत रोग कहना और रोग, जल वा शस्त्र से रोगी का मरण कहना। यदि ८।१२ भाव में राहु हो तो प्रेत, बृहस्पति हो तो पितर, चन्द्रमा हो तो जलदेवी, सूर्य हो तो देवी, शनि हो तो कुलदेवता, बुध हो तो भूत, मङ्गल हो तो शाकिनी और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्र हो तो जलदेवी उन मनुष्यों पर कोप करती हैं, जो ईश्वर से विमुख होते हैं। यदि उक्त स्थान में ग्रह अपने राशि या उच्चका हो और बली हो तो उक्त देवता को साध्य समझना। चन्द्रमा निर्बल और नीच में हो तो देवता को असाध्य समझना ॥ ६३-६५ ॥

केन्द्रस्थैर्बलिभिः पापैरसाध्या देवतागणाः ।
सौम्यग्रहैश्च केन्द्रस्थै साध्या मन्त्रस्तवार्चनैः ॥६६॥
कण्टकाष्टत्रिकोणस्थाः शुभा उपचये शशी ।
लग्ने च शुभसन्दृष्टे रोगी रोगाद्विमुच्यते ॥६७॥

भा० —केन्द्रमें बली पापग्रह हो तो उक्त देवगण को असाध्य समझना तथा बली शुभग्रह केन्द्र में हो तो उक्त देवगण मन्त्र स्तुति और पूजा से साध्य (प्रसन्न) होते हैं। केन्द्र ८,५,९ में शुभग्रह और ३,६,१०,११ में चन्द्रमा हों तथा लग्न पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो रोगी रोग से अवश्य मुक्त होता है ॥६६-६७॥

वि०—सन्तान बाधा आदि में भी इसका विचार करना चाहिये।

मालिक से लाभ है या नहीं इस प्रश्न का विचार (त्रैलोक्य प्रकाश)—

शीर्षोदये सौम्ययुतेक्षिते वा सौम्यैर्द्वितीयाष्टमसप्तमस्थैः ।
तृतीयलाभारिगतैश्च पापैः सौख्यार्थलाभो नृपसेवकस्य ॥६८॥
लग्नाद्द्वितीये मदनाष्टमर्क्षे वित्तक्षयं सम्भ्रममार्तिमृत्युम् ।
कुर्वन्ति पापाः क्रमशो नरेन्द्राद्भृत्यस्य तस्मात्परिवर्जयेत्तम्॥६९॥

भा०—शुभग्रह से युत दृष्ट शीर्षोदय (मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ) प्रश्न लग्न हो, शुभग्रह २,८,७ भावों में और पापग्रह ३,६,११ में हो तो नौकर को मालिक से सुख और धन प्राप्त होता है । लग्न से २,७,८ भावों में पाप ग्रह हो तो क्रम से धन का नाश, सम्भ्रम, और मृत्यु होता है, इस लिये उस मालिक को त्याग देना चाहिये ॥ ६८-६९ ॥

लग्नाद्द्वितीयाष्टमसप्तमर्क्षाः पापाः प्रणाशं नृपभृत्ययोर्द्वयोः ।
कुर्वन्ति तेष्वेव गताश्च सौम्याः कुर्युर्धनारोग्यसुखानि चोभयोः ॥७०॥
शशाङ्कसौम्यैरुदयास्तभावौ दृष्टौ युतौ वा सबलैर्न पापैः ।
प्रष्टुस्तदा स्याद्धृदि पार्थिवस्य स्नेहप्रसादावकृपापतीगात् ॥७१॥

भा०-प्रश्न लग्न से २,७,८ इन तीनों में पाप ग्रह हों तो मालिक और नौकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दोनों का ही मरण कहना। यदि २,७,८ इन्हीं स्थान में शुभ ग्रह हों तो दोनों को धन, आरोग्य और सुख की वृद्धि होती है। लग्न और सप्तम भाव पर चन्द्रमा तथा शुभ ग्रह की दृष्टि या योग हो और पापग्रह निर्बल हो तो पूछने-वाले (नौकर) पर मालिक का प्रेम और अनुग्रह होता है। अन्यथा मालिक को रुष्ट समझना चाहिये ॥ ७०-७१ ॥

षष्ठेश्वरेण व्ययपेन केन्द्रे यदोत्थशालं कुरुते विलग्नपः।
प्रष्टुस्तदाऽन्यः प्रभुरर्थदः स्यादतः प्रतिपान्न भवेत्परः प्रभुः ॥७२॥
लग्नेश्वरे स्वर्क्षगते स्वतुङ्ग केन्द्रस्थिते शीतकरेत्थशाले।
शुभग्रहैर्दृष्टयुते बलान्विते प्रष्टुर्निजस्वाम्यमितार्थलाभः ॥७३॥

भा०—"मुझे इस मालिक से लाभ है वा नहीं?" इस प्रश्न में केन्द्र स्थित लग्नेश को यदि षष्ठेश या द्वादशेश से इत्थशाल हो तो दूसरे मालिक से धनलाभ कहना; इससे अन्यथा हो तो दूसरा मालिक नहीं होता अर्थात् वर्त-मान मालिक से ही लाभ कहना। अपने उच्च, राशि और केन्द्र में स्थित लग्नेश को चन्द्रमा से इत्थशाल हो तथा बली शुभ ग्रह से दृष्टयुत हो तो मालिक से अतिशय धन का लाभ कहना ॥ ७२-७३ ॥

जायेश्वरे स्वोच्चनिजर्क्षसंस्थे केन्द्रस्थिते शीतकरेत्थशालगे।
शुभग्रहैर्दृष्टयुते बलोत्कटैः प्रष्टुस्तदाऽन्यः प्रभुरर्थदो भवेत् ॥७४॥
इदं गृहं वा शुभमन्यदालयं स्थानन्त्विदं वा शुभमन्यदालयम्।
ममात्र भद्रं गमनात्तु तत्र वा पृष्टे सदेत्थं विधिना विमृश्य ॥७५॥

भा०—यदि सप्तमेश स्वोच्च स्वराशि और केन्द्र में हो तथा चन्द्रमा से इत्थशाल हो और शुभ ग्रह से दृष्ट युत हो तो दूसरे मालिक से धनलाभ कहना। इसी प्रकार "इस स्थान में सुख है या दूसरे मालिक से धनलाभ कहना। इसी प्रकार "इस स्थान में सुख है या दूसरे स्थान में?" इत्यादि प्रश्न में उपरोक्त योगानुसार फल समझना चाहिये ॥ ७४-७५ ॥

भूमिस्थ धन अथवा नष्ट वस्तुलाभ प्रश्न विचार (प्रश्नचिन्तामणि)—

प्रश्ने चतुर्थाधिपतौ तत्रस्थे वाऽवलोकिते।
अवश्यं वर्तते तत्र धनं चन्द्रेऽथ वा वदेत् ॥७६॥
वित्तपे धनगे बन्धौ वास्ति तत्र धनं बहु।
पापे तुर्यगते द्रव्यं स्थितं तूर्णं न लभ्यते ॥७७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भौमे सप्ताष्टराशिस्थे धनमन्यत्र नाप्यते ।
लग्ने तमो रविश्छद्रे तदा द्रव्यं न लभ्यते ।
सप्ताष्टदशपातालेशो विधुर्धनदो गुरुः ॥७८॥

भा०—प्रश्न लग्न से चतुर्थेश अथवा चन्द्रमा चतुर्थ भाव में हो या चतुर्थ भाव को देखता हो तो अवश्य धन की प्राप्ति कहना । द्वितीयेश द्वितीय या चतुर्थ भाव में हो तो वहां अधिक धन समझना । यदि पापग्रह चतुर्थ भाव में हो तो धन की प्राप्ति शीघ्र नहीं हो सकती है । यदि मंगल ७,८ भाव में हो तो धन अन्य स्थान में है और लाभ नहीं होगा तथा लग्न में राहु, अष्टम में रवि हो तथापि धनलाभ नहीं होगा ऐसा कहना । यदि लग्न से ७,८,१०,४ इन स्थानों के स्वामी चन्द्रमा और गुरु हो तो धन की प्राप्ति समझना चाहिये ॥७६–७८॥

लग्नेश्वरे द्यूनगते विलग्ने जायेश्वरे नष्टधनस्य लाभः ।
जायेशलग्नाधिपतीत्थशाले द्यूने विनष्टं धनमेति मर्त्यः ॥७९॥
लग्नेशजायाधिपतीत्थशाले लग्नेऽथवा यच्छति तस्करोऽर्थम् ।
सूर्ये विलग्नेऽस्तमिते शशाङ्के न लभ्यते यद्द्रविणं विनष्टम् ॥८०॥

भा०—लग्नेश सप्तम में और सप्तमेश लग्न में हो अथवा लग्नेश सप्तमेश में इत्थशाल हो और सप्तम भाव में हो तो नष्ट धन का लाभ होता है । लग्नेश सप्तमेश में इत्थशाल हो और लग्न में हो तो चोर धन को लौटा देता है । यदि सूर्य लग्न में अथवा चन्द्रमा अस्त (सप्तम भाव) में हो तो नष्ट धन नहीं प्राप्त होता है ॥ ७१–८० ॥

कर्मेशलग्नाधिपतीत्थशाले चोरः स्वमादाय पुरात्पलायते ।
चन्द्रेऽस्तपे चार्ककरप्रविष्टे तल्लभ्यते नष्टधनं सतस्करम् ॥८१॥
अस्तेश्वरे केन्द्रगतेऽस्ति चौरस्तत्रैव वाऽन्यत्र पुराद्विनिर्गतः ।
धर्मेशदुश्चिक्यपतीत्थशाले जायेश्वरेऽन्यत्र गतः स चोरः ॥८२॥

भा०—दशमेश लग्नेश को इत्थशाल हो तो चोर धन लेकर नगर से भाग जाता है । यदि चन्द्रमा और सप्तमेश सूर्य के साथ अस्त हो तो धन सहित चोर पकड़ा जाता है । सप्तमेश केन्द्र में हो तो चोर वहीं (नगर ही में) कहना, यदि केन्द्र से अन्य स्थान में हो तो चोर को नगर से बाहर समझना । नवमेश या तृतीयेश से यदि सप्तमेश को मुथशील योग हो तो चोर को दूसरे नगर में समझना ॥८१–८२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्मेशलग्नाधिपतीत्थशाले यल्लभ्यते राजकुलाच्च चौर्यम् ।
त्रिधर्मपद्यूनपतीत्थशाले त्वन्यप्रदेशाद्गमने तदाप्तिः ॥८३॥
शुभेत्थशाले हिमगौ विलग्ने खस्थेऽथ वा नष्टधनस्य लाभः ।
सुस्नेहदृष्ट्या रविणा शुभेन दृष्टे विलग्ने हिमगौ च लाभः ॥८४॥

भा०—दशमेश लग्नेश में इत्थशाल हो तो राजपुरुषों के द्वारा चोरी गयी वस्तु की प्राप्ति होती है। यदि तृतीयेश वा नवमेश से सप्तमेश को इत्थशाल हो तो अन्य स्थान में जाने से नष्ट वस्तु का लाभ समझना। लग्न या दशम भाव गत चन्द्रमा को शुभ ग्रह से इत्थशाल हो तो नष्ट वस्तु का लाभ होता है। लग्न और चन्द्रमा को यदि रवि या शुभ ग्रह मित्र दृष्टि से देखता हो तो भी लाभ होता है ॥८३–८४॥

षट्पञ्चाशिका—

स्थिरोदये स्थिरांशे वा वर्गोत्तमगतेऽपि वा ।
स्थितं तत्रैव तद्द्रव्यं स्वकीयेनैव चोरितम् ॥८५॥
आदिमध्यावसानेषु द्रेष्काणेषु विलग्नतः ।
द्वारदेशे तथा मध्ये गृहान्ते च वदेद्धनम् ॥८६॥

भा०—स्पष्ट है। तथापि "षट्पञ्चाशिका" में विस्तृत अर्थ देखिये॥८५-८६॥

नष्ट वस्तु की दिशा का ज्ञान 'प्रश्नतन्त्र' में—

पतितधनस्य प्रश्ने मिथो गृहस्थौ विलग्नसप्तेशौ ।
यदि मुथशिलं तयोः स्यात्तदाऽशु तत्रैव वदति धनम् ॥८७॥
नष्टं क्व दिशि प्राप्तं पृच्छायां लग्नगे विधौ प्राच्याम् ।
खस्थाने याम्यायामस्ते वारुण्यां वा भुव्युदोच्याम् ॥८८॥
यदि नेन्दुः केन्द्रे तच्चत्वारिंशांशकैश्च पञ्चयुतैः ।
भागे दिक्क्रम उक्तो वह्न्यवनीवायुवारिराशौ वा ॥८९॥

भा०—यदि लग्नेश सप्तम भाव में और सप्तमेश लग्न में हो अथवा दोनों में मुथशील योग हो तो नष्ट धन यथा स्थान (अपने घर में ही) समझना। तथा चन्द्रमा लग्न में हो तो पूर्व, दशम में हो तो दक्षिण, सप्तम में हो तो पश्चिम और चतुर्थ में हो तो उत्तर दिशा में नष्ट धन को समझना। यदि चन्द्रमा केन्द्र में न हो तो जिस केन्द्र के नजदीक में अर्थात् ४५ अंश के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भीतर हो उस दिशा में नष्ट धन कहना चाहिये। अथवा अग्नि तत्त्व राशि लग्न हो तो पूर्व, पृथ्वी तत्त्व लग्न हो तो दक्षिण, वायु तत्त्व लग्न में पश्चिम और जल तत्त्व लग्न में उत्तर दिशा समझना ॥८७–८९॥

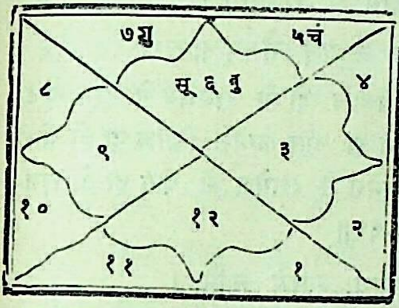

उदाहरण—प्रश्नकुण्डली देखो; चन्द्रमा लग्न और दशम के मध्य द्वादश भाव में है, अतः लग्न के समीप में होनेके कारण पूर्व दिशा समझना। यदि ११ भाव में होता तो दशम के समीप में होने के कारण दक्षिण दिशा होती। इसी प्रकार सप्तम और चतुर्थ के समीप से भी दिशा का ज्ञान करना चाहिये। अथवा लग्न में कन्या पृथ्वी राशि है, इसलिये नष्ट वस्तु की दिशा दक्षिण कहना ॥८९॥

नष्टवीतवित्तलब्धेः प्रश्ने चौरोऽस्तभं ततो लाभः।
हिबुकं द्रव्यस्थानं लग्नं चन्द्रश्च धननाथः ॥९०॥
लग्नेशोऽस्ते मदपतिना मुथशीली ततो लाभः।
यद्यष्टेशो लग्ने तदा स्वयं तस्करोऽर्पयति ॥९१॥
रविरश्मिगे धनेशे वास्तमिते तस्करस्य लाभः स्यात्।
लग्नेशदशमपत्योर्मुथशिलतः प्राप्यते स्ववान् चौरः ॥९२॥
लग्नेशदृष्ट्यभावे चौरः सह मात्रया याति।
अस्ताधिपतौ दग्धे रविरश्मिगतेऽथ लभ्यते चौरः ॥९३॥

भा०—नष्ट धन लाभ के प्रश्न में सप्तम भाव को चोर, चतुर्थ भाव को प्राप्ति स्थान, लग्न को द्रव्य और चन्द्रमा को धन का मालिक (प्रष्टा) समझकर शुभाशुभ फल कहना। जैसे लग्नेश सप्तम में हो वा सप्तमेश से इत्थशाल करता हो तो धन का लाभ कहना। यदि लग्नेश अष्टम भाव में हो तो चोर स्वयं धन दे जाता है। द्वितीयेश सूर्य के किरण में प्राप्त (अस्त) हो तो चोर का पता लग जाता है। यदि लग्नेश दशमेश में मुथशील योग हो तो धन के सहित चोर पकड़ा जाता है। यदि दशमेश पर लग्नेश की दृष्टि न हो तो चोर मात्रा (वस्त्र अलङ्करण) सहित धन लेकर गायब हो जाता है। यदि सप्तमेश दग्ध (नीच हो वा अस्त) हो तो चोर का पता लग जाता है ॥९०–९३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्नपकृतेत्थशाले राजभयाद्धनमिदं स्वयं दत्ते ।
लग्नास्तपयोर्न स्याद्यदि दृष्टिर्लग्नपस्तथा विबलः ॥९४॥
तत्तस्करोऽस्य हस्ताद्ददाति चौर्यं च राजकुले ।
लग्नपमध्यपयोगे राजकुलं प्राप्य लभ्यते चौर्यम् ॥९५॥

भा०—लग्नेश से सप्तमेश को इत्थशाल हो तो राजभय से धन लौटा देता है। यदि लग्नेश सप्तमेश में दृष्टि न हो और लग्नेश निर्बल हो तो चोरी की वस्तु चोर राजपुरुष को देता है। लग्नेश से दशमेश को योग हो तो राजपुरुष के द्वारा धन लाभ होता है ॥९४–९५॥

रन्ध्रं चौरस्य धनं धनपे तत्राथ सप्तमे नाप्तिः ।
रन्ध्रपतौ धनपस्य तु मुथशिलयोगे च प्राप्यते वित्तम् ॥९६॥
रन्ध्रपतौ दशमपतेर्मुथशिलगे चौरपक्षकृद्भूपः ।
धनपे विलग्नपे सति दृष्टिविहीने श्रुतिर्भवति नाप्तिः ॥९७॥

भा०—अष्टम भाव चोर का धन स्थान है। इसलिये उस (अष्टम स्थान) और सप्तम में धनेश हो तो चोरी गई वस्तु नहीं मिलती है। अष्टमेश और धनेश में इत्थशाल हो तो धन प्राप्त होता है। अष्टमेश और दशमेश में इत्थशाल हो तो राजपुरुष को चोर का पक्षपाती समझना। लग्नेश और धनेश में परस्पर दृष्टि न हो तो सुनने में आता परञ्च धन की प्राप्ति नहीं होती है ॥

चोरज्ञानप्रश्ने लग्नरविशशिदृशा स्वगृहचौरः ।
अनयोरेकदृशा गृहसमीपवर्ती वसत्येषः ॥ ९८ ॥
लग्नस्थे लग्नपतावस्तपयुक्ते च गृहगतश्चौरः ।
अस्ताधिपतावन्त्ये सहजे वा स्वीयभृत्योऽयम् ॥ ९९ ॥
अस्तेशे तुङ्गस्थे स्वगृहे वा तस्करः प्रसिद्धः स्यात् ।
लग्नदशमास्तभावाः क्रमेण वीक्ष्याः स्वतुङ्गभवनाद्यौ ।
यः खेटः स्याद्बलवान् स ज्ञेयस्तस्करस्य बली ॥१००॥

भा०—लग्न पर रवि और चन्द्रमा दोनों की दृष्टि हो तो अपने घर के लोग को ही चोर समझना। यदि इन दो में किसी एक की दृष्टि लग्न पर हो तो घर के समीपवासी चोर समझना यदि सप्तमेश युक्त लग्नेश लग्न में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो तो भी घर के लोग ही को चोर कहना। यदि सप्तमेश १२,३ भाव में हो तो अपने नौकर को चोर समझना चाहिये। सप्तमेश अपने उच्च या स्वराशि में हो तो लोक में प्रसिद्ध चोर ने चोरी किया ऐसा समझना। लग्न, दशम और सप्तम इन भावों में जिसमें बलवान ग्रह हो उसे चोर का बली (बल देने वाला=सहायक) समझना, जैसे लग्न में बली ग्रह हो तो अपने घर के लोग, दशम में बली ग्रह हो तो राजपुरुष चोर की सहायता करते हैं इत्यादि ॥

एवं योगं तु विना द्यूनेशस्यैव बलमभिग्राह्यम् ।
इत्थं चौरज्ञाने चौरः सूर्ये गृहेश्वरस्य पिता ॥१०१॥
चन्द्रे माता शुक्रे भार्या मन्दे सुतो भवेन्नीचे ।
जीवे गृहप्रधानं भौमे पुत्रोऽथ वा भ्राता ॥१०२॥
ज्ञे स्वजनो मित्रं वा ज्ञात्वेत्थं पुण्यसहममादेश्यम् ।
तस्मिन् क्रूरादृष्टे पुरा न चौरोऽस्तपे पुरापि स्यात् ॥१०३॥

भा०—पूर्वोक्त स्थान में ग्रह योग के अभाव में सप्तमेश बली हो तो तो भी चोर के सहायक होते हैं, उनका ज्ञान इस प्रकार है— कि यदि १,१०,७ में बली सूर्य हो तो अपने पिता को ही चोर या चोर का सहायक समझना। चन्द्रमा हो तो माता, शुक्र हो तो स्त्री, शनि हो तो पुत्र, बृहस्पति हो तो गुरु अथवा घर का मुखिया, मङ्गल हो तो पुत्र वा भाई, और बुध बली हो तो अपना सम्बन्धी या मित्र को ही चोर समझना। इस प्रकार ज्ञान होने पर विचारना कि इस चोर ने पहिले भी चोरी की है ? या नहीं ? तो प्रश्न काल में पुण्य सहम बनाना, उस पर पाप ग्रह की दृष्टि न हो तो पहिले कभी चोरी नहीं की है, सप्तमेश पापग्रह से अदृष्ट हो तो पहिले भी चोरी कर चुका है, ऐसा समझना ॥ १०१-१०३ ॥

अस्तेशान्मूशरिफे भौमे चौरः पुरापि निगृहीतः ।
सप्तेशे रविपुत्रे चन्द्रदृशा तस्करो हि पाखण्डी ॥१०४॥
जीवेऽविलोक्य लोकं भौमे खातेन पालकं भक्त्या ।
प्रति कुञ्चिकयापहृतं सितेऽतिथिर्ज्ञे प्रपञ्चकरः ॥१०५॥

भा०— मङ्गल सप्तमेश से मुसरीफ करता हो तो चोर पहिले भी सजा पा चुका है ऐसा कहना। यदि सप्तमेश शनि हो और चन्द्रमा से दृष्ट हो तो चोर को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाखण्डी समझना। सप्तमेश बृहस्पति हो तो लोगों को नहीं देख कर [अर्थात् शून्य घर में] चोरी किया, मङ्गल हो तो धन वाले के प्रति भक्ति दिखलाता हुआ अवसर पाकर सेंध देकर अथवा उन्हीं की ताली से चोरी किया, शुक्र हो तो अतिथि (मेहमान) बन कर चोरी किया, ऐसा समझना। बुध सप्तमेश हो तो चोर को प्रपञ्ची समझना चाहिये ॥१०४-१०५॥

चौरस्य वयोज्ञाने सिते युवा ज्ञे शिशुर्गुरौ मध्यः।
तरुणो भौमे मन्दे वृद्धोऽर्के स्यादतिस्थविरः ॥१०६॥
तनुखभयोः खभमदयोः स्मरभूम्योर्भूमिलग्नयोर्मध्यम्।
चरति रवौ नवमध्यमवृद्धवयोऽतीतकाः क्रमशः ॥१०७॥

भा०—चोर के वयस (उमर) जानने में लग्न में शुक्र हो तो युवा, बुध हो तो बालक, गुरु हो तो मध्यवयस, मंगल हो तो ज्वान, शनि हो तो वृद्ध, और सूर्य हो तो अत्यन्त वृद्ध समझना। अथवा लग्न, दशम के मध्य में रवि हो तो बालक, दशम सप्तम के मध्य में हो तो युवा, सप्तम चतुर्थ के मध्य में हो तो वृद्ध, और लग्न चतुर्थ के मध्य में हो तो अत्यन्त वृद्ध समझना ॥१०६-१०७॥

नष्टस्थानप्रश्ने तुर्ये भूम्यग्निवायुजलमध्यात्।
यो भवति राशिरस्मात्स्थानं ज्ञेयं गतधनस्य ॥१०८॥
अथ तुर्यगृहे तुर्येश्वरोऽथ यः स्याद्ग्रहस्ततो ज्ञेयम्।
मन्दे मलिनस्थाने चन्द्रेम्बुनि गीष्पतौ सुरारामे ॥१०९॥
भौमे वह्निसमीपे रवौ गृहाधीश्वरासनस्थाने।
तल्पे शुक्रे सौम्ये पुस्तकवित्तान्नयानपार्श्वे च ॥११०॥

भा०—नष्ट वस्तु के स्थान जानने के प्रश्न में चतुर्थ में पृथ्वी तत्त्वराशि हो तो पृथ्वी में, अग्नि तत्त्व राशि हो तो अग्नि स्थान (रसोई आदि के घर) में, जल तत्त्व राशि हो तो जल स्थान में और वायु तत्त्व राशि हो तो वायु स्थान में, (आकाश में लटका हुआ) नष्ट धन को समझना। अथवा चतुर्थ भाव में या चतुर्थ भाव का स्वामी जो ग्रह हो उससे स्थान समझना जैसे शनि हो तो मलिन (कतवार खाना आदि) स्थान में, चन्द्र हो तो जल में, गुरु हो तो देवालय में, मंगल हो तो अग्नि स्थान में, रवि हो तो आसन के समीप, शुक्र हो तो शय्या में, बुध हो तो पुस्तकालय, खजाना अथवा पशुशाला में धन समझना ॥१०८-११०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौरोऽयमथ न वेति क्रूरेन्द्वोर्मुथशिले च चौरः स्यात्।
सौम्यशशिमुथशिले खलु न भवति चौरः प्रवक्तव्यम् ॥१११॥
किमनेन तस्करत्वं कदापि विहितं न वेति पृच्छायाम्।
लग्नपशशिनोरेकस्मादपि मूसरिफेऽस्तपे विहितम् ॥११२॥

भा०—"यह चोर है या नहीं ?" इस प्रकार के सन्देह में प्रश्न काल में चन्द्रमा को पापग्रह से मुथशील हो तो चोर, यदि शुभ ग्रह से मुथशील हो तो चोर नहीं है ऐसा कहना। "इस व्यक्ति ने कभी चोरी किया है या नहीं ?" इस प्रश्न में लग्नेश या चन्द्रमा किसी एक से सप्तमेश को मुसरीफ हो तो चोरी किया है ऐसा समझना ॥१११-११२॥

चौरः स्त्री पुरुषो वा पृच्छायामस्तपे स्त्रियो राशौ।
स्त्रीखेटे स्त्रीदृष्टे चौरः स्त्री व्यत्ययात्पुरुषः ॥११३॥
लग्ननवांशपतो वा तद्वयःप्रमाणजातयो ज्ञेयाः।
चौरोऽयमिहानन्तः शास्त्रे कथितोऽयमुद्देश्यः ॥११४॥

भा०—"चोर स्त्री है या पुरुष ?" इस प्रश्न में सप्तमेश स्त्री ग्रह या स्त्री राशि में हो तो स्त्री, और पुरुष ग्रह या पुरुष राशि में हो तो पुरुष समझना। और लग्न के नवमांशपति से भी चोर का वयस और जाति समझना। "यह चोर है या नहीं" इस विषय में शास्त्र में अनन्त उद्देश्य कहे हैं। सारांश यह है कि देश कालानुसार अपनी बुद्धि से भी उक्त विषय का विचार करना चाहिये ॥११३-११४॥

सन्तान-प्रश्न निरूपण—

लग्नेश्वरेणाऽथ निशाकरेण यदीत्थशालं कुरुते सुतेशः।
शुभः शुभैः संयुत ईक्षितः स्यात्सुसन्ततिं प्रष्टुरसौ विदध्यात् ॥११५॥
पुंस्त्रीग्रहाः पुत्रगृहं विलग्नात्पश्यन्ति यावन्ति इहातिवीर्याः।
तत्संख्यकाः स्युस्तनयाश्च कन्याः शुभेशयोगात्सुतभांशतुल्याः॥११६॥
लग्नेशपुत्राधिपती परस्परं न पश्यतश्चेदुदयं च पञ्चमम्।
पापेत्थशालौ सुतलग्नपौ च प्रष्टुस्तदा सन्ततिनास्तितां वदेत् ॥११७॥

भा०—लग्नेश या चन्द्रमा से यदि पञ्चमेश इत्थशाल करता हो और शुभग्रह से युत दृष्ट हो तो सन्तान अवश्य कहना। पञ्चम भाव को जितने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुरुष ग्रह देखते हों उतने पुत्र तथा जितने स्त्री ग्रह देखते हों उतनी कन्या समझना। यदि पञ्चम भाव पर शुभग्रह और पञ्चमेश की दृष्टि हो तो पञ्चम भाव के नवांश संख्या तुल्य सन्तान समझना। लग्नेश और पञ्चमेश परस्पर तथा लग्न और पञ्चम भाव को न देखते हों अथवा लग्नेश पञ्चमेश दोनों को पापग्रह से इत्थशाल हो तो सन्तान का अभाव समझना ॥११५--११७॥

पुत्रालये सिंहवृषालिकन्याः प्रश्नोदयाज्जन्मभतस्तथेन्दोः।
अल्पप्रजः सन्ततिपृच्छकः स्यात् पापैः सुतर्क्षे सहितेक्षिते वा ॥११८॥
स्वर्क्षस्थितौ रन्ध्रगतौ यमार्कौ प्रष्टुः स्त्रियं सन्दिशतश्च वन्ध्याम्।
छिद्रस्थितौ चन्द्रबुधौ सदोषां वा काकबन्ध्यां तनयाप्रसूतिम् ॥११९॥

भा०—प्रश्नलग्न से या जन्मलग्न वा जन्मचन्द्र से पञ्चम भाव में सिंह, वृष, वृश्चिक और कन्या राशि हो अथवा पञ्चम भाव में पापग्रह की दृष्टि या योग हो तो अल्प सन्तान कहना। अपनी राशि में स्थित शनि या रवि अष्टम भाव में हो तो प्रश्नकर्ता की स्त्री को वन्ध्या समझना। यदि अष्टम में चन्द्रमा और बुध हो तो दोष युक्ता या काकवन्ध्या अथवा कन्या सन्तति वाली कहना ॥११८–११९॥

मृतप्रजा छिद्रगयोः सितेज्ययोर्गर्भस्रवो भूमिसुतेऽष्टमर्क्षे।
छिद्रेश्वरे छिद्रगतेऽतिवीर्ये पुष्पं न विन्दत्यबला सुतप्रदम् ॥१२०॥
शुक्रार्कयोरष्टमसंस्थयोर्वा क्रूरैर्धनान्त्याष्टमराशिसंस्थैः।
जाता पुरस्तान्म्रियते प्रजा वै प्रष्टुर्न चाग्रे शुभसन्ततिः स्यात् ॥१२१॥
रिष्फेश्वरे केन्द्रगते च सौम्यैर्युतेक्षितैर्जीवति बालकश्च।
आपूर्यमाणे शुभयुक्त इन्दौ केन्द्रे शिशुर्जीवति दीर्घकालम् ॥१२२॥

भा०—अष्टम भाव में शुक्र, गुरु हों तो मृतवत्सा, मंगल हो तो गर्भस्राव कहना। अष्टमेश बली होकर अष्टम भाव में हो तो प्रश्नकर्ता की स्त्री को सन्तति उत्पन्न करने योग्य रज नहीं होता है। यदि अष्टम में शुक्र, मंगल हो वा २,१२,८ में पापग्रह हो तो उत्पन्न सन्तान की मृत्यु और आगे सन्तति नहीं होगी, ऐसा कहना। यदि द्वादशेश केन्द्र में हो और शुभग्रह से युत दृष्ट हो तो पुत्र जीता है। तथा पूर्ण चन्द्रमा शुभग्रह से युक्त केन्द्र में हो तो पुत्र चिरजीवी होता है ॥१२०–१२२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न चिन्तामणि में सन्तान प्रश्न निरूपण—

पञ्चमेशोऽथ लग्नेशो विषमर्क्षगतौ यदा ।
पुत्रजन्मप्रदौ ज्ञेयौ कन्यानां समराशिगौ ॥१२३॥
सुताधिपं नृराशिस्थं पुंराशिस्थोऽपि लग्नपः ।
वीक्षते पुत्रदः प्रोक्तो युग्मराशौ च दारिकाः ॥१२४॥
युग्मराशिगते लग्ने यदा तत्र शुभग्रहाः ।
गर्भेऽपत्यद्वयं वाच्यं दैवज्ञेन विपश्चिता ॥१२५॥
विषमोपगतो लग्नाच्छनिः पुत्रसुखप्रदः ।
समभे योषितां जन्म विशेषो जातकोक्तिवत् ॥१२६॥

भा०—लग्नेश और पञ्चमेश विषम राशि में हो तो पुत्र, सम राशि में हो तो कन्या कहना । पुरुष राशिस्थ लग्नेश पुरुष राशिस्थ पञ्चमेश को देखता हो तो पुत्र और सम राशि में दोनों हों तो कन्या कहना । द्विस्वभाव लग्न में शुभग्रह हो तो गर्भ में दो सन्तान कहना । लग्न से विषम में शनि हो तो पुत्र, सम में हो तो कन्या का जन्म कहना चाहिये ॥ १२३–१२६ ॥

भोजन पदार्थ ज्ञान प्रश्न–निरूपण (प्रश्न चिन्तामणि)—

कटुको लवणस्तिक्तो मिश्रितो मधुरो रसः ।
अम्लः कषायः कथिता रव्यादीनां रसा बुधैः ॥१२७॥
लग्नं पश्यति यः खेटस्तस्य यः कथितो रसः ।
भोजनेऽसौ रसो वीर्यक्रमाद्वाच्याः परे रसाः ॥१२८॥
चन्द्रो यस्य मुथशिलस्तस्य विशेषं वदेद्भुक्तौ ।
लग्ने राहौ मन्दे रविदृष्टे भोजनाभावः ॥१२९॥

भा०—कडुआ, लवण, तीता, मिला हुआ, मधुर, खट्टा, और कसैला ये सूर्यादि ७ ग्रहों के रस हैं । प्रश्नलग्न पर जिस ग्रह की दृष्टि हो उस ग्रह का रस भोजन में कहना । यदि बहुत ग्रहों की दृष्टि हो तो बल के क्रम से उन सब ग्रहों के रस समझना । जिस ग्रह को चन्द्रमा से इत्थशाल हो वह रस विशेष कहना । लग्न, राहु, शनि तीनों पर यदि रवि की दृष्टि हो तो भोजन का अभाव कहना ॥ १२७–१२९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न तन्त्र में रस का ज्ञान—

कीदृङ्मयाऽद्य भुक्तं पृच्छायां यदि भवेत्स्थिरं लग्नम् ।
तद्भुक्तमेकवेलं द्व्यात्मनि वेलद्वयं चरे त्वसकृत् ॥१३०॥
चन्द्रे लग्नगते स्यात्क्षारं भौमे च कटुकमम्लगुरौ ।
मधुरं दिनकृति तिक्तं शुक्रे स्निग्धं बुधे च सर्वरसम् ॥१३१॥
मन्दे कषायमशुभान्मुसरीफे शशिनि मुथशिले सौम्यात् ।
उद्वाहात्प्रियदृष्ट्या प्रायणिकत्वात्समागतं भोज्यम् ॥१३२॥

भा०—"मैंने किस प्रकार का भोजन किया है" इस प्रश्न में स्थिर लग्न हो तो एक बार, द्विस्वभाव लग्न हो तो दो बार, और चर लग्न हो तो अनेक बार भोजन कहना। और चन्द्रमा लग्न में हो तो लवण रस, मंगल हो तो कड़ुआ, गुरु हो तो खट्टा, सूर्य हो तो मधुर, शुक्र हो तो तीता, बुध हो तो सब रस और शनि हो तो कसैला रस कहना। यदि चन्द्रमा को पापग्रह से मुसरीफ, और शुभ से शत्रु दृष्टि से इत्थशाल हो तो विवाहोत्सव में, मित्र दृष्टि से इत्थशाल हो तो दोस्तों के यहाँ से आया हुआ भोज्य पदार्थ कहना ॥१३०–१३२॥

पापेसराफे च शुभेत्थशाले चन्द्रे तु भुक्तं शुभमन्नमिष्टम् ॥१३३॥
शुभेसराफे त्वशुभेत्थशाले चन्द्रे कदन्नं मधुराज्यवर्ज्यम् ।
पापेत्थशालेऽथ खलेसराफे शक्यं न भोक्तुं परतोऽपि लब्धम् ॥१३४॥

भा०—चन्द्रमा को पापग्रह से इसराफ और शुभग्रह से इत्थशाल हो तो उत्तम भोज्य पदार्थ, यदि शुभग्रह से इसराफ और पापग्रह से इत्थशाल हो तो अधम पदार्थ, मधुर घृत आदि रहित कदन्न भोजन कहना चाहिये। यदि चन्द्रमा को पापग्रह से ही इत्थशाल और इसराफ दोनों योग हो तो दूसरों से लब्ध अन्न भी भोग्य नहीं होता है ॥ १३३–१३४ ॥

चन्द्रस्वनाथदृष्टे सुखभोजनमन्यथा कष्टात् ।
गुरुमुथशिले सगौरवमर्केण मुथशिलेऽतिशुचितीक्ष्णम् ॥१३५॥
शुक्रे सुस्वादुरसं सहास्यगीतं बुधे जनाकीर्णम् ।
शास्त्रकथाढ्यं शनिना कुस्थानगतं कुजे चोष्णम् ॥१३६॥

भा०—प्रश्न लग्न में चन्द्रमा और अपने स्वामी की दृष्टि हो तो सुख सहित, अन्यथा कष्ट से भोजन कहना। चन्द्रमा को गुरु से इत्थशाल हो तो आदर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सहित, सूर्य से इत्थशाल हो तो तीक्ष्ण पदार्थ, शुक्र से इत्थशाल हो तो स्वाद-युक्त, और बुध से मुथशील हो तो हास्य और गीत सहित बहुत जनों के बीच में, शनि से मुथशिल हो तो शास्त्र कथा करते हुए और मंगल से मुथशील हो तो उष्ण (ताजा) भोजन कहना ॥ १३५–१३६ ॥

यदि वदति भोजनार्थं निमन्त्रितो यामि शशिमहीसुतयोः ।
एकस्थितयोः केन्द्रे मुथशिलयोर्वाऽपि पूर्णता भवति ॥१३७॥
विधिनाऽनेन शनेः स्यात्कुभोजनं ज्ञसितयोरभीष्टान्नम् ।
जीवस्य तुष्टिजनकं होरेशे तनुखगे स्वयमुपैति ॥१३८॥

भा०—कोई पूछे कि "मैं निमन्त्रण में जाता हूँ कैसा भोजन मिलेगा ?" तो यदि चन्द्र, मंगल, दोनों एक राशि में वा केन्द्र में हो और दोनों में इत्थशाल हो तो पूर्ण रूप से उत्तम भोजन कहना। यदि शनि केन्द्र में हो तो कुत्सित भोजन और बुध, शुक्र में मुथशील हो तो अभीष्ट भोजन मिलता है। बृहस्पति केन्द्र में हो या लग्न पर दृष्टि हो तो तोषदायक भोजन कहना। लग्नेश लग्न या दशम भाव में हो तो घर बैठे उत्तम पदार्थ भोजन मिलता है ॥१३७–१३८॥

यश्चन्द्रेण मुथशिली तस्मिन्नीशे तनोः स्वगृहभोज्यम् ।
वित्तेशे भृत्यगृहे भ्रातृणां सहजपे तथाऽन्यत्र ॥१३९॥

भा०—चन्द्रमा को लग्नेश से इत्थशाल हो तो अपने घर में द्वितीयेश से मुथशील हो तो नौकरों के घर में, यदि तृतीयेश से मुथशील हो तो भाई के घर में इत्यादि सुहृत्, सुत आदि जिस भावेश से चन्द्रमा को इत्थशाल हो उनके घर में भोजन कहना ॥ १३९ ॥

लग्नस्थिते सूर्यसुतेऽथ राहौ सूर्येक्षिते वैरिनिमन्त्रितस्य ।
स्याच्छस्त्रघातः शशिभौमयोश्च लग्नस्थयोः सौरिदृशाऽसिघातः ॥१४०॥
जीवे सिते चन्द्रगते बलाढ्ये चन्द्रे बुधे लग्नगते शुभान्विते ।
त्रिलाभषष्ठास्पदगैश्च पापैः स्यात्प्रेमनिर्वैरकरं सुभोजनम् ॥१४१॥

भा०—प्रश्न लग्न में सूर्य से दृष्ट शनि अथवा राहु हो तो निमन्त्रण में शत्रुओं के द्वारा शस्त्र से आघात समझना। यदि लग्नेश में शनि से दृष्ट चन्द्रमा और मंगल हों तो निमन्त्रण में तलवार से आघात कहना। गुरु, शुक्र, चन्द्रमा के साथ बली हों अथवा चन्द्रमा, बुध शुभग्रह से युक्त लग्न में हो और पापग्रह ३।६।१०।११ में हो तो प्रीतिपूर्वक उत्तम भोजन मिलता है ॥१४०-१४१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भोज्यं बुभुक्षा भोक्ता च सुखास्ताङ्गबलक्रमात् ।
लग्नपो भोज्यदस्तेषां बलेन फलमादिशेत् ॥१४२॥
तुर्येशलाभाधिपतीत्थशाले शुभग्रहेक्षायुतितस्सुभोज्यम् ।
इत्थं खलग्नास्तपतीत्थशाले लाभेश्वरे तत्सुखलाभः ऊह्यः ॥१४३॥

भा०—चतुर्थ, सप्तम और लग्न ये क्रम से भोज्य, भूख और भोक्ता हैं तथा लग्नेश अन्नदाता है। इनके बल के अनुसार ही फल समझना चाहिये। जैसे चतुर्थेश और एकादशेश में मुथशील हो और शुभग्रह की दृष्टि वा योग हो तो उत्तम भोजन, एवं दशमेश लग्नेश, सप्तमेश को यदि एकादशेश से इत्थशाल हो तो भूख, भोक्ता और अन्नदाता को भी उत्तम, अन्यथा अधम समझना ॥

स्वप्न प्रश्न निरूपण—

लग्नेऽर्के नृपतिं वह्निं शस्त्रं पश्यति लोहितम् ।
श्वेतं पुष्पं सितं वस्त्रं गन्धं नारीं च शीतगौ ॥१४४॥
रक्तमांशप्रवालं च सवर्णं धरणीसुते ।
बुधे खे गमनं जीवे धनबन्धुसमागमम् ॥१४५॥
जलावगाहनं शुक्रे शनौ तुङ्गावरोहणम् ।
लग्ने लग्नांशपवशात्स्वप्नो वाच्योऽथवा बुधैः ॥१४६॥
सर्वोत्तमबलाद्वाऽपि खेटाद्बुद्ध्या विचिन्तयेत् ।
बलसाम्ये फलं मिश्रं दुःस्वप्नो निर्बलैः खगैः ॥१४७॥

भा०—लग्न में रवि हो तो राजा, अग्नि, शस्त्र और लाल पदार्थ स्वप्न में देखता है। चन्द्रमा लग्न में हो तो श्वेत पुष्प, श्वेत वस्त्र, चन्दन और सुन्दरी स्त्री को देखता है। मंगल लग्न में हो तो शोणित, मांस, मूँगा और सोना देखता है। बुध लग्न में हो तो आकाश में उड़ना, बृहस्पति हो तो धन और बन्धुओं का आगमन, शुक्र हो तो जल में तैरना, शनि लग्न में हों तो उच्च स्थान में चढ़ना स्वप्न में देखता है। अथवा लग्न के नवांशपति से उपरोक्त प्रकार के स्वप्न समझना चाहिये। लग्न में अधिक ग्रह हों तो सब से बली ग्रह का स्वप्न, बल में समता हो तो मिश्रित स्वप्न कहना चाहिये। ग्रह निर्बल हो तो दुःस्वप्न कहना ॥१४४-१४७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भट्टोत्पल—

रविलग्ने शशिदृष्टे रविशशियुक्ताद्विलग्नाद्वा ।
स्वप्नं दृष्टं प्रवदेत्प्रष्टुर्लग्नग्रहान्तरात्कालम् ॥१४८॥

भा०—रवि और लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि हो अथवा रवि और चन्द्रमा दोनों लग्न में हों तो प्रश्नकर्ता ने स्वप्न देखा है, ऐसा समझना । तथा फल-प्राप्ति का काल लग्न के अव्यवहित अग्रस्थित ग्रह और लग्न के अन्तर पर से समझना ॥१४८॥

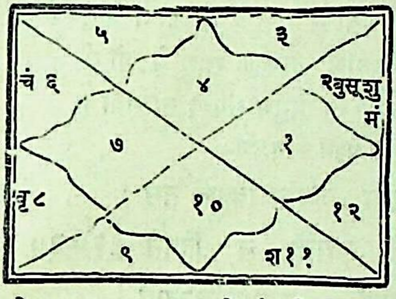

उदा०—प्रश्नलग्नकुण्डली-प्रश्न लग्न ३।१०।१६।२२ और लग्नसे अव्यवहित आगे चन्द्रमा ५।१८।२५।३२ है तो लग्न को चन्द्रमा में घटाने से २।८।९।१० इस पर से सहम फल प्राप्ति के समयज्ञान "स्वनाथ-हीनं सहमं तदंशाः" इत्यादि विधि से दिनादि मान आनयन करना । जैसे लग्न चन्द्रमा के अन्तर २।८।९।१० के अंशादि ६८।९।१० को स्वदेशीय कर्क लग्नोदय ३४३ से गुनाकर ३०० के भाग देने से लब्धि ७४ दिन और ३७ घटी हुई । इससे सिद्ध हुआ कि ७५ दिन के भीतर फल की प्राप्ति होगी ॥१४८॥

आखेट (शिकार) सम्बन्धी प्रश्न निरूपण—

लग्नेशजामित्रपतीत्थशाले सस्नेहदृष्ट्या त्वनयोर्द्वयोश्च ।
आखेटकःस्यात्सफलोऽरिदृष्ट्या स्यान्निष्फलो वाऽल्पफलोऽतिकष्टात् ।
लग्नेश्वरे द्यूनगते विलग्ने जायेश्वरे स्यान्मृगया प्रभूता ।
जामित्रनाथे हिबुके नभःस्थे चाखेटकः स्वल्पतरोऽपि न स्यात्॥१५०॥

भा०—लग्नेश और सप्तमेश में यदि मित्र दृष्टि से मुथशील हो तो शिकार में सफलता और शत्रुदृष्टि से मुथशील हो तो निष्फलता अथवा बहुत परिश्रम से कुछ शिकार मिलता है । यदि लग्नेश सप्तम में और सप्तमेश लग्न में हो तो बहुत शिकार मिलते हैं । यदि सप्तमेश चतुर्थ या दशम भाव में हो तो कुछ भी शिकार नहीं मिलता ॥१४९-१५०॥

ज्ञभौमौ सबलौ सिद्धिरस्तांशे मृगया च्युतिः ।
लग्नद्यूने तत्पती च हेतुस्तैर्जलराशिगैः ॥१५१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जलजं खेटकं ब्रूयाद्वन्यक्षैर्वनसम्भवः ।
क्रूराक्रान्तानि यावन्ति मध्ये भानीन्दुलग्नयोः ।
तावन्तः प्राणिनो वाच्या द्वित्रिघ्ना स्वांशकादिषु ॥१५२॥

भा०—बुध और मंगल बली हों तो शिकार में सफलता, यदि अस्त भाग में प्राप्त हों तो शिकार हाथ से चला जाता है। लग्न और सप्तम और इन दोनों भाव के स्वामी शिकार में कारण हैं इसलिये ये जलराशि में हो तो जल के शिकार और वन्य राशि में हो तो वन का जन्तु शिकार में प्राप्त होता है। चन्द्रमा और लग्न के मध्य में जितनी राशियों में पापग्रह हों उतने जन्तु शिकार में कहना, यदि वे (पापग्रह) अपने नवांश द्रेष्काण राशि में हों तो द्विगुण संख्या तथा अपने उच्च राशि में या वक्र हो तो त्रिगुण संख्या समझना ॥

अथ कलह (विवाद) प्रश्न निरूपण—

क्रूरः खचरो लग्ने विवादपृच्छासु जयति विवादं तम् ।
सर्वावस्थासु परं नीचेऽस्ते जयति न द्विषतः ॥१५३॥
लग्नद्यूने मुक्त्वा परस्परं क्रूरयोर्झकटदृष्टौ ।
विवदद्वादियुगं तच्छुरिकाभ्यां प्रहरति तदैवम् ॥१५४॥
लग्ने द्यूने च यदि क्रूरः खचरो विवादिनोर्न तदा ।
कलहनिवृत्तिः काले जयति हि बलवान् गतबलं तु ॥१५५॥

भा०—पापग्रह प्रश्न लग्न में हो तो विवाद में विजय कहना, यदि वह ग्रह अस्त या नीच स्थित हो तो शत्रु को पराजित नहीं कर सकता है। लग्न सप्तम को छोड़ कर पापग्रहों में परस्पर कलह (४।१०) दृष्टि हो तो वादियों में छूरी कटार से कलह समझना। यदि लग्न और सप्तम दोनों में पापग्रह हो तो शीघ्र कलह निवृत्ति नहीं होती है। लग्नगत पाप बली हो तो बहुत दिनों में वादी की विजय, यदि सप्तमगत ग्रह बली हो तो प्रतिवादी की विजय कहना ॥ १५३–१५५ ॥

लग्नेशः सुतपः सौम्याः केन्द्रे सन्धिर्न वाऽन्यथा ।
लग्नद्यूनेशषष्ठेशारित्वेऽप्यन्योन्यविग्रहः ॥१५६॥

भा०—लग्नेश पञ्चमेश और शुभग्रह केन्द्र में हो तो सन्धि (मेल), अन्यथा कलह समझना। तथा लग्नेश, सप्तमेश और षष्ठेश में शत्रुता हो तो भी परस्पर कलह कहना ॥ १५६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बन्धन प्रश्न निरूपण—

गृहमागतो न यदसो बद्धः किं वा हतः स वा प्रश्ने ।
मूर्तौ क्रूरो यदि तन्न हतो बद्धोऽथवा पुरुषः ॥१५७॥
त्रिकोणचतुरस्रास्तस्थितः पापग्रहो यदि ।
ग्रहैर्निरीक्षितः पापैर्नूनं बन्धनमादिशेत् ॥१५८॥

भा०—युद्ध में गया हुआ घर न लौटे तो "वह बाँधा गया कि मारा गया ?" इस प्रश्न में यदि लग्न में पापग्रह हो तो वह मारा अथवा बाँधा नहीं गया है । यदि ५।९।४।८।७ में पापग्रह हो और किसी पापग्रह से दृष्ट हो तो अवश्य बाँधा गया समझना ॥१५७-१५८ ॥

सप्तमगोऽष्टमगो वा चेत् क्रूरस्तद्धतोऽपि वा बद्धः ।
मूर्तौ च सप्तमे वा यद्वा लग्नेऽष्टमेऽपि भवेत् ।
क्रूरस्तदसौ पुरुषो बद्धश्च हतश्च मुच्यते च परम् ॥१५९॥

भा०—यदि सप्तम वा अष्टम में पापग्रह हो तो वह मारा गया वा बाँधा गया है । तथा लग्न सप्तम में वा लग्न अष्टम दोनों में पापग्रह हो तो वह पुरुष पकड़ा गया, पीटा गया और पीछे छोड़ दिया गया ऐसा कहना ॥ १५९॥

बद्धः सप्ताष्टमे क्रूरे मूर्त्यस्ते चाष्टलग्नगे ।
बद्धो विमुच्यतेऽत्याशु क्रूरः श्रेयांस्तनौ तदा ॥१६०॥

भा०—सप्तम अष्टम में पापग्रह हो तो बाँधा गया । १, ७ या ८, १ में पापग्रह हो तो शीघ्र बन्धन से मुक्त होगा ऐसा कहना । लग्न में पाप ग्रह बन्धन मोक्ष प्रश्न में कुशलकारक होता है ॥ १६० ॥

बन्धन से मोक्ष सम्बन्धी प्रश्न निरूपण—

बद्धोऽस्ति तत्किं भवितेति प्रश्ने विमुच्यतेऽसौ खलु मृत्युयोगे ।
कदा विमुच्येदिति पृच्छमाने शुभं कदा भावि च तैर्मृतिः स्यात् ॥१६१॥

भा०—कोई प्रश्न करै कि "अभियुक्त को कैद होगा या नहीं ? अथवा कैदी कब छूटेगा ?" उस समय यदि (अरिष्टाध्यायोक्त–'लग्नेशोऽष्टमगेऽष्टेशे' इत्यादि) मृत्युयोग हो तो कैदी अवश्य छूटेगा, ऐसा कहना । यदि शुभ के लिये प्रश्न करै कि "कब शुभ होगा ?" तो इस प्रश्न में मृत्यु योगों से मृत्यु ही कहना चाहिये ॥ १६१ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुक्तिप्रश्ने यदा केन्द्रे केन्द्रेशाः स्युर्न मोक्षदाः ।
तस्मिन्वर्षेऽथ लग्नेशे पतिते केन्द्रगे न च ॥१६२॥
सम्बन्धेप्सुः स चेत्क्रूरो मृतीशः स्यात्तदा मृतिः ।
लग्नेशेऽस्तमितेऽम्बुस्थे कुजदृष्टे तदा मृतिः ॥१६३॥
चन्द्रश्चाम्बुगपापेन मृत्युनाथेन योगकृत् ।
तदा गुप्त्यां मृतिश्चन्द्रे केन्द्रे मन्दयुगीक्षिते ॥१६४॥

भा०—बन्धन से मोक्ष होने के प्रश्न में यदि केन्द्रपति केन्द्र में हो तो उस वर्ष कैद से नहीं छूटता है। अथवा लग्नेश नीच स्थानस्थित केन्द्रगत हो तो भी मोक्ष नहीं होता है। अगर वह (लग्नेश) पाप होकर अष्टमेश से सम्बन्ध (मुथशील) योग करनेवाला हो तो मृत्यु कहना। अथवा लग्नेश अस्त होकर चतुर्थभाव में हो और मङ्गल से देखा जाता हो तो भी मरण कहना। यदि चन्द्रमा चतुर्थगत पापग्रह अष्टमेश से युक्त हो अथवा केन्द्रगत चन्द्रमा शनि से युत दृष्ट हो तो कैदखाना में मृत्यु होती है ॥ १६२–१६४ ॥

दीर्घपीडा च भौमेन युग्दृष्टौ बन्धताडने ।
दृश्यार्धे लग्नपश्चेत्स्याद्व्ययपेनेत्थशालवान् ॥१६५॥
पलायते तदा बद्धो व्ययगे लग्नगेऽपि वा ।
तृतीयनवमस्वामी व्ययगो लग्नपेन च ॥१६६॥
यदीत्थशालयोगेप्सुस्तदाऽपि च पलायते ।
दृश्यार्धे ह्युपचारेण चन्द्रो मुथशिलस्तदा ॥१६७॥
बन्धमोक्षस्त्रिधर्मेशः सग्रहः शीघ्रमोक्षकृत् ।
पतितेन्दुस्त्रिधर्मस्थग्रहसम्बन्धकृत्तदा ॥१६८॥

भा०—वही (केन्द्रगत लग्नेश) यदि मङ्गल से युत दृष्ट हो तो कैदी को बहुत पीडा, बन्धन और ताड़न कहना। यदि लग्नेश दृश्य चक्रार्ध (सप्तमभावांश से आगे लग्न के भुक्तांश पर्यन्त) हो और द्वादशेश से इत्थशाली हो अथवा द्वादश या लग्न में हो तो कैदी कैद से भाग जाता है। तृतीयेश वा नवमेश द्वादश स्थित होकर यदि लग्नेश से इत्थशाल करने वाला हो तो भी भागता है। चन्द्रमा दृश्य चक्रार्ध में हो और लग्नेश से इत्थशाल करै अथवा तृतीयेश, नवमेश ग्रहयुक्त हो तो शीघ्र मोक्ष होता है। अथवा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नीचस्थ चन्द्रमा ३।९ भावस्थ ग्रह से सम्बन्ध (मुथशील) कारी हो तो भी शीघ्र मोक्ष होता है ॥१६५–१६८॥

केन्द्रस्थत्रिभवेशेन योगेप्सुश्चेत्तदाऽचिरात् ।
यावच्छुक्रो बली लग्ने तावत्कर्त्ता बलाधिकः ॥१६९॥
अस्तङ्गते शनौ शुक्रे बद्धमोक्षादिसम्भवः ।
म्रियते येन योगेन तेन योगेन मुच्यते ॥१७०॥
मेषे तुले च शीघ्रं स्यात्कर्के नक्रे सकष्टता ।
स्थिरे चिराद् द्विदेहस्थे मोक्षो मध्यमकालतः ॥१७१॥

भा०—वा केन्द्रगत तृतीयेश या लाभेश से योग करने वाला हो तो भी शीघ्र मोक्ष होता है । जब तक शुक्र बलवान् और लग्न में रहता है तब तक बन्धनादिकारक होता है शुक्र और शनि अस्तङ्गत निर्बल हो तो बन्धन से मुक्त होता है। जिन योगों से मृत्यु (अरिष्ट) उक्त है, उन्हीं योगों से बन्धन से मोक्ष होता है। मेष, तुला लग्न हो तो शीघ्र बन्धन से मुक्त होता है। कर्क, मकर लग्न हो तो परिश्रम और यत्न से तथा स्थिर लग्न हो तो बहुत दिनों पर और द्विस्वभाव लग्न हो तो मध्यम काल (न शीघ्र न अधिक समय) में कैद से छूटता है ऐसा कहना ॥१६९–१७१॥

नौका (जहाज आदि) सम्बन्धी प्रश्न निरूपण—

क्षेमायतं वहित्रस्य मज्जनं वपनं जले ।
पण्यव्यवहृतौ लाभो नावि प्रश्नचतुष्टयम् ॥१७२॥
नौर्लभदा स्यान्मम नेति पृष्टे केन्द्रे शुभाश्चेदितरेषु पापाः ।
बलोज्झिताः क्षेमजयार्थदा नौर्भवीति वाच्यं विदुषा विमृश्य ॥१७३॥

भा०—नाव का कुशल पूर्वक आना, जल में डूब जाना, अथवा कोई उपद्रव होना, और व्यवसाय से लाभ ये ४ विषय नौका प्रश्न में विचारणीय होते हैं। कोई पूछे कि "नाव से लाभ है या नहीं" तो प्रश्न समय यदि शुभग्रह केन्द्र में हो और निर्बल पापग्रह अन्य स्थान में हो तो नाव से कुशल और धन लाभ होगा, ऐसा कहना ॥१७२–१७३॥

लग्नाधिपे वक्रिणि चाम्बुनाथे व्यावृत्य नौरेति च मार्गतः सा ।
चेत्सौम्यदृष्टः कुशलेन पापैर्दृष्टस्तदा वस्तुविनेति वाच्यम् ॥१७४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विलग्नरन्ध्राधिपती स्वगेहे प्रवेक्ष्यतश्चेद्व्यवहारलाभः ।
यदाऽष्टमे सौम्यखगा बलाढ्यास्ततदा तरी लाभसुखप्रदा स्यात् ॥१७५॥

भा०—लग्नेश और चतुर्थेश वक्री हो तो मार्ग से नौका लौट आती है। यदि शुभग्रह की दृष्टि हो तो सकुशल वस्तु सहित और पापग्रह की दृष्टि हो तो विना वस्तु के नौका लौटती हैं। यदि लग्नेश और अष्टमेश अपने अपने गृह में प्रवेश करने वाले हों तो व्यवहार से लाभ कहना। यदि बलवान् शुभग्रह अष्टम भाव में हों तो भी नौका से लाभ होता है ॥१७४–१७५॥

कुशलायाति पृच्छायां मृत्युयोगे समागते ।
तदा नोरेति शीघ्रेण लाभाद्यं चाऽन्ययोगतः ॥१७६॥

भा०—"मेरी नौका सकुशल आती है ?" इस प्रश्न में अरिष्टाध्यायोक्त मृत्यु योग हो तो शीघ्र नौका आवेगी, और अन्य (लाभ) योग भी हो तो धन सहित आवेगी, ऐसा कहना ॥१७६॥

लग्नेशं चन्द्रनाथं वा चन्द्रं वा मृत्युपो यदि ।
पश्येत्क्रूरदृशा नावा समं नश्यति नौपतिः ॥१७७॥
लग्नेशोऽष्टपतिः स्वस्वगेहं नालोकते यदि ।
तदा यानस्य वक्तव्यं निश्चितं मज्जनं बुधैः ॥१७८॥
तावुभौ सप्तमस्थौ चेज्जले वापनिकां वदेत् ।
द्यूने वापनिकां कृत्वा यानमायाति मन्दिरम् ॥१७९॥
लग्नचन्द्रपती क्रूरदृष्ट्याऽन्योन्यं यदीक्षितौ ।
तदा पोतजनानां च मिथः कलहमादिशेत् ॥१८०॥

भा०—लग्नेश को या चन्द्रराशीश को अथवा चन्द्रमा को यदि अष्टमेश शत्रुदृष्टि से देखे तो नौका सहित नौका का मालिक नष्ट हो जाता है। लग्नेश और अष्टमेश अपने अपने गृह को न देखता हो तो निश्चय नौका डूब जाती है। यदि वे (लग्नेश, अष्टमेश) दोनों सप्तम भाव में हों तो नौका स्थित वस्तु जल में गिरकर नष्ट हो जाती केवल नौका आती है। यदि लग्नेश और चन्द्रराशीश दोनों में परस्पर शत्रुदृष्टि हो तो नाविकों (नाव वालों) में परस्पर कलह कहना चाहिये ॥१७७–१८०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जनश्रुति के सत्यासत्य सम्बन्धी प्रश्न निरूपण—

शुभैः केन्द्रगतैश्चन्द्रे लग्ने लग्नेश्वरेऽपि वा।
शुभदृग्योगतः सौम्यां वार्तां सत्यां विनिर्दिशेत् ॥१८१॥
पापदृग्योगतो दुष्टा वार्ता सत्येति कीर्त्यते।
वक्रे भाविनि लग्नेशे मिथ्या वार्ता भविष्यति ॥१८२॥

भा०—"जनश्रुति (किंवदन्ती) सत्य है या मिथ्या?" इस प्रश्न में शुभग्रह केन्द्र में हो और चन्द्र, लग्न, लग्नेश इन तीनों पर शुभग्रह की दृष्टि या योग हो तो सत्य और शुभप्रद, तथा पापग्रह की दृष्टि या योग हो तो सत्य किन्तु अशुभप्रद जनश्रुति कहना। यदि लग्नेश्वर वक्रगति हो वा होने वाला हो तो जनश्रुति को मिथ्या कहना ॥१८१-१८२॥

अथ क्रय-विक्रय प्रश्न निरूपण—

क्रेता लग्नपतिर्ज्ञेयो विक्रेताऽऽयपतिः स्मृतः।
गृह्णाम्यहमिदं वस्तु प्रश्न एवं-विधे सति ॥१८३॥
बलशालि विलग्नं चेद्गृह्यते तत्क्रयाणकम्।
तस्मात्क्रयाणकाल्लाभः प्रष्टुर्भवति निश्चितम् ॥१८४॥
विक्रीणाम्यमुकं वस्तु प्रश्न एवं-विधे सति।
आयस्थाने बलवति विक्रेतव्यं क्रयाणकम् ॥१८५॥

भा०—लग्नेश को क्रेता (खरीदने वाला) और लाभेश को विक्रेता (वेचने वाला) समझना। कोई प्रश्न करै कि "मैं अमुक वस्तु खरीदूँ?" तो प्रश्न समय एकादश भाव से लग्न बली हो तो वस्तु खरीदने से खरीदने वालों को लाभ होता है। इसलिये उस समय खरीदने को कहना। और कोई पूछे कि "अमुक वस्तु वेचूँ"? तो उस समय एकादश स्थान यदि बली हो तो वेचने से विक्रेता को लाभ होगा इसलिये बेचने कहना ॥१८३-१८५॥

सस्यनिष्पत्ति (देशों में सुभिक्षादि) सम्बन्धी प्रश्न निरूपण—

दिशि कस्यां भवेत्सस्यनिष्पत्तिः क्व च सा नहि।
पूर्वं देशस्य भङ्गो हि क्व दिशि कतमे नहि ॥१८६॥
चतुर्णामपि केन्द्राणां मध्ये यत्र शुभग्रहः।
तस्यां च सस्यनिष्पत्तिः स्वस्थं चैव भविष्यति ॥१८७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यस्यां दिशि शनिः पापैर्युतो वाऽप्यवलोकितः ।
दिशि तस्यां तदाऽस्वास्थ्यं दुर्भिक्षं च भविष्यति ॥१८८॥
दिशि यस्यां रविस्तत्र धान्यनाशो नृपाद्भयम् ।
यत्राऽपि मङ्गलस्तत्र धान्यनाशोऽग्निभीस्तथा ॥१८९॥

भा०—"किस दिशा में अन्न की अधिकता (सुभिक्ष) और किस देश में दुर्भिक्ष, किस देश का भंग और किस की वृद्धि होगी ?" इस प्रश्न में लग्न आदि चारों केन्द्र में शुभग्रह के योग से पूर्व आदि दिशाओं में अन्न की वृद्धि और लोगों में स्वास्थ्य समझना। जिस दिशा में पापग्रह से युतदृष्ट शनि हो उस दिशा में लोगों में पीडा और दुर्भिक्ष कहना। जिस दिशा में रवि हो उस दिशा में अन्न का नाश और राजा का भय कहना। तथा जिस दिशा में मङ्गल हो उस दिशा में धान्य का नाश और अग्नि का भय कहना ॥१८०–१८९॥

वि०—लग्न से (२२।३०) साढ़े बाइस अंश पीछे और साढ़े बाइस अंश आगे एवं ४५ अंश पूर्व, लग्न से पीछे इसी प्रकार पैंतालिस अंश क्रम से अग्निकोण, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, वायु, उत्तर, ईशान समझना ॥१८७॥

यस्यां दिशि शुभाः खेटाः समस्तबलशालिनः ।
निष्पन्ना सैव विज्ञेया सस्यं स्वास्थ्यं च तत्र हि ॥१९०॥
केन्द्रेषु सर्वतः पापाः समस्तबलसंयुताः ।
देशस्तदा विनष्टोऽसौ ज्ञातव्यः शास्त्रकोविदैः ॥१९१॥

भा०—जिस दिशा में केवल बली शुभग्रह हों उस दिशा को सर्वथा सम्पन्न और अन्न की वृद्धि एवं लोगों में स्वास्त्य समझना। जिस दिशामें केवल बलयुक्त पापग्रह मात्र हो उस दिशा का देश सर्वथा नष्ट समझना। अर्थात् जिस दिशा में मिश्रग्रह हों वहाँ मिश्रफल कहना ॥१९०-१९१॥

इति गूढार्थप्रकाशिका-सहितनीलकण्ठ्यां प्रश्नतन्त्रे विशेषप्रश्नाध्यायः ॥ ३ ॥

—०❁०—

अथ प्रकीर्णकाध्यायः ॥ ४ ॥

फलों में लग्न चन्द्र और अंशों की विशेषता—

इन्दुः सर्वत्र बीजाभो लग्नं च कुसुमप्रभम् ।
फलेन सदृशोंऽशश्च भावः स्वादुसमप्रभः ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—चन्द्रमा को वीज, लग्न को फूल, नवांशादि को फल और शेष भावों को स्वाद के समान समझ कर तारतम्य से फल कहना ॥ १ ॥

लाभालाभ सम्बन्धी प्रश्न निरूपण—

लग्नपो मृत्युपश्चाऽपि मृत्यौ स्यातामुभौ यदि ।
स्थितौ द्रेष्काण एकस्मिन्प्रष्टुर्लाभस्तदा ध्रुवम् ॥ २ ॥
एवं द्वादशभावेषु द्रेष्काणैरेव केवलम् ।
बुधो विनिश्चयं ब्रूयाद्योगेष्वन्येषु निःस्पृहः ॥ ३ ॥

भा०—लग्नेश और अष्टमेश दोनों अष्टम में एक ही द्रेष्काण में हों तो प्रश्नकर्ता को निश्चय लाभ कहना चाहिये । इसी प्रकार बारहों भाव में दूसरे योगों की स्पृहा न करके द्रेष्काण से ही निश्चय करना चाहिये ॥ २–३ ॥

प्रश्नकाले सौम्यवर्गो लग्ने यद्यधिको भवेत् ।
ग्रहभावानपेक्षेण तदाख्येयं शुभं फलम् ॥ ४ ॥
लग्नाधिपश्च लाभस्याधीशश्च दायको भवति ।
लग्नाधिपस्य योगो लाभाधीशेन लाभकरः ॥ ५ ॥
भवति स परलाभकरस्तदैव यदि चन्द्रदृग्लाभे ।
योगाः सर्वेऽप्यफलाश्चन्द्रमृते व्यक्तमेतच्च ॥ ६ ॥

भा० – प्रश्न समय में लग्न में शुभग्रह के अधिक वर्ग हो तो अन्य भाव और ग्रह की अपेक्षा न करके शुभ फल ही कहना चाहिये । लग्नेश और लाभेश ये दोनों लाभदायक है, इसलिये इन दोनों का योग लाभदायक होता है । यदि लग्नेश लाभेश के योग में चन्द्रमा की दृष्टि हो तो अत्यन्त लाभकारक समझना । क्योंकि चन्द्रमा की दृष्टि योग विना योगों का फल पूर्ण नहीं होता है ; यह सर्व-सम्मत है ॥ ४–६ ॥

धर्माधीशेनैवं कर्माधीशेन निवृत्त्यधीशेन ।
मृत्युपतिना च योगे लाभाधीशस्य वक्तव्यम् ॥ ७ ॥
तत्तत्स्थानेक्षणतः पुण्यविवृद्धिश्च कर्मवृद्धिश्च ।
विबुधैस्तदा निवृत्तिर्मृत्युर्भावाः परेऽप्येवम् ॥ ८ ॥
लग्नेशो यदि षष्ठे स्वयमेव रिपुर्भवत्यात्मा ।
मृत्युकृदष्टमगोऽसौ व्ययगोऽसौ सन्ततं व्ययं कुरुते ॥९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—इसी प्रकार लाभेश से कर्मेश को योग हो तो कर्मवृद्धि, धर्मेश को योग हो तो धर्मवृद्धि इत्यादि दूसरे भावों के फल भी समझना। एवं लग्नेश षष्ठ भाव में हो तो अपनी आत्मा ही शत्रु रूप होती, और अष्टम में हो तो मृत्युकारक तथा द्वादश में हो तो सर्वदा व्ययकारक होता है ॥ ७-९ ॥

फल प्राप्ति समय का निरूपण—

उदयोपगतं राशिं तञ्च कलीकृत्य लिप्तिका गुणयेत् ।
छायाङ्गुलैश्च कुर्यात् हृत्वा मुनिभिस्ततः शेषम् ॥१०॥
ग्रहगुणकारो ज्ञेयो दैवविदा पञ्च विंशतिः सैका ।
मनवोऽङ्काऽष्टौ त्रितयं भवाश्च सूर्यादितो ज्ञेयाः ॥११॥
गुणयित्वैवं प्राग्वत् हृत्वा सौम्यस्य भवेदुदयः ।
कार्यप्राप्तिः प्रष्टुर्वक्तव्या नेतरैर्ग्रहैर्भवति ॥१२॥
गुणकारैक्यविभक्तः कार्यः सूर्यादिगुणकसंशुद्धः ।
यस्य न शुद्ध्यति वर्गौ विज्ञेयस्तदशात्कालः ॥१३॥

भा०—प्रश्न लग्न राश्यादिको कलात्मक बनाकर उसे तात्कालिक १२अंगुल शङ्कु की छायांगुल प्रमाण से गुना करके जो कलापिण्ड हो उसमें ७ का भाग देकर १ आदि शेष में रवि आदि ग्रह के गुणक क्रम से ५।२१।१४।९।८।३।११ समझना। इस प्रकार जिस ग्रह के गुणक प्राप्त हो उस गुणक से कलापिण्ड को गुना कर जो हों उसमें सब गुणकारों के योग (७१) से भाग देकर जो शेष बचे उसमें उक्त रव्यादि ग्रहों के गुणकों को क्रम से घटावे। जिस ग्रह का गुणक न घटे उस ग्रह का उदय समझना। इस प्रकार शुभ ग्रह का उदय हो तो कार्य की प्राप्ति निश्चय कहना। पाप ग्रहों के उदय में नहीं। और जिस ग्रह का उदय हो उससे अगले श्लोकानुसार शेष तुल्य कार्य प्राप्ति का समय कहना ॥१०-१३॥

आरदिवाकरशेषे दिवसाः पक्षाश्च भृगुशशिनोः ।
गुर्वब्शेषे मासा ऋतवः सौम्ये शनैश्चरेऽब्दाः स्युः ॥१४॥
आधानेऽथ प्राप्तौ गमनागमने पराजये विजये ।
रिपुनाशे वा काले पृच्छायां निश्चितं ब्रूयात् ॥१५॥

भा०—मङ्गल और सूर्य के शेष तुल्य दिन, शुक्र और चन्द्रमा के शेष तुल्य पक्ष, गुरु के शेष तुल्य मास, बुध के शेष तुल्य ऋतु और शनि के शेष

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुल्य वर्ष कहना। गर्भाधान, लाभालाभ, गमनागमन, जय पराजय आदि में इस प्रकार समय का निश्चय करना चाहिये ॥ १४–१५ ॥

वि०—ग्रहलाघव आदि ग्रन्थों से नत काल और छाया का ज्ञान होता है। ग्रहलाघवत्रिप्रश्नाधिकार देखिये ॥ १५ ॥

उदा०—प्रश्नकाल १।५।२०।२५ और इष्टकाल में छायाङ्गुल=१० है, तो उक्त रीति से लग्न की कला २१२०।२५ को छायाङ्गुल १० से गुना कर कलापिण्ड २१२०४′। १०″ इसमें ७ के भाग देने से शेष १′।१०″ गतकला १ वर्तमान द्वितीय कला है अतः रव्यादि गणना से दूसरा चन्द्रमा हुआ, उसका गुणकाङ्क २१ प्राप्त हुआ, इस गुणकाङ्क से फिर कलापिण्ड २१२०४′।१०″ को गुना करने से ४४५२८७।३० इसमें सब ग्रहों के गुणकयोग ७१ के भाग देकर शेष ४६′।३०″ इसमें रवि, चन्द्र और मङ्गल के गुणकों (५।२१।१४) के योग ४० घटा कर शेष ६′।३०″ इसमें बुधका गुणकाङ्क ९ नहीं घटता है, अतः वर्तमान बुध का उदय हुआ। बुध शुभग्रह है इसलिए कार्य की सिद्धि होगी। परञ्च बुध के शेष तुल्य ऋतु में अर्थात् ६ ऋतु के बाद सप्तम ऋतु में कार्य सम्पन्न होगा। दो मास का एक ऋतु होता है ॥ १४–१५ ॥

एक समय में अनेक प्रश्न हो तो प्रश्नाद्यक्षरों से लग्न कल्पना करके पृथक् पृथक् फल कहने का प्रकार—

अकचटतपयशवर्गा रविकुजसितसौम्यजीवसौराणाम् ।
चन्द्रस्य च निर्दिष्टास्तैः स्युः प्रथमोद्भवैर्वर्णैः ॥१६॥
ज्ञात्वा तस्माल्लग्नं विज्ञाय शुभाशुभं च वदेत् ।
वर्गादिमध्यमान्त्यैर्वर्णैः प्रश्नोद्भवैर्विषमराशिः ॥१७॥
प्राज्ञो लग्नं प्रवदेत्पृच्छायुग्मं कुजज्ञीवानाम् ।
सितरविजयोश्च नैवं रविशशिनोरेकराशित्वात् ॥१८॥
तस्मात्प्राग्वत्प्रवदेत्पृच्छासमये शुभाशुभं सर्वम् ।
कालस्य च विज्ञानादेतच्चिन्त्यं बहुप्रश्ने ॥१९॥

भा०—अ वर्ग का रवि, क वर्ग का मंगल, च वर्ग का शुक्र, ट वर्ग का बुध, त वर्ग का गुरु, प वर्ग का शनि और यवर्ग-शवर्ग का चन्द्रमा स्वामी है। प्रश्नकर्ता के मुख से प्रथम जिस वर्ग का वर्ण उच्चारण हो उस ग्रह की राशि लग्न मानना। उनमें वर्ग के (१,३,५) विषम अक्षरों से विषम राशि लग्न सम-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

झना । तथा सम अक्षर हो तो सम राशि को लग्न मानना यह अर्थात् सिद्ध होता है । इस प्रकार मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र, और शनि इन ग्रहों के "दो दो राशि होने के कारण से" प्रश्न लग्न दो प्रकार के हो सकते हैं । परञ्च रवि और चन्द्रमा के एक ही राशि होने के कारण वर्ग के सब अक्षरों से एक ही लग्न होता है । इस प्रकार लग्नका ज्ञान करके पूर्वोक्तविधि से शुभाशुभ फल और काल का निश्चय करना चाहिये । इस प्रकार (प्रश्नके आद अक्षर पर से) लग्नकी कल्पना अनेक प्रश्न हो तभी करना । एक प्रश्न में इष्टकाल से ही लग्न बनाकर फल कहना ॥ १६–१९ ॥

मानसिक या मुष्टिगत प्रश्ननिरूपण—

स्वांशं विलग्ने यदि वा त्रिकोणे स्वांशे स्थितः पश्यति धातुचिन्ताम् ।
परांशकस्थश्च करोति जीवं मूलं परांशोपगतः परांशम् ॥२०॥
धातुं मूलं जीवमित्योजराशौ युग्मे विन्द्यादेतदेव प्रतीपम् ।
लग्ने योऽङ्शस्तत्क्रमादृगण्यमेवं संक्षेपोऽयं विस्तरात्तत्प्रभेदः ॥२१॥

भा०—लग्नेश या चन्द्रमा अपने नवांश में स्थित होकर लग्न में या त्रिकोण (५।९) में अपने नवांश को देखता हो तो धातु, यदि अपने नवांश में होकर (१।५।९) में पर नवांश को देखता हो तो जीव, तथा पर नवांश में स्थित होकर (१।५।९) में पर नवांश को देखे तो मूल सम्बन्धी प्रश्न जानना । अथवा विषम राशि लग्न हो तो उसमें प्रथमादि नवांश में क्रम से (धातु १, मूल २, जीव ३, धातु ४, मूल ५, जीव ६, धातु ७, मूल ८, जीव ९) तथा सम राशि लग्न में विपरीत (जीव १, मूल २, धातु ३, जीव ४, मूल ५, धातु ६, जीव ७, मूल ८, धातु ९) क्रम से गिनकर समझना । यह संक्षेप में कहा गया है । इसके भेद अन्यत्र विस्तृत हैं ॥२०–२१॥

भट्टोत्पल—

बलिनौ केन्द्रोपगतौ रविभौमौ धातुकरौ प्रश्ने ।
बुधसौरी मूलकरौ शशिगुरुशुक्राः स्मृता जीवाः ॥२२॥

भा०—बली रवि वा मङ्गल केन्द्र में हो तो धातु, बुध शनि हो तो मूल और चन्द्र, गुरु, शुक्र, हो तो जीव सम्बन्धी प्रश्न कहना ॥२२॥

मेषालिसिंहलग्ने कुजार्कयुक्ते निरीक्षितेऽप्यथवा ।
धातोश्चिन्तां प्रवदेद्युगघटकन्यागतैर्लग्नैः ॥२३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुधरविजयुतैर्मूलं वृषतुलमृगमीनचापकर्कटकैः ।
चन्द्रगुरुशुक्रयुक्तैर्दृष्टैर्जीवो विनिर्देश्यः ॥२४॥

भा०—अथवा मेष, वृश्चिक वा सिंह लग्न मङ्गल रवि से युत दृष्ट हो तो धातु, तथा मिथुन, कुम्भ, कन्या लग्न बुध शनि से युत हो तो मूल, और वृष तुला, मकर, मीन धनु, कर्क लग्न यदि चन्द्र, गुरु, शुक्र से युत दृष्ट हो तो जीव सम्बन्धी प्रश्न समझना चाहिये ॥२३-२४॥

ज्ञानप्रकाश में मानसिक प्रश्न निरूपण—

लग्नलाभपयोः प्राणी तयोर्यद्भावगः शशी ।
तस्य भावस्य या चिन्ता प्रष्टुः सा हृदि वर्तते ॥२५॥
एवं बलाधिकाचन्द्राल्लग्ननाथो यतः स्थितः ।
दैवज्ञेन विनिर्णेयः प्रश्नस्तद्भावसम्भवः ॥२६॥

भा०—लग्नेश और एकादशेश में जो बली हो उससे जैवाँ भाव में चन्द्रमा हो उस भाव की चिन्ता (अर्थात् उसके साथ में हो तो शरीर सम्बन्धी, द्वितीय में हो तो धन सम्बन्धी इत्यादि) समझना चाहिये । अथवा पूर्ण बली चन्द्रमा से लग्नेश जैवां स्थान में हो उस भाव का प्रश्न समझना चाहिये ॥२५-२६॥

जैसे उदाहरण षट्पञ्चाशिकोक्त—

आत्मसमं लग्नगतैस्तृतीयगैर्भ्रातरः सुतं सुतगैः ।
माता वा भगिनी वा शत्रुगतैः शत्रुरथ भार्या ॥२७॥
सप्तमसंस्थैर्नवमैर्धर्माश्रितमथ गुरुर्दशमैः ।
स्वांशपतिमित्रशत्रुषु तथैव वाच्यं बलयुतेषु ॥२८॥

भा०—लग्नगत ग्रहों से आत्मीय (शरीर सम्बन्धी) तृतीय गत ग्रहों से भाई, पञ्चम गत ग्रहों से पुत्र एवं चतुर्थ गत ग्रह से माता, षष्ठ गत से शत्रु, सप्तमस्थ से स्त्री, नवम से धर्म, दशम से पिता सम्बन्धी प्रश्न कहना । नवांश-पति के मित्र और शत्रु के जिस प्रकार बल हो तदनुसार मित्र और शत्रु सम्बन्धी प्रश्न कहना चाहिये ॥२७-२८॥

चरलग्ने चरभागे मध्याद्भ्रष्टे प्रवासचिन्ता स्यात् ।
भ्रष्टः सप्तमभवनात्पुनर्निवृत्तो यदि न वक्री ॥२९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—चर राशि लग्न में यदि चर नवांश मध्य (पञ्चम खण्ड=१६।४०) से आगे हो तो प्रवास की चिन्ता, सप्तम भाव से आगे बढ़कर ग्रह यदि फिर वक्र नहीं हो तो प्रवास से निवृत्ति समझना चाहिये । विशेषार्थ षट्पञ्चाशिका की मेरी टीका देखिये ॥२९॥

स्त्री समागम सम्बन्धी प्रश्ननिरूपण—

अस्ते रविसितवक्रैः परजायां स्वां गुरौ बुधे वेश्याम् ।
चन्द्रे च वयः शशिवत् प्रवदेत्सौरेऽन्त्यजादीनाम् ॥३०॥
कुमारिकां बालशशी बुधश्च वृद्धां शनिः सूर्यगुरू प्रसूताम् ।
स्त्रीं कर्कशां भौमसितौ च धत्ते एवं वयः स्यात्पुरुषेषु चिन्त्यम् ॥३१॥

भा०—सप्तम भाव में रवि, शुक्र, मंगल हो तो परस्त्री, गुरु हो तो स्वस्त्री, बुध और चन्द्रमा हो तो वेश्या, और शनि हो तो नीच जाति की स्त्री की चिन्ता कहना। और वयस चन्द्रमा के अनुसार समझना। चन्द्रमा बाल हो तो कुमारी, तरुण हो तो तरुणी, वृद्ध हो तो वृद्धा। तथा बुध से भी वृद्धा, शनि, रवि, गुरु से प्रसूता, मंगल, शुक्र से कर्कशा स्त्री समझना। पुरुष के वयस भी इसी प्रकार समझना चाहिये ॥३०–३१॥

सुरत प्रश्न निरूपण—

शुभेत्थशाले हिमगौ चतुष्टये सौख्यातिरेकः सविलासहासः ।
क्रूरेत्थशाले हिमगौ सरोषः क्रूरान्वितेऽभूत्कलहो नृवध्वोः ॥३२॥
पीडाऽथवासीत्सुरते युवत्या रजो यथास्तर्क्षमुपैति तद्वत् ।
लग्ने सुरेज्ये भृगुजे कलत्रे तुर्ये हिमांशौ सविलासहासम् ॥३३॥

भा०—केन्द्र स्थित चन्द्रमा को शुभ ग्रह से मुथशील हो तो हास्य विलास और सुभ. तथा पापग्रह से इत्थशाल हो तो रोष पूर्वक तथा पापग्रह से युक्त हो तो दोनों में कलह और सुरत से स्त्री को पीड़ा कहना। तथा सप्तम भावस्थ राशि सम्बन्धी जन्तु जिस प्रकार सुरत करता हो उसी प्रकार सुरत कहना। लग्न में गुरु, सप्तम में शुक्र, चतुर्थ में चन्द्रमा हो तो हास विलास पूर्वक सुरत कहना ॥३२–३३॥

शुभग्रहोत्थे च कबूलयोगे युतौ रजः पुष्पसुगन्धयुक्तम् ।
स्वर्क्षोच्चगे हर्म्यरतं निगद्यं स्थिते द्विदेहे वनिता स्वकीया ॥३४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चरोदये सारसिते परस्त्री केन्द्रे शनौ सा सुरजो दिवारतिम् ।
निशोदयेशे त्रिखगे च रात्रौ दिवानिशं तद्बलिनोर्द्विखेटयोः ॥३५॥

भा०—चन्द्रमा को शुभ ग्रह से कम्बूल अथवा योग हो तो रज में फूल के समान गन्ध कहना । अपनी राशि या उच्च में हो तो कोठा में सुरत कहना, द्विस्वभाव लग्न में स्वस्त्री और चर लग्न में मंगल शुक्र हो तो परस्त्री, तथा केन्द्र में शनि हो तो रजस्वला स्त्री से दिन में सुरत, रात्रि बली राशि लग्न हो और लग्नेश ३।१० में हो तो रात्रि में, अर्थात् दिवाबली लग्न हो तो दिन में और दोनों प्रकार के योग हो तो दिन और रात्रि दोनों समय सुरत कहना ॥

महर्घ-समर्घ (तेजी-मन्दी) प्रश्न निरूपण—

मेषे वृषे च मिथुने शुभयुक्तदृष्टे न ग्रैष्मिकं तु सुलभं भविता पृथिव्याम् ।
सूर्ये धनुर्मृगघटेषु च सारधान्यं कुर्यात्समर्घमशुभैः सहितो महर्घम् ॥३६॥

भा०—मेष, वृष, मिथुन राशियों में सूर्य यदि शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो ग्रीष्म ऋतु सम्बन्धी अन्न (जव गेहूँ आदि) पृथ्वी में सुलभ नहीं समझना । और धनु, मकर और कुम्भ राशि में सूर्य शुभ ग्रह से युत हो तो समर्घ (सस्ता) और पापग्रह से युत हो तो महर्घ (महँगा) समझना ॥३६॥

लग्ने बलाढ्ये निजनाथसौम्यैर्युक्तेक्षिते केन्द्रगतैः शुभैश्च ।
सर्वैः समर्घं विबलैर्विलग्ने केन्द्रेषु पापैः सकलं महर्घम् ॥३७॥

भा०—प्रश्न लग्न बली हो और अपने स्वामी तथा शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो और केन्द्र में सब शुभ ग्रह हों तो सब अन्न सस्ते होते हैं । और लग्न निर्बल और सब पाप ग्रह केन्द्र में हो तो सब अन्न महर्घ होते हैं ॥३७॥

सूर्य के मेष प्रवेश कालिक लग्न से फल—

राकाकुहूशशिपभास्वदजप्रवेशलग्नेश्वराः शुभखगैर्युतवीक्षिताश्चेत् ।
तद्वत्सरे जगति सौख्यमलं प्रकुर्युः पापार्दिते गदनरेन्द्रभयं प्रजानाम् ॥३८॥

भा०—पूर्णान्त दर्शान्त कालिक लग्नेश और चन्द्रराशीश तथा सूर्य के मेष प्रवेश कालिक लग्नेश ये यदि शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो उस वर्ष लोगों में सब प्रकार के सुख, यदि पापग्रह से युत दृष्ट हों तो उस वर्ष रोग और राजा से भय समझना चाहिये ॥ ३८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेषप्रवेशोदयतः स्वदेशे केन्द्रेषु पापोडुपतीत्थशाले ।
पापग्रहैर्दृष्टयुतेऽथ तस्मिन् वर्षे गदार्तिः प्रियमन्नमुर्व्याम् ॥३९॥

भा०—मेष प्रवेश कालिक लग्न से सप्तमेश केन्द्र में पाप ग्रह और क्षीण चन्द्र से इत्थशाली हो वा पाप ग्रह से युत दृष्ट हो तो उस वर्ष में पृथ्वी में रोग-भय होता है और अन्न प्रिय होता है अर्थात् अन्न महर्घ हो जाता है ॥३९॥

भानोर्मेषप्रवेशोदयभवनपतिः सद्ग्रहः स्वोच्चसंस्थः
स्वर्क्षस्थो वाऽपि केन्द्रे शुभगगनचरैर्दृष्टयुक्तो बलाढ्यः ।
तस्मिन् वर्षे विदध्याज्जगति शुभसुखं भुरिसस्यं सुवृद्धिं
क्रूरः क्रूरार्दितो वा दिशति नृपभयं कष्टमन्नं महर्घम् ॥४०॥

भा०—मेष प्रवेश कालिक लग्नेश शुभ ग्रह हो अपने उच्च या गृह में हो या केन्द्र में हो, शुभ ग्रह से युत दृष्ट और वलवान हो तो उस वर्ष संसार में अनेक प्रकार के उत्सव सुख और सब अन्न की वृद्धि होती है। यदि वह पाप ग्रह हो और पाप युत दृष्ट हो तो उस वर्ष राजभय, कष्ट और सब अन्न महर्घ होते हैं ॥ ४० ॥

जन्म लग्न-और मेष प्रवेशलग्न से वर्ष फल ज्ञान—

जन्मोदयाद्भास्वदजप्रवेशलग्नं हि यद्भावगतं शुभान्वितम् ।
तद्भाववृद्धिं विदधाति तस्मिन् वर्षे नृणां पापयुतं तदन्यथा ॥४१॥

भा०—जन्म लग्न से सूर्य के मेष प्रवेष कालिक लग्न जिस भाव में हो वह शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि और पापग्रह से युत दृष्ट हो तो उस भाव की हानि समझना ॥ ४१ ॥

उदाहरण—

जन्मोदये देहसुखं धनेऽर्थलाभस्तृतीये च कुटुम्बवृद्धिः ।
तुर्ये सुहृत्सौख्यमथात्मजाप्तिः पुत्रेऽथ षष्ठेऽरिपराजयः स्यात् ॥४२॥
स्त्रीसौख्याप्तिर्भवति मदने मृत्युरुग्भीश्च रन्ध्रे
धर्मार्थाप्तिस्तपसि दशमे वित्तसौख्यास्पदाप्तिः ।
लाभे लाभः सुखधनचयो दुःखदारिद्र्यमन्त्ये
पुंसो मेषे प्रविशति रवौ जन्मलग्नाद्विलग्ने ॥४३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा०—सूर्य का मेष प्रवेश लग्न जन्म लग्न में हो तो उस वर्ष में देह सुख, धन भाव में हों तो धन लाभ, तृतीय में हो तो भाइयों का सुख, चतुर्थ में हो तो मित्र और गृह सुख, पञ्चम में हो तो पुत्र सुख, षष्ठ में हो तो शत्रु भय, सप्तम में हो तो स्त्री सुख, अष्टम में हो तो मृत्यु वा रोग का भय, नवम में हो तो धर्म और धन का लाभ, दशम में हो तो धन और स्थान का लाभ, एकादश में हो सब प्रकार का लाभ तथा धन सुख की वृद्धि और द्वादश में हो तो दुःख और दरिद्रता समझना। ये फल शुभग्रह से युत दृष्ट हो तभी समझना। यदि पापग्रह से युत दृष्ट हो तो विपरीत फल समझना चाहिये ॥ ४२-४३ ॥

श्रीगर्गान्वयभूषणं गणितविच्चिन्तामणिस्तत्सुतो-
ऽनन्तोऽनन्तमतिर्व्यधात् खलमतध्वस्त्यैजनुः पद्धतिम् ।
तत्सूनुः खलु नीलकण्ठविबुधो विद्वच्छिवानुज्ञया
प्रश्नानत्र चमत्कृतांश्च विविधान् सत्प्रश्नतन्त्रेऽभ्यधात् ॥४४॥

भा०—स्पष्टार्थं ॥ ४४ ॥

इति गूढार्थप्रकाशिका-सहित-नीलकण्ठ्यां प्रश्नतन्त्रे प्रकीर्णकाध्यायः ॥ ४४ ॥

मिथिलादेशमध्यस्थचौगमाग्रामवासिना ।
काश्यां पाठयता तेन **श्रीसीतारामशर्मणा** ॥
नीलकण्ठकृतौ टीका युक्तियुक्ता विनिर्मिता ।
इषेऽष्टाक्षाष्टभूतुल्ये शकाब्दे पूर्णतामिता ॥

॥ शुभम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुस्तकप्राप्तिस्थानम्—

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स,

संस्कृत-बुकडिपो,

कचौड़ीगली, बनारस सिटी.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

G. K. SHARMA

पं० श्रीसीतारामझाकृतपुस्तकानि—

अवकहड़ाचक्रसहित—व्यवहारविवेक I)
अहिबलचक्र—भा० टी० ≡)
केशवीयजातकपद्धति—सोदाहरण, सोपपत्ति, सं०टी०, भा०टी० १III)
केरलप्रश्नसंग्रह—भा० टी० I-) खेटकौतुक—भा० टी० I)
गोलपरिभाषा—ज्याक्षेत्रविचारसहित ≠)II
गणितसोपान— I) गर्गमनोरमा—भा० टी० ≠)II
ग्रहलाघव—सोदाहरण, सोपपत्ति, सं० टी०, भा० टी० २III)
जातकालङ्कार—सं० टी०, भा० टी० II≠)
जैमिनिसूत्र—सं० टी०, भा० टी० १)
ताजिकनीलकण्ठी—सोदाहरण, सोपपत्ति, सं० टी०, भा० टी० २III)
धराचक्र—भा० टी० ≡) पञ्चकोष—भा० टी० (द्वि०सं०) I-)
नाडिदत्तपञ्चविंशतिका—भा० टी० ≠)
भावप्रकाशज्योतिष—भा० टी० II≠)
भावफलाध्याय—भा० टी० ≠)II बृहत्पाराशरहोरा यन्त्रस्थ
मुहूर्तचिन्तामणि—सान्वय भा० टी० २I)
मुहूर्तमार्तण्ड—सं० टी०, भा० टी० १III)
रेखागणित—षष्ठाध्याय I≠) लघुजातक—सं० टी०, भा० टी० III≠)
लघुपाराशरी—मध्यपाराशरी, सोदाहरण, भा० टी० III≠)
लग्नप्रदीप—प्रथम भाग ≡) लग्नवाराही—भा० टी० -)II
लीलावती—सोदाहरण, सोपपत्ति, सं० टी० १III)
विवाहवृन्दावन—सं० टी०, भाषा टीका १II)
शीघ्रबोध-भा०टी० III) बृहज्जातकम् सो०, सो०, सं०टी०भा०टी० २III)
षट्पञ्चाशिका—सं० टी०, भाषा टीका I-)
सूर्यसिद्धान्त—सुधातरंगिणी टीका सहित ३II)

पुस्तकप्राप्तिस्थानम्—

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स,

संस्कृत बुकडिपो, कचौड़ीगली, काशी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh